CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

1.3 VHP

३२१०

★ श्री महावीराय नमः ★

श्री भगवान महावीर स्वामी जी के २५०० वें निर्वाण
समारोह समापन के शुभ अवसर पर—

श्री
महावीरायण

श्री महावीर चरित्र मानस

(ई० पू० ५९९ – ५२७ ई० पू०)

★ सत्य

★ अहिंसा

★ अनेकांत

★ अपरिग्रह

महावीर जयन्ती

१२ अप्रेल १९७६

— सस्नेह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशक— गोपीचंद राजेन्द्रकुमार सोधिया,
महाराजपुर (सागर) म. प्र.

वर्ग संख्या..... प्राप्ति-संख्या.....
ग्रन्थ-कार्ड
श्री गणेश वर्णी दि० जैन (शोध) संस्थान
ग्रन्थागार
नरिया, वाराणसी-५
ग्रन्थ नाम श्री महावीराष्टक
लेखक रत्नचन्द्र कौशल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust Foundation

श्री

महावीर रायण

प्रकाश हितैषी शास्त्री
संपादक सन्मति संदेश
५३५, गांधी नगर, दिल्ली-३१

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

* सत्य
* अहिंसा
* अनेकांत
* अपरिग्रह

— रतनचन्द कौछल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ

卐 शुभाशीर्वाद 卐

श्री १०८ ज्ञान तपोवृद्ध महामुनि श्री आर्यनंदी महाराज विनेय विनीत गुरुदेव १०८ श्री समंतभद्राचार्य जी महाराज बाहुबली कोल्हापूर, महाराष्ट्र श्री १००८ श्री भगवान् महावीर जी स्वामी के २५०० वें निर्वाण समारोह समापन के शुभ अवसर पर

"श्री महावीरायण" (महावीरमानस)

का जन–हित प्रसारण के शुभ कार्य 'हेतु—शुभाशीर्वाद

बिहार—जबलपुर म. प्र.

महावीर जयंती, १२–४–७६

इस महावीरायण ग्रंथ के रचनाकार, धर्मवत्सल काव्यभूषण पंडित रतनचंद कौछल, साहित्य रत्न आयुर्वेदरत्न, मंडला म. प्र. हैं।

प्रभु महावीर का चरित्र बड़े ही रोचक व सुन्दर ढंग से ललित चौपाई दोहा में अनुप्रासबद्ध रचना की है, शास्त्रीय प्रमाण सहित शास्त्रोक्त तात्विक वर्णन, कर्म फिलासफी आदि प्रसंगोंपांग वर्णनभी बोधप्रद है। प्रभुके चरित्र को सर्वांग सुन्दर बनानेका ध्यान रखा गया है जिससे कविकी प्रतिभा एवं विद्वता का परिचय मिलता है। आबाल वृध्दके परिशीलनके योग्य है। प्रभु महावीरका चरित्र सुगमता से आकलनहो सकता है। प्रभु महावीरकी भवावलि के पाठन से तो वैराग्यरसोत्पादन होता है।

शलाका पुरुष तीर्थंकर महापुरुष भगवान १००८ महावीर प्रभुका यह सुन्दर चरित्र आदरणीया महामना, भारतभूषणीया, भारतरत्न धर्म–वत्सला, परोपकारिणी धर्ममाता देश एवं विश्व हितकारिणी श्री इन्दिराजीगांधी महामंत्री, भारतशासन दिल्लीको स्वाध्यायार्थ सादरप्रेषित किया है यह बड़ेहो औचित्यकी बात हुई है। कारण प्रभुमहावीरके २५००वे निर्वाणोत्सवके वर्षमें प्रभु महावीर भगवान के विश्व कल्याणक अहिंसातत्त्वकी प्रभावना और प्रचारमें जो राजस्तर से सहयोग प्राप्त हुआ वह चिरस्मरणीय है, रहेगा। जो भारत व भारतेतर देशोंमें भी विश्वशांतिका कारण हुवा हैं। भगवान से प्रार्थना है कि, राज्यके स्तरसे महामना प्रधानमंत्री द्वारा ऐसेही लोकोपकारी कार्य नित्य होते रहें और विश्वमें निराकुल शांति बनी रहे। और पंडितरतनचंदजी द्वारा ऐसेही लोकोपकारी साहित्य का सृजन होता रहे यही अन्तःकरण पूर्वक आशीर्वाद है!!

★ ॐ शांति ★

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

—अभिमुख—

डाक्टर विद्याधर जोहरापुरकर
आचार्य शासकीय
फल। महाविद्यालय जबलपुर

भगवान महावीर की २५०० वीं निर्वाण तिथि का समारोह शासकीय और सामाजिक दोनों स्तरों पर जैनेतर सभी वर्गों द्वारा उत्साह पूर्वक एक वर्ष तक मनाया गया। इस अवधि में विद्वानों और साहित्यकारों की शताधिक रचनाऐं प्रकाशित हुई, जिनसे भगवान महावीर के प्रति गाढ़ श्रद्धा की अभिव्यक्ति मिली।

श्री रतनचन्द जी कौछल ने अपनी श्रद्धा भावना को बड़े परिश्रम से महावीरायण में मूर्त रूप दिया है। गोस्वामी जी की आबाल वृद्ध सुपरिचित रामायण को आदर्श बनाकर इसमें भगवान महावीर की जीवन कथा विस्तार से बताई गई है।

नागरीय सुविधाओं से दूर एक छोटे से गाँव में रहकर लखक ने इतना बड़ा कार्य हाथ में लिया तथा कुछ विलम्ब से ही क्यों न हो उसे पूर्णकर प्रकाशित किया, यह अभिनन्दनीय है। ऐसी रचना में छन्द या मात्रा की त्रुटियाँ ढूढ़ना छिद्रान्वेषण ही कहलायेगा तथापि, मुद्रण की अशुद्धियां इतनी न होती तो ग्रन्थ का स्वरूप अधिक संतोषप्रद होता इसमें सन्देह नहीं है।

लेखक ने प्रभु की कथा के साथ ही उनके द्वारा उपदिष्ट सद्विचार और सदाचार का भी निरूपण किया है। अत. भाषा और विचार शैली पुरातन होते हुए भी यह रचना लोकोपयोगी सिद्ध होगी, ऐसी आशा है।

विद्याधर जोहरापुरकर
जबलपुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंडित विरधीचंद जी शास्त्री
(सेक्शन आफीसर, हाईकोर्ट जबलपुर)

आज भारतवर्ष में सर्वत्र रामायण का बोलवाला है। भारतवासी उसे आज जिस भावना से पूजते हैं यह सबको विदित ही है। उसके लेखक मान्य सन्त महात्मा तुलसी दास जी थे। इसी तरह कृष्णायन ग्रन्थ की भी श्रद्धेय आदरणीय पं० द्वारका प्रसाद जी मिश्र ने रचना की। वह भी साहित्य की दृष्टि से उच्च कोटि का ग्रन्थ है।

जैन साहित्य में ऐसे ग्रन्थ की कमी थी। प्राचीन ग्रन्थों में भगवान महावीर के जीवन पर अनेक रचनाए मिलती हैं पर उनकी भाषा किलष्ट होने से सबको साधारण तथा समझ में आना कष्टकर होता था। इस समस्या को हल करने के लिये श्री रतनचन्द जी कौछल ने प्रयत्न किया तथा श्री भगवान महावीर के सम्पूर्ण जीवन पर श्री महावीरायण नामक ग्रन्थ की कविताबद्ध रचना की।

ऐसी रचना में साहित्यक दोष खोजना तर्क पूर्ण न होगा किन्तु लेखक के सतत प्रयत्न उत्साह तथा भावना को प्रोत्साहन देना श्रेयस्कर ही होगा। लेखक ने अपने सद विचार और सदाचार को यथाशक्ति मूर्त्त रूप देने की कोशिश की है अत. यह रचना सर्वसाधारण की विचारधारा को व्यक्त करने वाली हो जाती है।

श्री भगवान महावीर का २५०० निर्वाण महोत्सव मनाया गया है। अतः उसी सम्बन्ध में लेखक का प्रयत्न सराहनीय है। लेखक ने अपनी श्रद्धा सुमन श्री भगवान महावीर के चरणों पर अर्पित किये हैं अत. बुद्धि वैभव और सत्साहस से भरे लेखक के इस महान प्रयत्न की हम सराहना करते हैं। इसके लिये हम ही नहीं समस्त समाज एव विद्वतवर्ग उनका उपकृत है। उनके द्वारा जिन शासन की अधिक काल तक प्रभावना हो यही मँगल कामना है।

पं० बिरधीचन्द जैन
शास्त्री, साहित्य रत्न

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

---आमुख--

महावीरायण भगवान महावीर का संक्षिप्त पूर्ववृत सहित इतिवृत हैं। जो एक कल्पकाल में अवसर्पणो काल के दुखमा सुपमा भाग में संसारी जीवात्मा के कुछ भवों की संक्षिप्त कहानी है। जो विकास पथ पर अग्रसर होने एवं पूर्ण शुद्धता प्राप्त करने के लिये तड़पधारी है। किंतु जग के, भवमग में आकर्षणों से विह्वल होकर अनेक जन्मों को धारण कर भटकता और दुखी होता है।

किंतु शुद्धात्मता की उपंग जो ह्रदय में केन्द्रस्थ रहती है। सतत साधना के बल पर पूर्ण शुद्धता जो आत्मा के शाश्वत अनंत सुखों को लिये हुये प्रकाशित होती है, प्राप्त करके ही पूर्ण होती है।

भगवान महावीर ने इस तरह आत्मा-के गुणों को विकसित कर आत्मा को परमात्मा के रूप में बना डाला और वे भगवान कहलाये।

उन्होंने जगत के सब जीवों के हित के लिये मंगलमय मार्ग बताया। उनका मार्ग वही था, जो उनका अनुभूत था। और सबको इष्टकर था, है।

उन्होंने वर्णभेद, जाति भेद, और आश्रम भेद तथा क्रिया कांडों में उलझती सिसकती आत्मा को मुक्त कर सुखो बनाया। सुपथ पर लाकर उनमें स्वबल प्रगटाया। हर गति और काल में आत्मा चाहे तो अपना कल्याण कर सकता है। उन्नत हो सकता है। यदि क्षेत्र काल अनुरूप हुआ तो शिवपद भो प्राप्त कर सकता है। इसके लिये आत्मा की निज पर श्रद्धा पूर्ण जानकारी होना आवश्यक है। तद रूप स्थिरता से वह शुद्धता प्राप्त हो जाती है। महावीर का जीवनवृत और दर्शन इसका मंगलमय प्रभात है।

उससे ही प्रेरित होकर कवि की लेखनीचल गई। आचार्य प्रवर गुणभद्राचार्य का महावीर पुराण उसका संबल बना और जो कुछ बन पड़ा वह सब आपके समक्ष है। यदि इससे किसी को कुछ भी लाभ या आनन्द प्राप्त हो सका, तो महावीर की जय होगी और लेखक का श्रम सफल होगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक भील आत्मा व्रत के प्रभाव से देव, मनुष्य बन जाता है। क्रोध-मोह लोभ के वश में पड़ वही आत्मा तिर्यंच गति पाता है फिर नरक भी जाता है। तिर्यंच गति में ही शेर पर्याय में व्रती बनकर उत्कर्ष करता हुआ मोक्ष का अधिपति बन अनंत सुखों को प्राप्त करता है।

मेरे मन में भावना थी कि लोक भाषा में महावीर स्वामी का पद्यचरित्र होना चाहिये। पर मेरे दृष्टिगत जब वह न हो सका, तो मेरी भावना प्रबल होती गई। इसी बीच जब देश ने जननेत्री इंदिरा गाँधी जी के नेतृत्व में भगवान महावीर की २५०० वर्षवीं निर्वाण शताब्दी मनाने का निर्णय लिया, जैन समाज के सहयोग के आधार पर। तभी लेखक की भावना बलवती हो लेखनी प्रसूत हुई। समस्त संकोच और कठिनाईयों की उपेक्षा कर केवल महावीर भक्ति के बल पर श्रद्धा के सुमन अर्पित करने का अवसर प्राप्त हुआ।

इसके प्रकाशन की कठिनाई को हल करने में भाई गोपीचन्द जी राजेन्द्र कुमार जी सोधिया महाराजपुर (सागर) म. प्र. ने अपने परिवार और जैन समाज महाराजपुर के सहयोग पूर्वक कुछ सहयोग प्रदान किया। उल्लेखनीय सहयोग स्व० श्री दीपचन्द जी वैसखिया नरसिंगपुर की धर्मपत्नी (सुश्री छबरानी उर्फ रम्मी बाई का प्रेरणाप्रस्द रहा।

श्रीमान् डा० विद्याधर जी जोहरापूरकर आचार्य शासकीय कला–महाविद्यालय जबलपुर ने अपना अमूल्य अभिलेख देकर जो सार अंकित किया है। उसके लिये मैं उनका हार्दिक आभारी हूं।

दूसरा अभिलेख—श्री पं. बिरदीचन्द जी शास्त्री जबलपुर का है उन्होंने जो अपने मनोभावव्यक्त किये हैं उसके लिये भी मैं उनका हृदय से आभार मानता हूं इस तरह से लेखकों को प्रोत्साहन मिल सकता है विद्वानो से ऐसी ही आशा है।

इसके मुद्रण कार्य को पूर्णयता देने में नवीन प्रेस के मालिक श्री सुगमचन्द जी एवं उनके सुपुत्रों एवं कर्मचारियों का जो सराहनीय सहयोग मिला। उसके लिये वे बहुत बड़े धन्यवाद के पात्र हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस महावीरायण के लेख में और मुद्रण में उत्साह वर्धक प्रेरणा और मार्ग दर्शन मुझे पृष्ठांकित महानुभावों से प्राप्त हुआ।

सर्व श्री के. एल. सेठी मंडला, श्री डा० सुशीलकुमार दिवाकर, श्री गुलाबचन्द जी दर्शनाचार्य, पं० नेमीचन्द जी वैद्य, पं० मोहनलाल जी शास्त्री, प कैलाशचन्द जी, श्री हुकम चन्द जी, सि० धन्नालाल जी एव बाबू निर्मल चन्द जी प्रभृत गणमान्य सज्जन जबलपुर तथा आदरणीय प० सुमेर चन्द जी तथा डा० जी. एस. सिंघई और सुमेर चन्दजी मंडला का सराहनीय सहयोग मिला। अत. इन सबका में हृदय से आभारी हूं।

अर्थाभाव के कारण मैं अपने पूज्य काका बाबू लक्ष्मीचन्द जी शहडोल वालों की आकांक्षा को मूर्तरूप न दे पाया इसका मुझे खेद है। इसे सार्थ रूप में प्रकाशित होना देखना चाहते थ।

इस कार्य में मेरे परिवार के सभी सदस्यों का अपेक्षित सहयोग शांति बनाये रखने का प्राप्त हुआ, अतः सौ० शीला देवी, सौ० राज श्री मुश्री चि० इन्दिरा, स्मृति एवं चि० अशोक कौछल सभी धन्यवाद के पात्र है।

इसके प्रकाशन के अवसर पर उन सबका स्मरण करना साभार अपेक्षित है जिनका ज्ञात अज्ञात रूप में जो भी सहयोग मुझे प्राप्त हुआ है।

इसमें जो अच्छाई यदि मानी गई वे सब पूर्व वर्त्ती परंपरा के सु प्रभाव का फल है। और जो त्रुटियाँ रह गई हैं के मेरे प्रमाद और अज्ञान के कारण हैं उसके लिये मैं विवशता बता कर वंचित नहीं होना चाहता। मेरा खेद जब दूर होगा जब कभी इसके द्वितीय संस्करण कार्य में अवसर प्राप्त हुआ और समस्त त्रुटियों का परिमार्जन हो सका, तो होगा।

श्रद्धालु पाटकों की कठिनाई के समाधानार्थ शुद्धि पत्र संलग्न है।

आपका स्नेहकांक्षी.
रतनचन्द कौछल
मंडला

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Nariyal Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशक की ओर से—

भाई पं० रतन चन्द जो कोछल मन्डला ने सन् १९७५ ई० के भाद्र मास में हमारे ग्राम महाराजपुर (सागर) म. प्र. में पधारकर जो धर्मावर्षण किया। १ मास में 'कवलचाँद्रायण' व्रतपूर्ण किये उसमें उनके "महावीरायण" के लिये किये गये श्रम और ज्ञान का आभास प्राप्त कर मेरी धर्मपत्नी (सौ० फूलरानी उर्फ सोना बाई) की अभिरुचि इसे प्रकाशित होता देखने की हुई। उनकी शुभाकाँक्षा का हमारे परिवार और स्थानीय समाज में आदर हुआ उसमें जो भी हुआ योगदानहमने किया वह अत्यल्पे ही है। भगवान महावीर की महान गुण गाथा जितनी अधिक गाई जावे और उसमें योग बने थोड़ा ही है।

इसमें पं. जी को अत्यंत कठिनाई और कष्टों का सामना करना पड़ा है। पर भगवान की भक्ति और जनहित के लिये उन्होंने जो अपनीभेंट अर्पित की है। इसके लिये वे बड़ी श्रद्धा के पात्र है उनके दीर्घायुष्क और गुण समृद्धि की कामना करता हू। लेखन और मुद्रण के स्थल की विपन्नता के बीच में भी जो उन्होंने सेवा की है वह चिरस्मरणीय है और हम सब उनके अभारी है।

गोपीशन्द सोंधिया
महाराजपूर (सागर) म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

— क्षमा —

आदरणीय श्रद्धेय पंडित रतनचन्द जी शास्त्री का यह स्तुत्य प्रयास मुद्रित करते हुए स्वाभाविक हर्ष तो मुझे हो ही रहा है साथ ही अपने आपको पंडित जी का परिचित समझने के बाद उनका यह स्वरूप देखकर ऐसा लग रहा है जैसे हीरा अपनी खदान से निकल कर अब अपनी प्राभा बिखेरने का अवसर पा सका हो ।

मुद्रण में गलतियों का होना, वैसे तो ठीक नहीं है किन्तु हस्त लिखित ग्रन्थ से मुद्रण का बिलकुल सही होना भी उस समय कठिन हो जाता है जबकि लेखक की उपस्थिति समय पर न हो । अतः इस मानव स्वभाव के लिये हम हृदय से सभी महानुभावों से प्रार्थी हैं कि हमारे इस नव प्रयास को शिशु की अबोधता मानकर क्षमा करेंगे ।

प्रार्थी
सुगमचन्द जैन
नवीन प्रिंटिंग प्रेस
कछियाना, जबलपुर ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंगलाचरण

ॐ नम सिद्धभ्य: जय श्री ॐ नम: सिद्धेभ्य:

ओंकार विन्दु संयुक्तं, नित्यं ध्यायान्ति योगिना:
कामद मोक्षदं चैव, ओंकाराये नमो नम:

अविरल शब्द घनोघां, प्रक्षालित सकल भूतल मलकलंका ।
मुनिभिरुपासित तीर्था-सरस्वती हरतु नो दुरिताम ।।

अज्ञान तिमिरांधानाम, ज्ञानांजन शलाकया = ।
चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरुवे नम: = ।

परम गुरुवे नम: परंपरा आचार्य गुरुवे नम:

सकल कलुष विध्वंसक, श्रेयसाँ परिवर्धक
धर्म सम्बन्धकं, भव्य जीवा मन: प्रतिबोध कारक
मिद पुण्या प्रकाशक पाप पणासन मिदं शास्त्रं

श्री महावीरायण नाम धेयं, अस्य मूल ग्रन्थ कर्त्तार:
श्री सर्वज्ञ देव: तदुत्तर ग्रन्थ कर्तार: श्री गणधर देवा:
प्रतिगणधर देवा: तेषां वचनानुसार मासाद्यश्री पंडित
रतनचन्द कौछलस्य विरिचितम् महोदयेन

मंगल भगवान वीरो, मंगलं गौतमो गणी ।
मगलं कुंद कुन्दाद्यौ जैन धर्मोस्तु मंगलम् ।।

सर्व मंगल मागल्यं सर्व कल्याणकारक
प्रधानं सर्व धर्मानाँ जैन जयतु शाशनमू

श्रोतार: वक्तार: सावधानतया श्रयवन्तु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री वर्धमानाय नमः

अनुक्रमणिका

भगवान महावीर की आरती, आरती श्री महावीरायण जी की १

मंगलाचरण, कथा सुगुणता, सत कथायें विकथा २

कथा प्रभाव, वक्ता, श्रोता, कथा का हेतु ३

सज्जन बंदना, अज्ञ विनय ४

शुभ कामना ५

कथानक—पूर्वभव १० से ४०

अवस्थित काण्ड

मधुवन पुरुखा मील १०

अपूव दर्शन, व्रतदान, प्राप्ति ११

व्रती परीक्षा, मित्र मिलन १२

अपूर्व व्रत दृढ़ता, १३

(ख)

अणुव्रती शबर, मरण, स्वर्ग प्राप्ति, संयम महात्य १४

कर्मभूमि १५

ऋषभदेव वैभव, कौशल देश महिमा १६

अयोध्या महात्म्य, लोक नीति १८

ऋषम देव सभा, नीलांजना नृत्य, नरण, वैराग्य १९

ऋषमदेव निरागता, लौकान्तिक देवों का स्तवन २०

वैराग्य प्रबलता २१

स्वजन चिन्ता, ऋषमदेव का प्रतिबोधन २२

संतोषामृत, २४

सौधर्मेन्द्रावगमन, संयम–महत्व २५

दीक्षा स्थल, इन्द्र धर्मानुराग २६

विवेक महत्व, जनउद्वेलना २८

उच्छृंखल साधु, वनदेव प्रति बोधन २९

सच्चा गुरू–महात्म्य, गुरु गोचरता ३०

ऋषमदेव चरया, अन्तर द्वन्द ३२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जन आश्चर्य ३३
आहार आतराय, जन संवेदना ३४
ऋषमदेव आहार, सुपात्र दान का महात्म ३५
अरहंत पद, अतिशय, भरत विभव लाभ ३६

(ग)

भरत जिन बंदना ३७
मारिच मानस, जटिल विप्र प्रथम स्वर्ग देव, भारत द्वाजविप्र ३८
प्रथम स्वर्ग, अग्निसहविप्र, सनत देव अग्नि भूति विप्र ३९
भारतद्वाज विप्र, प्रथम स्वर्ग तिर्यंच गति माहेन्द्र देव ४०
स्थित-काण्ड— ४१ से ७०
स्थावर विप्र, माहेन्द्र देव ४१
विश्वनंदि, विश्व भूति संवेग ४२
विश्व भूति दीक्षा, ४३
विशाख भूति छल, विश्वनंदि शौर्यता ४४
पुत्र बागार्पण विश्वनदी विजय ४५
विश्वनंदि-कोप, कुंवर विजय लाभ ४६
विश्वनंदि कुंवर-संवेग, विश्वनंदि मुनि ४७
विशाखभूति वैराग्य ४८
विशाखभूति मुनि दीक्षा, विश्वनंदि मुनिचर्या-बिहार ४९
दशम स्वर्गदेव ५०
सुरम्य देश, पोदनपुर प्रजापती नगर भूपाल, ५१
प्रथम नारायण त्रिपृष्ठ, प्रतिनारायण अश्वग्रीव ५२
रथनूपुर देश, चक्रवाक नगर, ज्वलन जटीनृप ५३
अर्क कीर्ति स्वयं प्रभा ५४

(घ)

पोदनपुर सन्देश प्रेषण ५५
सन्देश स्वीकरण, दूत बिदाई, प्रजापति नृप मोद, ५६
लग्न प्रेषण, पोदनपुर आनन्द ५७
कुंवर त्रिपृष्ठ बारात ५८
चक्रवाक नगर बारात आगमन, पाणि ग्रहण ५९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुष्ठ दुष्ठ जन भव, अश्वग्रीव कोप, प्रस्थान ६०
शठ मारणा, नारि उपक्षा, रथनूपूर—चढ़ाई ६१
त्रिपृष्ठ रण प्रगल्लमता ६२
अश्वग्रीव का नायकत्व, अश्वग्रीव त्रिपृष्ठ का युद्ध ६३
अश्वग्रीव मरण, त्रिपृष्ठ विजय वैभव ६४
कन्या बिदाई, अर्द्ध चक्री के भोग, मरण ६५
परिग्रह दर्शन परिग्रह प्रभाव ६६
संयम महत्व, पुनर्भव ६७
पश्चाताप ६८
गगावन में शेर, नर्क ६९
सिंहकूट में सिंहदर्शन, ६९
सिंह दर्शन ७०
उत्थित काण्ड ७०. से. ९३
सिंह का मुनि दर्शन (ड) ७०
मुनि उपदेश ७१
मुनि द्वारा संबोधन, सिंह शौर्यता, आमरण व्रत ७२
सिंह केतुदेव, सिंह केतू विभव ७३
कनकोज्वल जन्म, पुत्रलाभ, वधावा ७४
बाल्यकाल, सदगृहस्थत्व ७५
धर्म महिमा, धर्मोपदेश ७६
चारित्र महात्म, प्रक्रिया, जगस्वरूप चिंतन ७७
वीतरागी मुनी कनकोज्जवल नृप ७८
सातवें स्वर्ग देव अयोध्या नगर वज्रसेन नृप, नीतिमत्तम ७९
हरिषेण कुमार जन्म, उत्सव, नीति पटुता, राज्यारोहण ८०
नृप दैनिक चरया ८१
नृप हरिषेण संवेग, चिंतना ८२
जगत-रूप, दीक्षा व्रत ८३
ऋतुबल विजय, साधक दृढ़ता ८४
सपाधि मरण दशम स्वर्ग देव, चयन ८५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रियम कुमार ८६
चक्रवर्तित्व, वैभव, ८७
दिनचर्या, धर्मप्रेम प्रभावना ८८

(च)

श्री जिन उपदेश लाभ, षट बाह्य भावना ८९
अभ्यन्तर भावना, धर्म महिमा ९०
चक्रवीत्त वैराग्य, नारी अपत्य, नारी पाप चिंतना ९१
मुनिदीक्षा, मुनिवर बिहार, समाधिमरण ९२
सूर्य प्रभा देव, चयन श्रेष्ठ नरत्व ९३

उत्कर्ष कांड— ९४ से १३१

क्षत्राकार नगर, नंदिवर्धन नृप ९४
नन्द जन्म, शिशुत्व, बाल्यकाल ९५
नारी श्रेष्ठत्व ९६
सज्जन-दुर्जन नंद, नृप दिन चरया ९७
नद नृप नीति, राजकाल विधि ९८
धरम, सुजनता महत्व, नृप का मुनिबंदन, दशधा धरम ९९
सुख हितकार्य, जग स्वाभाव दर्शन कर्त्तव्य १००
जीव, दुख-योग-भोग, नंदराज वैराग्य १०१
सुगुरु महात्म्य, नंद मुनि १०२
तप प्रभाव फल, ज्ञानानंदी नंद मुनि १०३
ध्यान विश्लेप, शुक्ल ध्यान १०४
सद भाव प्रकाश भावना महत्व १०५
नंद मुनि चिंतना, सम्यक दर्शन १०६

(छ)

षोडष कारण, भावना १०७
समाधि मरण, अच्युतेन्द्र नंद मुनि १०८
वैभव बोधन, अच्युतेन्द्र वैभव १०९
अवधि प्रकाश ११०
धर्म अभिरुचि अच्युतेन्द्र १११

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यक्तीदेव ११२
संयम, कुण्लडपुर ११३
सिद्धार्थ नृप श्रेष्ठत्व ११६
महारानी त्रिशला देवी माता ११७
सुत वाँछा ११८
माता का राज राज दरबार गमन ११९
सोलह स्वप्न वर्णन एवं स्वप्नफल प्रेक्षा १२०
तातोत्तर, स्वप्नफल, गर्भ कल्याणक १२१
कुमारिका आगमन, माताज्ञा १२३
संत प्रकृति, मोदमय पन्द्रह मास १२४
मातृ सुत गुण चिंतना, गर्भकाल १२५
मातृ सुखद भाव, गर्भागत सुत दर्शन १२६
माता का ज्ञान वैभव, देवी प्रश्नोत्तर १२७
मातृ श्रेष्ठता १३०

(ज)

अवतरण काण्ड १३२ से १८४

महावीर जन्मोत्सव, कुण्डलपुर शोभा १३२
इन्द्रावगम, एरावत सज्जा १३३
शचि–शिशु–दर्शन १३४
मातृ निद्रा, इन्द्र का प्रथम प्रभु अवलोकन, स्तुति, सुमेरु पर्वत उत्सव १३५
जन्माभिषेक १३७
प्रभु न्ह्वन प्रभाव, प्रक्षालन १३८
पुनरागम कुंडलपुर, इन्द्र-स्तवन १३९
इन्द्र-नाट्य १४१
सुरेन्द्र गमन, महावीर शिशुत्व १४२
जन्म–अतिशय १४३
बाल क्रीड़ा, क्रीडानंद १४४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुमार काल, श्रावक व्रत धारण, संगमपरीक्षा १४५
संगम–स्तुति १४६
संगम-विनय–भेंट गमन १४७
बालवृन्द गृहागम, मातृ विह्वलता, नृपति उद्वेग १४८
वीर का भ्रात–प्रतिवेदन, सपूत—कपूत १४९

(झ)

महावीर अग्रता, वैचारिक क्रिया, महावीर यौवन, वपु विन्यास १५०
शरीर सौष्टव, लक्षणा व्यंजना १५१
पाणि ग्रहण चर्चा, मातृ वेदना, बालवृन्द वार्त्ता १५२
मित्र अनुभूति, मातृ संदेश, बाल निवेदन १५३
तप कल्याणक महावीर चिंतना, पूर्व भव स्मरण १५५
अनित्य भावना १५७
अशरण भावना, संसार भावना १५८
एकत्व भावना, अन्यत्व भावना १५९
अशुद्धि भावना, आश्रव भावना १६०
संवर भावना, निर्जरा भावना, लोक भावना १६१
बोधि दुरलभ भावना, धर्म भावना १६३
वीर–दृढ़ निश्चय, लौकांतिक देवागम, स्तवन १६४
महावीर स्तुति १६५
महाभिनिष्क्रमणोत्सव सांत्वना बोध वीर का १६६
शिविका गमन, १६८
मातृ पितृ मोह १७०

(ञ)

महत्तर देवागम १७१
दीक्षावन, महावीर दीक्षा १७२
अज्ञ–दीक्षा १७३
केश क्षेपण, शकेन्द्र स्तवन १७४
दीक्षा महत्व १७५
मनःपर्यय ज्ञान उपलब्धि, महावीर मुनि १७६
वीर आहार, पंचाश्चर्य, दान वैशेष्य १७७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुदातृ-सुपात्र, रुद्र उपसर्ग, अतोवीरत्व १७८
रुद्र स्तवन १७९
मुनि वीर—विहार, वैभव, चन्दनोद्धार, चन्दना परिचय १८०
वन प्रदेश, भील कार्य, चन्दना विक्रय १८१
सेठ गृह—चन्दन, धर्म दृढ़ता १८२
महावीर मौन विहार, महावीर रण कौशल, साल १८३
विजयी वीरनाथ १८४
ज्ञान कांड— १८५ से २६४
केतल ज्ञान प्राप्ति १८५
केवलज्ञान के अतिशय, इन्द्रावगमन १८६
धूलि शाल कोट १८७
(त)
मानस थंभ, समव शरण शोभा १८८
सुवर्ण कोट, १८९
देव निवास १९०
स्फटिक कोट, मंडप पीठ १९१
गंध कुटी, भव्यजन स्तुति १९२
अष्ट प्राप्तिहार्य १९४
द्वादश सभा, सौधमेन्द्र समवशरण प्रवृष्टि १९५
इन्द्र पूजन आयौजना, भजन १९६
सौधमेंन्द्र महावीर—पूजन १९७
सुरेन्द्र का महावीर स्तवन २००
इन्द्र चिन्ता २०१
सुरेन्द्र गौतम संवाद २०२
विवश गौतम, द्विजवर-उत्तर, मानसथभ प्रभाव २०३
स्तवन, गुण गौरव २०४
गौतम पृच्छा, महावीर-देशना २०६
चौदह जीव समास २०७
चौरासी लाख जीव योनि, मार्गणा, गुणस्थान २०८
अध्यात्मिक जीव, बहिरात्मा, अन्तर आत्म, २०९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमात्मा, सकल परमात्मा २१०
निकल परमात्मा, गुणस्थानी जीव २१
जीव के दश प्राण, नयागत जीव, शुद्ध—अशुद्ध निश्चयन
सदभूत व्यवहार नय से २१२
असद् भूत व्यवहार नय से जीव प्रदेश, समुद्रघात भेद, जीव के
सुभाव–विभाव, आजीवद्रव्य २१३
पुदगल भेद, प्रदेश, गुण, उपकार, धर्म, अधर्म आकाश द्रव्य अक्रिय-अरूपी
द्रव्य २१४
काल द्रव्य, शेष द्रव्य प्रदेश', आस्ति-काय छहों द्रव्यों के प्रदेश
प्रमाण २१५

आश्रव तत्व बन्धतत्व

प्रकृति बन्ध, स्थिति बन्ध २१६
बन्ध फल, संवग तत्व, निर्जरा तत्व २१७
मोक्ष तत्व, नव पदार्थ, पुण्य पाप के कारण २१८
पाप फल, पाप कार्य, पुण्य के कारण २१९
पुण्य फल २२०
तत्व हेयोपादेयता, सम्यक्ती एवं मिथ्यात्वी बन्ध फल २२१
नरक गति के हेतु पाप परिणाम, तिर्यंच गति के हेतु २२२

निगोद के हेतु, देव गति के हेतु, मनुष्य गति के हेतु २२३
भोग भूमि के कारण, स्त्रीत्व के हेतु पुरुषवेद के आधार २२४
नपुंसक वद के आधार, लूलेपन के हेतु बधिरता के हेतु (ज्ञानावरणो
दय) निंदा के हेतु अंधता के हेतु (दर्शनावरणोदय) गूंगेपन
के हेतु, (ज्ञानावाजोदय) २२५
विकलेंद्रियता के हेतु, आसाता–साता वेदनोदय सुभग–दुर्भग नाम
कर्मोदय, सोम्यनामकर्म, दरिद्रता के हेतु २२६
शठता के हेतु, (मतिज्ञानावरणोय) विद्वता के हेतु (मति-ज्ञानावरण
क्षायोपशम)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रत्नात्रय महिमा, निश्चय रतनात्रय २३२
व्यवहार सम्यक् दर्शन, सम्यक्त का महत्व २३३
व्यवहार सम्यक् ज्ञान, व्ययहार सम्यक चरित्र, २३४
व्यवहार रतनात्रय, निश्चय सम्यक दर्शन, २३५
निश्चय सम्यक ज्ञान, निश्चय सम्यक चारित्र रत्नात्रय महत्व द्विविध धर्म, दर्शन प्रतिमा, व्रत प्रतिमा, सामायिक प्रतिमा, प्रोषध प्रतिमा, २३६
सचित्त त्याग प्रतिमा, रात्रि भुक्त त्याग प्रतिमा, ब्रह्मचर्य प्रतिमा २३७
आरंभ त्याग प्रतिमा, परिग्रह त्याग प्रतिमा: त्याग अनुमति त्याग प्रतिमा, उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा· प्रतिमा महत्व
मुनिव्रत २३८
कालचक्र, भोग–भूमि संरचना, कल्प वृक्ष २३९
अवसर्पणों चतुर्थकाल, कर्म भूमि महत्व २४०
वर्त्तमान् चौबीस तीर्थंकर बारह चक्रवती, नव बलभद्र २४१
नव नारायण, नव प्रतिनारायण, गति शलाका पुरुष, पंचमकाल २४२
षष्टम काल, त्रैलोक आकार २४३
स्वात्मलाभ, इन्द्रभूति गौतम, सुदर्शन लाभ, सफल सत संगति २४४
गौतम दीक्षा, गौतम ज्ञान लाभ, द्वादशांगावतरण २४५
श्रेणिक नृप आगमन २४६
श्रेणिक नृप पूर्व भवाप्रेक्षा, मुनि द्वारा व्रत दान २४७
खदिर व्रत दृढ़ता, मरण, २४८
यक्षणि रोदन २४९
श्रेणिक नृप अपरभव २५०
काल शौरिक २५१
शुभा कुमारी, दश विधि सम्यक दर्शन २५२
अभय कुमार पूर्ववृत, २५३
सच्चा देव, लोक मूढ़ता २५४
गुरु मूढ़ता, विप्र कुमार संबोधता २५५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महावीर संघ वैभव २५६
जिन स्तुति और फल २५८
वीर विभु विहार २६०
देवकृत चौदह अतिशय २६१
निर्वाण कल्याणक (धन्य मरण) २६२
अन्तिम उत्सव, काय पूजा २६३
भस्म वन्दना, (दीपावली) २६४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सादर समर्पित—

विश्व महिला दिवस के शुभ अवसर पर-

प्रातः स्मरणीया पूज्य माता प्रियकारिणी त्रिशला
महादेवी की स्मृति स्वरूप—

आदरणीया प्रिय बहिन प्रियदर्शनी सुश्री इंदिरा गांधी
भारतरत्न जी के कर कमलों में—

महामान्यनीया प्रधान मन्त्री, भारत-शासन, नई दिल्ली

महावीर गुण रागनी भारत संस्कृति धाम।
चिन गौरव तुम देश हो, तुमको नेक प्रणाम ॥

—रतनचंद कौछल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री महावीराय नमः

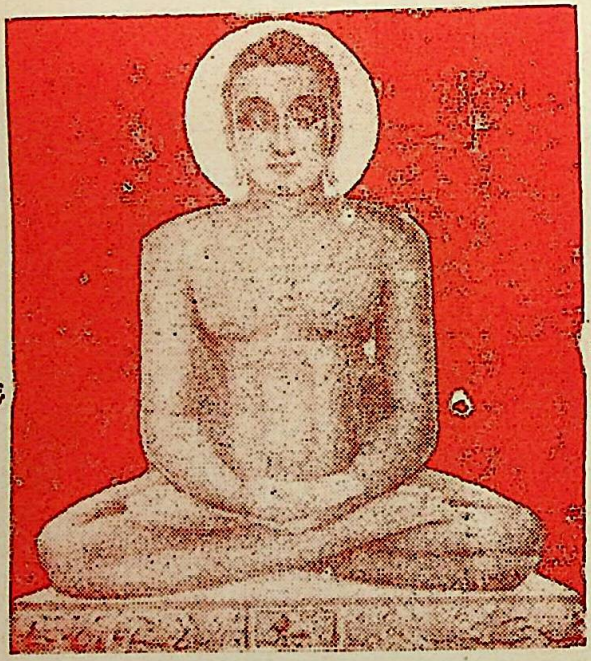

वीतराग सर्वज्ञ हितंकर; भवाताप हर अनुपम चंदन
निजानंद मय गुण रत्नाकर, महावीर पद शत-शत बंदन

— रतनचंद कौछल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ

श्री महावीराय नमः

मोक्ष, मार्ग प्रणेता थे जो, सु आतम शक्ति विधायक् थे ।।
जो अखिल् तत्व विज्ञायक अरू, दुष्टकर्मों के प्रभु क्षायक थे ।।
दरशाया शिवपंथ सुधासम, अक्षय अनंत आनंद भरकर ।।
शतशः बंदन उनवीर नाथ को, उनसा श्रेष्ठ, सुबल पाकर ।।

भगवान् महावीर की आरती

आरति श्री महावीर तुम्हारी, आरति श्री महावीर तुम्हारी ।।
शिव पथ दरशक सब सुख वरधक, जय जय सुगुण रतन भण्डारी ।१।
शुद्धातम वल तुम प्रगटाया, ज्ञान ज्योति, सौरभ जग छाया ।।
परम अहिंसक करुणाधारी ।। आरति श्री महावीर तुम्हारी ।२।
शुभ करमों से चित्त सजाया, शुद्ध भाव का दीप जलाया ।।
अभय सुतंत्र अमल गुण धारी, ।। आरति श्री महावीर तुम्हारी ।३।
जग को मैत्री भाव सिखाया, सबमें राजे चेतन राया ।।
निज परणतिमय, शिव सुखकारी, आरति श्री महावीर तुम्हारी ।४।
करम चेतना भव को ढोवे, आत्म चेतना वर्त्तन खोवे ।।
निश्चल निजानंद हितकारी, आरति श्री महावीर तुम्हारी ।५।
दीप रतन मणिमय ले आया, विश्व जेष्ठ का शरणा पाया ।।
समता शाँति क्षमा अवतारी ।। आरति श्री महावीर तुम्हारी ।६।

आरती श्री महावीरायण जी की ।

आरति श्री महावीरायण की, अघमंल हरण शरण जग जिय की
महावीर मानस दरशावे, महावीरता पाठ पढ़ावे ।।
जग–भव, मुकति, सुपथ बतलावे, वाणी शुद्ध चिदातम हिय की ।१।
निज पद बिसर जगत दुख होवे, स्वपद विमल अचल सुख होवे ।।
चेतन भ्रम सुं पर को भेवे, कथा सभी भववासी जियकी ।२।
किन भावों कर मोक्ष सु आया, किन भावों ने नरक घुमाया ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन्द्रपना चक्री किन गाया, कथा सभी सुर नर जीवन की ।३।
अपना सुहित 'रतन' अराधो, सरधा महावीर पद साधो ।।
शुद्ध भाव हित, नाहिं विराधो, अवसर उत्तम आशा हिय की ।४।
आरति श्री महावीरायण जी की, अघ मल हरज शरण जग जिय की

ॐ महावीराय- नमः

मंगला चरण

दोहा निज परणति क्रान्ति मयी अघहर विमल विवेक ।
वर्धमान शुचिता थई, नमें रतन सह स्त्रेक ।१।
वर्धमान् पद बंद के, बन्दों गणधर पांय ।
महावीर मानस अमल, कहों सुश्रुत आम्नाय ।२।
मंगल मय सब सुख करन; जगत जीव हित-दाय ।
दरशावत शिवकर सुपथ, सरब अमंगल जाय ।३।
चौबीसों जिनवर चरण, पंच परमेष्ठी पाँय ।।
द्वादशांग वाणी नमूं, भव—भव, सब सुखदाय ।४।
प्रतिमा जिनवर जिन भुवन, कीरता कीरतम दोय ।।
मन बच तन जिन धरम नम, करें सु मंगल सोय ।५।
आगम जिन भव शूल हर, विमल सदा सुखदा ।
नव ये बंदों देवता, सप्त परम पद थाय ।६।
जिन पथ हित जग भूप है, शिव साधक शिव रूप ।।
सरब जीव हितदाय अति, सरव सौख गुण भूप ।७।

कथा सुगुणता

दोहा—श्री जिन सुमरण करत तो, दारिद जिय को खोय ।
मन का संशय सब हरे, स्वबल परगट होय ।१।

। सत् कथायें ।

दोहा—शिव पथ, शिव पति, शिव कथा, शिव पंथी गुणगान ।।
उभय लोक कल्याण मय, शिव कर साज अमान ।२।

'विकथा'

दोहा—चोर भोज अरू तिय कथा, राज चऊ दुख मूल ।
विघटे निजं बल पथ भ्रमें, उभय लोक अति शूल ।३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कथा—प्रभाव

दोहा—शिव कर हित पथ भूल जिय, रुलत गहे अज्ञान।
विकथा तज सतपथ चलें, विबुध भव्य गुण खान।४।
विमल सुपथ जिन वाणी में, दुविधा मन की खोय।
सुरग मुकति सुखदायनी, जतन रतन हित जोय।५।
मिटे बहिर अवलंबता, सु आतम भानु प्रद्योत॥
आपा-धापी, भव मिटे, निरमल ज्ञान उद्योत।६।
निरभयता उर दृढ़ बसे, कलुष कषाय विगोय॥
मन वांछित फल सब मिले, बंदे शिव पद सोय।७।
जिन पथ हितकर जीव का, संशय शलक सब खोय।
जगत रीति से भीति अति, स्व संवेदी होय।८।
वीत राग कर कही कथा, क्यों न होय सुख मूल।
निज अनुभव पर हित भरी, मिटत रतन भव शूल।९।

वक्ता

दोहा—वक्ता सबका हित लखे, ध्यान ज्ञान गुण शूर।
जग विरक्ति, अघ भीरूता, वृष रतनत्रय पूर।१०।
आगम अर्थ अगम्यता, असीम अमल विवेक।
मित हित—भाषी प्रश्न सह, सुभम सुवक्ता टेक।११।

श्रोता

मृदु भाषी नर विनय अति, आगम प्रीत अतीव।
श्रोता हित श्रवनन चहत, श्रावक, उत्तम जीव।१२।
जग् काया से भीति अति, अनहित—हित पहिचान।
गुण गुणियन संग नेह उर, सद्गुण उमग अमान।१३।
सम्यग् दरशन गुण सहित, दीनी मद शिर झार॥
गुण ग्राहक जिन भक्ति उर, पर-पीड़ा दुख हार।१४।
धन बल बुद्धि विवेक का, सदा सफल उपयोग॥
सुगुण अष्ट सरधा सहित, संगति विमल सुयोग।१५।

कथा का हेतु

वीर विभु की श्रेष्ठता, मन तन भक्ति उछाह।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रगटे कैसे करम फल, पाप पुण्य अमलाय ।१६।
करम न छांडें काहु को, योधा अति बलवान ।।
जगत जीव वश में किये, विज्ञ, अज्ञ, नादान ।१७।
जड़ बड़ जडता संग से, अधिक करत उत्पात ।।
कीनो जिन इनको कहो, नित पाई तिन मात ।१८।
परिवर्त्तन पाँचों करत, सुख दुख दृश्य अनेक ।
पर को निजमय मानतो, छोड़े विमल विवेक ।१९।
सुबुधि भाग शुभ योगतें मिलो आज बड़ योग ।।
स्वपरणति निज को रुची, निज-हित विमल उद्योग ।२०।
चेतन बसु गुण अमल अति, परम वीर्य सुख रूप ।।
वश करमन निज रूप तज भ्रमे बनो विद्रूप ।२१।
करम कीच नहिं जीव में, सदा करम पर रूप ।।
मद्य मोह उन्मत भमें, स्वांग धरे चिद्रूप ।२२।
चेतनमय चेतन सदा, जड़ना ताको रूप ।।
निज परणति में जो रमे, सदा रतन शिव भूप ।२३।
वश कीने करमन सहज, पर की तज के टेक ।।
निज सुभाव में थिर भये, कोई लाख में एक ।२४।
महावीर गुण धाम वर, कृत्य कृत्य निष्काम ।।
परंपरा जिनकी विषें, बुधि पावें विसराम ।२५।
चरण कमल तिन बन्दना, शिवपथ, साधन दौर ।।
नमें रतन शिवनन्दना, हृदय भक्ति शिर मौर ।२६।

सुजन बंदना

सरल सुभाव सु सन्त हिय, निवत सु-पर उपकार ।।
बंदत ऐसे विमल पद, उघड़त वज्र किवार ।१।
मंगल मय मंगल करो, ग्रंथ करन के काज ।
महावीर यश चन्द्रिका, हितकर सकल समाज ।२।
आदि अन्त निरवाह हो, सफल भेक की टेक ।
अबल बुद्धि बिन जानके, कृपा करो अखलेश ।३।

अज्ञ विनय—उत्पाती भोले सहज, सरल चूक पै ध्यान ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अलप अधिक करके लखें, विमल ज्ञान हित शाव ।४।
प्रीति सहित तिन नमन कर, करिहो सदा सहाव ।
सब श्रम सुकृत मम करो, प्रखर तेज परभाव ।५।

शुभ कामना

सकल जीव हित पंथ वर, महावीर गुण गान ।
सुख पावें जग जीव सब, अन्त रतन निरवाण ।१।
लेंय सु उत्तम रतन जिमि, गुण जौहरि पहिचान ।
साँचो गहं झूठो तजें, सुबुध सफल गुणवान ।२।
महावीर समझें सुबुध, ग्राहें पथ उपदेश ।
निज पर हित सुखकर सधे, चमके भारत देश ।३।
महावीरता नाम में, स्व अवलंबन सार ।
माया तिसना जग ठगी, बिन मूर्छा जिय भार ।४।
दीन परिग्रह गृद्धता, पामन का आधार ।
उभय लोक सुख लो रतन, कर इनको निरवार ।५।
महावीर गुण अगम हैं, सदा जीव हित दाय ।
बल बुद्धि निज अनुसरें, सबकों करें सहाय ।६।
अबल रतन वश भक्ति के, उतरन चाहत पार ।
गाऊं या तो वीर गुण, या डूबूं गुण धार ।७।
निज हित पूरण काज चित, उर भक्ति उमगाय ।
आत्म तोष गुण कोष लख, उद्यम करूं बनाय ।८।
महावीर दें वीरता, शुद्ध भाव निज रूप ।
आतम बल विक से रतन, मिटे भ्रमण भव कूप ।९।
पद्य ग्रंथ नहिं दृष्टि गत, गद्य जटिल अवरोध ।
सरल सुहित लख कर लिखों, भाषा सुगम सुबोध ।१०।
छंद अरथ का बोध नहिं, नहिं, कवित्व उर चाह ।
वीर भक्ति उर विमल वर, चाहत शिव सुख राह ।११।
अल्प बुद्धि लघु ध्यान अरू, प्रमादी स्वाभाव ।
क्षमो भूल निज मान के, गहो रतन फलदाय ।१२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महावीर गुण भक्ति चित, अंत तीर्थंकर नाम ।
सत्य अहिंसा सुखद सब, सफल काज हित धाम ।१।
सहस्त्राब्दि दो अर्ध ये, निर्वाणकाल सुमान ।
सत्य–अहिंसा सुगण वल, दरशे जन सुखदान ।२।
धरम चक्र वर्त्तन कियो, नगर ग्राम पुर देश ।
नव बल हित जन साधनें, नव युग के प्रवेश ।३।
उल्लसित मन जन नेत्रि का, गाँधी इंद्रा नाम ।।
गणतंत्री महा भारती, प्रधान मंत्रि गुण धाम ।४।
नारी रतन महान अति, भारत—देश सुहाग ।
नेहरू तनया सुबुधिदृढ़, देश भक्त बड़ भाग ।५।
अबल देनता मेंटने, मन धारे अति चाह ।
पितृवत् तनया योग अति, अन्वेषक हित राह ।६।
गौरव धारे देश का, निज संस्कृति का भान ।
धीरज साहस अमित दृढ़, जन जन का उर मान ।७।
सरब धरम सम भाव मन, गुण अवगुण पहिचान ।
सहती लाखों झंझटें, सदा राष्ट्र उर गान ।८।
यतन अनेकों हो रहे, सुखकर सब सिरमौर ।
नव समाज निरमें रतन, सबल सरल सुख सौर ।९।
महावीर समझें सुबुधि, ग्राहें पथ उपदेश ।
निज पर हित सबको सधे, चमके भारत देश ।१०।
महावीर गुण अगम अति, जग जीवन हितदाय ।
कीर्ति थंभ कीने खड़े, निरपेक्षित दरशाय ।११।
जियो जियो जुग जुग जियो ! तुमसे गर्वित नाम ।
चिन, गौरव तुम देश हो, तुमसे गौख धाम ।१२।

श्री वर्धमानाय नमः

दोहा—विश्व विश्रुत दृढ़ नीति धर, होते नेक महान् ।
स्वयं जयी सु चतुष्ट वर, नमत रतन शुभ ध्यान ।१।
चौपाई—शौर्य वीर का अती महाना, महावीरता सौरभ थाना ।
निज बल वैभव स्वयं सुपाया, शिव सुख शाश्वत जगत दिखाया ।२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अमल अविनाशी सु छवि धारी, अचल ज्ञान दृग सुख अविकारी ।
गुण अनन्त वल वीरज आये, गये करम जड़ निज चमकाये ।३।
करमन शक्ति जग अतिभारी, जीव अधिक बल आत्म अधारी ।
जाने–माने सब बुध ज्ञानी, जीव करम विकृत अघ खानी ।४।
चेतन निज रम करम खपावे, निज आनद तव जीय सुहावे ।
जग में भ्रमे करम भरमावे, आनन्द दायक विकृति भावे ।५।
सुख दुख रच निज शकती खोवे, निज विन भाने शक्ति न होवे ।
स्वपर भेद पर से जो कोई, श्रद्धा अरू चरित्र निज जोई ।६।
जग भव की सब भ्रमणा खोवे, पाये अनुपम सुख में सोवे ।
जोलों थिरता निज नहिं होवे, पूरण परहित नाहीं वे वे ।७।
महावीर गुण पूजे कोई, धारे महावीर पद सोई ।
जग में तनिक भूल भरमावे, संयम तप जप व्यर्था जावे ।८।
बंचक निज हित भूल समावे, आडम्बर प्रिय काय सजावे ।
संत श्रेष्ठ पन मन को भावे, जग उदास भव में लपटावे ।९।
प्रक्त अज्ञ दीन आतम ओवे, अधिभार भ्रम भ्रम संजोवे ।
बहुते भव धर सुफल सु खोवे, आस करे पर ममत समोवे ।१०।
करण नयन मुख सब इक ठौरा, बुधिजन के कछु औरहि दौरा ।
निज गुण रम करते निज गौरा, मोह आस मद माया छोरा ।११।
पंच इन्द्रिय मन वश जो करते, निज सरूप लख आतम सजते ।
आतम स्वादी श्री जिनेन्द्रा, जग भव के तोड़ें सब फंदा ।१२।

दोहा दश लक्षण मय सुधरम धर, रतनात्रय निधि पूर ।
अनन्त चतुष्टय विमल सु, आतम रतन सु शूर ।१३।

चौपाई—निज पर पीड़ा कर निरमूला, स्व परणति रम आनद फूला ।
अगनि सुतप मध आत्म निखारे, दिपत अरणि जिमि हेम उजारे ।१।
थिरता पावे निज गुण राशी, दुठ करमन की छुटे भड़ासी ।
अविकारी परणति जो होवे, जनम मरण भय व्याधि विगोवे ।२।
सकल ताप तन भीति सु जावे, अमल चिदानद गुण चमकावे ।
सुख विलसे निरमलता होवे, बाधक जग ताको नहिं होवे ।३।
प्रापति स्वयं शक्ति सम करता, जैसी करणी तैसी भरता ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वैसा सुख निज पर को देवे, देव इंद्र, चक्री, शिव लेवे ।४।
गौरव प्रताप सु बल अमेवा महिमा ऋद्धि सिद्धि स्वमेवा ।
सत् संगति प्रिय सुजन सुलोगा, परिजन आदिक उत्तम योगा ।५।
सब सामग्री सुखकर पावे, आधि व्याधि दुख शोक भगावे ।
शाश्वत अविचल सुख सु होवे, शालि स तुष बिन बाधा खोवे ।३।

दोहा—सुख सुख वरपक हो सदा, शोक सौख्य तरु मूल ।
सु अभय निरभय रतन गुण विज्ञता, खोवे भव दुख शूल ।७।

सवैया—महावीर विभु की कथा, करे सकल कल्याण ।
पढ़े सुने जो भाव सों, ताको सौख्य महान् ॥
ताको सौख्य महान्, सम्पदा भारी पावे ।
जग काया कि नीति परख, सुनिज धरम जगावे ॥
सुख वैभव जग भोग, अंत थिर मोक्ष सु पावे ।
आत्म रतन गुण सिद्ध, अमल वसु करम नशावें ।१।

सवैया—मोहमहामद पीय जिय, बिसरे सुपद विवेक ।
क्रोध मान छल लोभ वश, बने अज्ञ स्वयमेव ॥
बने अज्ञ स्वयमेव, निडर हो करम कमावे ।
स्वांग धरे बहु भेव, चौरासी लख भटकावें ॥
जनम मरण दुख भरे, विकलता भारी पावे ।
धन्य धन्य वें लोग इन्हें जो रत्न नचावें ।२।

सवैया—ध्यानी ज्ञानी मुनि जती, अज्ञ विज्ञ सिद्ध बोद्ध ।
महत्वाकांक्षि दीन अरु, अयशी महा प्रसिद्ध ॥
अयशी महा प्रसिद्ध, फिरें सब माऐ मारे ।
बल मिथ्यात्व असिद्ध, कषे प्रमाद संवारे ॥
लहें न आतम बोध, स्वबल को नाहिं ध्यावें ॥
परमातम के दास, रतन नहिं शिव पद पावें ॥३॥

सवैया—महावीर सौरभ बढ़ो, पायो जब निज रूप ॥
पर परसत भ्रमत फिरे, लोभ, मोह मद भूप ॥
लोभ मोह मद भूप, बनें सब जग भरमाये ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लखो न स्व चिद्रूप, सुक्ख बल जासों आये।
सिंह महा अघ क्रूर, भयंकर पापा चारी।
व्रत धर मुनि से रतन, बने विभु वीर अवतारि।४।

सवैया—वीर महा बड़ देव, जगत में सुख विस्तारे।
तारे जीव अनेक, कर्म महाव्रती निवारे।
निवारे आठों कर्म, गुपति त्रि रूप संवारे।
मिथ्या योग कषाय, अरू परमाद विडारे।
दश भव पूरब यतन, करत निज रूप समारे।
सु अन्त रतन महावीर, बनें सुख विस्तारे।५।

सवैया—स्वात्म वीर चिंता अधिक, परहित अति उर चाह।
सरब जीव कल्याण कर, सुख को पथ दरशाय।
सुख को पथ दरशाय, जगत जी सुखी बनाऊं।
धन, बल, यौवन, राज, कोई सरमथ न पाऊं।
जिय हित उद्यम करूं, स्वपर जि सुखी बनाउं।
जड़ नहिं मेरा रतन, कणा क्यों कर ललचाऊं।६।

दोहा—सुख चाहो जो आपनो, जजो वीर भगवान।
सुर नर मुक्ती सम्पदा, सुलभ रतन सुख दानि।१।

चौपाई—समव शरण श्री वीर जिनेन्द्रा, आयो विपुलाचल सुख कन्दा।
षट् ऋतु के फल पुष्प सु आये, अचरज उर वन माली छाये।२।
मगन भयो विभु वीर निहारे, जगत जीव, भवि, तारण हारे।
डाली भरकर मन हरवायो, श्रेणिक नृप वर मोद सुनायो।३।
नृप चल सप्तवाद नुति कीनी, बनमाली धन मोद सु दीनी।
उर हरषो परिवार सजायो, सती चेलना अतिमन भायो।४।
दई नगर भेरी बजवाई, परिजन पुरजन सह नृप जाई।
समव शरण लख आनंद छायो, गजतें उतर शीश निज नायो।५।
चल पदाति पहुंचे महराजा, हरषित परि कर नगर समाजा।
निरखे विभुवर थुति बहु कीनी, योग थान लख आसन लीनी
दिव्य ध्वनि सुनि मोद सवायो, विनयी नृप प्रश्नत शिर नायो।।
छबि निरखत विभु राग समायो, कारण श्रवण विभु मन भायो।७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा—दिव्य ध्वनि सुनकर कहें, गौतम गण धर देव।
अहो ! महानृप सनहु सब, कारण हित सब भेव।

मंगाल चरण

दोहा—भू, भव, भुवि सब भार तज, निज सुभाव कर सिद्ध।
अमल विमलता वर सुखद, बंदत रतन समृद्धि ।१।
दोहा—जगती के रंग मंच पर रूपक बनें अनेक।
जगवासी बहु भेष धर, नृत्यत रहित विवेंक ।२।
महाशबर नृप पुरुखा, सुर भयो व्रत परभाव।
जय दिव तें मारिच भयो, संयम रतन सुभाव ।६।
छंद—अरवि मध भील, महा भयकार, महा मुद पूर, अति दुठ कारे।
कृष्ण सुतन-मन, कृष्ण महावन, महा अध धाम अधितम वारे।
फल पत्र हनें तरु काट गिरावत, आग लगावत भर हुंकारे।
पशु पक्षी हनें नर मुण्ड सजें, मांस मधु मद्य पीवन हारे।
शील संकोच बिना, बिन ज्ञान, करें अघ काम सु देह समारे।
मानुष तन निज पर-हित साधन, विन भेद रतन सु डारन हारे।

अवस्थित--कांड

मधुवन—पुरुरूवा भील

चौपाई—श्रेष्ठ सबन मध जम्बु द्वीपा, पूर्व विदेह क्षेत्र सुख रूपा।
पुष्कलावति देच गुण ग्रामा, सीता नद उत्तर अभिरामा।
सोहत भूमि महा रमणीया, पुण्डरी कनि पुरि पुण्डरीया।
मधुवन विकट महावन वामें, प्रकृति सौंदर्य अम्द्भुत तामें।
ऊंचे नीचे श्रृंग सुहावे, नाले श्रोते दाह बुझावें।
पावें पशु पंक्षी विश्रामा, क्रूर दुष्ट हिंसक को धामा।
महा सघन द्रुम बोलि भरणी भील बसें मुद धारत शरणी।
कृष्ण काय मन तिन तस करणी, महा भयंकर अघमय धरणी।
भील राज राजें पुरुरूवा, करत काज भीलन अनुरूवा।
गृहणि ता गृह कालिका नारी, अनुरूप विधि योग संवारी।
भयकर भय को भाव संमारे, क्रूर काल समं पशुता धारें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खोदें भू तरू पत्र विदारें, बाधें पशु नर पक्षि संहारें ।६।
आग लगा पुर ग्राम उजारें, लूट पाट कर डाके पारें ।।
मद्य मांस मधु के बहु भोगी, लंपट अधम तिया पर भोगी ।७।
जीवन भोजन अरू विश्रामा, विषय मगन अति अघ के धामा ।
डोलें अरध नगन तन धारी, वन वन भटकत पापा चारी ।८।

सोठा—आहार शयन भय काम, जीवन लघु संसार ।
रतन नहिं विश्राम, इन वश संसारी अबल ।१।
नर तन हीरा मोल अति, नहिं ताको कछु ज्ञान ।
चौ विधि संज्ञायें धरें, स्वातम रतन न भान ।२।

अपूर्व दर्शन—

चौपाई—गुरु मानो वन अघमय धामा, सागर सेन मुनी गुण ग्रामा ।
पूरव करंम निवारन काजे, स्वातम साधन हेतु विराजे ।१।
चरया कारण वन से जाहीं, सदा अभय मुनि आतम ध्याहीं ।
मुनिवर अटके पथ के माँहीं, पन्थ अनेक महावन ठाहीं ।२।
देखत शबरा वाण सजायो, मृगया कारण मोद सवायो ।
शबरी निरख शबर समझायो, काहे को यह वाण सजायो ।३।
श्रृंग सुरक्षक देव निहारो, इनके हले कहां निस्तारो ?
सबको महा पाप में डारो, बाधन योग न इनको मारो ।४।
सुनत शब्द डरपो वनराजा, धनुष पटक मन भक्ति सुसाजा ।
शाँत महा निरभय शुभ मूर्ती, वीत राग निरग्रंथ विभूती ।५।
चरण कमल परसत सुख पायो, नमन करत मन अति हरषायो ।
शान्त छबि लखमोद सवायो, बड़े भाग बड़ जोग सुभायो ।६।

सोरठा—धरम वृद्धि मुनिवर दई, करुणा उर में लाय ।
परसे पारम लोह कहुं, कनक रतन हो जाय ।७।

व्रतदान—ग्रहण

चौपाई—मुनिवर मारग धरम बतावें, धारण कर व्रत सुख सब आवें ।
धीरज धन बल ऋद्धि सु आवें, आधि व्याधि अघ दूर पलावे ।१।
व्रत बिन जीवन अति दुखदाई, नर भव निष्फल पशु सम भाई ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मद्य मांस मधु त्याग सुकीजे, उत्तम पंथ सुगति की सीझे ।२।
बोलो शबर सकुच अनुनायो, धरम भाव विभु मेरे आयो ।
शक्ति कहां हम गुरुवर पाही, साधन बुद्धि हीन तन छाही ।३।
गुरुवर हमको तुमहिं उबारो, ऐसो कहो जु हो निस्तारो ।
पामर, दीन, अज्ञ हम स्वामी, अधम उधारन तुम बड़ नामी ।४।
जान भव्य गुरु करुणा कीनी, स्थिति सरलता लख उर लीनी ।
धरम बीज इक सुगुरू जमायो, काग माँस इक ताहि छुड़ायो ।५।
उत्तम रुचि भाग ते आवे, बिगड़ो काज सहज बन जावे ।
धरकर महा विनय व्रत लीयो, सुलटो भीलराज को हीयो ।६।
पुनि पुनि नायो चरनन शीशा, पायो जन्म लाभ वन धीशा ।
मुनि पद कमल धरत निजहीये, सात्विक भाव सुव्रत गह लिये ।७।

दोहा—व्रत पाले हरषे महा, अति उर धरम सुराग ।
लखे रतन निज दीनता, सुगण हृदय अनुराग ।७।

व्रती प्ररीक्षा

चौपाई—धारत सुव्रत ऐसा आया, अवसर रतन परीक्षा लाया ।
व्याधी व्यापी ताकी देही, कर उपचार बढ़त बहु भेयी ।१।
वेदी गुणी जतन कर हारे, जड़ी जन्त्र नहिं काज समारे ।
इक वेदी तब मंत्र सुनायो, काग मांस याको हित दायो ।२।
अवर न औखद या तन लागू, सुख कारण बस यही समागू ।
शबरी विकल अखल परिवारा, नयन भरे जल उमगत धारा ।३।
बोलो शबर भले तन जावे, धरम मणी बिन व्रत न आवे ।
काया रहि है व्रत सु हो है ? सकल कहत हठ योग न ये है ।४।
खा इक बारा व्रत फिर कीजो, सबको हित गुण माथे सीझो ।
काया पुनि पुनि जियरा पावें; दुरलभ धरम योग बन आवे ।५।

दोहा—धरम तजूं नहि-प्राण हित, सदगुरू दीनो मोय ।
चौरासी भमते फिरे, काय रतन बुध जोय ।६।

मित्र—मिलन

चौपाई—परिजन मिल सब करत विचारा, आई याकी नाहिं पसारा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करो उपाय और इक सोई, देओ मीत संदेशा जोई ।१।
शायद कारण तव सध जावे, मीत कहे खा ! तो बच जावे ।
धावन झटपट धावत धायो, सारसपुर संदेश सुनायो ।२।
आई बात मीत ढिग पाहीं, सुनत भयो व्याकुल अधिकाहीं ।
सारसपुर तें तुरतहिं चालो, सगुन साथ नहिं सोधो भालो ।३।
टूटे पांव भगत सो आयो, नेह मीत का उर में छायो ।
इन वन छांड़ो दूजो पायो, वासे आगे बढ़कर धायो ।४।
महाविकट अटवी मध आयो, देवी रुदित लखे भरमायो ।
धिग! धिग] कौन महा दुठ त्यागी, किलपत कैसी यह बड़भागी ।५।
धार दया बोलो सुन बहनी, काहे रोवें गुण धर जननी ।
बोली सुनो पथिक मृदु बैनी, बाढ़ी तुम निरखत बेचैनी ।६।
मैं बनदेवी कौन सतावे, पूज सकल मोसों सुख पावे ।
मित्र तिहारो जु मधुबन पाहीं, मन भेंटनता तुम अकुलाही ।७।

दोहा—जाओ तुम व्रत तोड़ने, वाको बड़ो अकाल ।
व्रत धरते होमो धनी, टूटे नरक समाज ।८।

।' अपूर्व व्रत दृढ़ता ।।

चौपाई—लखकर तुमको मोह सतायो, अन्तर व्यथा, अश्रु छलकायो ।
दई सांतना धीरज राखो, पुर है जो मन तुम अभिलाखो ।१।
चलते चलते मधुवन आयो, तासों धीरज आयो ।
मति जुहारत सब सुख पाये, नयन अश्रु सुमोद जनाये ।२।
जन परिजन सब घिर कर आये, अपने मन की बात सुनाये ।
सकल सुनी फिर पूछी मीता, क्षेम कुशल सब रीति पुनीता ।३।
परखनता मन बात बनाई, कहां मीत तुम भूले भाई ।
औखद गुणी कहें सो खाओ, धरम भील को यही बतायो ।४।
बोलो शबर मनुज तन पायो, गुरू मुख धरम गहत मन भायो ।
अन्यन कोई गुरू कीमानी, गुरू दयाल दीनी अघ हानी ।५।
लखकर तुमको यह मन भावें, संतुष्टो योंहि काय दगावे ।
सकल मास अब देऊं छोड़ी, दिखे अवरधा मेरी थोड़ी ।६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा—मन तासों यह कामना, देहु धरम पथ साथ ।
जावे तन राखूं धरम, धरो रतन उर माथ ।७।

अणुव्रती शबर, मरण, स्वर्ग-प्राप्ति

चौपाई—कोई मांस न अब मैं खैहों, जीवन अपनो सफल बनेहीं ।
निश्चय मरनो या जगरीती, अमर सदा जो तजते भीती ।१।
सब सुख शाकाहारी पावें, यौवन बल गुण वय गुण आवें ।
मनमें हरबो खदिर सवायो, मन भायो सब मीत सुनायो ।२।
शबर शांत मन छोड़ देही, दिवस तीन थी वाकी ये ही ।
अन्तकाल तक दृढ़ व्रत हूओ, शुभ भावन को शुभ लीओ ।३।
सुरगति सुख तन, त्यागत पायो, महा ऋद्धि तन अतिदुति भायो ।
सोवत सेज उठत हरवावे, कैसो मनहर क्षेत्र सुहावे ।४।
कौन कहा यह मैं कहं आयो, कैसो सुंदर सुवन सुभायो ।
यौवनवंत भयो क्षण मांहीं, महाविभव परिकर सुखदाहीं ।५।
परिजन मिलकर सब समझाये, दिवि उत्तम यह मन को भाये ।
स्वामी सबके तुम हो नामी, सेवक हम सब सुखद सदाहीं ।६।
व्रत प्रभाव जानो विज्ञानी, शुचिताकारण शुचि मनयानी ।
श्रीजिन बंदत शुचिता आनी, पूजत चरण महा सुखखानी ।७।
विभव भोग भोगे अनुसारी, धरम भाव सुख जगमें भारी ।
इकसागर यों पूरण कीने, महामोद शुचि मंगल भीने ।८।

दोहा—अनुपम सुख सुर सुरिनसह, विलसे रतन बनाय ।
चयकर चक्री सुत भरत, मारिच नाम सुहाय ।९।

सोरठा—व्रत संयम सुख रूप, धारे जो सुख सोलहे ।
क्रमसे रतन शिवभूप, विन सम्यक जग में भ्रमे ।१०।

यक्षणी भेंट, सयम महात्म्य दर्शन

चौपाई—अप्तेष्ठी कर विध अनुसारा, लौटो खदिर सुमन गुरु भारा ।
शोक भरो मग धावत जाहीं, जग में अथिर प्रीति सब कांही ।१।
अटवी वही परी मग आई, वही नारि रोवत लख पाई ।
बोलो खदिरा अब क्यों रोवे, व्रत धर साथी मेरो जो है ।२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैसी चाहत तू मन माहीं, विघना बात रची ता ठाहीं ।
फफक उठी सुनकर सुकुमारी, मती तिहारे की गति न्यारी ।३।
अन्तकाल सब आमिष त्यागे, दृढ़ता धर समता अनुरागे ।
महामुनी पद ध्यान लगायो, प्रथम सुरगमरते उपजायो ।४।
एकहि माँस काग जो तजतो, पिय होतो तब मेरो तबतो ।
प्रथम सुरग में सुख अति पावे, परिकर वैभव सुख विलसावे ।५।
अतुल ऋद्धि धारक वर वीरा, मोसम बहुतक चेरी धीरा ।
सुभग सुसुँदर काया धारे, विभव महा नयना रतनारे ।६।

दोहा—व्रत प्रभाव अनुपम अहा ! उर धारत गुणवान ।
अन्तकाल शिव पायेंगे, चारित्र रतन महान ।७।

चौपाई—चक्री भरतेश्वर गृह रानी, अनन्तमाति सोहत गुण खानी ।
महा सरूपा शशि दुतिधारे, शील शिरोमणि पिय अनुसारे ।१।
चयकर आयो, उर सुरजीवा, व्रत प्रभाव हो सुक्ख सदीवा ।
शुभ भावन को फल शुभ भेवा, पाये पितृ महाऋषभ षुयेवा ।२।
सुभग सरूप काँति शुभधारा, पूर्ण चंद्र सम दिपत कुमारा ।
आनंद सकस लोक अति भायो, मारिच कुंवर नाम तब पायो ।३।
कीनो नगर उछाह विशेषा, घोष बधाई वाद्य अनेका ।
कुल शोभा कुल चंद्र दिपावे, शरद ऋतु महाशशि चमकावे ।४।
दृढ़ता व्रत की अति सुखदाया, मरण होम पै, व्रत न जाया ।
षुव्रत बीज धरम भू पूरे, सुरग मुक्ति सुख जग विस्तारे ।५।

दोहा—प्रगट सफलता व्रत तनी, भील भयो सुर आय ।
उत्तम कुल वैभव रतन अतुल मिलो सब आय ।६।

— करम भूमि —

चौपाई—प्रथम तीर्थंकर भु पै आये, आदिनाथ वृष देव कहाये ।
चतर्थकाल सु आदि विधाता, कर्म भुमि में भाग्य विधाता ।१।
काज करण हित रीति बताई, की रचना त्रिवरण समुदाई ।
सँरक्षक जी क्षत्रिय मानो, पोषक सब हित वैस सुजानो ।२।
सेव करत जो सब हितदाई, शुद्र विवेक रहित अधिकाई ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असि, मसि, कृषि, शिल्प वाणिजाये, सेवा गौ की वर्ण बनाये।
शशि रवि उड़गन सब सुखदाई, दरशक काल चक्र हितदाई।
लिपि सुब्राही भाषा बनाई, सब समाज हित रीति समाई।
कला बहत्तर सब दरशाईं, मेटा दुख बुधि की पवनाईं।
सब समाज ने आनन्द पायो, जय जयकार सुयश जय छायो।
चारों चरण सौख्य अति लाये, धन तन वैभव कुलहिं सुहाये।
पुत्र सुपौच गुण वीर समाजा, महा प्रताप ऋषभ महराजा।
ब्राह्मी सुँदरि पुत्री द्वै, शतक एक सुतसार।
उड़गन नभ जिमि शशि दिपे, ऋषभ रतन परिवार।७।

— ऋषभदेव वैभव —

सभी सुभगं दुति, गौरवधारी, आदिनाथ के पौत्र हजारी। दो
बल विद्या सुद्धि गुण सुखदाई, ऐक ऐक से बढ़ अधिकाई।१।
महाविभू लख मोदित होते, अनुपम आनद हृदय सजोते।
शौर्य धैर्य धर पुत्र सुहावें, नभ मंडल तारे दमकावें।२।
जग वैभव चरणन में लोटे, चारों चरण सुक्ख भर भेंटे। चौ
पुण्यवान नर कानहिं पावे, अनुपम कौशल करम दिपावे।
चरण परत सुरपति सुख पावें, पाद पद्मरज शीश चढ़ावें।
कल्याणोत्सव कर हरषावें, धरम भक्ति गुण : जनावें।
इन्द्रिय जयता, जग सुखदाई, आनंद उभय लोक अधिकाई।
व्रत सँयम तप जिनने कीना, करम निरजरे आतम चीन्हा।
धन वैभव अरु स्वस्थता, गृह कुलवंती नार।
पुत्र पौत्र गुण शीलता, पुण्य रतन, फलसार।६।

— कौशल देश महिमा —

कवित्त—कौशल देश मनोहर सोहत, पावन भूमि रतन सुखदाई।
जह पै जन्म लियो तीर्थंकर, महा त अधिकाई।
पुण्य पुरुष की अति पुण्य धरा, चक्री पद्मारायण गाई।
धन धान्य सु पूरितरम्य मही, जन्म-धरन सुरमन ललचाई। दो
चौपाई—धान्यादिक धन देश सुहाना, नर नारिन मन नन्द सुहाना

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुखकर धरणी ऋतु सुखदाई, शीत उष्ण नहिं बाधक काई ।१।
सुखद वसंत सुजन आराधा, ग्रीष्म हरत शीत की बाधा ।
नव किसलैयां नव-नव आतीं, कोयल कूक सुमन को भाती ।२।
नवें फ़ूल फल भार सुशाखा, सुजन नमत वैभव सुख पाखा ।
शीतल स्वच्छ नद जल सरवर, चलत समीर सुखद मृदु श्रमहार ।३।
पके धान द्रुम फल धर आये, नृप बसंत ऋतु भेंट चढ़ाये ।
वैभव नीच नाहिं परमाने, निज प्रताप गर्वित मनमाने ।४।
ग्रीषम आग लगावत छावे, जीव प्रकृति सब अति अकुलावे ।
सूखें ताल नदी सिमटावे, बरसत अगनि पवन झुलसावे ।५।
पशु पक्षी जु व्याकुल अधिकाई, भू उर फटत लख पीरपराई ।
पर दुख विहंस निरख अधिकाने, दुरजन ताप दहत मुद ठाने ।६।

दोहा—पंथी मग नहिं पग धरें, व्याधारतन अथाह ।
अमरित फल पक झर गिरें, शीतलता फलदाय ।७।
अधिक तपन जग मल हरे, धरणी शकति समाय ।
पायसमय आवें सुफल, रतन जीव सुख पाय ।८।

चौपाई—कठिन तपन उर भू अकुलाई, प्रावृट नयनन धार बहाई ।
नभ नहिं कृपण नाहिं अधमाई, मेघ उमड़ भू तपन जुड़ाई ।१।
अंकुर उठे भूमि निरयाई, चारों दिश हरियाली छाई ।
अनिल मेघावलि सुमख लाये, यत्र तत्र सखत्र सुख लहराये ।२।
नदियां ताल भरे उमगाये, नरवों के अति धूम उछाये ।
नव यौवन उछलत सरितायें, स्पन्दन भी मुर्दों में आयें ।३।
शुभ्र हुआ जलपा शरदाई, उज्वल शशि की मेघ मिचाई ।
सज्जन मन की सज्जनताई, नवे शालि निज की गरिमाई ।४।
चाल अरुण शुभ नीक दिपाई, दीपानली अघ ताप पलाई ।
तिल सरसों की भल ठकुराई, विपथ अरुण लख हिमंति छाई ।५।
शिशिर शीत में शी–शीकाई, गेहूं उड़द चना गरभाई ।
स्वस्थ सुखद ठंडी सुखदाई, नव बल जीवन आंचल लाई ।६।

दोहा—षट ऋतुयें मनहर सदा, सुखद फूल फलसार ।
सकृत सुफल सुरतन लखो, आदिश्वर अवतार ।७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अयोध्या महत्व

चौपाई—पावन नयरि अयोध्या तामें, आये ऋषभ देव विभु जामें।
धर्म तीर्थंकर अवनि विराजें, जिनके पंच कल्याणक साजें।
धरम करम सब रीति बताई, भवि सरोज रवि विभु सुखदाई।
वह सुगंध मृदु मंदु समीरा, मन तन ताप हरत दुख चूरा।३
शशि रवि ग्रह सब ज्योति जगावें, उड़गन सुन्दर सुखद सुहावें।
नर नारिन मन प्रीति मिताई, द्रुम संग बेलि जिमि लपटाई।
धरम गहे सब सम्पति होई, पर दुख देख सकें नहिं कोई।
दीन भिक्षु नहीं परें दिखाई, धैर्य-शौर्य-बल अति गरिमाई।४
सरल स्वभाव मृदुमन भाई, शील संतोष नेह अधिकाई।
करें परस्पर सब सहयोगा, सुख दुख में समरस इक योगा।

दोहा—धरम नेह सब चित धरें, माधुरता अधिकाय।
कपट दम्भ अलीक नहीं, माया रतन न भाय।६।

लोक नीति

चौपाई—परिग्रह तृष्णा अघतम करणा, सुख मेटें दुख देंय अवरणा।
सूझ समझ विन सो मति भोरा, अबुधि पाषण हृदय मन घोरा।
जो नहिं जाने पर दुख पीड़ा, सो प्रत्यक्ष नरक का कीड़ा।
जाने, माने, सुनीति चालें, धरम धार सब विपदा टालें।
न्याय नीति सत सब मन आने, दशधा धरम क्षमादिक माने।
निज निज काज करत हरषावें, स्वावलम्ब पर मोद बढ़ावें।
सुखी होंय निज करतब करके, मुदित होंय पर संकट हरके।
अति सनेह धर वात्सल पालें, ललक उमग उर ममत सुचालें।
शुभ्र भवन मनहर छबि भारी, वन उपवन शोभा सुखकारी।
बाग तड़ाग हाट सुखदाई, वारिध रत्न प्रपूरित गाई।
धान विविध विधि ढेर सुहावन, मोदक तन मन नंदन कानन।
मुक्तामाणिक वज्र सुहावें, कनक रतन रूपा छबि छावें।

दोहा—नर नारी सुँदर सुमन, प्रीत रीत व्यौहार।
मोहक पथ मग जोहती, नगर अयोध्या सार।७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नीलांजना नृत्य, ऋषभ दरबार

चौपाई—नरपति आदिनाथ महाराजा, महायशस्वी सुत नाभिराजा ।
मरुदेवी माता गुणखानी, विरदत थकें मुनि, सुर ज्ञानी ।१।
पूरव पुण्य महाफल लाग्रो, सुख वारिध उमगत सरसायो ।
सुर नर असुर करत पदसेवा, सिद्धि ऋद्धि बहु मंगल देवा ।२।
पालक जन रंजन महाराजा, लोक नयन तारा अनुसाजा ।
पूर्व तिरासी क्षण सम बीते, पुत्र पौत्र गणमान्य सुभीते ।३।
जुगगरिमा जन गौरवताई, महा प्रतिष्ठ देव शरणाई ।
शशि समसोहत वृष महराजा, जन, दरबारें नृपति समाजा ।४।
सुरि नीलांजना नृत्य सुहाई, दीपत मुख नव अंग नवाई ।
मोहिंत सकल नृपति गण सारे, धन्य धन्य शुभवचन उचारे ।५।
सोहत तन सुंदरता पाये, उपमा को जो सुगुण समाये ।
कनक अरणि जिमि परत सुहागा, दीपत दुति मनहर गुण रागा ।६।

दोहा—लघु मण्डल रवि सम दिपे, कनक सुरूप सँमार ।
प्रियवदनी अति प्रिय रतन, यौवन रूप शृंगार ।७।

ऋषभदेव वैराग्य नीलांजना चयन

चौपाई—नटत अप्सरा सुगुण सुहाई, वाणी हाव-भाव कुटिलाई ।
यौवन रूप कला चपलाई, मुदित न भोगी बुद्धि गमाई ।१।
वस्याभरण दमक अधिकाई, सौंदर्य मूर्ति उतरख आई ।
ज्ञानी ध्यानि मुनि मन डोले, मोही जन मन सकल उछेले ।२।
सकल सदन विभ्रम मद छायो, स्कंधनिलाँजन वपु बिलायो ।
दूषी तत्सम सभा समारी, लखन परी घटना कोई भारी ।३।
सकीं न छिप विभुसे ये बाता, चित हुआ क्षण जगका नाता ।
ज्ञान तिमिर बिन मोह उजासे, आर्थर पदारथ भाषे तासे ।४।
सुभगकाय तिरखतहिं बिलाई, सकत न रख क्षण, को अधिकाई
जगत शरण नहिं कोई सहाई, मंत्र तंत्र मणि नाहिं बसाई ।५।

दोहा—दुख पूरित जगरतन यह, मधु लिपटी असिधार ।
जीव अकेला अवतरे, चले न कोई लार ।६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऋषभ देव विरागता

चौपाई—कैसे हो परसंगी याके, काया संगी नहिं जब ताके।
मलकी खानि सदा मल धरणी, उपजत मलकर मल वैतरणी ।१।
अज्ञ बने हम करम चिपटाये, विसर सुपद भव मांहि लुभाये।
इन्द्रिय निग्रह कर यदि चलते, जग विग्रह सब दुख परिहरते ।२।
आतम लीन कहीं जो होते, पराधीन सम दुख नहिं ढोते।
लोभ तनिक वश वहु दुख पाये, ज्यों माखी कफ में लपटाये ।३।
मतंग पतंग कुरंग कहाये, अलि शल अक्ष-विषय दुक्ख पाये।
परवश, इक इन्द्री विलसाये, पांजो स्व जग जी बिलखाये ।४।
फिरे भटकते जग के मांही, निज विवेक बिना अज्ञ सदाहीं।
सम्यक धर्म रत्नात्रय धरते, सकल करम हर शिव सुख वरते ।५।
जागे जब तव मान सबेरा, मेंटे भोग भ्रमण जग फेरा।
सद् विवेक चिंतामणि आयो, कैसे देऊं हाथ गमायो ।६।
दोहा—बिबुध तरंग उमगी हृदय, ब्रह्म ऋषि तब आय।
जय जय कर धनि धनि कहें, नमें रतन गुणवाय ।७।

लौंकांतिक देव स्तवन

चौपाई—परम विचार प्रभु तुम कीना, नरभव लाहो गह सुख भीना।
अनंतकाल वीता जग भ्रमते, धरे भाव भवके अनगिनते ।१।
लोक तीन सब बहु फिर आये, स्वातम सम्यक काल न पाये।
धन्य भाग शुभ अवसर आया, निज हित उर विभु ध्यान समाया ।२।
स्व चतुष्टयी आतम राया, गुण पर्याय द्रव्य मन भाया।
सुस्थिर द्रव्यें अपवे बल से, अन्य न परका कुछ भी करते ।३।
निज सुभाव जिय भेद न पावे, बने दीन जग, जन भटकावे।
निजशक्ति सुध सुबुधि जागी, सकल उपाधि अगतकी भागी ।४।
किये करम पूरब मन हुलसे, निज स्वभाव धर उन आ विलसे।
निजमें निजको रूप सुहायो, निज रस पा पर भाव विगायो ।५।
दोहा—निज कर निजमें निज रमो, परमातम सुखदाय।
जगत काय गुण रीति लख, ज्ञायक रतन सुभाय ।६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौपाई—सब जानो विभु तुम ये रीती, देंह भोग जग बीती नीती ।
बाल बुद्धि हम हीन सु शकती, बनें न हमसे विभु तुम भकती ।
सफल करो वय काल सुहानो, गरवित करो मनुज भव पानो ।
बिना व्याधि मन तन जब होही, कारण अक्षन सुं सिद्ध सोई ।२।
ध्यान बने तव ही तपरीती, सधे शुद्धातम की तव प्रीती ।
चूके अवसर पुनह न पावे गया दिवस जिम लौट न आवे ।
अक्ष शिथिल भवे तपना होवे, का वर्षा जब कृषि सुखावे ।३।
काल लब्धि विभु तुमने पाई, शुभस्य शीघ्र जग सुखदाई ।
बल वैभव सुख तन द्युति धारी, सधे न तप हमसे अघहारी ।४।
मानुष तन विभु कब हम पावें, निजपर हितकर शिव पद धावें ।
शुद्ध चिदातम की यह प्रीती, मिटे तपन सब करम अनीती ।५।
करम निवार चतुष्टय पाओ, जयहो ! जयहो! सब करम मिटाओ
परगट काल लब्धि सुखदाई, पावे गौरव तुम महिमाई ।६।

दोहा—करी विनय बहु प्रतिधर, निज नियोग की रीति ।
बिदा भये सब ब्रह्म ऋषि, भक्ति रतन गुण नीति ।७।

वैराग्य-प्राबल्यता—

चौपाई—अति आनन्द प्रभु मन आया, अरनि पवन वाले अधिकाया ।
जब सम्पूरण तृपति जु आवे, स्वबल उमग, उमग बल लावे ।१।
पथ भटका पंथी पथ पावे, सिद्धि प्रत्यक्ष रु सुगम दिखावे ।
जाहि सराहें जो गुण मूला, चिंतत लहर बढ़े अनुकूला ।२।
वारधि क्षुभित पवन कहुं पावे, चन्द्रोदय लख ज्वार उपावे ।
समरथ कौन जुरोके ताहीं ? वायु अनुकूल पलट सुख पाहीं ।३।
लगे अथिर जग नाते सारे, इंद्रिय भोग लगे दुख कारे ।
शरण अकेला आतम रामा, करम विनाशक सब सुख धामा ।४।
चारों गति में दुरस्व ही होवे, ओर नहिं भटकत क्यों सोवे ।
बंध शुभा शुभ सो फल आवे, अपना करम सु जीव उठावे ।५।
पर से भिन्न अकेला चेतन, साथ सदा नहिं साथी ये तन ।
मल कर मल से ये उपजाया, अशुचि महाये सुंदर काया ।६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धरम शरण, निज बल आचरणा, धर सुयोग अब करम निवरना।
काल अनंता भ्रमत गवांये, अब तट आये सब झट जाये।७।

दोहा—दृढ़ विचार परगट किये, अकुलाने सब लोग।
प्रभु उर आनद अति बढ़ो, गयो रतन सब शोग॥

स्वजन-चिंता

चौपाई—प्रगटी बात कान करि काना, विस्मय कारी अरु अनजाना।
विस्मित भये सकल चकराहीं, कैसा योग सु प्रभु धराहीं।१।
मात सुता—सुत, पितु अकुलाये, पौत्र बधू बधु परिकर धाये।
यथा योग सब आन विराजे, विलख वदन विनवे मन लाजे।
करते विनय सकल बहु भाँसी, विनवै चरण, शरण, गुण धाती।
करि हैं भक्ति बहुत मन लाई, सकल करें जो नाथ सुहाई।३।
अबकी बेर क्षमहु विभु सबहीं, करें, सेव पूरी सब नितहीं।
बाल बुद्धि मति हीन अनारी, करी क्षमा सब अबुधि हमारी।४।
क्षमा किये बड़ अति अपराधा, क्षोभ अकारण अब विभु साधा।
दुरलभ वस्तु जगत जो कोई, लावें सहज चरण ढिग सोई।५।
आज्ञा नाथ तुमारी पावें, शत ब्रह्माँड ढूंढ हम लावें॥
दुरलभ हमें न जग में कोई, चरण प्रसाद सु विभु ढिग सोई।६।
जन गण मन सब विरद बखानें, बिन कारण विभु क्यों अकुलानें।
विभु तुमने इस भाँति सधाया, कठिन कछू न हे जगराया।७॥
विनवे नाथ अब होहु प्रसन्ना, सकल दुक्ख मेटहु अवसन्ना।
सदा तुम्हारे हैं हम प्यारे, बिन तुम अब को नाथ दुलारे।८।

दोहा—कौन चूक कासे भई, प्रभु हम अज्ञ अबोध।
करहु क्षमा प्रभु दोष तज, रतन होय मन बोध।९।
करी विनय बहु भक्ति कर, बल पौरुष अनुसार।
नये नयन विसुरत रतन, दुख का वारन पार।१०।

ऋषभ देव का प्रतिबोधन

चौपाई—विरद सुनत कछु क्षोभ न आया, अचल मेरु समश्री वृष राया।
बोले मधुर सु हितकर वाणी, निज विषाद तज चितो प्राणी।१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काल अनंता हमने खोया, ना ही आतम निधि अवलोया।
दीरघ वीत गई यह आयू, विलसत मोह तरस न काहू ।२।
सब विधि सबने की सेवाई, पूर्व कमाई हमने खाई।
सब जन सज्जन हितू हमारे, कारज सब तुम सहज समारे ।३।
चाह रही न अब कुछ कोई, कहों कहा अब तुमसे सोई।
अब उमंग हित भागन आई, शिव मारग अब सुहति लखाई ।४।
ममत मोह तज निजपद धारों, जग उपाधि तज मुकति समारों
कबहु बात नहिं अपन गिराई, कारज शुभ यह होहु सहाई। ५।
मन वच काय सकल वश मेरे, धरम प्रीत उर मांहि उजेरे।
गौरव वृष जिन अधिक बढ़ाऊं, सकल सुहित सुरीति दरशाऊं ।६।

दोहा—सकल रतन हितकाज में, बरसाओ आनन्द।
क्षमो सकल मो भूल को, धरो रम सुखकन्द ।७।

कवित्त—मात-पिता सुत, साथि सखा तिय, सुनते परिवार सभी जुर धाये।
कारण कौन सो आज, भयो नयो, क्षोभ धरें जगनाथ रिसाये ।।
सब आन गहे चरणा विभुके, छोड़ कहां सब जात सिधाये।
सेवक हैं हम, सब दीन अबुध, स्वामि शरण सुरतन सुख पाये ।१।
बोले विभु काहे मोह धरो, कोय न जग में जीव सहाई।
यौवन रूप औ धाम धरा, कर्महु आगे न जोर चलाई ।।
धन धान सु संपति, ऋद्धि सिद्धि, अंत तजें सब काम न आईं।
क्यों ना तजूं निज भेद लहो, धरम रतन गह सरब भलाई ।२।
लेओ धरा-धन-धान समाज, करो हित साज वरो विभुताई।
ज्ञान बिना रत्न भूले रहे, आज निजताम की सुध आई ।।
सुदीरघ आयु व्यतीत भई, काल अनन्त सहे दुख भाई।
जनम जरा मर, दाह सहे बहु, संवेग रतन शिव पंथ सुहाई ।३।
जाप बसों वन मांहि एकान्त, धरों निज ध्यान सुशांत सदाई।
आपमें आपहिं सुलीन रहों, निज रूप सजों, वसु कर्म नंसाई।
दुष्ट करम को ठाठ बड़ो अति, निज रुप लखन सुदावन पाई।
छल इनके हम, मोह रहे बहु, आज रतन निज की सुध आई ।४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संतोषामृत

चौपाई—सुनत भये तोषित नर नारी, विषाद हरष सरव इकतारी।
सूझत राह नहिं अबव दिखाइ, कौन भाँति विभुवर समझाई।१।
कहे वचन सुन सबहिं सुहाये, कौतूहल मन में उपजाये।
देश दिये सब सुतहिं बताये, यथा योग शुभ नीति सुनाये।२।
धरा धाम धन सबको दीने, रुचि अनुसार सबन ने लीने।
दान मान कर सब सन्तोषे, स्वइच्छा सों कछुक विशेषे।३।
बाहूबलि सुदेश जू दीना, पोदनपुर वर गौरव भीना।
निजपद निभुवर भरतहिं दीन्हा, आप निशल्य होय मग लीना।४।
माता पितादिक सब परिवारा, सोंपे भरतहिं सुगुण भण्डारा।
दई सीख नृप भरतहिं केरी, न्याय नीति वृष प्रीति घनेरी।५।
प्रजा सरब तुम सुत सम मानो, नीति विचारसु दुख पर हानो।
धरम, रीति चल सब सुख पै हो, श्रावक धर्म सजो सुख लेहो।६।
षट आवश्यक श्रावक केरे, मूल अष्ट गुण गह सुत मेरे।
गुणी जनन सु आदर देहो, सत संगति कर अति सुख ले हो।७।
मन जैसी नृप नीति चितारे, चलत प्रजा तैसे अनुसारे।
धरीं सीख चित भरतहिं साजा, शीश मुकुट सौहें महराजा।८।
सुहर्ष विषाद बीच उतराने, धीरज धर उर समता आने।
नायो पुनि पुनि पितु पदमाथा, धरत हृदय विभु पुणगण गाथा।९।

दोहा—करी प्रतिज्ञा भरत जब, शब्द हुओ जयकार।
वज्र स्वयं गुण काँतिमय, शाणत रतन निखार।१०।

चौपाई—दीक्षा को बहु सुत उमगाने, यह उगाल हम कैसे सानें।
जाको विभुवर तृण सम त्यागें, लख अहित सुग्रहत विरागें।१।
सुखयामें जो कुछ अति होतो, जाते तज विभु कैसे तो-तो।
आतम रूप महा सुख भरता, यासे नर भव सागर तरता।२।
अब हम ना कछु सम्पति चाहें, पर आश्रित दानत्व सदा है।
धरें योग हम हू विभु आगे, प्रीति भीति सब जग की त्यागे।३।
चार सहस नृप धर समताई, मुनिपद धारन हिय उमगाई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धरम बुद्धि, मन नारी आगे, मन आर्या होवे उमगाके।
ब्राह्मी सुन्दरि विभु वर तनया, दीक्षित आर्या हों अनुननया।
कुल गौरव बुधि प्रखर उद्योना, मारिच भरत तनुज विभु पोता।५।
ध्यान ज्ञान गुण अधिक अमाने, श्रेष्ठ लखत, निज गौरव माने।
कही काहु की बात न भाने, मुनी वनन अति बान सु ठाने।६।

दोहा—सब विषाद विघटो रतन, सुरसरि धरम सु तीर।
कायर कंपेये शंक मन, उमगो हिय वृषवीर।७।

सौधर्मेन्द्रावगमन—

चौपाई—सौधर्म सिंहासन तत्क्षण डोला, मेर समान मन प्रभु अडोला।
अवधि ज्ञान बल लख सुरराजा, सज परिकर निज सकल समाजा।१।
ऋषभ देव पद नभ दिविराजा, धरें मोद, निरके महराजा।
शीश नवाय विनय थुति कींनि, सकल सुविधि तपकर गुण भीनी।२।
सकल सभा नृप भरतहिं चीन्हा, बन निशल्य विभु बन मगलीना।
शिविका शुचितम सुभग बनाई, कनक रतन मणि जड़ित सुहाई।३।
जय जय कर सब हरष जनाये, शिविका मांहीं विभु बैठाये।
आभरणादिक बहु परिधानो, जगत साज अंतिम बहुमानो।४।
न्हौन सविधि सब ठाठ बनाये, लखत विभु वपू दिवत सुहाये।
कोटिक शशि रवि सेज सुलाजें, शांना छबि विभु अनहद बाजें।५।

दोहा—इन्द्र मुद्रित वश प्रीति के, धरम सुमग मणिहार।
सजे साज सब सुविधिकर, सिद्धि रतन चितधार।६।
अंतर मल तम हरन को, शकति विभू के पास।
प्रकाशित कर रतन हिय, शशि रवि थके उजास।७।

संयम-महत्व—

चौपाई—नरन शोर सुखति चित दीना, मधुर वचन बोले गुण भीना।
सकल उछाह करत हम आये, कारण अब का शोर बनाये।१।
कही नरन तुम हो बड़ भागी, सेवक निभु चरणन अनुरागी।
शोर बिना तुम कारज साधे, आज शोर का करन अराधे।२।
धीरहो संगे, विभु का दीक्षा, जग पावें सुख रीति सु शिक्षा।
साथ प्रभु के हम जो जावें, आसन मांडत्रि योग सधावें।३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसो कछु हो करन विचारे, करो झटति कारज तुम प्यारे।
शौर्य धैर्य बल वीरज शकती, युक्ति भुक्ति सुभक्ति अनुरक्ती कती
सब प्रकार विधिमम अनुकूला, धर न सकें संयम सुख मूला।
देओ इक क्षण हमको कोई, सुर-आसन लेओ खुश होई ।५
सकोन कर जो यह निखारो, चुनो वाहि जासों निसतारो।
सुरपति कीं सुन दीन सु बाणी, प्रीत धार नर कीन सयानी ।६

दोहा—सात सुपद चल संयमी, खेचर भी तस कीन।
इन्द्र रतन शिवका धरी, बन प्रस्थान नवीन ।७।

दीक्षा-स्थल—

चौपाई—जय जयकार सकल मिल कीना, साथ विषाद हरष उर भीना।
वन नांही शिविका पधराई, ऋषभ देव विभु महिमा गाई ।१
शिला सिंहासन विभुवर लीना, पट आभरण त्याग सब दीना।
लक्ष्य मुकति का विभु ने साधा, अनुपम निजानन्द आराधा ।२
नमो सिद्धः कह आसन मांडा, पंच मुष्ठि से केश उपाड़ा।
प्रगटित भई ज्ञान गुण जोती, उपजो मन परजयता सेती ।३
षट मासिक धर योग नवीना, निश्चल विभु मन मौन सुलीन।
विभु सम बहु नृप योग लगाये, आज्ञा दें विभु आस लगाये ।४

सोरठा—विभुवर लीना योग, ध्यान मगन दुविधा बिना।
निरखत अचरज लोग, शान्त रतन गम्भीरता ।५।

इन्द्र धर्मानुराग

चौपाई—सौधर्म शक्र गुण भक्ति पागा, पट आभूषण शुचि अनुरागा।
परसे तन विभु शुचि अति माना, अरचन योग सु ताहि पिछाना
सविधि विनय धर पूजन कीनी, विभु पद पदम हुलस चितदीनी।
जड़ित मजूषा रतन बनाई, केश अरच दीने पधराई ।३
विभु वनु लख कर पूजा कीनी, मणि पट भेंट मजूषा दीनी।
क्षीरोदधि क्षेपण करवायो, विनय धार बहु पुण्य कमायो ।४
गावत विभु गुण चित हुलसावे, करत चितवन पुण्य उपावे।
बहु विधि थुति करके सुरराया, परिकर सह निज सुरग सिधाया ।५
प्रजा सकल पुरजन अकुलाने, अद्भुत, अचरज हरष पलाने।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कैसे गृह विभु तज यों जावें, विन आज्ञा कछु पंथन पावें ।५।
पु वासी यत्र-तत्र हो लौटे, मोह भरे जग ताप समेटे ।।
निरखत चितवत आगे धावें, शांति सु सच्ची विभु मन भावें ।६।
कर नमोस्तु वहु भव्य सु आये, विभु गुण सुमरि सुरुचि उर लावे ।
शुभ घड़ि ऐसी हम कव पावें, शल्य बिनात्रय योग सधावें ।७।

दोहा—सहस चार नृप संग विभु, बैठे ध्यान लगाय ।
लोक-लाज भय प्रीति उर, बिन विवेक दुखदाय ।८।
किरिया कछु जाने नहीं, ज्ञान जगो घट नाहिं ।
सरधा विन डोलें रतन, होंस महा दुखदाय ।९।

चौपाई—कहें प्रभु नहिं बेन बतावें, परसों कल शायद चित लावें ।
क्षुधा तृषा अति जोर जनावे, दृढ़ आसन मन तन डिग जावे ।१।
नाहिं चलत वश अब कछु आगे, देव मौन सब वने अभागे ।
करहिं विविध विधियों सब बाता, साधु क्रिया अब कौन दिखाता ।२।
कोई गुरु ना कोई भ्राता, नयन निरखत भव दुख त्राता ।
मलिन वदन, उर, अति अकुलाने, अश्रु श्रवें अति-मेघ-प्रमाने ।३।
ग्रीषम ऊपर ताव जलावे, अन्तर मोह अगनि धधकावे ।
झुलसे तन मन व्यापत पीरा, पवन चले दाहक गंभीरा ।४।
सूखें नयन नहीं, मन माने, विन विवेक किरिया हित हानें ।
छाये जलद सघन घन घोरा, मोह पवन चाले झकझोरा ।५।
गरजें उमड़ घुमड़ घनकारा, दमक दामिनी बरसत धारा ।
नद नाले से उफनत आवें, बनत न रोकन रोक उपावें ।६।
मिथ्यात लहरसु चलि, अति घोरा, बल परमाद कषाय सुतोरा ।
अज्ञ अनात्मनुदीन बहोरा, बोध दीप बिन करम सु-पेरा ।७।
ज्ञान नयन बिन अंध समाने, तिमिर व्याधि जिमि नयनन जाने ।
गये तिमिर सूझे सब राहू, दरशे शिव पथ आतम राऊ ।८।

दोहा—शरणा काकी लेंय अब, आयो अघका धाय ।
कष्ट रतन कासों कहें, सत्पथ कौन दिखाय ।१।
दुविधा में जग दुख सहे, सतंपथ हित नहिं पाय ।
अज्ञ बनो त्रैजग भ्रमें, बोध रतन बिसराय ।२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इत उत सब भटकत रहे, बिन विवेक कहां राह ।
प्रति भीति वश भम बहे पथिक रतन मन चाह ।३।

कवित—मोह गहे कछु प्रेम बहे कछु, भीत धरे कछु मन अकुलाने ।
क्षुधा तृषा तन जोर करे अति, छोड़ के जात विभु, सकुचाने ।।
लोग हंसाई करेंगे सभी, ज्ञान बिना यों काज अयाने ।
जात बने नहिं साधे सधें नहिं, अति दुविधा उर रत्न सुमाने ।१।

विवेक महत्व

चौपाई—बिन विवेक किरिया दुखकारी, सुपथ विघातक मंगलहारी ।
श्रद्धा धरत विवेक सम्हारे, किरया मुकति सु द्वार उघारे ।१।
बिन समझे नहिं उपजे ज्ञाना, जिमि कुठौर बुव बीज नशाना ।
जो होंसा-होंसी अनुरक्ता, लोभ लाज धर दंभ सु भक्ता ।२।
क्षुधा तृषा पीड़त अकुलाई, मुनि चरया शुभ रीति न पाई ।
सुहित वचन कर हितु समझाये, अज्ञ भरे सु निज महत जनाये ।६।
व्याकुल हो अब कैसे जावें, चिंतत ऐसे अयन दिखावें ।
अधिक सुयश, तन से अधिकाई, सुयश रहित जीवन सुखदाई ।४।
अचल अडोल प्रभु सम ठाड़े, मन अकम्प धर ध्यान सु गाढ़े ।
दिवस कछुक बल सबने कीना, धरते योग क्रिया तन छीना ।५।
वार्तालाप परस्पर करते, संहनन विभुसा हम न धरते ।
प्यास भूख दुख व्याधि सतावे, जिय में कैसे समता आवे ।६।

दोहा—जोग कठिन है भोग बिन, बिन तन रतन न जोग ।
जोग गया भोंगहु गये, ज्ञान बिना संयोग ।७।

उद्वेलना

चौपाई—गृह लौटे जग होय हंसाये, दे हैं तारी लोग-लुगाई ।
छोड़ विभु को तुम कहाँ आये, उत्तम कैसो साथ निभाये ।१।
सुनत भरत नृप अतिरुष खाहैं, को जाने का दण्ड सुना है ।
कूप इधर खाई उस पारा, जावें यश तन सँकट भारा ।२।
वन बसकर निज जीव बचावें, मन चाहे फल खा सुख पावें ।
सरिता, सोता, सरस सुहावें, पीवें नीर सुधा धर चावें ।६।
गुफा मध्य बस त्रास मिटावें, क्लेश बिना विभ भक्त कहावें ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञान बिना किरिया अतिभारी, बिन सम्यक गति ज्ञान सुन्यारी ।४।
सम्यक हो शिव पद उपजावें, मिथ्या बन भव ताप उपावें ।
लाख चुरासी योनि घुमावें, परिवर्त्तन पाँचों भटकावें ।५।
मंद कषाय मनुज गति पावे, वश कषाय अति लोक भ्रमावे ।
सुर पद भाग जोग उपजावे, शक्तिहीन लख, भव अटकावे ।६।
गति चारों में जी फिर आवे, बिन रतनात्रय सुख नहिं पावे ।
ज्ञानी भेद ज्ञान कर पावे, निज बल बढ़े सदा मन लावे ।७।

दोहा—संसकार बिन रुचि कहाँ, बिन रुचि ज्ञान न होय ।
सत् संगति बिन ज्ञान नहिं, दृढ़ता रतन न योग ।८।

उच्छृंखल-साधू—

चौपाई—दीन भये निज भेद न जाने, बिन विवेक बल उर नहिं भाने ।
दास बने निज काया सेवी, शिव की टेव कहाँ बिन भेवी ।१।
कंद मूल फल फूल जुखाये, सरिता नीर पिये मन भाये ।
करे अभक्ष्य भक्षण सुख पाये, अनगालो जल तपन बुझाये ।२।
अगनि जलाय शीत निखारी, त्रस थावर हत स्वेच्छाचारी ।
पवन विलोर करें मन चीता, ग्रीषम हरत ताप वपु प्रीता ।३।
धर मुनि वेष सु क्रिया भुलाये, वीतरागता समझ न पाये ।
निरममत्व बन मुनि पद धरना, चिन में रम, जग काया तजना ।४।
ज्यों-ज्यों बाढे स्वअनुभूती, चित दृढ़ता में सकल प्रभूती ।
गुण वर्धक तप में आचारा, करम निवारन हित उपचारा ।५।

दोहा—ध्यान सुथिर जब नहिं बने, पर में हो बहु प्रीत ।
अलप लेय अधिलम दिये, लख रतन मुनि रीति ।६।

बन-देव-प्रतिबोधन ।

चौपाई—लखे वन देव सहज मन युक्ती, इनकी कैसे इस विधि मुकती ।
साधु साधना बनकर त्यागे, डुबें डुबावें भव तन रागें ।१।
दया हृदय मन दृढ़ कर बोला, मुनिबन तुमने सद्मग खोला ।
बैठो विभु सम ध्यान लगाके, मोह राग भय द्वेष भगाके ।१।
चरित्र सकल सु मुनि समपालो, आतम जोति तेज पर जालो ।
दीन वचन बोले इक कोई, क्षुधा तृषा अति बाधा होई ।३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सही जाय ना कैसे करना, नाहिं बनत अब भूखों मरना ।
बोला सुर तब गृह को जाओ, दृढ़ता श्रावक बनकर लाओ ।४।
शकती जब तुम में हो जावे, धारत मुनिपद दोष नसावें ।
गृह को जाय न हम वन रहि हैं, गृह तज का फिर वाको साजे हैं ।५।
मनमानो ये भेष न होई, बोलो सुर संभलो सब कोई ।
सबहिं डरप बोले मृद वाणी, आगम रीति न हमने जानी ।६।

दोहा—करहु क्षमा सब कवि तज, राखो मन में धीर ।
अब न रहेंगे नगन हम, सत्य रतन वर वीर ।७।

सच्चा गुरु—महात्म

मुनि महात्म चौपाई-पाप किये जगमें जो कोई, मुनि बन तपकर पातक खोई ।
बनकर मुनि जो पाप कमावे, वज्र लेप हो दुख उपजावें ।१।
नरक निगोद विषे ले जावे, ओर न भव वन भरमत पावे ।
बिना गुरु सद ज्ञान न आवे, साँचे गुरू शिव सुख विलसावे ।२।
गुरू जगत में सब सुख करता, गुरू बिन नाहीं भवदधि तरता ।
वीतराग गुरू का पा शरणा, छूटें जासो जन्मन मरणा ।३।
मिथ्या सम्यक गुरू समझावे, मिथ्यातम को दूर भगावे ।
द्वादश तप विधि भेद बतावे, दशलक्षणमय सु धरम दिपावे ।४।
शिव सुख रतनात्रय प्रगटावे, आप तिरे औरन तिखावे ।
गुरू समान नहिं दूजा जानो, वीतराग गुरू सम्यक मानो ।५।

दोहा—आरंभ परिग्रह रहित जो, दया, धरम गुण खान ।
सम्यक ज्ञानी तप तपी, रतन गुरू उर मान ।६।

गुरुगोचरता

चौपाई—क्रोधादिक मन जिनके नाहीं, धारत धरम ध्यान उमगाहीं ।
शुकल ध्यान में हर क्षण बढ़ते, अष्ट करम विधि सो नित लड़ते ।१।
परम शान्त सु मुद्रा शुभ धारी, मृदु भाषी हित-मित अविकारी ।
धारक तीन गुप्ति शिवगामी, मुक्ति प्रकाशक निस्पृह नामी ।२।
ऐसे गुरू सदभाव जगावें, गुरू ऐसे पै बलि बलि जावें ।
दृढ़ता गुरू बिना नहिं आवे, अब हमको कों पार लगावे ।३।
कौन हमें सतपथ दिखलावे, मोह-ममत हम कौन छुड़ावें ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर आसन विभु ध्यान लगाये, गहे मौन पथ कौन दिखाये ।४।
सकल भेद को, ज्ञान करावें, करणि अकरणी विधि दिखावे ।
क्षुधा तृषादिक तन को हानें, सही जायना किम थिति ठाने ।५।
महाबली विभु हमने देखे, नर नारायण क्या इन लेखे ।६।
बल अतुल संहनन अतिभारी, निश्चल मूरत योग मझारी ।६।

दोहा—देखा देखी हमकरी, बनी क्रिया अघमूल ।
मुनिगुण चिंतामणि रतन, वर विवेक सुख मूल ।७।
सुर वनरक्षक सुतुष्ट हो, लखे मुनि, मार्ग पवित्र ।
गयो विहंस निज धाम को, विधिना रतन विचित्र ।८।

कवित्त—मन मार रहे, कछु बात करें, कछु घात चलें, सब अकुलाये ।
ध्यात बने नहिं, जात बने नहिं, नगन रहे दुख, और बधाये ।।
जौन सी वस्तु, मिलो जि साधन; तैसे धहि कुछ अेद न पाये ।
कहें कबलों विभु राह लखें सु, मन तबलों यों रतन सु आये ।१।

चौपाई—नग्न दिगम्बर पद नहिं साधो, ज्ञान बिना व्रत श्रावक बाधो ।
सज्जन संत कहावन आशा, गौरव कारण मन अभिलाषा ।१।
विविध वसन ले भेष सजाये, पत्र छाल कछु, भसम रमाये ।
मूंज टाट कछु वस्त्र रंगाये, बहु विधि तिलक त्रिपुण्ड लगाये ।२।
कोई कंबलि शाल दुशाला, पीत बघम्बर कइ मृग छाला ।
चीना क्षोम सु पटसन धारे, अम्बाड़ा कोसा रतनारे ।३।
धरे त्रिशूल चमीटा कोई, नक्खी लक्खी भैरव भोई ।
कइ इक दण्ड सजें निज हाथा, मूड़ मुड़ाय सु जटा बढ़ाता ।४।
मौन धार कइ सेन बनावें, कोई घूमें अलख जगावें ।
धूनी पन्चागनि कइ छावें, कोई मख के तटना आवें ।५।
नाना वेष विविध मत रूपा, आत्म दृष्टि बिन बने विद्रूपा ।
धरे भेष मन के अनुसारे, शक्ति हीन उर छल अधिकारे ।६।

दोहा—काया प्रति अति नेह उर, नहिं अन्वेषण बुद्धि ।
नाना विधि कर्त्तव्यगति, आत्म रतन अवरुद्ध ।७।

मारीच कुंवर योग—

चौपाई—नव यौवन मारीच कुमारा, बल बुद्धि द्युति सुभग सुधारा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पितृमह ऋषभ देव अनुसारा, आयो योग धरन वन भारा ।१।
मुनि चरित्र को उर नहिं ज्ञाना, आकुल महा मूढ़मति साना ।
निशि में चन्द्र द्युति अति धारे, अबुध बीच मारिच बुधवारे ।२।
जीव आदि तत्त्व न पहिचाने, निज पर का कछु भेद न भाने
सुगम पन्थ ताको मन भायो, ईशनाम सुख धाम सुहायो ।३।
मुक्ति भुक्ति सब जिय सुखदाता, क्रोध मोह व्याधा दुख दाता ।
कंचन कामिनि ममत निवारे, गुरु पद से ये मुकति समारे ।४।
काया मित्र अति सब सुख देवा, साध याके पाओ मेवा ।
उभय कालन्हमन, विभु पूजा, दान मान सम आनन दूजा ।५।

दोहा—ऐक बार भोजन करो, कन्द मूल फल खाय ।
जड़ चेतन मय जगत सब, सिद्ध रतन शिवदाय ।६।

चौपाई—सबको पथ यों सुगम बतावे, आकुलित अज्ञ हरण उर लावे।
कष्ट बिना ही शिवपद होवे, मिटे ताप जग के सुख भेवे ।१।
मानत सब जन, हितू—हमारे, पन्थ सु दरशक अरु रखवारे ।
मारग उत्तम जग सुखकारी, माना जिन शिव राह बिसारी ।२।
सबहिं सराहें लख गुरुताई, बीज यथा द्रुम तस हो भाई ।
करत बड़ाई नाहिं अघावें, वस्तु बड़ी कम दामन पावें ।३।
स्वातम बल न कोई जगावें, दास बनें साधक कहलावें ।
नहिं परमातम निज में पावें, परमातम से दूर रहावें ।४।
करम नहीं बिन तप के जावें, कनक अगति तपकर दुति पावे ।
करम रहें तक मुकति न आवे, सुख अनन्त बिन भुक्ति न आवे ।५।
शुद्ध चिदादम आनद रूपी, निरविकार निश्चल चिद्रूपी ।
निज को जाने बिन तहिं पावे, निज पाये विन सुख नहिं पावे ।६।

दोहा—सरल हृदय जाने नहीं, तत्व आय व्यौहार ।
लघु मूल्य दे लें रतन, भोले नृपति कुमार ।७।

ऋषभ देव चरया-अन्तर द्वन्द—

षट मासिक कर पूरण योगा, लख वृष चूरण दृश्य अयोगा ।
समझत विभु को देव न लागी, करुणा बुद्धि हृदय में जागी ।१।
मौन नहीं तोड़ इस भीती, छलकत घट आघे की रीती ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूरण जल घट जब नहिं आवे, काम न कोरी छलक बनावे ।२।
मौन अपूरव बल मैं पाऊं, बोल अविद्या से ठग जाऊं ।
पथ भटके, ना लोभी पावे, साहस अबल कहां से लावे ।३।
पूर्ण ज्ञान जब होवे मेरे, आवें पथ सब देख उजेरे ।
घाती चारों करम खपाऊं, सकल पदारथ, जग दरशाऊं ।४।
काय शशक्त अति साहस शकती, धरूं योग षट मास पुनरुक्ती ।
उमगत भये सु, भाव जु ऐसे, सागर मध्य, तरंगन जैसे ।५।
गहूं सुमारग मुनिवर धारें, मूल अट्ठाइस रतन समारें ।
सिंहवृत्ति धर चरया करना, चरित महा विरती अनुसरना ।६।
लखि हैं धरम सु मुनि भवि रीती, बढ़े ज्ञान जाग्रत वृष प्रीति ।७।
कारज सद लख, भव्य सु करि हैं, पुण्य सुकृत कर भवदधि तरिहैं ।
विना ज्ञान भटकें भवि बारे, दीन भये हो सुछंद विचारे ।
अवलम्बन पा सत्पथ आ हैं, चिदानंद चैतन्य जगे हैं ।८।

दोहा—कर निश्चय चरया करण, गमने श्री वृषराज ।
विश्रुत अति सतृष्ण नयन, निरखे रतन समाज ।९।

जन-माश्चर्य—

चौपाई—विस्मय चकित बढ़त जन देखें, करत परस्पर वार्ता पेखें ।
जोग प्रभु का पूरण कीना, सिद्धि-लाभ लहि, पग गृह दीना ।१।
पीछे लागे कछु नर नारी, आगे बढ़ी भीड़ अति भारी ।
कहां जांय विभु मारग लागें, कहा करत अब जाकर आगे ।२।
दई दुष्ट तन कोई पीरा, कारण ता चाले मति धीरा ।
क्षधा तृषा का, कष्ट निवरणा, ध्यान तजो वन ता दुख करणा ।३।
कछु सुध गृह की, या मन आई, जाय मिलें सब कर समुदाई ।
करत विचार विविध विधि योगा, लागे पाछे बहुतक लोगा ।४।
कछु जन प्रीति,रीति के ज्ञाता, लेय भेंट आनावत माथा ।
असन वसन भूषण सुखकारी, गय, हय जन ले, आज्ञाकारी ।५।
मोती रतन सुमणि बहु लाये, काहू ने सब थाल सजाये ।
धन धानादिक सु देवें, लख विडम्बना विभु बढ़ जावें ।६।

दोहा—कोई रतनन थाल ले, बालायें सजवाय ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निरख सदा सेवक रतन, ग्रहण करो करनाय ।७।

आहार अंतराय—

चौपाई—लेओ जो विभु, तुम मन भाये, अपरण करत विनत गुण गाये ।
छांडि सकुच लेओ विभु सारा, राज पाट वैभव धन द्वारा ।१।
ग्रहें नाहिं विभु लख बढ़ जावें, ना थुति, सरधा, ध्यान लगावें ।
प्रीति धरम वश कोई आते, निपुण नीति मन करतब राते ।२।
कोई भगतहिं, नृप भय आये, लख पूरब हित कोऊ नाये ।
कोई न नवधा भक्ति जानें, मुनि-अहार लें रीति समाने ।३।
दोष छयालिस विन जो होवें, अन्तराय बत्तीसों खोवें ।
काय वचन मन शुद्ध सहारा, सप्त सुगुण धर दाता प्यारा ।४।
शुद्धी सारी जब वन आवे, मुनिगण, तब आहार ज् पावें ।
विधी मिलें तब ठहरें सोई, नातर मग वन का गह लेई ।५।

दोहा—विधी बनी नहिं काहु पै, लखो रत्न अंतराय ।
काल भ्रमत बीतो कछु, लौट चले मुनिराय ।६।

जन-संवेदना—

चौपाई—निरख निरख विभु, लख पछताहीं, खावें हम सब, विभु विलखाहीं
कैसे विभु को लाय जिमावें, पुण्य हीन नहिं मारग पावें ।१।
चिंतामणि ज्यों कर से जाई, फणी मणी बिन ज्यों विकलाई ।
मीन धीर बिन, नीर न पावे, विकल्प तड़प धर प्राण गमावे ।३।
सज्जन मन की ये ही रीती, पर दुख टारन जिन दृढ़ प्रीती ।
नर नहिं निरफल, जतन बनावें, मन वच काय सुयोग लगावें ।३।
सुपन श्रेष्ठ साँचो कर धावें, विधिना पै कोई जोर न पावे ।
मुदित होंय दुख, उर अघचारी, जिनको पौरुष झूठो भारी ।४।
करतब पर दुख लख नहिं भाने, धरम किये नर को नहिं माने ।
अघ कारण हो निरबल शक्ती, बने न हम से, प्रभु सुभक्ती ।५।
विन भोजन विभु तड़प सदाई, कोई हो वहु प्रभू सहाई ।
दुक्ख हृदय भर वार्त्ता करते, बाधा हरवें चितवन करते ।६।
गहे अहिंसक उर शुचिताई, दुख पर निज मानत अकुलाई ।
मानव की पहिचान सचाई, धरम नीति उर जिनको भाई ।७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा—जीव सुरक्षा हितू वचन, धरे धरम गुणवान ।
सफल रतन जीवन वही, सुरग मुकति सुखदानि ।८।

—ॐ—

ऋषभ देव-आहार--

मंगलाचरण—

शांति विधाना परम वृष, वीतरागी विज्ञान ।
सत्पथ साधक स्वनिरत, नमें रतन जिन भान ।१।

चौपाई—कर विहार कौशाँबी आये, नृप श्रियांस उर मोद बधाये ।
मुनि आहार स्मृति मन आयों, नवधा भक्ति विनय गुण छायो ।२।
पूरब भव में दिये अहारा, स्मरण हुआ सु विधि अनुसारा ।
ईख सुरस विभु आदि सु दींनो, आदि दान मुनि तीरथ कीनो ।३।
वरस उपवासि साधु सुपात्रा, जय जयकार नभत शुभ गात्रा ।
देव सु अचरज पांच सु कीने, जन गण सबको, हृदयो भीनो ।४।
श्रेय श्रियांस सु सब में आगे, धन्य भाग अति इनके जागे ।
अतिथि तीरथ नाथ जो आये, धरम विभव सु अमरता पाये ।५।
दान जगत में सब सुख झरना, सुरग मुत्ति सुख, दुख अघहरना ।
दानी दाता सब सुख पावे, धारत धरम परभावें ।६।

दोहा—दायक तीरथ, दान भवि, रतन दान भव पार ।
पहिले विभु के मुक्ति लहि, नृप श्रेयांस कुमार ।७।

दान-महात्म—

चौपाई—दाता दान पात्र विधि जैसे, शिव, सुर, भोग भूमि सुख तैसे ।
दान धरम को दृढ़तम मूला, बिना दान व्रत आदि अमूला ।१।
प्रीति विधायक दान–सुरीती, धरम नेह चारित गुण प्रीती ।
मार्दव अरु सरलता लावे, जग काया से ममत घटावे ।२।
चिदानन्द चैतन्य स्वरूपा, निज पर दर्शक सम्यक रूपा ।
जग समाज गृह जीव जु शोभे, दान प्रभाव सु गौरव होवे ।३।
सकल सुक्ख, थिर, दान जुलावे, धरम करम सब दान चलावे ।
दान बिना जीवन पशु जैसा, दान सहायक रतन हमेशा ।४।
बिना दान जीवन फल हारे, वृष श्रावक मुनि दान संवारे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुपात्र दान श्रियांस जु दीने, दान तीर्थंकर मुकति लीने ।५।

दोहा—दान–रीति प्रगटित जगत, मुनिवर लियो अहार ।
सब जन उत्तम श्रेष्ठ अति, रतन श्रयांस कुमार ।६।
वर्ष बाद आहार ले गये सुवन ऋषिराज ।
दहें करम तप उग्र कर, रतन ऋषभ महराज ।७।
सहस बरस तप धरनतें, उपजो केवल ज्ञान ।
सरवज्ञ रतन विभुवर हुए, वीतराग हित दान ।८।

अरहंत पद-अतिशय

चोपाई—चौंतिस अतिशय विभु के सो हैं, समवशरण देखत मन मोहें ।
सुगुण छयालिस श्री अर हंता, समव शरण सोहें भगवंता ।१
कोटिक रवि शशि तेज सुलाजें, अन्तर तम रवि केवल राजें ।
चार घातिया करम विनाशें, अनंत चतुष्टय आतम साजें ।२
प्राप्ति हार्य वसु शोभावें, लख वैभव प्राणी सकुचावें ।
सब अलिप्ति विभु, ऊपर छाजें, अनुपम वैभव जग शोभावें ।३
उपदेशा मृत, जी सुख पावें, निज भव फल लख सजग रहावें ।
सुरेन्द्र जादि शत- नावत नेरे, सेवक खड़ें करम शुभ प्रेरे ।४
गौरव पद नम अपनो माने, मुक्ति पुरी की राह पिछानें ।
ऐसो अवसर कब हम पाहैं, स्वातम रम पर भाव मिटाहैं ।५

दोहा—अतिशय लख दश जनम से, केवल के सम जान ।
चौदह होते देवकृत, अर्हत् रतन महान ।६।

भरत-विभव-लाभ

चौपाई—शुम करमन वश जिय सुखकारी, मिलें योग शुभ मंगलकारी ।
दिपत भरत सु गोष्ठी सुहाये, बैठे बहुतक नृप अनुनाये ।१
स्वस्थ काय मन अती बलिष्ठा, महत जनन में अमित प्रतिष्ठा ।
काँति रूप गौरव अधिकाई, बल विक्रम जन सुभग सदाई ।२
आये दूत तीन इक बारा, समाचार शुभ मँगल द्वारा ।
आयुध शाला चक्र सुहायो, ऋषभ विभु केवल प्रगटायो ।३।
गृह कुल दीपक अति छबि छायो, हरष हरष नृप भरत जनायो
सुनत सभा नृप मोद सु बाढ़ो, सुक्ख हरष उर सबके गाढ़ो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो कोई सिद्धि एक जु पावे, चिन्तामणि सम मोद समावे ।
कुल-गौरव बल सब इक साथा, सुधी सुबुधि गुण गावें गाथा ।५।

दोहा—चक्र रतन शुभ धरम फल,-सुत सुपुण्थ फल सार ।
देव ऋषभ चैतन्य शिव, मुकति सुरग दातार ।६।

भरत-जिन बंदन ।

चौपाई—चिंतत भरत सुमन धर ऐसे, मन उमगत गुणियन को जैसे ।
प्रथम इष्ट विभु पूजन कीमे, सकल संघ सह दरशन जीजे ।१।
स्वातम सुख जासों चित सीजे, धरम पुण्य गुण भक्ति सु भीजे ।
धरम धरे सुख समता सोई, धरम किये हो, दुखना कोई ।२।
सब विभूति सज परिकर लीनो, हरष उछाह धरे गुण भीनो ।
दरशन, पूजन कर हरषायो, नरन कोष्ठ बैठो उमगायो ।३।
महिमा सिद्धि ऋद्धि सुखकारी, धरम योग पावें नरनारी ।
धरम बड़ो जग में सब जाने, सारे ठाठ धरम सरधाने ।४।
सद्विवेक गुण सज्जन ताई, धरम-शरण गौरव अधिकाई ।
दिव्य ध्वनि सुन, बहु सुख पायो, अचरज समवशरण लख आयो ।
धरे विनय पूछत बड़भागा, कुल वैभव यों, मन अनुरागा ।
विभु तुम सम या कुल में कोई, पद अरहंत सुधारे सोई ।६।

दोहा—दिव्य ध्वनि उत्तर रतन, सुनो भव्य गुणवान ।
मो सम मारिच होयगो, तीर्थंकर अन्त सुमान ।७।

चौपाई—भरत सुनत वच मन मुसकाने, कुल की कानि बढ़ो मुद भाने ।
मात धारणी बहु हरषाई, दुख विछोह सुत क्षण बिसराई ।१।
आयो तोष महामति धारी, सुत तीर्थंकर सब सुखकारी ।
पायो हरष सुजन सुन भारी, आजहि पाई गुण निधि सारी ।२।
कच्छादिक नृप चार हजारा, सविधि महाव्रत गह सुखकारा ।
शक्ति सम तप करआचरणा, नाश करम दुठ शिव सुख वरना ।६।
अति अभिमान मरिच मन बाढ़ो, मिष्ट लगो मधुमय विष खांडो ।
नव निज शक्ति चलाऊं नीती, सिद्धि सुगम पथ यह विन भीती ।४।
पितृमह सम अब ही अवतारी, लहूं पुज्यता जग सुखकारी ।
आय झुकेंगे जग जन सारे, सहज मुक्ति तप संयम-बारे ।५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कही पितृमह जु जन बाता, कर सांची दिखलाऊं ता—ता।
फिर की बात कौन का जाने, मणि हाथ नहिं तजें सयाने ।६

दोहा—उर बोधो नहिं चाह वश, ह नहार कछु और।
गति जैसी मति हो रतन, करता तैसी दौर ।७।

—ॐ—

मारिव—मानस

दोहा—चेतन घन आनंद मय, वीतरागी विज्ञान।
नमूं सिद्ध परमातमा, मेंटे भव भटकान ।१।

चौपाई—शाँत सहज गाँभीर सुभावा, परिव्राजक शुभ नाम सुहावा।
निरममत्व सब महिमा त्यागी, दया भाव उर गुण अनुरागी।
सरल भाव धर काल बितायो, प्रभुता निरख सुमन अटकायो।
शाँत चित्त धर तजो शरीरा, सुरग ब्रह्म पायो गुण धीरा।
पूरण राग न तज शिव पायो, स्वर्ग सुखों में रम भरमायो।
दश सागर आयू सम्पुरणा, कपिल विप्र गृह सुत अवतरणा।

जटिल-विप्र—

काशी माता उर हरषायो, जटिल सुखद तसु नाम धरायो।
नगर अयोध्या अति सुखकारी, धान्य रन्न धन गुण भण्डारी।
वढ़ क्रम पढ़ सन्यासि कहायो, जगत महातम चाह भुलायो।
आयो स्वपर भेद न भानू, चेतन सकल महागुण थानू।
पूज विभव पद सुखकर भानी, चिन्मय ज्ञायक-बिना-विज्ञानी।
पर जग रच निर ममत कहायो, काय योग नहिं, राग मिटायो।

दोहा—सु वाल-तप प्रभाव धर, प्रथम सुरग सुर आय।
पूजें भोले भक्त गण, चेतन रतन गमाय ।।

प्रथम स्वर्ग देव—

चौपाई—सागर दो तक बहु सुख पायो, मगन भोग ना, बोध बढ़ायो।
बढ़ी चाह भोगन मन भाई, पूरी ज्यों-ज्यों, त्यों अधिकाई।

भारत द्वाज-विप्र—

चयकर नेह अयोध्या छायो, नगर स्थूणा गार जु पायो।
पुण्य मित्र सुन भारत द्वाजा, शाता पुष्प दंत उर साजा ।२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विद्या बाल पने बहु पायो, पंडित बन बहु नाम कमायो ।
यौवन विषयन भयो विरिक्ता, निज-हित लाभ गहन अनुरक्ता ।
प्रकृति आदि पच्चीसों तत्वा, सब जानो, नहिं आतम सत्ता ।।
आयो सम्यक बोध न तासों, सन्यासी किरया अभिलाषो ।४।
मंद कषाय भाव शुभ आयो, आयु पूर्ण कर सुरपद पायो ।

प्रथम स्वर्ग—

इक सागर सुरियन संह भोगा, शान्त सरल भावन कुं योगा ।५।
बीतत सुख को काल न जानो, अतंक पा माला मुरझानो ।
सरल भाव धर तजो शरीरा, मानुष तन पायो जग वीरा ।६।
दोहा—विषय भोग वैभव सुखद, भोगत काल गमाय ।
ऊरध गति नहिं भोग तें, सीख रतन मन लाय ।७।

भुगनि-सह विप्र—

दोहा—सरल भाव धर रतन चय, अंत काल परमान ।
श्वेतिक नगरी भरत में, मानुष उपजो आन ।१।
चौपाई—अगनि भूति सुत विप्र कहायो, विप्री गौतमी गोद सजायो ।
दीनो तस अगनी सह नामा, बाढ़ो दोयज शशी प्रमाना ।२।
किद्या पढ़कर दीक्षित हूओ, परिव्राजक व्रत धारत हूओ ।
छूटी नहीं कषायें कोई, मंद भाव धर, तन को खोई ।३।

सनतकुमार देव

सनत कुमार तृतिय दिवि लीनो, सागर सात भोग थिति भीनो ।
विभव निरत सुख भोगत पाये, बीती आयू क्षण सम जावे ।४।

अग्नि भूति—

चय कर मंदिर नगर सु आयो, निज विवेक बिन जग भरमायो ।
गौतम ब्राह्मण को शुभ धामा, अगनि भूत उपजो गुण ग्रामा ।५।
पूरब गति मति रुचि अनुसारा, व्रत त्रिदण्डी तप अति धारा ।
सरल भाव धर काल पुरायो, सुरग महेन्द्र चतुर्थो पायो ।६।
दोहा—विषय भोग वैभव सुखद, विलसत काल पुराय ।
चय कर आयो नर भयो, रतन सम्यक थाय ।७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भारत द्वाज द्विज

चौपाई—मंदिर पुर द्विज साँकल यना, मंदिरातिय सु धरम परयणा ।
सुख दायक आनंद की दाता, भारत द्वाज तनी सो माता ।१।
कुल हरषक सुत सब सुखकारी, को नहिं हर्षे मात उदारी ।
संस्कार गुण पूरब भाँती, विरकत मन वश किरिया सुहाती ।
करम जाल कट मना नहिं पायो, साधु त्रिदण्डी मठा सुहायो ।
मंद कषायें मन समताई, मगन किरिया सूकाय सुहाई ।
पुण्य अल्प तस अमर कहायो, वैभव तैसा ता फल पायो ।
महाऋद्धि लख ईष्या ठाने, अलप भोग भोगत अकुलाने ।
अंतक चिन्ह माल मुरझाई, मरण निकट लख बहु अकुलाई ।
करत विलाप भरत दुखभारो, निम्न गति को द्वार उघारो ।
ऐसे करतो जो कछु कामा, जासों मिलतो अविचल धामा ।
जग काया की, लखतो रीती, लखकर आतम करतो प्रीती ।

दोहा—धन रामा वैभव रतन, कषें काम अघधाम ।
विष फल लगत सुहावने, दुख अधिको वसु जाम ।७।

तिर्यंच गति

चौपाई—त्रसथावर गति अति दुखकारी, जीव घुमें मिथ्यात्व पसारी ।
असंख्यात भव में भरमायो, सुख नहिं रंच महादुख पायो ।
जनम-मरण धर करि अकुलायो, पराधीन बहु ठोकर खायो ।
फल शुभ भावन बहु सुख लाया, अशुभ भाव अघ दुख उपजाया ।
गयो काल सुख दुख उठ धायो, दुख भी बीतो चक्र सदायो ।
सुख-दुख सब परिणामन सीझें, सुरग नरक शिव भावन लीजे ।
जा ढिग रतनात्रय निधि होई, व्यापे दुख ताके, नहि कोई ।
मुकति पंथ शुभ मुक्ति विधाता, मुक्ति रूप सुख अनंत अमाव
धरम सकल को, मूल बखानो, सुरग मुकति सुख लो अमलानो
मिथ्या दरशन ज्ञान सुभावे, मारग हितकर जिय न भावे ।

दोहा—असंख्यात भवों भ्रमत–आयो पुण्य सुयोग ।
मानुष भव पायो रतन, सरल भाव शुभ जोग ।६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्थित-कांड

मंगलाचरण—

दोहा—परमेंष्ठी पाचों परम, धरम शरम दातार ।
पंचम गति दाय करतन, नमत रतन गुण सार ।१।

स्थावर-विप्र

चौपाई—मगध देश देशन मध सारा, नगर राजगृह अति छबिकारा ।
शांडलि द्विजवर ताको धामा, पारा श्रीगृहता के वामा ।२।
स्थावर नामा सुत सु पायो, मन्द कषायी शुभ उर भायो ।
निगमागम वय बालक पढ़िया, सुभग सुमन यौवन शुभ गढ़िया ।३।
स्व विवेक बिन तत्व अयानो, चिदानन्द चैतन्य भुलानो ।
उलझ क्रिया आडंबर भूलो, व्रत क्षुधा तृषादि सह सु फूलो ।४।
पूरब संसकार बल दाया, मन एकन्त बैठो लौ लाया ।
जीव चिदातम शुद्ध सरूपा, सत संगति बिन भटके भूपा ।५।
व्रत संयासी त्रिदंडि लीनो, यथा-पात-द्रुम तैसो चीन्हो ।
शांत भाव धर तजो शरीरा, सुरग महेन्द्र लहे वर वीरा ।६।

दोहा—स्व विसरत शान्ति सहित, पायो सुर्ग द्विजेश ।
वीतराग सम्यक चरित, शाश्वत रतन हमेश ।

माहेन्द्र-देव—

चौपाई—बिना मोह सुख मिल अपारा, जग को छांडो सुरग अपारा ।
सागर सात विभव वर सुख से, बिन संक्लेश भयोमनु सुर ते ।१।
परिग्रह ममता जो निखारे, मोह रहित तन उत्तम धारे ।
सरल सुभाव धरे जो कोई, मंद कषाय सुरग सुख सोई ।२।
इह भव पर भव उभय संवारे, आनंद आनंद सु फल धारे ।
पाये भोग न अधिक भुलायो, शान्ति सहित समता उरलायो ।३।
निज वैभव अति तुष्ट रहायो, शुभ कारज करते हरषायो ।
स्वजन परिजन मन अतिप्यारा, सतसंगति चरचा मन धारा ।४।
पर वैभव लखकर सुख मानो, शील संकोच सुकल जु भानो ।
शान्त सुमन धर तजो शरीरा, मानुष तन को जतन गहीरा ।५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आयो नृप गृह पुण्य बसायो, करम क्षेत्र निज हित बल पायो
कीजे भाव सु उत्तम साजा—उत्तम कुल गृह विभव समाजा।

दोहा—मसध देश राजा गृही, विश्वा भूति भूपाल।
खोजन राणी गुणदरी, यौवन रतन रसाल।७।

विश्वनंदि—

चौपाई—सुखकर विश्वनंदि सुत जायो, राजा परजा अति सुख छायो
करो उछाहो हरष बधायो, दान मान पूजन मन भायो
विशाख भुति नृप अनुज कहायो, लक्ष्मणा गृहणी सदन सुहायो
विशाख नन्द सु सुत अभिरामा, पायो हरष मात पितु धामा
पूरब पुण्य तनो परभावा, सब विधि पायो सुख नरावा
गौरव गरिमा सुक्ख विशाला, जान परो बहु जातन काला
जगत काय वैभव उर चावा, करम-दलन-हित, नहिं शिवभावा
शरद किरण का नभ में छाई, सुखद रम्य शीतल अधिकाई
मन्द सुगन्धित बहत समीरा, विहंसे-इन्दु,-रयन सुख सीर
सुच्छ कीच बिन सुरसरि नीरा, शशि लुक-छिप लखतो गृह धीरा
हरी-भरी भू सोहे सारी, रीति उष्ण वरषा नहिं भारी।
शुभ्र चंद्रिका नृप मन भाई, छत ऊपर नृप, लख हरषाई

दोहा—मनहर दृश्य सुहावने, इन्दु जलज निशि मेल।
अवलोके नृप नभ जलद, मुदित रतन लख खेल।७।

विश्वभूती-संवेग—

चौपाई—दृश्यत दृश्य मनोरम ताई, क्षण अदृश्य सु लखत विनसाई
विनसत दृश नृप लगो अघाता, यौवन अस्थिर तन सुखघाता
नृप विवेक निज भानु सु जागो, प्रगटत मोह तिमिर भ्रम भा
काल अनन्ता गमायो मैंने, बास निगोद नरक बहु कीने
सुर नर तिर्यच बहुतक हूओ, सुख दुख भोग करम वश कीने
विसर चिदातम भरमत भूलो, सतसम इन्द्रजाल लख फूलो
कबहु निज बल नाहिं जगायो, धरम सु तीरथ घाट न आयो
सोचत रहो न उद्यम कीनो, वृद्ध पने रोयो बल छीनो
काल लब्धि के अब परभावे, मन तन सबल योग जिय भाव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करके वाल तनुज युवराजा, कियो अनुज नृप वैभव साजा ।५।

दोहा—मोह लहर उछलत फिरे, सुध निज रतन भुलाय ।
स्वातम शाश्वत सुक्खमय, सूझो नाहिं उपाय ।६।
प्रगटे अनुभव निज रतन, जग भाषे दुखदाय ।
चिंते जग क्षण जीव सब, काल व्यर्थ न जाय ।७।

नृप विश्व भूति-दीक्षा—

चौपाई—श्रीधर मुनिवर जा पद बंदे, निज स्वभाव रम, रस आनन्दे ।
साथ तीन सौ नृप हुलसाये, दीक्षित हो, स्वमणि दुख भाये ।१।
कर तपश्चर्या, वल अनुसारा, करम दलन हित दांव समारा ।
सहित विवेक जु सरधा आवे, गहत चरण चारित शिव पावे ।२।
ज्ञान विना नहिं आतम जाने, जाने निज ना, पर का जाने ।
सरब उपाय करे जग करणा, मानत पुण्य-धरम शिव वरणा ।३।
निज बल सरधा हनि न भाने, चउगति भरतें शिव नहिं धावे ।
निम्ब कालिया डसत चबावे, मानत मिष्ट, न रस तस पावे ।४।
दाद खुजावस सुख जो माने, अंत दाह अति समता हाने ।
जड़ चेतन जो भेद पिछाने, आतम हित कर वे ही जाने ।५।
बिसर अपन पो जग भरमावे, विषय रुचि नीम चबावे ।
वे ही जग के वीर सु जानो, शिव के वीर रतन त्रय मानो ।६।

दोहा—विश्व भुति सुरी तप तपें, मेंटें करम किलोल ।
धर रतनात्रय रतन धन, स्वातम सुख अनमोल ।७।
।। बसंत प्रमोद, विश्वनंदी-वैभव-विशाखनंदो ईष्या— ।।

चौपाई—विश्वनन्दी यौवन सु सम्पन्ना, सुभग रमणि मणि पुण्योत्पन्ना ।
आनन्द भोग-भोंग सु पूरो, उपवन बसंत सु सुख आ पूरो ।१।
क्रीड़ा करत महा रस भीनो, कामिन ऋतुपति स्वागत कीनो ।
आनंद चिन बल जिन उर नाहीं, खोवें बल पौरुष ते ताहीं ।२।
शठ विशाख नंद तहं आयो, बाग सुहावन लख झुलसायो ।
निरखें वैभव पर मति मूढ़ा, क्षुभित होंय विधि पुण्य अगूढ़ा ।३।
करणी अकरणि कारज कोई, ज्ञान हीन नहिं जाने सोई ।
निज पौरुष श्रम, ना अनुकूला, बहु प्रपंच कर सो प्रतिकूला ।४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निज पितु ढिग जा,-कर ततवारी, विश्वनन्दी उपवन छबिकारी
देहू नाग सु, मो अब नीके नातर निकसों प्रान्तर भु के ।५

दोहा—जाऊं अचानक तज गृह, या तज देहुं शरीर ।
विज्ञ नृपति निरणय रतन, बाग बिना नहिं धीर ।६।

विशाख भूति-छल—

चौपाई—संकट नृप पै भारी आयो, इते-कूप उत खाई पायो ।
कड़वी गुरुच नीम तरु छाई, मीठी कबहुं न हो क्षणताई ।१।
बालक हठ जग में दुखदाई, अधिकी शठ पन सों कठिनाई ।
धर धीरज सुत निज समझाओ, करूं यतन तुम मत घबड़ाओ ।२।
मोह प्रबल परलय को लावे, नीति-रीति वृष प्रीति भुलावे ।
दम्भ कपट रच सुयश गमावे, गहिते अधरम नाहिं लजावे ।३।
मायावी मन धर कुटिलाई, विश्वनंदि नृप लियो बुलाई ।
कही कुंवर सों प्रीति जनाई, सदा प्रीत खल की दुखदाई ।४।
अरियों ने मोकों ललकारो, मैं जाऊं सुत राँज समारो ।
उनको वश में करके लाऊं, निष्कंटक तुम राज बनाऊं ।५

दोहा—नीति धरम गहि कर चलो, सुयश रतन जग सार ।
जीवें तें मरनो भलो, धीरन अरि हुंकार ।६।

विश्वनंदी शौर्यता—

चौपाई—विश्वनंदि बोले हरषाई, औचित तात सुनो मन लाई ।
विनय धार नुत गिरा सुहाई, उचित बात ये पुज्य न भाई ।१।
मैं सन्मुख तुम कष्ट उठाओ, कारण लघु ये मोहि सुनाओ ।
वशकर नृपति विद्रोही लाऊं, अहं हीन मैं विनय सुनाऊं ।२।
मत्त गयंद सुत सिंह सुहावे, सन्मुखता सो रास रचावे ।
सफल हुई नृप की कुटिलाई, दे आज्ञा सब साज अयुधाई ।३।
ऊपर दुख अन्तर मन हरषाई, कही नृपति मृदु बात बनाई ।
बहुतक सैन संग कर दीनी, चमके शस्त्रादिक दुति भीनी ।४।
वाद्य निसान बहुत संग चाले, वीर हृदय उमगे बल वाले ।
कायर कुटिल छिपे अघ साने, जीवन नमक चोर का जाने ।५।
कोलाहल भारी चहुं ओरा, वादित्र वीर गान घन घोरा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुंवर तेज लख रवि शशि लाजें, प्रभुता अद्भुत कुंवर प्रभातें ।६।

दोहा—विश्वनंदी परताप दिवि, नमें भूप धर भेंट ।
केहरि गर्जन सुन रतन, कंपै मृगगण हेट ।७।

—पुत्र बागार्पण—जन-वैकल्य—

चौपाई—निज सुत नृपने लियो बुलायो, सोंपो बाग न हिय सकुचायो ।
श्रवणत निरखत परजा धाई, धिक! धिक! कह लख नृप कुटिलाई ।१।
वालक को रण दियो पठाई, बाग विभव लूटो, अधमाई ।
पाकर राज न, भोग अधायो, मोह मद्यपी नृप बिगलायो ।२।
पूरब पाप उदय जब आवे, मन को काज कु, रीति समावे ।
कौन पाप मोही नहिं करते, नरक निगोदन से नहिं डरते ।३।
जग-सम्पति सब, क्षण छुट जावे, अन्त पाय कछु कामन आवे ।
कोई देओ नृप समझाई, त्याग धरम मत लेहु हसाई ।४।
आगे अन्तक के पछतैहो, विगड़े दूध मथे का पै हो ।
चापलूम ईर्ष्यालु सु विगसे, शक्ति मान नृप शुभ सव करते ।५।

दोहा—सुजन विचारत विविध विधि, धरम ज्ञान अनुसार ।
जितना ऊंचा जो उठा, तैसे रतन विचार ।६।

विश्वनंदी विजय—

चौपाई—कुमर महा अचरज कर लौटे, नहिं अरि कोई बड़े न छोटे ।
बिन कारण दुख नृप ने पायो, दूं विकल्प मिट, वृत्त सुनायो ।१।
मन में हरष धरे हुलसाने, बड़ें जनन प्रति आदर ठाने ।
निरखो आवत भृत्य उदासा, श्रवण सुहित जागी अभिलाषा ।२।
निकट दूत आयो मय फांसा, ठिठको, प्रणमत नयन रुआँसा ।
कुंवर निरख कह, मलिन सुभ्राता, अयन दीप्त न चेतन गाता ।३।
सबहिं सुनाओ भय तज मोसों, अभयदान लो मन सन्तोषो ।
कर जोड़े विनवत पसि माथा, दुखित वज्र क्षत गायो गाथा ।४।
सकल वृतान्त कूट सुनायो, कैसे नृप-सुत, बाग बसायो ।
मरमाहत सुन दृढ़ युवराजा, गयो जान सब कुटिल अकाजा ।५।
पितृोदर सु विसबास धतायो, प्रेम सुभाव गुण नीति बिगायो ।
कौन अकाज करे नहिं मोही, गति मति होन हार सम होई ।६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा—चोट न केहरि सुत सहे, निरख मत्त गजराज ।
गुण प्रताप गौरव प्रबल, देखत रतन समाज ।७।

विश्वनंदी कोप—

चौपाई—धरम नीति गुण प्रीति पलाई, उछलो अहम् रहो तन छाई ।
बाढ़ो सोचत क्रोध अपारा, पुत्र विशाख हनन उर सु धारा ।१।
कोध महादव बुद्धि नसावे, कौन अमंगल नाहिं बुलावे ।
सूतो सिंह जगायो वाने, वीर धीर धरना का जाने ? ।२।
विशाख नन्द को ललकारो, खल खाली कर बाग हमारो ।
वीर भोग्या भू सब सारी, कायर ना दम्भी अधिकारी ।३।
मारग भ्रातृ कुटुम तज प्रीती, शठ तू धारी घोर अनीती ।
चोर, नीच, पापी मक्कारा, शतशः कायर तोहि धिक्कारा ।४।
बल हो कछु तो सन्मुख आओ, निज करतूति सु फल चख पायो।
माँगन मेरे गृह को आतो, मैं सारी तो वृथा मिटातो ।५।
नृपति जोग का कारज वे ही, अति तृष्णा विन से जग सोई ।
अब तू बचके कित जा पै हौ, दूध पियो कछु सन्मुख हो हौ ।६।

दोहा—सुनत डरो शठ मंद मति, दीनी सुरत बिसार ।
वाग तजो निकसो रतन, भानु उदय अंधयार ।७।

कुंवर-विजय-लाभ—

चौपाई—धसों सघन द्रुम बेलिन मांही, देख विशाख हंसो कुमराहीं ।
बल धर कुपित उपाड़ो झाड़ा, शठ विशाख उर उपजो जाड़ा ।१।
शठ झट प्राण बचावन भागो, ओट थंभ गहि धीरज लागो ।
मुष्ठि घात सह सको न खम्भा, लखो दीन वह बिन अवलम्बा ।२।
न्याय विना विजयी नहिं कोई, धरम बिगाड़ अयश बहु होई ।
निपट दीन लख कुमर विचारे, विजय होय सब पुण्य अधारे ।३।
अनायास यश मैंने पायो, पूरब पुण्य उदय, कछु आयो ।
हृदय करुण भावन उमगायो, निज विवेक गौरव चमकायो ।४।
महा दुक्ख अघ भोगनु वरणा, नहिं तृप्ति जग-भोग ? न तरणा
महा अनर्थ के कारण एसे, घायो हनन भ्रातृ मैं जैसे ।५।

दोहा—सु भोग, भोगते तोष न, न हिंसा से सौख्य ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहिं मान मरयाद हो, इन वश रतन आसौख्य ।६।

विश्वनंदि कुंवर संवेग—गुरु लाभ—

चौपाई—स्वाभिमान तज इन सुख लेवे, अति दुख व्याधिभोग संजोवे ।
कोप गये शांति सुख आयो, देत विशाख बाग मुह छायो ।१।
मिट अनिष्ट उर समता आई, बड़े पुरुष की बड़ी बड़ाई ।
बड़े काज बड़ेन सों होतें, पुण्य-पाप, धन, गौरव सोहें ।२।
परिजन स्वजन सकल जगनीती, सारी मानो थोथी नीती ।
जग काया सों नाता जोड़ो, मुख को स्वातम हित में मोड़ो ।३।
अपनो सुहित रतन जो चाहो, शुद्धातम भज शिव सुख पाहो ।
प्रशम–संवेग सुगण बलदाई, अनुकम्पा समता सुखदाई ।४।
जग सम्पति से ममता भागी, वृत्ति अनगारि अति भल लागी ।
करो क्षमापन गुरु ढिग आयो, संभुति मुनिपद, नम शिरनायो ।५।
अन्तर बाह्य परिग्रह डारे, मूल अट्ठाइस मुनि गुण धारे ।
धन्य अकारज, सों फल लीनो, विष से अमृत काढ़ि परवीणो ।६।
दोहा—बल वीरज गौरव अधिक, बुद्धि–हृदय शुध होय ।
आतम सुख–शिव–हित सधे, बनें रतन भव दोय ।७।

विश्व नन्दि मुनि

चौपाई—द्वादश-भावना साधु भावें, आतम जोति विमल तम पावें ।
बारह तप दश, धरम अराधें, विमल रतनात्रय सु नित साधें ।१।
धरें त्रिगुप्ति, विश्वनन्दी स्वामी, शुभ संयम उत्तर गुण धामी ।
आतम दृढ़ कृश, मन अरु काया, व्यापे कैसे मोह रु माया ।२।
चउ दिश सुयश बजत नक्कारा, बहु देशन मध करत बिहारा ।
ग्रीषम तपत श्रृंग गिरि ठाड़े, सहें परिषह सु, तप अति गाड़े ।३।
वरषा ऋतु विटपादिक तीरे, टपकत नीर पवन झकझोरे ।
धरे ध्यान तिष्ठें तप धीरा, निशा काल सी, अति गम्भीरा ।४।
शीत प्रहार अरुण बल लाजे, सरिता सरतट मुनियोग सुसाजे ।
दंश मसक कृमि कीट दशावे, उग्र तपी स्वातमता ध्यावें ।५।
दोहा—सहें परिषह बीस द्वै, आतम रच तपवीर ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करम दहत ध्यानन अनल, शुद्ध रतन गंभीर ।६।

सवैया—मोह मगन, तज नीति को, पालो सुत अति नेह ।
ज्ञान जगे सत्पथ निरख, काय विभव तज गेह ।
काय विभव तज गेह, समझ माया दुखकारी ।
मेटा मन का खेद, बसेवन बनके अनगारी ।
वीतरागता रुची, स्वपर को जो हितकारी,
विशाख भुति तज रतन, साधु शुभ शिव मगचारी ।

सवैया—मोह उदय में जीव को, जग सुख भोग सुहाय ।
करणी तैसी करत नित, उमग हृदय हुलसाय ।
हृदय उमग हुलसाय, मोहमाया बल पावे ।
हिंसा चोरी झूट, लोभ धारत हरवावे ।
माने जग को सत्य, भरम वश करम कमावे ।
अंत रतन सब छोड़, जात दुख आतम पावे ।२।

सवैया—ज्ञान अरुण, जग तिमिर हर, स्वपर भेद प्रगटाय ।
आतम सुख परहित सभी, साधत मन बचकाय ।
साधत मन बचकाय, जीव सब लखे समाने ।
करत करम फल भोग, अज्ञ बन किये परमाने ।
छूटन को यह दाव, रतन जो निज हित चाहो ।
निज को जो दुखदाय, करो नहिं अनचाहो ।३।

विशाख भूति नृप वैराग्य

चौपाई—विशाख भुति मन उपजो ज्ञाना, आलोचन कर वन तप आना ।
लगे असार भोग सुख हरणा, वश इन हित निज काजन शरणा ।१
नित्य कहाँ विश्व वस्तु कोई, शरण सहाय न जग में कोई ।
दुखकर भरा सकल संसारा, सदा अकेला आत्म अधारा ।२
साथी सगा कौन जिय होई, अपनो तन जब साथ न देई ।
करम करत अपने को भूले, बिन समता पापन में फूले ।३
मन ना त्याग, सु तप में आने त्रिभुवन भमे सु भरमन ठाने ।
सम्यक ज्ञान रतननहिं साधो, बिना धरम पशुता आराधो ।४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो न सम्हरो नर तन पाये, ले चिंतामणि काग उड़ाये ।
नर परजाय सुकुल वय पाये, यह निरोग तन व्यर्थ गमाये ।५।

दोहा—छोड़ परिग्रह मूढ़ता, कर सम्यक सरधान ।
मुनिव्रतगह मुक्ति चहूं, सफल रतन जन्मान ।६।

विशाख भूति-दीक्षा

चौपाई—उर विराग उपजो अति भारी, लागे राज विभव अधिकारी ।
जागे आग भये बड़भागी, जग कायासों हुये विरागी ।१।
मुनिव्रत धार, गही सत रीती, बढ़ी कानि कुल, गुण गुरू प्रीती ।
सुगुण अट्ठाइस मुनि के पाइ, निरतिचार, त्रय गुपति समारें ।२।
पंच महाव्रत, जीवन रक्षा, समिति पंच कर जोग सुअच्छा ।
नित आवश्यक षट, रुचि साधें, इद्रिय विजय सुमन आराधें ।३।
संयम, तप, वृष, धरत हुलासें, दुर्धर तप तप करम विनाशें ।
ज्ञान ध्यानरत, साधक धीरा, चिदानन्द निरभय बल वीरा ।४।
करत तपस्या फाल सुआयो, धर समाधि मन द्वंद मिटायो ।
दशम सुगग सुर तांने कीना, महा सम्पदा आयु सु लीना । ।५।
निज बल उपजे सब बल आवे स्व विवेक गौरव उपजावे ।
तिथि-प्रभाव दुति, सुख, भावौई, अधिकी आई, परकर गाई ।६।

दोहा—पूरण तिथि सुख भोग वर, संधि भई हित दाय ।
जागे स्वातम जब रतन, सुख अनंत प्रगटाय ।७।

सवैया—सुरग दशम जब अवतरे, ऋद्धि सिद्धि अधिकाय ।
महा शुक्र दिवि भोग सुख, रतन सुभगता ,काय ।
रतन सुभगता काय, कांति बल गौरव सारे ।
अति प्रभाव संयूक्त, भाव गुण उत्तम धारे ।
जिन वर बंदन करत, तत्त्व चरचा मन लावें ।
विशाख भुति सुर मगन, सुतप फल साता पावें ।१।

विश्व नन्दी मुनि चर्या बिहार—

चौपाई—विश्वनन्दि मुनि गुण आगारा, मथुरा आये करत बिहारा ।
छबि दीप्त वपु तप बल धारें, बहत भार गुण, तन अवधारें ।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चरया कारण नगर मंझारा, आये मुनिवर विधि अनुसारा।
अन्तराय कृत पूरव वारा, नाटो बिचकत धक्का मारा॥
लही भूमि मुनि, संभल न पाये, अशुभ उदय लख कोप न लाये
परम शाँत मुनि, विधि अनुसारी, अन्तराय यानो तप धारी॥
विशाख नंदि आयोति ठामा, दूर कार्य कर धरत विश्रामा।
बिन विवेक धन धाम गमायो, परकृत दूत बनो हरषायो।
लख मुनिवर हँस, व्यग सुनायो, बदले धरम-शरम, भरमायो।
बलि कहाँ बल तेरो वैसा, शक्ति हीन यों, शववत् ऐसा।
मदमाते कटु वाण चलाये, बेधे मुनिचित, कोप उठाये।
गोली तें बोली अधिकायो, बोली व्रण न पुरत पुरायो॥
पूरव दृष्य दृष्टि पथ आयो, दुग्ध फणी पी विष बगरायो।
दुर्जन मनु की रीति सदाई, दंरो बीछू करत भलाई।

दोहा—चिनगारी कटु शब्द पड़ा गुपत कषायें जाग।
पड़ी ज्वाल पेट्रोल में, जल सींचत बल पाग।८।
खाये दुहरी चोट को, समलें मुनि, भरमाय।
हृदये अति ज्वाला रतन, मधुरस कहां सुहाय।९।
कषय तपन अतिशय सबल, बाढ़ रतन विनशाय।
मेटे सारी वाढ़ को, वीण नाग बलखाय।१०।

चौपाई—मान गलित शठ तेरा होगा, वच ये तेरे प्राण हरेगा।
मुनिवर कहकर आगे धाये, कटुक वचन शठ! सन्मुख पाये॥
प्रतिफल याको पाना होगा, निज करणी फल दुह चख लेगा।
बना निदान जगत दुख भरना, बना जगत से लम्बा तरणा॥
शांति क्षणेक गये तें आई, प्राश्चित करते समता पाई।
मन्द कषाये सुख जब हानें, निज कर पोषें, गति उन जानें॥
पड़ा निकाचित बंध न टूटा, वस्त्र मजीठ रंगे न छूटा।
करत तपस्या अंत जतायो, मरण समाधि करत हरषायो॥
दशवें दिवि सुर जाकर हूयो, महा विभूति गरिमा सु भूयो।
आधि-व्याधि दुख वेग न शोगा, सुख अनुपम दश सागर भोगा॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धातु हीन तन अति वल धामा, मनहर कांति नयन अभिरामा ।
धर्म प्रभाव मान सुख पायो, धरम प्रेम नित हिय उमगायो ।६।
चैत्य अकृत्रिम, श्री जिन बन्दे, वंदत तीर्थंकर आनंदे ।
सत-संगति गुण, प्रीति सुहावे, भोगत भोग महा सुख पावे ।७।

दोहा—भोग मगन निश दिन रहे, धरम बिसारे नाहिं ।
क्षण सम बीतो काल सब, परो रतन लख नाहिं ।८।
अंतकाल शुभ भाव धर, पाई मानुष देह ।
एकहि गृह रतन अवतरे, जग रूपक हित मेह ।९।

सवैया—विशाख भुति विश्वनंदि सुर, मिले दशम दिवि पाय ।
अतुलित भोगें भोग सुख, हृदय प्रीति अधिकाय ।
धरें प्रीत अधिकाय, परस्पर वार्त्ता करते ।
करते जिनवर राजन, मोद तत चरचा भरते ।
अंतकाल सो पाय, शुभ पोदनपुर सु आये ।
प्रजापति भूपाल, रतन तिन बालक हाये ।

—मंगलाचरण—

आदिनाथ जिनवर नमूं, जिनकर जगत सनाथ ।
अक्षय निधी दायक सजग, रवि शशि नावत माथ ।१।

सुरम्य देश, प्रजापती भूपाल—पोदनपुर नगर

चौपाई—सब द्वीपन मध जंबू दीपा, लोक नाभि सम दिपे अनूपा ।
दक्षिण भरत सुक्षेत्र सुरमयता, करमभूमि उत्तम अघ हरता ।२।
सोहत देश महा सुरम्या, धन धान्यादिक भरा अगम्या ।
पोदनपुर नगरी सुविशाला, लाजत इन्द्रपुरी गुण माला ।३।
जातें रुष धर सुरग सिधाई, सह न सकी प्रभुता गरिमाई ।
प्रजापति तामें भूपाला, दानी गुणी धनी सुख शाला ।४।
व्यापे ईति भीति नहिं देशा, उपाधि व्याधि सुनहिं अन्देशा ।
सुष्ठ प्रजा परिपृष्ठ अनोखी, धरम नीति पथ धारक चोखी ।५।
सत्य अहिंसा सबहिं सुहावे, दान-मान दे मंगल भावे ।
नृपति हर्म्य दो राणि सुहाहीं, लावण्य-कला, सुरूप सदाहीं ।६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयावती गुणधाम सुहानी, सरल सुशील शाँत सुखखानी।
दिवि चय विशाख-भुति उर आयो, सुजन समग्र सुदेश हरषायो।
नाम विजय शुभ वाको भायो, समय पाय बल-भद्र कहायो।
पुण्य गांठ में जाके होई, दुरलभ जग ता, को नहिं कोई।

दोहा—पुण्यवान सुत हो कहु, जनको रतन सुहाय।
कुल दीपे मँगल बढ़े, सुख सम्पति अधिकाय।९।
आनन्द तासों अधिक सु, बाढ़े मंगलचार।
इष्ट–मित्र, जग जीव सुक्ख, सदा रतन उपहार।९।

प्रथम नारायण–त्रिपृष्ठ

चौपाई—मृगावती नृप दूजी वामा, दीपत यौवन मुख तन दामा।
गौरव गरिमा गुण धर सोई, पुण्य तेज महिमा विलसेई।
विश्वनन्दि मुनिवर को जीवा, दशम सुरग सुख चयो पुण्यीवा
मृगावती मन मान बढ़ायो, जनम त्रिया शुभ सफल बनायो
बसो उदर सुख ताके पाके, सभी तृपत अतिकर बहु साके।
मात नरायण अति मुदमाई, सुत आनन लख, अति सुख पाई।
नाम त्रिपृष्ठ दियो मनहारी, जन मन रंजन, कुल बलकारी।
राजा राणी सबको प्यारा, चमके वाको भाग्य अपारा।
कियो उछाह उमग अनुसारा, गृह गृह हूओ मंगलचारा।
जनमे पुण्यवान जो कोई, सुख साधन अधिके अवलोई।
कंपित शत्रु मित्र बन आवें, विविध भेंट दे हरष बधाव।
सब विद्या बालक वय लीनी, न्याय नीति असि आयु नवीनी।

दोहा—नृप परिजन मोदित महा, सब परजा के लोग।
कुल दीपक जोतित दिपे, सफल रतन जग भोग।७।

अश्वग्रीव प्रतिनारायण—अलकापुरी

मंगलाचरण

दोहा—मंगलमय मंगल करो, मंगलदायक नाथ।
निज बल विद्या देहु मम, कीजे नाथ सनाथ।१।

चौपाई—सुन्दर क्षेत्र भरत अति सोहे, गिरि विजयारध ताको मोहे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अलकापुरि दिश उत्तर ठाहीं, धन धान्यादिक पूरित जाही ।२।
मयुरग्रीव नृप की रजधानी, नील-अन्जना गृह पटराणी ।
विशाख नंद कु भोलो जीवा, आयो भव भटकत सु अतीवा ।३।
कोई पुण्य सहाय सु आयो, मानव तन पायो मन भायो ।
अश्व-ग्रीव पायो शुभ नामा, मात-तात-जन-आनंद धामा ।४।
क्रम कर बढ़ पढ़ यौवन पायो, पृथ्वीपति त्रय खण्ड कहायो ।
सुन नर असुर करत पद सेवा, ऋद्धि-सिद्धि वैभव सुख भेवा ।५।
खण्ड तीन की संपति सारी, जड़ चेतन सब आज्ञाकारी ।
अनुपम नारी गृह अधि सोहैं, यौवन रूप कला मन मोहैं ।६।
सहस अठारह अति सुखकारी, प्रतिनारायण महिमा भारी ।
गौरव गरिमा बल अधिकाई, मान महातम कीर्ति गाई ।७।

दोहा—बल, यौवन, सम्पन्नता, देवें परिजन मान ।
एक पाय गर्वित रतन, अधिक अधिक परमान ।८।

मंगलाचरण—

दोहा—चंद्र प्रभु पद वन्दना, चन्द्र कांति दातार ।
बुधि बल विद्या देहु मम, मंगल सुख करतार ।१।

चक्रवाक—नगर—ज्वलन जटी नृप—रथनूपुर देश—

चौपाई—उत्तर विजयारध गुण रूपा, देश सु नरनुपुर, छबि अनूपा ।
श्री सम्पन्न कला गुण धामा, प्रकृति रम्य अति सुभग विश्रामा ।१।
नगरी चक्रवाक रुचि कारी, ज्वलन जटि नृप, जन-मनहारी ।
ज्ञान रूप गुण तेज निधाना, पुण्य प्रभाव सुक्ख मनमाना ।३।
धन विद्या गुण जन सुखदाई, अयन नयन दुति सर्व सुहाई ।
वायू वेगा शुभ पटरानी, पति परायण अति सुखदानी ।४।
सकल कला गुणरूप संवारी, लाजत सन्मुख रती बिचारी ।
सरब सुमंगल सद्गुण पाये, मानो उतर सुरग भू छाये ।५।
दुति तिलकाधिप श्री चन्द्राभा, यश वैभव बल विक्रम लाभा ।
विजयारध नभ इन्दु समाना, प्रिय सुभद्रा गुण-जलधि सुजाना ।६।
वायू वेगा की प्रिय माता, तनया माता से अधि जाता ।
यौवन सुभग सुगुण सुखकारी, उभय कुलों की शोभाधारी ।७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्वलन जटि नृप की पटरानी, नीति परायण धरम समानो ।
दम्पति सुख मयकाल बितावें, पुण्य दान नित कर हरषावें ।८।
सकल सुमंगल गृह तिन जानो, धरम भाव सत संगति मानो।
मात तात गुण संतति मानो, ज्यों फरका समगृह अनुमानो ।९।

दोहा—पुण्य भाव सिद्धी सकल, धन-जन-कीरत भोग ।
बीज पुण्य संचो रतन, कृपक नीति शुभ योग ।१०।

—अर्ककीर्ति—स्वयंप्रभा—

चौपाई—अर्क कीर्ति सुत, नृप मन भायो, गौरव तेज अरुण गति छायो।
परिजन पुरजन सब सुखकारी, वंश बेलि फल अति मनहारी ।१
सुत सद्गुण सब पलने भाषे, चचीन पात विटप पर भासें ।
वहु संपति गृह तिनके आई, बाढ़ी गरिमा औ प्रभुताई ।२।
यौवन सुफल सुखद नृप पायो, आनंद मंगल गीत बधायो ।
निरखत जन को मन हरषावे, दोज चन्द्रवत बढ़त सुहावे ।३।
स्वयं प्रभासु गृह तिन आई, मलिन चन्द्र तिस देख लजाई ।
दीप्ति अनूपम लक्षण युक्ता, अयन इन्दु दुति दन्त सू मुक्ता ।४।
धरम ज्ञान गुण पूरण ताई, यौवन झलक महादुति छाई ।
स्वर्ण सुहागा अरिणि सुयोगा, निखरो रूप सुगुण वय जोगा ।५।
मात पिता जन लख हरषाते, धरम, सुष्ठता मोद बढ़ाते ।
बहिन भाई में अतिशय प्रीती, दमकत गृह लखकर शुभ नीती ।६।
परिणय वय लख मन हरषायो, उत्तम गृह वर ढूंढ़ न भायो ।
मात-तात मन चिंत सुधरते, कुल बल शील सुगुणता लखते ।७।

दोहा—गृह जा यौवन वति सुता, मात तात नहिं चैन ।
दिन बीते निशि कठिन अति, नींद रतन कहं रैन ।८।

चौपाई—संभिन्न श्रोतृ निमित्तज्ञ इक आया, प्रवीण पना जनगान समाया।
बुलवायो सह आदर राया, विनय सहित पूछत तजमाया ।१।
पुण्यवान नर को गुण धामा, परिणेगो तनया अभिरामा ।
मोकों सो तुम देहु बताई, करिहों सकल जतनमन भाई ।२।
यौवन वह गृह वर अनुरूपा, उत्तम कुल, गुण, पुण्य सरूपा ।
सरस सरल सुनेह सम्पन्ना, धल बल परिजन अन्न, विपन्ना ।३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सब विधि पूरण सुख करतारा, इच्छित वर, वर-रुचि अनुसारा ।
कहे निमितज्ञ सुनो गुण भूपा, भाग्यवान तुम सुता अनूपा ।८।
प्रमुख अर्ध चक्री—महारानी, सुता तुमारी हो पटराणी ।
कीजे चिंता तज कर काजा, नारायण पद पुण्य समाजा ।५।
त्रिपृष्ठ सु होवें श्री महाराजा, खगपति उभय श्रेणि तुमसाजा ।
अति सनेह धर हृदये मांहीं, महा कृतज्ञ, पद देव उमाहीं ।६।

दोहा—वचन महा हित सुष्ठ, खोवें जिय का दुक्ख सब ।
बीज सु उत्तम मिष्ठ, वृक्ष रतन फल फूल सह ।।

पोदनपुर-संदेश-प्रेषण—

चौपाई—वच प्रमाण कर लीने माथा, मन्त्रिन मन्त्र मुदित नर नाथा ।
प्रिय मन्त्रि वर सुनो मनलाई, इन्द्र पत्रिका लिखो सुखदाई ।१।
पोदनपुर शुभ लेकर जाओ, विनय प्रजापति नृपति सुनाओ ।
सुनत सु मंत्री हरषित धायो, पत्राँकित करके सुख पायो ।२।
स्वस्ति श्री शुभ बुद्धि निधाना, सब ज्ञायक जग-रीति विधाना ।
चातुर्य महा गुणन सु धामा, बल असीम वैभव अभिरामा ।३।
नमि राजा के वंशज सोई, दुति धारत रवि, खगपति जोई ।
ज्वलन जटि रथनूपुर राजा, बल वैभव गुण सहित समाजा ।४।
शुभ ऋषभ देव, सुत बाहुबली, वंश शृंखला जिन द्युति शाली ।
पोद नेश्वर नरपति साजा, सफल मनोरथ पूरण काजा ।५।

दोहा—प्रजापति सँग प्रेम मम, नमस्कार उरनेह ।
कुल मैत्री उज्जल रतन, प्रीति उभय हित मेह ।३।

चौपाई—कुशल क्षेम युग ओर निहारो, ममता पत्र पाये उर धारो ।
प्रजानाथ ! सँबंध हमारा, परम्परा गत चलत तुमारा ।१।
पुष्टि तार्थ मैं विनती करिहों, चाहत त्रिपृष्ठ सुत कन्या वीरहों ।
भ्वयंप्रभा पुत्री गुण धाती, स्वयं इन्दिरा वैभव गाती ।२।
विस्तृत प्रेम सरसता जाढ़ी, कुल, लज्जा, शोभा गुण काढ़ी ।
प्रबल अकांक्षा, शुभमति मेरी, पूरो काज लाज रख मेरी ।३।
दे स्वीकृति पूरो सब काजा, उर ममता हित नेह सुसाजा ।
मुहरांकित कर, मंत्रि सु दीनी, मोद धार मन, ता गहलीनी ।४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गनमत सचिव सु भेंट सजायो, चल नभ पथ पोदनपुर आयो।
मन रम्यक पुष्वक वन भायो, शोभा गंध निरख हरषायो ॥

दोहा—यदि होवे भावि–प्रवल, सहज निमित जुड़ जांय।
मन वांछित पावे रतन, पूरब पुण्य पसाय ।६।

संदेश-स्वीकरण, नृप-प्रजापति-मोद—

चौपाई—सकल शकुन शुभनीक सुहाये, कुमर सुनेह हृदय हरषाये।
ज्ञानी कुंवर निमिति बुलवाये, अचरज आदिक योग जनाये ।१।
निमितज्ञ सुन मन, मुदित सुभाषी, इतिवृत पूर्व कथा पर काशी।
दूत शुभागम हितकर भानो, कर अगवानी वहु सन्मानो ।२।
साँग दुत ले, मन्त्रि सु आये, अति प्रमोद उर, धर पैठाये।
शिर नायो वह कुशल सुनायो, सादर नृप सँदेश जनायो ।३।
पत्र-यथा-विधी, अपरण कीनो, आसन शोभित नृप तव दीनो।
पोदनेश्वर लख शुभ भांती, सुपूरव वृत लखो, पढ़ पाती ।४।
बढ़ो हरष मन कहो न जाई, सहित सनेह रतन निधि पाई।
निरखत अत्यावश्यक मानो, लिखा सुना सो सब परमानो ।५।
मन तन–हद आ,-नन्द उछाहो, कह न सको कछु मोद भुलायो।
सव मिल मंत्रिन मँत्र सुकीनो, मँगल योग्य सुलख सव लीनो।

दोहा—ज्वलन जटि नृप प्रिय अति, उनसे सवको नेह।
शिरो धार्य आज्ञा रतन, पूरो आस सनेह ।७।
नृपति कहत मँत्री सुनो, बतलइयो सन्देश।
चाहो तुम सब होयगो, प्रीति रतन गणवेश ।८।

दूत बिदाई—

चौपाई—मान पान दे दूत पठायो, महा मुदित सो नृप पै आयो।
द्रुत गति मन सम करते आयो, अतुल नेह नृह मोह उमाहो ॥
इक क्षण में रथनूपुर पायो, सकल-सभा वृतान्त सुनायो।
सकल सुनत जन उर हरषाने, प्रेम-प्रीति-जग रीत समाने ।
लख सज्जन सज्जनताई, यशः चन्द्रिका जन नम छाई।
बाँछित ज्वलन जटि वर पाया, मनो सुरग सुख अवनि सु आया।
पुण्य प्रभाव कहा नाहिं होवे, पूरे बाँछा सुक्ख समोवे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धर उत्साह लगन सुधवाई, सफल मुहुरतसु लगन पठाई ।४।
आनन्द सकल नगर सु छायो, नर नारिन के मन अति भायो ।
गीत–नृत्य-वादित्र्य बधाई, सुकृत पुण्य जिन पूज रजाई ।५।
दोहा—उछलो उदधि सनेह जन, नेह सनेह दिखाय ।
विरदें सगरे नारि नर, जग पथ रतन सुभाय ।६।

लग्न-प्रेषण—

चौपाई—अनुपम भेंट नृपन अनुसारी, वस्त्रा भरण सकल सुखकारी ।
फल मेवा बहुतक मंगवाये, सु व्यंजन आदि सरस सु भाये ।१।
शुद्ध पत्रिका लगन लिखवाई, विधि विधान सब रूप सजाई ।
सबके मन हरषावन वारी, मान सनेह प्रीति शुभ द्वारी ।२।
नगर उछाह वाद्य बजवाये नारिन मिल शुभ मंगल गाये ।
नगर भोज नरपति करवायो, याचक जन को दुक्ख मिटायो ।३।
बंदी जन सब दिये छुड़ाई, चहु दिश विरद बढ़ो सुखदाई ।
सफल दूत तब निकट बुलायो, सब लगन महुरत सु समझायो ।४।
बहुरु विनय जुत पाती कीनी, मोदित दूत पठावन दीनी ।
चलो दूत मन आनन्द धारे, सकल साज सामान समारे ।५।
पहुंचो पोदनपुर सु जाई, नृप प्रति खबर दई मनलाई ।
नरपति उठ अगवानी कीनी, यथा-योग गुण, रीति सु भीनी ।६।
दोहा—मूल सुहित लगन पत्रिका, सह आदर सम्मान ।
आकर प्रेम बधाइयो, धरम रीति कुल आन ।७।

पोदनपुर-आनन्द—

चौपाई—यथा योग्य नृप पत्रिका लीनी, सकल व्यवस्था, आगत कीनी ।
भोजन पान सुरुचि करवायो, सुखद सुरम्य विश्राम दिखायो ।१।
सुतगन-पत्रिका सचिव पढ़ाई, सरस सुनेह सुमन मन भाई ।
बांचत पत्रिका आनंद छायो, निरखत भेंट सबहिं मन भायो ।२।
आनंद भेरि सु नगर दिवाई, नगर सकल शोभा करवाई ।
सुन्दर हाट बाट गृह सोहें, दिपत द्वार तोरण धुज मोहें ।३।
सजे सदन प्रसादत ऐसे, नवल सुहागिन सज्जित जैसे ।
उतर खमण्डल भू पै आयो, मनो मयंक उड़गन संग लायो ।४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीप मालिका सदन सुहाई, नेह उद्दीपत नृपति लखाई।
धुजा पताका कलश दिपाई, साज-गीत-मन-मधुर रसाई ।५।
नरपति दान सु याचक दीने, मान-पान वहु सज्जन कीने।
नगर-भोज राजन करवायो, वंदी जन सब छूट दिवायो ।६।
मंदिर कलश नये धखाये, सब मंगल जिन पूजत पाये।
अछार वसति का गुरू पठाई, शाला औषधि-ज्ञान खुलाई ।७।

दोहा—अभय दान सब जी दियो, नर-पशू पक्षि सु पेख।
सुजन प्रथम धरमहिं धरे, सुक्ख रतन शुभ लेख ।८।
विधि वैवाहिक सब करीं, देखता जिय सुख पाय।
परिजन पुरजन सब रतन, नेह—मान, बुलवाय ।९।

कुंवर-त्रिपृष्ठ-बारात—

चौपाई—वनी वरात सुहावत ऐसे, देखी सुनी भई नाहिं जैसे।
सज चतुरंगी सैन सुभांती, सजे निमंत्रित सखा संगाती ।१।
मानव सागर उमगत धाया, प्रेम सिंधु-विधि पौन बसाया।
नृप ने सबका मान बढ़ाया, आदर देकर हृदय लगाया ।२।
कर सम्मान सबन नृप माना, जय जयकार बढ़ा असमाना।
गोले छूटत मंगल गाजो, गीत वाद्य सुर नभ आराधो ।३।
दूलह साज शक्र सम सोहें, देखत जन मन आनंद मोहें।
निकस बरात चली अनमोला, जय जयकार भरत मधु घोला ।४।
वाद्य निशान सुहावत चाले, गावत कामिनि गीत रसाले।
सन सनात नभ चले विमाना, बैठ विद्याधर भल गुण खाना ।५।
धूल उड़ी उब नभ लों धाई, कौतुक देखत रविन लजाई।
दूलह-तेज अनूपम साजे, चढ़ विमान चाले नभ गाजे ।६।

दोहा—मोद भरे मन सब लिये, हरषित सकल अमानू।
बाजत बाजे विविध बहु, चाले रतन कुमार।

कवित्त—खौर भरे शिर मौर धरे, धुनि, राज चढ़े चल दूलह राजा ॥
तेज फुलेल लगाय के अंजन, वस्त्र आभूषण अनुपम साजा ॥
गाल गुलाल सु माथे पै चन्दन, कानन कुण्डल उर मणिमाला।
चमकत चम चम भल अति सुन्दर, ओष्ठ अरुण सु रतन पिक शाला।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कवित्त—निरखें ललक सजनी मनहार, निछावर होत सुसंदर बाला ।
देखत रूप वनत अति सजनी, दीरघ बाहू सु वक्ष विशाला ।
आँख सनेह धरें उर नेहसु, गाल-गुलाल जु भौंह सु काला ।
इन्दु सो माथ, सु दमकत गात, रतन वरराज सुचक्षु विशाला ।२।

रघनूपुर चक्रवाक नगुर बारात आगमन

चौपाई—चलते चक्रवाक पुर आये, मिलत उभय आनद सरसाये ।
करत जुहार परम हरवायें, सबको यथा भोग ठहराये ।१।
मान-सन्मान यथा सु कीना, भोजन पान सु आसन दीना ।
कर अगवानी आनद पाये, कुशलक्षेम पूछी मन भाये ।२।
गोद युगल नृप अतिशय माना, प्रेम सुहित मारग उर आना ।
पुण्य योग दुरलभ सुलभाना, सुख समृद्धि वैभव गुण नाना ।३।
कन्या कारण आनन्द भाना, कन्या रतन सुखद सुखखाना ।
समाज सुरीति सुधर्म सुहावे, विन परिचित गृह नेह सजावें ।४।
करत परस्पर सब विसवासा, नीति, धरम जनहित अभिलाषा ।
लगी वारात उभय निहोरा, मंगल गीत वादित्र बहोरा ।५।
पट आभूषण अनुपम साजे, छिपे अरुण लख हृदय सु लाजे ।
मंगल दीप सजे तिय गावें, गारी गावत नारि सुहावें ।६।
चतुरंग सेना सजकर आई, दूलह दिपत सजे बहु भाई ।
घंटा झालर बाजे बाजें, आतिशबाजी, दुतिनभ गाजें ।७।
लगी बरात सबके मन भाई, भई परस्पर भेंट भलाई ।
करत निछावर मन उमगाये, मुद्रा कंकड़ फूल लुटाये ।८।

दोहा—द्वारापेक्षण सुखद अति, मुदित मंगलाचार ।
अति सनेह बैठक दई, कर स्वागत सत्कार ।९।
प्रेम भरो नरपति हृदय, आये सज्जन द्वार ।
कन्या रतन महत्व अति, याचक रतन दातार ।१०।

पाणिग्रहण

चौपाई—सख सिद्धि सिध पूज रचाई, सविधि वरण किरिया सुखदाई ।
लगत लुभावन जोड़ी ऐसे, सोहें कामदेव रति जैसे ।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुरपति शचि जिम शोभा पावें, स्वजन प्रजा सु मंगल गावें।
सकल अशीषत उर हरषावें, शशी रोहणी ताप बुझावें।
जुग जुग जियें सकल सुख आवें, पुत्र पौत्र वहू सम्पति पावें।
करत विदाई विनय समाई, सेवा कछु हमपै, नहिं आई।
कठिन काज ये बड़े कहावें, शक्ति हीन हम थक सकुचावें।
क्षमियो सकल आपनो लखके, तुम महत्व सागर से बढ़के।
विनय सुनत सबही हरषाये, प्रजापति नृप गले लगाये।
करी विविध विधि तुमने सेवा, महादान कन्या सुख देवा।
ऐसो नेह सदा तुम रखियो, सदा कृपा तुम हम पै करियो।
ज्वलन जटि सुन मुदित अपारा, देत अनुपम भेंट कुमारा।

दोहा—सिंह गरुड दो वाहनी, विद्या रतन सुखाय।
दीं जमातृ को हरष धर, अतिशय प्रेम जनाय।७।

सुष्ठ दुष्ठ जनभाव

चौपाई—उभय ओर आनन्द अति हुयो, प्रेम प्रीति जन रीति सुभूयो।
सज्जन साथ सजनता बाढ़े, लुख सरसे शिष्टाचार सु गाढ़े।
पर उपकारक शिष्ट सदाई, अपकारक जग दुष्ट हसाई।
निज पर का विध्वंस रचावें, जग समाज गुण नीति नशावें।
रवि प्रताप नहिं, उल्लू भावे, विरहिन ताप इन्दु मन भावे।
चंदन रगड़त तप प्रगटावे, दुष्ठ शांति के भाव नशावे।
विषधर पय पी विषहिं बढ़ावे, सती-सुमन पुंश्चली डिगावे।
प्रीति महा खल की अघखानी, संगति बाकी नरक समानी।
दया सरलता शाँति समाई, कृपा क्षमा सज्जनता भाई।
अहं, अशाँत, दुष्ट मदभीना, दंभी छलि पापी परवीना।

दोहा—परहित रत सज्जन हृदय, गहे सदा सुख रीति।
पर पीड़क दुरजन मिटो, रतन धरम कुल नीति।६।

अश्व ग्रीव कोप प्रणय

चौपाई—अश्व ग्रीव सुन परिणय काना, महा शोच धर मन पछताना।
मद जागो अति मत्त बनायो, धरम न्याय नहिं रीति सुहायो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अरध-चक्रि मैं अति बलवाना, शठ सेवक मुझपै इतराना ।
जेती उत्तम वस्तू प्यारी, नस्पति ताका है अधिकारी ।२।
ज्वलन जटि मद भार सतायो, उत्तम कन्या रतन छिपायो ।
पापी ताको मजा चखाऊं, बंधन प्रजापति करवाऊं ।३।
स्वयं प्रभा ले रास रचाऊं, नारी रतन सुभग सुख पाऊं ।
चिंतन बाढ़ो क्रोध कराला, कीनो रूप अपन विकराला ।४।
अयन नयन सब विढप लखाहीं, वरण रक्त तन कम्पित बाहीं ।
अठ दस सहस सु गृह तिय सारी, दुष्ट तुष्ट ना छविगुण भारी ।५।

दोहा—नारी नर के हेतु, नर है अति प्रधान वर ।
पुरुषत्व सबलता सेतु, त्रिया रत्न बिलासनी ।६।

सोरठा—मूरख मन का हेतु, अबुध भरो अति मद जरो ।
नित अपंग गृह खेत, एक चक्ररथ जिमि रतन ।७।

शठ धारणा नारि उपेक्षा

चौपाई—दासी नर की नारी माने, मनु अनुगामी छाया जाने ।
पाद त्राण बिन इच्छकजैसे, नारी अनुरूपी हो तैसे ।१।
मन बुधि सारी नर आधीना, नराधीन सब मरना जीना ।
शठ नर यों का जीना जाने, अर्द्ध अंग जा वायु जु हाने ।२।
बल से भय हो, नेह न भाने, प्रेम मेह बिना विटप सुखाने ।
अहं भरे मन बुद्धि न जागे, सुयश उपाटन रीति सु पागे ।३।
दीनी अज्ञ रण भैरि बजाई, सैना चतुरंगी सब सजवाई ।
करण आक्रमण मग पग दीना, अनीत समाहित नीति होना ।४।
धिक! धिक!! कहत सकल नरनारी, आन कान न स्वेच्छाचारी ।
अज्ञ धृष्ठ शठ, न वरजे जाहीं, ताड़न पाये बिन उमछाहीं ।५।
सकत रोक नहिं, ईश सुनाई, बुरो होय या, सकल मनाई ।
बने अमंगल निकसत ही से, सूझे जस होनी हो तैसे ।६।

दोहा—मान श्रृंग अक्षान रथ, मोह तिमिर उर छांय ।
कैसे सूझे रतन पथ, यत्र तत्र दुलकाय ।७।

अश्वग्रीव की रघनूपुर चढ़ाई

चौपाई—नृपति सहायक साथी लीने, पराधीन जो विवश मलीने ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रथनूपुर नग ऊपर छाये, रण भेरि सबके शोच बधाये।
मानी अज्ञ नहिं करत विचारा, निजसु बुद्धि बल नाहिं पसारा
अनहित-हित कछु सोचत नाहीं विवश अवल सुख सपने नाहीं
किये उपकार सुमन न लावें, दंभ गढ़े दुख पर सुख पावें।
सुनत घोष कायर दुख छाया, बाग विधाता काहि सुहाया
वीर सुनतख मन हरषाये, उर बाँकुरता रण उमगाये।
जन-गण सुनत सुमन अकुलाने, व्यंग विधाता कर मनमाने
कछु दिखाय फिर कछुक दिखाया, जात पड़े नहिं करमन माय
सकें न लख खल प्रीत विभूती, करत उलूकन खल परतीती
सजग त्रिपृष्ट सु सैन्य सजाई सन्मुख डटने भेरि बजाई।
चतुरंग सेना आगे धाई, यथा थान सब कुमुक जमाई

दोहा—वीर हृदय वीरत्व जगे, धोंय पाप मल जान।
उत्तम फल पाये कहो, वीर रतन सुखमान।७।

त्रिपृष्ठ रण प्रगलभता

चौपाई—ज्वलन जटि सुनकर आये, मंत्रि न मंत्रित साज सजाये।
दियो नगारा खबर करायो, सकल सेन आदेश पठायो
सुन त्रिपृष्ठ अति मन उमगाने, ज्वलन जटि प्रति आग्रह ठाने
मौका हमको देहु मिलाई, बरजत एक सु दूसरे धाई
धरत सकुचनृप आज्ञा दीनी, सारी सैन्य साथ में दीनी।
सजी सैन चतुरंग विशेखी, आन बान मय शान अनोखी
लेकर परिकर सन्मुख धायो, वीर हृदय था कब घबड़ायो।
बाँध सिंधु को रोकत जैसे, अश्वग्रीव रुकि सेना तैसे
बोलो अश्वग्रीव भग भारे, प्राण बचा बाला कर नेरे।
कड़के त्रिपृष्ठ भाग अन्याई, लाज न कहते तुझको आई
धरम नीति गुण रीति भुलाई, सन्मुख तेरी मृत्यु धाई।
अपनो, जग को भलो जु चाहे पछल पाछ लो प्राण रखाई
उभय सेन बढ़ सन्मुख आई, कटुक वचन कह शोर सवाई।
घमासान रण मच घनघोरा, दिखती मार काट चहुं ओरा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वीर वीर लख आगे धाये, परशु पाण खड़ग चमकाये।
पहिन कवच कर ढाल सु साधें, करें प्रहार परस्पर बाधें ।८।
सरित रुधिर में रहे न हाई, विलखें अंग-भंग भू पाई।
गज, रथ, अश्व भू मांही, शैल लघु सु सागर उतराहीं ।९।

दोहा—त्रिपृष्ठ सेन आगे बढ़ी, लख स्वामी हुँकार।
उछल रहे रण वांकुरे, रतन नयन अंगार ।१०।

अश्वग्रीव का नायकत्व—

चौपाई—अश्व ग्रीव लख भागत सेना, गरजे करके रक्त सु नयना।
मैंने बहुतक लड़ीं लड़ाईं, नहिं ऐसी कठिनाई आई ।१।
कुपित महा सैनिक ललकारा, धिक! जीवन अरुगर तुम्हारा।
नमक चोर बन भागत कैसे, पीठ बताय वीर तुम कैसे ? ।२।
जान ना रण भूमितज पै हो, अपने नाहक प्राण गमै हो।
सन्मुख डटकर लक्ष्य समारो, शूरवीर सुत साहस धारो ।३।
विजय श्री जो लेकर जै हो, अति आदर गृह बाहर पै हो।
वीर गति जो रणथल हो है, नमक उऋण सुख, सुरग बने है] ।४।
दोनों लोक बने इस ठाहीं शीश तुमारे विजय सदाहीं।
दुगनी देऊं वृत्ति कराई, नहिं सेवक तुम मेरे भाई।
औषधि भली भांति करवाऊं, गृह कुटुम्ब सब दुक्ख मिटाऊं।
जीते भाग सु अपनो पै हो, सुयश साथ आदर उमगैहो ।६।

दोहा—लौटे धर साहस सुभट, कायर कपित पलाय।
रतन ऊंच गौरव गिने, छिपत नीच बिललाय ।७।

अश्व ग्रीव-त्रिपृष्ठ युद्ध—

चौपाई—अश्व ग्रीव आ सन्मुख आगे, सकल सेन बल, साहस जागे।
करतो मार बढ़त लख पाये, त्रिपृष्ठ नारा-यण बल खाये ।१।
गरजे उभय ओर दुइ योधा, दावानल सो भड़को क्रोधा।
चमके शस्त्र खनक भयकारी, करते रोक मार ललकारी ।२।
परत सफल नहिं युक्ति दिखाई, कोपो अश्वग्रीव झुंझलाई।
लियो चक्र कर दियो चलाई, मन त्रिपृष्ठ कुछ शंका आई ।३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चक्करत चक्र सुकर में आयो, त्रिपृष्ठ कुमर सु हरष बधायो।
कहि रे। अश्व ग्रीव गृह जा रे, बचा प्राण मत, सन्मुख आरे।
नीति रीति वृष, मेटन हारा, अधम निर्लज्ज, सु, नरकन द्वारा।
सुन त्रिपृष्ठ तू गौरव लेता, चक्र प्रजापति गृह भी होता।५।
गरज रहा क्या इसको पाया, काल तेरा लख सन्मुख धाया।
कैसे बचकर भागि सकेगा, निज करणी फल शीघ्र चखेगा।

दोहा—महा प्रबल भावि रतन, वासों कौन बसाय।
गति जैसी उपजे मती, करनी व्यर्थ न जाय।७।

अश्वग्रीव-मरण—

चौपाई—उठा चक्र नारायण लीना, अश्व ग्रीव उर वार सुकीना।
लगत चक्र गिर, अवनी धारा, रौद्र आर्त्त भावन ने मारा।
कोई पुण्य बिना नसहाई, निज का शस्त्र बना दुखदाई।
गौरव तन बल, धन अधिकाई, परिजन पुरजन सुत विभुताई।
गाँठ पुण्य हो सब सुखदाई, विलखें पुण्यहीन दुख पाई।
बहु आरंभ परिग्रह धारा, परो नरक सातें दुख भारा।
अज्ञ, अबुध सु अघ-दुख उपजावे, आतम बल ताको नश जावे।
गहो धरम, यातें सब प्राणी, धरमी पावें शिव सुख खानी।
दुख तें काढ़ि सौख्य सु लावे, आत्म ज्ञान बढ़ दुक्ख नशावे।
व्यापे व्याधि नाहिं भय पीरा, धरम सहाई जगत गंभीरा।

सोरठा—सु उमगो वक्ष त्रिपृष्ठ, सु विजय श्री गलमाल हिय।
पुण्य रतन उत्कृष्ट, बिस्तरी ख्याति खण्ड त्रय।६।

त्रिपृष्ठ विजय-वैभव—

चौपाई—सुर नर खगपति नृप बहु भाँती, देवें भेंट रतन गुण राती।
सुता सुगुण आभूषण लाये, मोद सहित आनंद बढ़ाये।
अपनो हार्दिक प्रेम जनायो, करत भेंट उर आनंद छायो।
लख सेवक सबको संतोखे, मान पान दे त्रिपृष्ठ भेंटे।
अरध चक्री अति कियो उछाहो, पट आभूषण सविधि सुभाव
सुकृत पूरब सुजन समुदायो, वर विभूति बहु लाभ दिखायो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पानी में जो शक्ति समाई, विविध रूप सुख, कर मन भाई ।
सुगुण सभी विद्या वल आये, वने योग सब बिना बनाये ।४।
आदर ज्वलन जटि वहु कीनो, मान सन्मान विविध विधि कीने।
पायो हरष हृदय न छिपायो, वर ग्रह वैभव अतुलित आयो ।५।

दोहा—करी विनय अति नेह मन, उपजो परम सु तोष ।
धन्य सुता के भागतें, शुचितम रतन सुवोष ।६।

कन्या-बिदाई—

चौपाई—कछुक दिना वीते सुखराती, स्वस्थ भये सुसेन वराती ।
प्रजापती नृप बिदा सु मांगी, ज्वलन जटि की मूर्च्छा भागी ।१।
बहुतक विनय करी सकुचाई, बनी न हमसे तुम सिवकाई ।
क्षमियो सकल आपनो लखके, दीजो आज्ञा बिना अटक के ।२।
कन्या मोकों अधितम प्यारी, जगत रीत लख, विलग-विचारी।
करि है सकल जनन सेवकाई, अबुधि बाल, क्षमियो चित लाई।३।
सुनो राय कन्या गुण शाली, युग कुल दीपक पुण्य विशाली ।
सुत हित देकर सदन सजायो, बड़े भाग जो दाता पायो ।४।
सदा नेह तुम ऐसो रखियो, अपने गृह सम वहि निरखियो ।
मन में याद सदा तुम रैहो, अनुपम सेवा, हृदय उमेहो ।५।
धरत परस्पर प्रीत मन, विदा लई नृप राय ।
पुलक-विरह कहते नयन, बरसो रतन उछाय ।६।

अरध चक्री भोग-मरण—

चौपाई—विजयारध की दोनों श्रेणी, अपरण ज्वलन जटि प्रीति कीनी ।
विभव संग सुरपति समलीना, कुमर गमन निज पुरको कीना ।१।
पोदनपुर सो पहुंचो आई, सत्त रतन शोभें सुखदाई ।
सोलह सहस विद्याधर सोहें, विनय करत नृप मन को मोहैं ।२।
सोलह सहस-नारि सदनाई, स्वयं प्रभा पटरानी भाई ।
सुख साधन सब सकल सुभाये, सारे अर्द्ध चक्री जो गाये ।३।
महत पुण्य फल का नहिं होवे, पुण्य सदा सुख, पद शिव देवे ।
सु चक्री भोग मगन सुध खोई, नाहिं तृप्तिता भोगन होई ।४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुड़ घृत पड़ अगनी भड़कावे, विषय हलाहल तृष्णा लावे।
बहु तक भोग चिंत उपजाये, छोड़ें जैसे सुख सो पायो।५।
आरंभ-परिग्रह तृष्णा भारी, आर्त्त रौद्र धर नरक अधिकारी।
चक्रि पर रच रहो भुलायो, निजहित साधक समय न पायो।६।

दोहा—अंतक आयो चक्रि को, विषय कषायन सेत।
लखो न आत्म विवेक सु, राज नरक को हेत।७।
गयो सातवें नरक में, रतन महा दुख पाय।
यहां पै जैसी रुचि मन, मिलो दृश्य बहु आय।८।

परिग्रह दर्शन—

चोपाई—दुख की खानी परिग्रह जानो, बाढ़त विषय दाह अधिकानो।
आरंब अधिक अधिकतर होई, अगनि बढ़त ईंधन संजोई।१।
व्याधि तृषा जब काया, पीवत नीर अधिक उमगावे।
ज्यों ज्यों रुचिकर साधन पावे, संग्रह अरणि अधिक बल पावे।२।
मोह रु तिसना ताहि सतावे, बढ़त अहं नर धरम गमावे।
कर अनिति कुरीत ना लाजे, धरम समाज न, मन में साजे।३।
काहू को निज सम नहिं जाने, जीव सुभाव दया न माने।
कछु ज्ञान-तत्व, लख नहिं पावे, द्रव्य भाव पहिचान न भावे।४।
मगन-भोग सुख, पर लपटावे, मूर्च्छित चेतन पथ ना पावें।
कारज करत अहं दृढ़भ रना, गरिमा वरधक अघ दुख मरणा।५।

दोहा—विषय चाह मूर्च्छा धसे, परिग्रह विवश जु होय।
वृद्धि जतन थिरता रतन, दुक्ख धरत अवलोय।६।

परिग्रह प्रभाव—

चौपाई—परको दीखत सुखी अपारा, अंतर वाके द्वन्दत आरा।
सहवे, करवे, शकती नाहीं, दीन अहं वश दुखी सदाहीं।१।
पुण्य पाप फल, ठाट न जानें, पित्त प्रकोप दुग्ध कटु मानें।
मुनि यति को भेषी करमाने, धर्म हेतु व्यय ठगनो ठाने।२।
काज करत शुभ उर ना चावे, धर्म समाज प्रेम जो लावे।
धरम विघातक दीर्घ संसारी, चिद सरूप श्रद्धा न कुदारी।३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जप तप संयम विरथा पावे, काय मगन निज रूप भुलावे।
काया जग को शाश्वत माने, पुद्गल खण्ड दरब निज जाने।४।
जो जग जीव धरम पहिचाने, अमल अविनाशी सु जिय भाने।
करम फला फल जगमति जोई, शुद्ध भावना तप धर होई।५।
सोरठा—पुण्य पाप जी चाल, लखे जगत को सो लखे।
निज पर भेद संभाल, बीज रतन राखे कृषक।६।

संयम महत्व—

चौपाई—संयम जाके मन को भावे, मोह महातम ताके जावे।
जिन उर संयम नाहिं सुहावे, जीव बोध अरु सुख नहिं पावे।१।
संयम साधक जी बड़ वीरा, शिव पावें वे काट जंजीरा।
संयम बिन भटके जग प्राणी, संयम बिन होवे गुण हानी।२।
संयन बिना नीच गति पावे, नरक तिरयंच गति दुख पावे।
नरक कुभूमि विकलता दानी, कंटक पूर्ण दुर्गंधित मानी।३।
छूवत त्रास अधिक तम भाई, बीछू नहस डसें अधिकाई।
कृमि कुल कलित श्रवत घिन सरिता, दाहक राध रुधिर अनुसरता।४।
उष्ण-शीत बाधा अति मानो, गले मेरु सम लोह प्रमानो।
नारकि रूप भयंकर धारें, करें परस्पर घात, विदारें।५।
कौन दुक्ख सो तहां न होई, क्षुधा-तृषादिक, अधिक अनोही।
तपत तैल या अगनि जलावें, बाधें मारें राधें खावें।६।
लोह त्रिया कर तपत भिड़ावें, शीशा तांबा घौल पिलावें।
तिल तिल तन पै मरण न होई, विलपे किलपे आयु समेई।७।
सोरठा—नरक महा दुखकार, विषम भूमि दुख से भरी।
नारकि दुष्ट गंवार, संयम रतन, बिना परे।८।

त्रिपृष्ठ-पुनर्भव—

चौपाई—नारकि पूरण तन जा पायो, महुरत दो वपु पूरण थायो।
कर मुख नीचे भूमी पायो, परसत ताको अनि दुख पायो।१।
उछलो ततक्षण योजन तीसा, कठिन कठिन कर भयो भुमीसा।
क्रंदन करुणा वर्धक कीयो, मारें नारक बिलखो हीयो।२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीन भयो अति, हो भय खाई, मन चिंतत अघ, सुरत बनाई।
कोंन कहां मैं यह भुमि आयो, कारण कवन यहां को लायो ।३।
दुखमय दुखकर, जन दुखकारी, आकृति प्रकृति सबै भयकारी ।
सुख में मगन भयो विभु भूलो, विभू !दुक्ख अति आंखन झूलो ।४।
करणी कीनी जो अविचारी, आई सुरत-भोग दुखकारी ।
बहु जीवन को वृथा सतायो, कटुक वचन कह हास उड़ायो ।५।
पर धन परतिय बरवस छीने, मार काट रच राज सु लीने ।
बिन विचार के सम्पति जोड़ी, ज्यों ज्यों बढ़ी लगी अति थोड़ी ।६।
भुभक्ष्य भक्ष्य सु भेद न लायो, अनिष्ट असेव्य चलित सुभायो ।
स्व पर क्रोध सदा दिन राती, शाँति सुधा बिन विषयन राती ।७।

दोहा—पेया पेय विचार नहिं हेयाहेय न भान ।
ऐसे भटके को रतनं, महा नरक इक ठान ।८।

पश्चाताप—

चौपाई—काया, छबि, बल, कुल, जाति उतानो, ज्ञान प्रताप सु, मद निज भानो
व्रत संयम तप, धरे न कोई, किया सुपात्र दान ना सोई ।१।
अज्ञ, पूजन तीरथ नहिं कीना, आरंभ परिग्रह सु चित दीना ।
अज्ञ,-आ करणी, का फल आया, विवश अकेला दुख अब धाया ।२।
कहाँ जाय अब शरणा पाऊं, का से अपनी कथा सुनाऊँ ।
अवधि विभंगा कर ये जानी, अपनी मूढ़ दशा पहिचानी ।३।
मिलकर नारकि दल बहु आया, मार काट अति धूम मचाया ।
अंग भंग कर ओंट कढ़ाई, महा दाह उपजी दुखदाई ।४।
डुबो वैतरणी, ताप—अवरणा, उपजी दाह आधिक का वरणा ।
महा दुर्गंधित् क्षार अपवनी, धंसो निकस द्रुम छाया घनी ।५।
गिरे पत्र द्रुम, असिवत धारा, खण्ड खण्ड वपु परे दुधारा ।
गुफा मांहि घुस शरणा चाहो, सिंहादिक तहं ताको खायो ।६।

दोहा—सागर तेंतिस दुख भरे, महाशीत दुखकार ।
क्षुधा तृषादिक अति जरे, सहे रतन बिन तार ।७।
दुष्ट भाव परणति धरे, निकसो करम बसाय ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गंगा तट आरण्य विकट, शेर भो खूंखार ।८।

मंगलाचरण

दोहा—चौबीसों जिनवर चरण, ऋषभादि महावीर ।
बंदत रतन त्रियोग वर, मेटो भव जग पीर ।१।

गंगावन में शेर — नर्क —

चौपाई—शीतल सरिता सलिल सुहाना, वन अगम्य श्रृंग, थान निर्जना ।
शीतलता अति उष्मा हारे, साम्य भाव विन, भय संचारे ।२।
दुष्ट भाव धर जढ़ता होंहीं, सुखकर प्रकृति अधिक तप से हीं ।
शेर भयानक, अतिवन मांहीं, घातत दीन जीव अधिकाहीं ।३।
धरे भाव अति रौद्र विघाता, माने हरष फिरे मत माता ।
अतंक ताहि छुड़ाय पठायो, प्रथम नरक थानक पहुंचायो ।४।
क्रूर कुलिस अति दुखकर मूयो, अघको भाजन जा दुख कूदो ।
इक सागर की आयू पाई, विकल महा दुख तड़प सदाई ।५।
महा अपावन भू उष्णाई, मार-काट दुख, बाधा पाई ।
बहु दुख भुगते, दुख बहु धाया, धारक भाव-दुष्ट अकुलाया ।६।
दोहा—माया दुष्ट सुभावतें, योनि तिर्यंची आय ।
उत्तम भाव बिना रतन, उत्तम गति ना पाय ।७।

सिंह कूट वन — सिंह —

चौपाई—पूरव सिंधु कूट हिमगिरी, अटवी सघन बेलि द्रुम पुरी ।
जीव जन्तु तामें अधिकाई, प्रकाश करे न तिस अरुणाई ।१।
सन सनात अति बहत समीरा, यत्र-तत्र बहु नद सरित गंभीरा ।
निरजन, नीख भूमि सदाई, अति सुच्छंद सिंह उपजो आई ।२।
ऊंची नीची सम भू सारी, क्रूरल सिंह भ्रमे अघचारी ।
जो तन धारे जैसो होई, प्रभाव भाव सु तैसो सोई ।३।
पशु पंछी लखकर अकुलावें, निरख गरजते छिपत बचावें ।
करतो मारकाट अति भारी, चोषक पल भक्ष का अविचारी ।४।
वहु पैने नख तीक्षण दांता, धरत महाबल, पुष्ट सुगाता ।
चाल बड़ी मस्ती धर चलता, दलहत गिरि जब कहीं दहलता ।५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चंचल चपल सतर्कता धारी, निर्भय विचरत नृप मृगचारी ।
इत उत सब वन धोंस प्रजारी, कूदत फाँदत मोद मंझारी ।६।

दोहा—कर खिलोंच किलकारि धर, रतन हृदय उल्लास ।
मारत, खावत, विचरता, क्षुध पूरण, बिन त्रास ।।

सिंह — दर्शन —

चौपाई—प्रकृति, रूप सु, आव कर्तारी, बल पौरुष सह अज्ञता भारी ।
करत पाप सुध बुध बिन सोई, निरख पूंछ निज, मुदित जु होई ।१।
शीश धार वहु धरणि झुलावे, यत्र तत्र सखत्र अति मटकावे ।
कबहुं फुलाय झुलाय चलावे, शोर करत आनद पावे ।२।
एकाकी, कभी, सिंहनी साथी, फिरत डोलत महा उत्पाती ।
दिवस ऐक मोहक मृग धारो, पकड़ झपट तसु काय विदारो ।३।
मन में आनंद भक्षण माने, धारत मोद अभय मद ठाने ।
दुबके कभी कूद उठ धावे, उछलै चमके पसरे जावे ।४।
करत सिंह के मनधर काजा, वेदना नाहीं काज अकाजा ।
जैसी होनी जाकी होई, बनत योग उपजे मति सोई ।५।

सोरठा—मगन रतन बनराज, निज पौरुष बल गरभ में ।
दृष्टि काय भय साज, चंचल करण सतर्क अति ।६।
चारण युगल गणीश, नभ पथ जावें जवि हित ।
दया धरम गुण धीश, निरखत उतरे रतन ढिग ।७।

उत्थित-काण्ड

— मंगलाचरण —

सोरठा—बदों वीर जिनेश, महावीरता जिन खरी ।
नावत चरण सुरेश, जगत जीव हितदा रतन ।१।

सिंह - मुनि - दर्शन

चौपाई—श्रीधर तीर्थंकर गुण ज्ञाता, समशरण सु शोभें विज्ञाता ।
बंदत भविजन पूज रचावें, समाधान उर शंका पावें ।२।
पूजें सब तीर्थंकर सोई, अंत भरत तीर्थंकर होई ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीधर स्वामी सब प्रति बोधें, पूर्व विदेह क्षेत्र शिव सोधें ।३।
कहाँ जीव । प्रश्नोतर दीनो, सुनत करम गति, अचरच भीनो ।
लह तिर्यंचगति सिंह कहावे, मारग मुनि के दृष्टि सुआवे ।४।
चारण मुनि उठ, तत्क्षण चाले, नेत्र-भावि तीर्थंकर भाले ।
चारण ऋद्धिसु, नभ गमनावे, अमित तेज सु ज्येष्ठ सुहावे ।५।
अनुपम रूप तेज तप धारी, गुणी कृपालु शील हितकारी ।
निरखें युगल दया धर ठाड़े, सिंह भखन, मृग मोद विदारे ।६।
निरख निकट मुनि, अति हुंकारा, नयन क्रूरता दहत अंगारा ।
खड़ा हुआ मुनि वर को लखके, कोप निरख, भय, शांति निरखके ।७
अमित तेज मुनि, सु बोले अहो! करत कहा तुम, मृगपाती कहो ।
शाँत होहु अब सुख जो चाहो, सुख, कर ऐसो तुम ना पै हो ।८।

दोहा—धरम बिसर बहु दुख सहे, ताको ओर न छोर ।
चौवाति भरमत तुम फिरे, मिथ्यात् रत्न कु जोर ।९।

मुनि उपदेश

चौपाई—चारों गति धर अति भरमाये, कर अकाज निज बहु दुख पाये ।
बहु तक थावर त्रस की श्रेणी, लहि कुभाव धर अति दुख देणी ।१।
सुकृत सो कबहुं नाहिं कमायो, विषय भोग रच अघ उपजायो ।
जन्म मरण धर-धन भटकायो, स्वविवेक गुण रतन न भायो ।२।
कर्म योग कहुं नर तन पायो, इन्द्रिय वश अति, अघहिं समायो ।
नारायण पद प्रथम सु लीना, चाह-दाद-मद, विषय भीना ।३।
पंच पाप अघ अति वन राता, जाय नरक सह महा असाता ।
कीनी पूरब खोटी करणी, जैसी बोई तस पड़ भरणी ।४।
ऋषभ देव वच नाहिं सुहाये, सहज मिथ्या मारग अपनाये ।
धरम अनादर तत्त्व भूलायो, मिथ्या त्रय वश, वेदन पायो ।५।

दोहा—सब इति वृत्य स्मरण कर, अति विलखो पछताय ।
शाँति सुधा वच सींच गुरु, बोधत रतन सुभाय ।६।
श्रवणत वचनामृत मुनि, छाडो उर अहंकार ।
गति आगति प्रत्यक्ष लख, नये रतन अश्रुढार ।७।

कवित्त—वच धारे मुनि, मन मोद धरे, सहे क्लेश अति ना घबड़ाये ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुविवेक जगो, शुचि, खेद भगो, क्षुध आदिक ना, आ तड़फाये।
निजमें, निजको निज रूप जगो, परमातम आतम एक लखाये।
करम उपाधि तजो भ्रम जाल, रतन सदा निज आप समाये।

मंगलाचरण

दोहा—बिन स्वास्थ जग में हेतू, वीतराग विज्ञान।
करम दलन शिव सुखकरन, नमत रतन वर्द्धमान ।१।

मुनि — संबोधन —

चौपाई—कही मुनिश्वर सतकर जानो, अंत तिर्थंकर होहु प्रमानो।
शोक तजो हिंसा दुख दाता, दया धरम धर पाओ साता।
गई भई जो नहिं चितारो, उचित न रोदन भव्य तुमारो।
धरकर साहस धैर्य संभालो, उत्तम करणो आप बना लो।
अनँत ज्ञान सुख बल के स्वामी, केवल दरशी आत्म विश्रामी।
सुख स्व:तम जो तुमको भायो, सुरग सुगति पथ, ये मनचायो।
समता धरत चरण ढिग बैठी, उपदेश महा, मुनि दृढ़ बैठो।
देह निंद्यसु थरम का साथों, कैसे रतनात्रय आराधों।
कहाँ थान शक्ति व्रत धारों ? कैसे दया धरम अनुसारों।
अब इक तुमरो, है विभु शरणा मोकों अब भव, सागर तरना।

दोहा—कहत मुनी मन धीर धर, साधो हित बनराय।
पालो अपनी शक्ति भर, रतन सदा सुखदाय ।७।
धरम वृद्धि मुनि दे गये, नभ पथ विमल सुजान
सिंह निरखे पुनि-पुनि नमें, रतन हितू निज मान ।८।

सिंह शौर्यता - आमरण व्रत—

चौपाई—उभय तपी समता निधि धारी, अभय देत निरभय अविकारी।
स्वास्थ्य बिन भवि जग उपकारी, निर विकार पर निज हित धारी।
सौम्य शांत मूरत मन भाई, जोति जगी आतम, तम जाई।
आमिष बिन रहु अब चित चावा, संयम रतन दया मन भावा।
समता धर तन, ममता त्यागों, शक्तिहीन का ? निज रस पावों।
शांत भाव धर उपल समाना, निरमल मुनि सम भाव सु ठाना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शौर्य-सिंह का जग विख्याता, निराबाध निर द्वंद विधाता ।
पकड़ी राह कभी ना छोड़े, जो मन चाहे वैसा मोड़े ।४।
असन पान आदिक सब छोड़े, काय क्लेश सु आतम जोड़े ।
नरतें नाहर अधिक प्रवीणा, उद्यम मुकति का अनथक कीना ।५।

दोहा—गति तिर्यंच मुकती रतन, सधती किसी प्रकार ।
निश्चय पातो सिंह सुमन, कीयो तप स विचार ।६।
शांत भाव शुभ देह तज, सौधर्म सुर्ग उपाय ।
सकल धरम सुख कल्पतरू, चित रतन मन लाय ।७।

सिंह केतू देव

चौपाई—सिंह केतू तब देव कहायो, आणिमादिक ऋद्धि बहू पायो ।
शौर्य वीर्य थिथि, छबि सुखकारी, बुद्धि तेज दल सौरभ भारी ।१।
धरम धरत शुभ का नाहिं होवे, सुरगति सुखमय बहु सुख देवे ।
आत्म बलिष्ठ सु धरम सुहोवे, सुरम मुकति रतनात्रय देवे ।२।
अवधि ज्ञान बल जानी बाता, धरम शरण पाई सुख साता ।
शुभ तन घड़ी दोय में पायो, थान रम्य परिकर मन भायो ।३।
महिमा वैभव सदन सुहाई, सुरी नियोगति मिल सब आईं ।
फलो धरम जिन, पूज स्वाई, मेरु जिनालय नम सुखदाई ।४।
चरण कमल मुनि, बंद महानो, सम्यक् रुचि वर, मन हरवानो ।
प्रथम नरक तक गामक शकती, अवधि ज्ञान तित पावे तृपती ।५।
मास गये तब साँस जुलेवे, दोय सहस सर क्षुधा समोवे ।
कंढामृत झर, तृपती पावे, मगन भोग बहु धरम सुहावे ।

दोहा—सिंह केतु गुण बल सहित, वपु निरोग सुखदाय ।
स्वेद धातु मलकर रहित, रतन अनिद्र सुभाय ।७।

सिंह केतू विभव

चौपाई—सागर दो यों मुदित बिताये, क्रीड़ित सदा सुरिन मन भाये ।
गीत संगीत सुवाद्य रसीले, नृत्यत सदा भक्ति रस झूले ।१।
मोहक हाव-भाव शुचि धारे, वन द्वीपान्तर मामत सुखारे ।
संयम योग धरन नहिं ठामा, सुक्ख भोग अति देवन धामा ।२।
धरम भाव संयम परतीती, जनम मरण आदिक जगभीती ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैसे भाव-सिद्धि तस होवें, लाभ स्वभाव धर्म सु देवे ।
सुख शुभ भावन जग के माँही, पलटे भाव हानि उपजाहीं ।
उत्तम भाव सुजीव संवारे, संस्कार सो तैसो धारे ।
परबलभेंट सुबल प्रगटावे, अनंत चतुष्टय सु उपजावे ।
पुण्य धरम संयम फल पाना, प्रत्यक्ष भाव सुफल पहिचाना ।

दोहा—सुख विलसत आयू गई, संयम को चित चाव ।
मानुष गति पाई विमल, धरम रतन परभाव ।६।

कनकोज्वल-जन्म

मंगलाचरण

दोहा—जिन वाणी जिन धर्म गुरू, नमूं सदा जिनदेव ।
नमत रतन रतनात्रयी, निज सुभाव स्वमेव ।१।

चौपाई—खण्ड धातु की द्वीप सु शोभे, क्षेत्र विदेह सु पूरब ले भे ।
मंगलावती देश सुख धामा, विजयारध परवत अभिरामा ।
कटी श्रृंखला सम मनहारी, उभय श्रेणि अति दृग मन प्यारी ।
कनक प्रभा पुरि उत्तर श्रेणी, सुवन सुहावत जिय सुख देनी ।
कनक पुंग खगपति भू राजा, नावत नरपति गुणज्ञ समाजा ।
ऋद्धि-सिद्धी विद्या बहु भांती' कनक माल गृहणी सुखदाती ।
कनको ज्वल सु तिन सुत भायो, सिंह से सुर फिर नर तन पायो ।
कनक वरण तन, दिपत सरूपा, कुल दीपक पा हरषित भूपा ।
सकल प्रजाराजा हरषाये, बजीं बधाईं गृह गुन्जाये ।
दानादिक नृप बहुतक दीने, मान पान बहु सोहर कीने ।

दोहा—गीत वाद्य नृत आदि बहु, शोभा नगर विशेष ।
महा हरष हृदये रतन, छलकत उदधि अशेष ।६।

पुत्र लाभ वधावा

चौपाई—नृप के मन आनद अतिभारी, सफल पुण्य भल सुकृत विचारी ।
जिनवर पंच कल्याणक कीने, पूजन भक्ति भाव रस भीने ।
परिजन परजा सबहिं बुलाये, यथा योग बहु मोद बधाये ।
आनंद हृदय सिंधु उछलावे, मुख मयंक सुत मन लहरावे ।
नृप आनंद महा जन नन्दा, सकल आशीषत सुमन सनन्दा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बड़े पुण्य के कारण सोहें, बड़े काम कर बड़े सु हो हैं ।३।
बड़े वनन, शुभ गति मति मानो, पुण्य करे फल पुण्य अमानो ।
बीज सु लघु वट, तरु बड़ भाने छांह सुहावन फल अति आने ।४।
बाधा शीत उष्क सब टारे, पशु पंखी नर मोद अधारे ।
वुण्य बड़प्पन सारे लावे, पुम्य योग सुख शिव सुर पावे ।५।

दोहा—जन्मोत्सव बहु विधि नृपति, कीने मंगलचार ।
पूजन जिनवर दात बहु, पुण्य रतन परिवार ।६।

बाल्य काल कनकोज्वलन

चौपाई—दूज इन्दु सम बढ़त कुमारा, दिन-दिन हरष बढ़त उर प्यारा ।
बाढ़े उदधि चन्द्रनभ छाये, उठे ज्वार अति आनंद लाये ।१।
पूत सुलक्षन पालने जानो, दीप्त कांति किरिया शुभ मानो ।
हूंकी भरें नयन मटकावें, घुंटरू चले, गिरत, उठ धावें ।२।
दुग्ध-पान तज, लें प्रासन्ना, मुक्ता दन्त अधर जिमि पन्ना ।
खेलत खेल सखन सह आवें, धूत धूसरित मटकत छावे ।३।
मधुर मृदुल कछु तोतलि बाता, उमगत हृदय मात अरु ताता ।
जनगण निरखत गोद गोद चढ़ावें, चुमकें अयन छिटकवे जावें ।४।
शिशु काल गये बाल कहाये, बिहसें बिसुरे उमग समाये ।
बाल सुलभ सब क्रीड़ा सारीं, लखत क्षुधा भाजत महतारी ।५।

दोहा—वस्त्रा भूषण द्रुति अति, परसे तन छबि धार ।
संयम महिमा अति रतन उभय लोक हितकार ।६।

सद गुहस्थे

चौपाई—पाठक वय करके अभ्यासा, सकल सुगुण विद्या परकाशा ।
लख छबि यौवन भयो विवाहा, कनकावती सु मातुल जाया ।१।
मंगल उभय और मनहारी, विधि विधान कुल रीति विचारी ।
शशि रोहणी, रति मदन सवाई, हरी इंदिरा सम युगताई ।२।
धरत परस्पर अनुपम प्रीती, बिन, भय आशा, थोथी रीति ।
पूरक मन तन धरम संगाती, निरखत श्रवणत, फूले छाती ।३।
मोद भरे युग, कर परयटना, महामेरु जिन, चैत्य बंदना ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लखकर मुनिवर विनय सुधारें, वाणी धर उर, तेज प्रजारें ।
वन्दे मुनिवर सु अवधि विज्ञानी, हेमवरण वपु दुति अरुणाणी ।
चारण ऋधि तप, विद्याधामी, ध्यान सुव्रत धर वृष अभिरामी ।
निरख युगल परदक्षिणा दीनी, अभिरुचि धरम धरे नुतिकीनी ।
मन उपदेश श्रवण अभिलाषा, धार विनय बैठे विश्वासा ।

दोहा—धरम ताप वरजित रतन, कारण मोक्ष उपाय ।
आधि उपाधिसु व्याधि हर, दीजे गुरू कृपाय ।७।

सोरठा—दीजे धरम बताय, करजोरे विनवे युगल ।
गुरुवर करो सहाय, नाथ ! रतन उद्धार अब ।८।

धर्म महिमा

चौपाई—मोक्षार्थी मन मोक्ष सुहावे, काम भोग नहिं राज लुभावे ।
धरम कथा सुनते सुख पावे, आत्म-सिद्धि हित, तत्पर धावे ।
धैर्य-वीर्य बल, सुक्ख उपावे, चैतन शौर्य सु उमगत आवें ।
दुठ करमन का नाशन हारा, भवदधि तारक मुक्ति सुद्वारा ।
दरश अनंत ज्ञान बल साता, धरम हितू पद अविचल दाता ।
सिद्धि ऋद्धि वल सुक्ख विधाता, मुक्ति भुक्ति, तीर्थंकर साता ।
श्रेष्ठ जगत में जासों होई, पुरुष शला का वृष धर सोई ।
चक्रि इंद्र सुर, सर्वारथ सिद्धी, दुर्गति मेटत, खात्म सु ऋद्धि ।
शांति कांति कुल उत्तम देवे, सुयश सकल जन, कीरत लेवे ।
प्रखर बुद्धि साहस बल लावे, पंचम गति का सुख उपजावे ।

दोहा—धरम मान शविचल अतुल, जगसम्पति करतार ।
सेतु भवोदधि तार दृढ़, मोक्ष रतन आकार ।६।

धर्मोपदेश

चौपाई—वीतराग सरवज्ञ विख्याता, अविचल हितकर वृष सुखदाता ।
स्वपर दया रक्षा हित करना, पंच पाप हिंसादिक तजना ।
परम अहिंसा उत्कृष्ट धरम, सत्य अचौर्य ब्रह्मचर्य शरमा ।
बिना परिग्रह महाव्रत आये, समिति पंच त्रय योग समाये ।
धरमत्रियो दश, पाये जानो, वीतराग मुनिवर के मानो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोह जयी यति, गुप्ति सरधाने, दशविधि धरम क्षमादिक माने ।३।
पंच इन्द्री के वश जिय होई, निज बल पौरुष जगे न कोई ।
काम अगनि तन-मन बल दाहे, काय अबल सद बुद्धि पलाये ।४।
भोगत भोग भले उन भोगा, अगनि दहे घृत तृष्णा योगा ।
बालक पन नहिं बने प्रवीणा, वृद्ध काल बल इंद्रिय क्षीणा ।५।
मदभर यौवन, हो मदमाते, दिवस रयन भोगन में जाते ।
काज न हित तीनों नत साधे, नरभव विफल किये अकुलाके ।६।

दोहा—धी धारक यति धरम धर, उरदीपक परजार ।
बुध दीपक तप नेह कर, आतम रतन निखार ।७।

चारित्र महात्म प्रक्रिया

चौपाई—साधक बनों सुगृह सुब त्यागो, धर्म रतनात्रय धर बड़ भागो ।
शरण धरम जग सकल सहाई, धरम सदा बड़ सुरक्षक गाई ।१।
मदन रिपू पर विजय करावें, क्रोध मान छल लोभ भगावे ।
निज गुण आतम धरम दिपावे, परवशता जुव निकट न आवे ।२।
महाबली तम नाशक मोहा, धरमाचरण बढ़ावत शोभा ।
सुरक्षक सदा धरम थिरकता, अन्तक अन्तक सुख शिव भरता ।३।
स्वातम रुचि वश श्रवणत जागी, जग तन तिय सों नृपति, विरागी
धन्य भाग जय गुरु हितकारी, दाता धरम रतन भण्डारी ।४।
मान मोहि हितु, हित मो चींना, धारि दया पथ हितकर दीना ।
मुकति हेतु अब, तपदृढ़ धारों, शुभ कारज यह, बिलंब निवारों ।५।

दोहा—काल अचानक शिर चढ़े, तासों कौन बसाय ।
बचें ना इन्द्रादिक रतन, पुण्य बिना पथ नाय ।६।

जग स्वरूप चिंतवन

चौपाई—शठता धर शठ धरम न धरते, काल ग्रास दुख परवश मरते ।
पाप भार गुरुतर अति भारी, नरक अधम गति दे दुखकारी ।१।
शरणा धरम सु,धरमी लेवें, समय धरम बिन नाहीं खोवें ।
काल महाबल आन न माने, बाल युवा वय वृद्ध न भाने ।२।
जग में धरमा श्रय हितकारी, सुगति विधायक दुरगति हारी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भव्य उभय भव सफल बनावें, गौरव लह जग मुकति सु पावें ।३।
लगे भोग जो अब तक प्यारे, धरम सुनत भाषे अहि कारे ।
उपजो ज्ञान विवेक उपाई, सत सरधा अब मन को भाई ।४।
लूं जिनेन्द्र गुरु आगम शरणा, जग जनजाल विमुख भवतरणा ।
गृह कारागृह वनिता बेड़ी, परिजन रक्षक भव की ड्योढ़ी ।५।
वैभव राज-पाट धन सारा, लगे अहित सब मधुमय खाड़ा ।
अनुभव आतम, सुख जब आया, सारा थोथा जब सुख पाया ।६।

दोहा—अंतर वाह्य परिग्रहे, सब चौबीसों भेद ।
साधु रतन अति तोष हिय, कनको जल निर खेद ।७।

वीतरागी मुनि कनको बल नृप

चौपाई—बन मुनि महाव्रति अविकारी, मानो अक्षय सुनिधि अधिकारी ।
निज विवेक बल, मुनिव्रत धारें, धरम सु तप धर करम निवारें ।१।
अमल भाव जग काय विरागी, अन्तरमुख वृति सिद्धी सु जागी ।
काय कलेश धरें, तप घोरा पढ़ें सु आगम आत्म उजेरा ।२।
बिन विवेक जो भेष बहोई, मुनिवर धरम लजावे सोई ।
ऐसे सुरग मोक्ष ना पावें, अंत निगोदन में भटकावें ।३।
सद् विवेक गह चारित धारें, सुक्ख सुरग का ? मुक्ति पधारें ।
परम्परा सदधरम चलावें, जीव सब सुख शांति पावें ।४।
खोटी लेश्या भाव न लावे, ध्यान रौद्र आरत न लावें ।
परम शुकल भावो को धरना, ध्यान शुक्ल धर, भवदधि तरना ।५।

दोहा—दृढ़मन वच तन कर विमल, जिन मुद्रा व्रत धार ।
करा क्षमापन सबन सों, दीक्षित रतन कुमार ।६।

चौपाई—वीतराग वन निरजन माहीं, गुह मसान गिरि ध्यान लगाहीं ।
आगम ज्ञान पढ़ो गुरु पांही, महिमा पाई भवि जन मांही ।१।
धरम देशना देश मझारा, जिन मारग शिव किया उजारा ।
पंच समिति सुमहाव्रत चरणा, द्वादश तप अरु वृष दश धरना ।२।
पंडित मरण अन्त लख कीनो, नर तन भवन कलश मणि दीनो ।
सातें लाँतव सुरग सिधाये, महा ऋद्धि लहि अमर कहाये ।३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७ वें स्वर्ग देव—

अवधि ज्ञान फल, तप बल साता, धरम करन मन अति हुलसाता ।
कृत्रिमा क्रीतम बंद जिनाले मुनिवर बंदे सरन सुखाले ।४।
सुर सुरांगना आदर देवें, धरम सुफल सुख अनुपम लेवे ।
सागर तेरह आयु बिताई, सम्यक सरधा की प्रभुताई ।५।
आतम रुचि बल शौर्य सवाई, बली काल ना दांव चलाई ।
सुख भोगे बहु करम बसाई, माला अंतक पा मुरझाई ।६।

दोहा—सुर तन समता धार तज, मानव उपजो आन ।
धरम फले बिन ना रहे, दे सुख रतन महान ।७।
धरो धरम शुभ भाव कर, माया मोह निवार ।
सुख जो चाहो आपनो, धारो रतन विचार ।८।

दोहा—चन्द्र प्रभु दुति चन्द्र वर, जिनवर चन्द्र महान ।
नमें रतन कर जोड़ नित, सदा अमल अम्लान ।१।

अयोध्या-नगर—

चौपाई—जम्बू द्वीप भरत शुभ क्षेत्रा, नयरि अयोध्या जु मोहक मित्रा ।
लख सुर नर सब हरषित होते, सोहत भव्य भवन श्रम खोते ।१।
पथ सुंदर अति लगत सुहावन, चौपड़ हाट सजे सुख साधन ।
अन्न सुलभ सब वस्त्र लुभावन, विविध रंग चित्रित मन भावन ।२।
माणिक रूपा कंचन मोती, सकल धातु जन तृष्णा खोतीं ।
नर नारी शुभ सुभग भावी, बाल-वृद्ध वय सरल मेधावी ।३।
शील-संकोच साजे सब भावें, मनमें भय बिन, क्यों अकुलावें ।
धारत सहज परस्पर प्रीती, प्राण जांय भल तजतन नीती ।४।
वय प्रमाण सब धरम सुधारें, वृद्ध-नेह, लघु विनय सुधारें ।
पूरब पुण्य बनो, सुख भोगें, धरम-पंथ सुख अग्रिम बोबें ।५।

दोहा—चतुर कृषक जिमि बीज रख, पूंजी वणिक बचाय ।
विज्ञ पुण्य संचे रतन, भव-भव में सुखदाय ।६।

वज्रसेन नृप एवं नीतमत्ता ।

चौपाइ—शोभत वज्रसेन नर नाथा, शीलवती राणी गुण ज्ञाता ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

घर सुनेह प्रजा को पाले, सुतवत निज, सब विपदा टालें ।१।
मोह रु पक्ष विन, राज सुनीती, अधिक प्रजा सुं नित प्रति प्रीती।
कार गुनिन पैदृष्टी सुभारी, सता न पावें पापाचारी ।२।
मनमें खोट राज के नाहीं, पुलकित जनगण, नृपहिं सराहीं ।
अधम, अधरमी, मूषक, ज्वारी, दुर विचार घातक अविचारी ।३।
जन, समाज, हित, दुख उपजावें, ऐसे जन नृप-ताड़न पावें ।
जन हित काज करत जो कोई, प्रीति ताकी नरपति सोई ।४।
निज-निज काज करें सुख पावें, अघ, पर पीड़ा, पास न जावें ।
धरम नीति धर सकल समाजा, प्रेम परस्पर पूरण काजा ।५।

दोहा—सुख-समृद्धि सम्पूर्ण सब, नगरी सज्जन वास ।
सोहे रतन साकेत सु, अमर धाम गुण रास ।६।

हरिषेण कुमार जन्म—उत्सव

चौपाई—दिवि सातें को, जी चय आयो, नृपति प्रजा गृह मंगल भायो ।
दीनो हरीषेण तसु नामा, वपु कान्ती ताकी अभिरामा ।१।
नगर बधावो शोभा भारी, गूह-गृह दीप-अवलि दुति कारी ।
दान—मान अनुपम नृप दीयो, आशीषें सब, जुग-जुग जीयो ।२।
दीन—दुखी नहिं याचक कोई, आगत पुण्य शील सुख सेई ।
अरुणा चल इक अरुण प्रजावे, सकल लोक का तम विघटावे ।३।
दोयज शशि सम बढ़त कुमारा, चढ़े पालना भू पग धारा ।
उठें—गिरें पड़ दौड़ लगावें, उचटें कूदें भ्रम हरषावे ।४।
शक्ती रण कण लोट सु लीनी, शुचिमन सखन सु गोष्ठीकीनी
खेलें खेल विविध मनहारी, नीति रीति आगम विधि भारी ।५।

दोहा—बालक वय सुख कर सरल, अभय विमल बिन आस ।
प्रेमि उर बिन भेद धर, रतन मेल विश्वास ।६।
सुभग तेज गुण दीप्ति वय, बढ़े समय अनुसार ।
पाया यौवन बुद्धि बल, सोहत रतन कुमार ।७।

नृप नीति-पटुता-राज्यारोहण

चौपाई—देव सुरी सम अति जो रम्या, यौवन गुण वय रूप सुधाम्या ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निरख लजत रति-मदन सु नैना, सुभग-सविधि परणीं मृदु वैणा ।१।
गुणज्ञ जान नृप नीति विचारी, दियो राजपद मंगल कारी ।
अरुण प्रताप तेज शिर सोहे, सिंहासन सु नरसिंह जौहे ।२।
सुत सम परजा सु प्रति पाला, परम यश स्वी नृप गुण शाला ।
कोई अरि नहिं परत दिखाई, धरें न कोई उर दुचि ताई ।३।
सुख भोगे राजा अतिसारे, पै बिसरत नहिं धरम कदारे ।
देव वन्दना नित गुरु भकती, आगम पढ़े पढ़े स्व शकती ।४।
मन वच काया संयम धारे, अनशनादि कर करम निवारे ।
देत दान मनमोद सु गाढ़े, सरधा अविचल सम्यक बाढ़े ।५।
परब चतुष्टय प्रोषध करते, निशादिन अघमारग से डरते ।
छह कायों की करुणापालें, सामायिक सम भाव समालें ।६।
दोहा—जिन गुण नित सुमरण करत, तज शय्या अनुराग ।
ऐक देश चारित रतन, धारत अधिमन पाग ।७।

नृप-दैनिक-चरया

शुचिता भीतर बाहर धरते, मन तन आतम शुचिता मढ़ते ।
चौपाई—दान सुपात्र निरख कर देते, सब कर तोषित, भोजन लेते ।
साभायक त्रैकाल सुकरते, बिन प्रभु भजे, न निद्रा पड़ते ।
मुनि योगिन के संघ निकालें, यात्रा करके पुण्य समालें ।२।
धरम विचार तत्व मय चरचा, श्री अरहंत देव नित अरचा ।
वत्सल भाव सु प्रीति पालें, गुणी निरख उर मोद निहालें ।३।
क्रोध मान सब दुखकर कारे, सम्यक फणि-मणि, तिन विष हारे ।
क्षमा मारदव धरम सु धारे, द्वादश तप धर काय निखारे ।४।
देवन दुरलभ वैभव भोगे, इष्ट वियोगन, अनिष्ट संयोगे ।
कर तव्य निरत, सुख दृढ़ भरना, सुतवत परजा पालन करना ।५।
पूरव धरम किये फल पायो, बोयो जैसो तसु फल आयो ।
धरमन भूले क्षण इक कोई, आतम बल मन भायो लेई ।६।
कहां भव्य उर हों, भोगन चेरे, सदा भोग हों तिनको घेरे ।
निज पुर धरम रतन जो धरते, सरब सुक्ख तिन, चरणों परते ।७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धरम गये गुण सरव पलावें, धरम सुबल गुण सम्पति आचें।
धरम अनुपम शरणा भाई, उभय लोक यश अरु सुखदाई।८।

दोहा—धरम जगत सुख सेतु लख, धरम धरत शिव खेत।
धरम रतन उनके नहीं, शठता सों जिन हेत।९।

चोपाई—जैसी मति रुचि, संगति जोई, जैसी संगत गति तस सोई।
प्रतिदिन भोगी भोग चितारे, फंस मकड़ी निज जाल मझारे।१।
फंसकर तामें अति दुख पावे, अतंक गुण धर, दया, छुड़ावे।
धरमी धरम चितारत नीके, ढूंढत योग सदा मुक्ती के।२।
ज्ञान योग दृढ़ युक्ति चितारे, धन्य जनम व्रत, चारित्र धारे।
नृप हरिषेण सकल शिरताजा, अशुमालि जिमि, गगन समाजा।३।
शशि सोहत नभ उड़गन साजा, नृप सुख संपति सैन्य समाजा।
चिंतत धरम विमल धर ध्याना, धरम ज्ञानकर मिटो अज्ञाना।४।
मैं को ? जग-तन को है मेरा, परिजन को हैं, कैसा घेरा ?
सुख का ? भोगों में से आता, का हो इनसे, शासुत साता।५।
मैंने भोगे भोग घनेरे, महराजा बहु अनुचर मेरे।
क्षणिक भोग सुख सकल सदाहीं, पइवश, इनकर तृपति नाहीं।६।

दोहा—दुख इच्छा कर हो महा, उपजे मनमें ताप।
अधिकी विषयन रतन बढ़े भोग दुख शाप।७।
चिंते हित अनहित सकल, सम्यक त्रयी विचार।
जागी रुचि आतम अमल, मोक्ष रतन सुख सार।८।

संवेग नृप हरिषेण

दोहा—इच्छा कर दुख हो महा, मन में उपजे ताप।
विषयन रच अधिकी बढ़े, रतन भोग दुख शाप।७।
अनहित हित चिंते सकल, सम्यक ज्ञान विचार।
आतम रुचि हित कर अमल, रतन मोक्ष सुख द्वार।८।

संवेग चिंतन

चौपाई—मैं चेतन, आतम सुख, राशी दरश ज्ञान मय, सतत विकाशी।
यह निज मेरा, औ जग फेरा, झूठा है सब मेरा तेरा।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं चेतन तन, पुद्गल रूपी, मैं अमुर्ति, चैतन्य चिद्रूपी ।
सब नाते, काया के, साथे, बिन सत काया, सब मिब जाते ।२।
अशुचि अपावन, मलधट दारा, निज सेवक, बनता सरदारा ।
परिजन जन, मेरे मधुशाला, स्वारथ बाधक, जग रखवाला ।३।
निशि मिल पक्षी, प्रातः उड़ जावें, काय कुटुमयों, मिल बिछुरावें ।
जग का सब, झूठा व्यौहारा, आतम हित बाधक गृह कारा ।४।
व्याधि सम ये, भोग जनावें, वे, हम भोगे, भोग बनावें ।
आकुलता बिन, सुख ना भाई, भोग मगन बहुदाह समाई ।५।

दोहा—देह ममत तज भजें शिव, रतनात्रय सुख कार ।
अविनाशी सुख ले रतन, विषय विकार निवार ।६।

—जगत रूप—

चौपाई—मोह कषाय, विषय सुख हारी, कारण अहित, सु,भव दधि कारी ।
आत्मार्थी अक्ष, विषय निवारे, मुक्ति राह गह, मोक्ष सिधारे ।१।
मेधावी जग, में जो होई, उभय लोक, साधक पथ, लेई ।
धर्म रतनात्रय, नित आराधे, छहों काय जी, दया सु साधे ।२।
विषय विनाशक, पथ ले जावें, विह्वल मोही, स्वांग बनावें ।
धरत स्वांग, बहुते मैं, थाको, जनम मरण, भोगत जिय, पाको ।३।
पायो बड़ भागन, वृष शरणा, अवसर आयो, निजहित करना ।
संपति भू सब, रज सम त्यागी, संयम साधक, परम वैरागी ।४।
गूल कुल-राज, तजन मन, भायो यथा योग, तोषित बन धायो ।
श्रुत सागर श्रुत, धर गुरु ज्ञानी, जिनकी कीरत, अमल अमानी ।५।
शाँत मूर्ति तप, कान्ती सोहे, आनन निरख, भद्रता मोहे ।
कमण निजहित, उर अनुरागा, करुणा धर कर, परहित पागा ।६।

दोहा—निरख महायोगी विमल, हरषो नृप उमगाय !
पाद पद्म नम विनय थर, रतन शरण शुभदाय ।७।

—: दीक्षा व्रत :—

चौपाई—अंतर बाह्य परिगृह डारे, मन वच, तन त्रय, योग संवारे ।
कर्माचल भेदन, व्रत लीने, वज्र हस्त तप, धर दृढ़ कीने ।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digltized by Sarayu Trust/eGangotri

मन इंद्रिय वश, कर अरि चीन्हे, जिनने क्षार, जीव सुख कीने।
करके केश–लोंच, तत्काला, धारण की गल, शील सुमाला ।२।
मूल अट्ठाइस, सुगुण सुधारे, द्रव्य भाव शुभ, मुनिव्रत धारे।
सिंह वृत्ति, धारक, मुनिराजा, निर्भय चरया, आसन साजा ।३।
वन मसान, उद्यान सुन सना- गुहा सरोवर, सरिता नाना।
अटवी श्रृंग महा अम्लाना, साधत धरम, शुकल दो ध्याना ।४।
शयन एकाशन, पश्चिम श्यनी, अरुणोदय पथ, शोध गमोनी।
काय कलेश, करत तप गाढ़े, गो दूहन, वज्रासन, ठाड़े ।५।

दोहा—शीत उष्ण बाधा सहत, दिग अम्बर भय टार।
सुधा सहित छलके रतन, गुण विवेक आचार ।६।

ऋतु बल विजय

चौपाई—शीत पवन, चालत झक झोरा, चमकत गरजत जल्द घनेरा।
दादुर मोर मचावत शोरा, कृष्ण रयन कंपित मन घोरा ।१।
मशक डाँस बहु, टिड्डे आवें, लिपटें काटें, चुट भनुनावें।
क्षुद्र नदा जल, उछलत धावे, विषयी भवन, सुरम अकुलावे ।२।
द्रुम के तल तब योगी ठाड़े, सहत परिषह समता गाढ़े।
शीतकाल सर तटिनी तीरे, दह तुषार तन शीत समीरे ।३।
पल-पल तेज अरुण बल छीजे, ऊन कपास प्यार मन भीजे।
कट-कट दन्त महाशितलाई, मुनि तट सरिता योग समाई ।४।
ग्रीषम तपत दाह तन दाहे, धरणि अगनि सम अति झुल साहे।
व्याकुल पशु पक्षी तरु ठाढ़े, जोर तृषा अति बल दुख गाढ़े ।५।
आकुल सब जिय विकल लखाहीं, श्रृंग शिखर मुनि, ध्यान लगाहीं।
सरवर सरिता नीर सुखावे, करम सुखाय साधु हरषावे ।६।

दोहा—बाधायें मुनिवर सहें, ऋतु अनुगत जो होंय।
स्वातम निर्मल रतन द्युति, साधें साधक सोय ।७।

साधक दृढ़ता

चौपाई—निजानंद अति अमित अगाधा, निजरस मगन साधु बिन बाधा।
नित प्रति आतम बल अधिकाहीं, समता गाढे सौख्य दृढ़ाहीं ।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अबल कियो मन कर तन चेरो, अनंत सुगुणता निज दृग हेरो।
विसर अपन पो जिय तन दासा, सुख-दुख भोगत फिरत उदासा।२।
अमिय चिदानंद साधू पाँही, आधि-उपाधि न व्याधि डिगाहीं।
काम कषाय न बल निज फेरें, क्षुधा तृषादिक तनिक न जेरें।३।
विष भव सागर विषय अमाहीं, करुण कषाय जु, मरुत समाहीं।
अक्ष भंवर जिय गोता खावे, परवश हो निज बल ना पावे।४।
विषय कषाय सुबुधि बल खोवें, निजानंद सुख अनुपम होवें।
वर विवेक रुचि, अंतर जागी, साधू सोई अति बड़ भागी।५।

दोहा—उदधि तरंगित पवन वश, जल थल सब इक होय।
समवायु उछले नहीं, अतल रतन थल दोय।६।

समाधि भरण

चौपाई—निज बल गह मुनिवर उम गाये, आतंक लख उर हरष समाये।
चारों आराधन दृढ़ कीने, मरण समाधि करत विधि छीने।१।
माया ममता शल्य न पागे, सविधि अहार चार सब त्यागे।
द्वादश तप वृष दशहिं समाये, निरति चार महाव्रत भाये।२।
जीने की कछु चिंता नहीं, मरण शीघ्र हो, बाधा नाहीं।
ना ही नेह किसी पै कोई, नहिं निदान सुख कांछा होई।३।
शांत सरल आतम चित दीना, मरण महोत्सव चेत सुधीना।
अतिचार व्रत में नहिं लाये, सावधान निज आत्म समाये।४।
पुण्य पथेय संग धर लीनो, परमातम पय राम सुभीनो।
आयू पूरी, सुखकर जासे, दसवे दिवि सुर उपजो तासे।५।

दोहा—अति हितकर अंतक रतन, फल देवे सुखदाय।
पुण्य धर्म कर्त्तव्य फल, क्षण में प्रगटे आय।६।
हरि षेण मुनि सुर भये, मरण समाधी पाय।
साम्य भाव गति ऊँच ले, सौख्य रतन अधिकाय।७।

दशम स्वर्ग देव

चौपाई—महा ऋद्धि, धारी सुर हूओ, दुति प्रभाव थिति गौरव लीओ।
नव-परिजन मिल सकल सराहीं, सुख साधन दिशि चौ दरशाहीं।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सोवत सम उठ विस्मय जागो, अवधिज्ञान लख सुख रस पागो।
महत प्रभाव धरम आदूजा, उमग करे सुर जिनवर पूजा।
देवागम गुरु पूज रचाई, धरम सुनत धारत मन लाई।
ऐसो तन नहिं, संयम धारें, करके तप वसु करम निवारें।
चाहत मन में करम निवरहूं, कब मानुष बन तप आचरहूं।
अनुपम भोगे भोग सुसारे, सुकृत सफल प्रत्यक्ष अधिकारे।
पुण्य उदय सब सिद्धि जु होई, सुभग सरूप जन अनुगत सोई।
शुभ लेश्या सुख आत्म-विशुद्धी, अंत मनुज वपु धर बहु ऋद्धि।

दोहा—पुन्य सुफल शुभ सुजन सब, मन वांछित सुख भोग।
पुण्य रतन शुभ धरम फल, संचे निज-उपयोग।६।

मंगलाचरण

दोहा—सम्यक रतनात्रय विमल, दश लक्षण मय सुधर्म।
शुद्धातम वंदू रतन पावन निज सुख मर्म।

प्रियम कुमार

चौपाई—पुण्डरी कणी, सुंदर नगरी, धन धान्यादिक, मंडित सगरी।
नृप सुमित्र महा बुधि सोहे, सुव्रता गृहणी शाशी दुति मोहे।
प्रियम कुमार सुसुत अवतारी, दिव्य तेज नयन सुखकारी।
नृप आदिक जन हरषे भारी, सकल उछाह, सविधि अनुसारी।
देव धरम गुरु पूजा कीनी, आदर चऊ संघ विधि दीनी।
नगर भेरि राजा दिलवाई, याचकता सब गई पलाई।
जन मन तोषित नरपति कीने, मुंह मांगो वरदान सु दीने।
नवल वधू सी नगरी शोभे, दीप पंक्ति चौदिश तम खोवे।
दोज इन्दु सम बढ़े कुमारा, पुत्र सुलक्षण उर कुल उजयारा।
सु लक्षण शुभ पलने में भावें, पल्लव चिक्कण विटप उजावें।
गौरव कांती बल सुख भाने, वृद्धि ऋद्धि अति, उत्तम ठाने।
माणिक मुक्ता रतन बहोई, धन धान्यादिक बढ़ें अन्होई।
सुजन सुगण मन प्रीत हटावे, न्याय निपुण सत रीत बनावे।
आधि व्याधि नहिं व्यापी भीती, सरल स्वभाव बडे न सु प्रीती।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा—धरम पुण्य सुख हेत अति, सुधरें दोनों लोक ।
धरें रतन जो भावसों, तिनको व्यधि न शोक ।८।

चक्रवर्तित्व

चौपाई—संस्कार पुण्य पूरब जानो, सुखद सुयोग बनो अधिकानो ।
धर्म पुरुषारथ सिद्धि उपावा, जैन यति ढिग विद्या पावा ।१।
आगम ज्ञान नीति हित विद्या, लोक उभय सुख रहित अविद्या ।
मणि कांचन शुभ योग सुहायो, जन-नृप मिल दें, नृप पद पायो ।२।
ले निधियाँ पुण्योदय आयो, सुखमय साधन समय सुभायो ।
उत्कट संपति, षडंगी सैना, मृग वदनी शुभ आनन नयना ।३।
विधाधर पति सु प्रीत बधावें, धरत भेंट पद शीश नवावें ।
मागध आदि सु व्यंतर देवा, पुण्य प्रसाद करत सु सेवा ।४।
चक्रपति नर इन्द्र अनूठा, अरि धीरज भू विभ्रत छुटा ।
सकल भेंटले भूपति आवें, कन्यादिक दे प्रीति जनावें ।५।
दोहा—चक्ररतन परभाव, छहों खंड जय साधनें ।
निकसे प्रियम कुमार, गौरव यश बल कारने ।६।

चक्रवर्ती वैभव

चौपाई—षडखंड विजय, करत हरषाये, जड़ चेतन बहु वैभव पाये ।
कन्या साहस छियानवे परणीं, कांति रूप यश, गौरव धरणी ।१।
मुकुट बद्ध, बत्तीस हजारा, आज्ञा धारें पुण्य पसारा ।
सहस गणों के अधि पति देवा, सहस चौरासी पदति सेवा ।२।
कोटि छयानव ग्राम अनूपा, आज्ञा शीश धरत बल भूपा ।
म्लेच्छ अठारह सहस सुराजा, पाद पद्म नत अति अनुरागा ।३।
सैन अश्व रथ पति पट रानी, प्रोहित गज सेंधव गुणखानी ।
चक्र काँकणी चर्म सु दंडा, छत्र चिंतामणि वज्र रिपु खंडा ।४।
पाये चौदह रतन मुनी के सदा देव रक्षक सबहि के ।
महाकाल पद्म काल सु मानो, नैसर पाँडुर सब रतनानो ।५।
पिंगल माणव शंख सुनिधियां, प्रस्तुत करत भोग सुख विधियाँ ।
श्रेष्ठ भूमि सुख इकट्ठे सारे, जितने थे सब चकि सु द्वारे ।६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा—पुण्य प्रवल चक्रवर्ति को, करते सुर नर सेव ।
ऋद्धि सिद्धि नव निद्धियां, मिलें रतन स्वमेव ।७।

दिन चर्या धर्म प्रेम

चौपाई—विविध दशाँग भोग नृप राया, कर उपभोग अधिक सुख पाया।
धरम भाव व कारण सव सिद्धी, चारों पुरुषारथ उपलब्धी ।१
अनुपम भोग धरम फल ऐसे, चक्रि सुचित धरम रति तैसे।
धरमी परणति, धरमी मन भाई, धरम कार्य रुचि हित सुखदाई ।२
मनवच काय धरम मय राखे, निरमल दरशन सम्यक साखे।
शंका काँछा जुगुप्स मुढ़ाई, अप गूहन अस्थित कर भाई ।३
वत्सल विन अप्रभावन दोषा, सम्यक्ती शुभ विमल आदोषा।
विना अष्ट मद गुण परकाशे, आतम विमल सुगुण अभिलाषे ।४
अष्ट मूल गुण श्रावक साधे, सँयम बारह व्रत अनुराधे।
चारों परवी प्रोषध धारे, शुद्ध चिदानंद सदा चितारे ।५
देवागम गुरु पूजा भावे, संयम तप आगम नित ध्यावे।
चार संघ को दान सु दो, पाछे भोजन आपन लेवे ।६

दोहा—श्रावक के षट करम नित, पूर रतन चित चाव ।
द्वादश तप निज शक्ति सम, साधन को शिव दाव ।७।

धर्म प्रभावना

चौपाई—जिनवर भवन भव्य छवि भीने, कनक रतन मणि मूरति दीने।
तीरथ यात्रा सुगम बनाई, गृह बाहर जिन पूज रचाई ।१
साधु सँघ को दे अहारा, औषधि अभय ज्ञान भंडारा।
धरम पंथ शुभ रीति चलावे, लखत भव्य पथ उत्तम आवें ।२
गम धर तीर्थंकर मुनि ज्ञानी, बंदे हरष धार गुण खानी।
द्वाद शांग, आगम रुचि धारे, नित सामायक करम निवारे ।३
प्रत्याख्यान आलोचन करते, प्रति क्रमण कर, क्षमा सु धरते
समता लावें भक्ति बढ़ावें, व्यूत्सर्ग कर चित हरषावें ।४
गुणी प्रशंसा निंदक हियके, लखत कषाय विषयदव जी के।
धरम रतन निज परख सँवारे, निज रस सुख उमगे बुधि धारे ।५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीजिन उपदेश

चौपाई—सब क्षण भंगुर जग के योगा, मादक यौवन संपति भोगा ।
इंद्रिय सुख विद्युत सम जानों, अथिर अपावन परवश मानो ।१।
आधि सुव्याधि उपाधि बसावे, शरण न पाये अंतक आये ।
यंत्र मंत्र मणि, औषधि कोई, इन्द्र नरेन्द्र न रक्षक होई ।२।
दुखमय सागर भव आगारा, मृग तृष्णा वश भ्रमण अपारा ।
गती आश्रम वरण चौधारा, जनम मरण पूरित दुखकारा ।३।
जनम अकेले इक ही जावे कोई ना ही साथी पावे ।
कोई किसी का न ही तेरा, झूठा जग का तेरा मेरा ।४।
काया कारण सब जग फ़ेरा, आय छुड़ावे काल लुटेरा ।
महा अपावन तन मल थैला, सदा श्रवत मल नव अति मैली ।५।
कीकस पल श्रोणित चर्मोली, सुगंध करे दुर्गंध दुर्गेली ।
परसे याके का सुख पाके, मल को बीज मलहिं उपजावे ।६।
दोहा— निरख अपावन अथिर जग, दुख मय शरण न कोय ।
चेत रतन भ्रम खोय, जीव अकेला अन्य तम ।७।

षट बाह्य भावना

चौपाई—चेतन नित्य अमल चिद् रूपी, निजा नंद स्वाधीन स्वरूपी ।
करम कालिमा, चेतन नाहीं, परवश खेद जीव अविकाहीं ।१।
निजगुण बिसरत परवश होवे, पर परसे ना, स्वसुख भेवे ।
वर स्वाधीन उच्च जग मांही, निज रस सुख चेतन विलसाहीं ।२।
जीव स्वतंत्र मुक्ति सुख वरते, धर्म सुभाव विवशता हरते ।
धर्म सुमार्ग नित्य जिय शरणा, धारत याक भवदधि तरना ।३।
देवागम गुरु जीव सदाई, शरणा ले दुढ, करम न शाई ।
ममता जहां मुक्ति ना कोई, आतम ध्यानी शिव विल सेई ।४।
निज ना जाने व्रत तप धावे, कष्ट सहे पर मुक्ति न पावे ।
डूबे भ्रम से भवदधि मांही, सुहित सुआतम भूझत नाहीं ।५।
उत्तम कुल नरतन अब आयो, बड़े भाग जिन धरम सुहायो ।
स्वस्थ शरीर बुद्धि सुखाशी, विषय कीच वश रतन भ्रमाशी ।६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा—चिंतामणि कर लें रतन, बन भिक्षुक पराधीन ।
सागर सरिता सर विषे, तृविता जैसे मीन ।७।
दीक्षा धारें भव्य जन, करम काटि शिव जांय ।
त्याग रतन परतंत्रता, स्वातम सुख विलसांय ।८।

अभ्यांतर भावना

चौपाई—मिथ्या मोह कषाय बुलावे, अविरति योग प्रमोद बसावे ।
अष्ट करम आवन को द्वारा, बढ़त सदा इनसे संसारा ।१।
शम दम तें जो करमन रोके, मन वाँछित सुख जग अवलोके ।
अनगारी बन गृह नाज रावे, करम प्रवाह धंभे वश जाके ।२।
द्वादश तप दश धरम सुधारे, पंच महाव्रत त्रिगुपति धारे ।
समिति पंच आदिक गुण सारे, इन बल चिपटे कर्म निवारे ।३।
लोक स्वंम न कोई बनावे, कोई न पाले न विन शावे ।
जीवन भ्रम वश पावे समता, दुख भरता त्रिभुवन में फिरता ।४।
निज बल ज्ञानातम से साधे, सम्यक ज्ञानी मुक्ति सुलोधे ।
दुरलभ रतन धरम जग माँहीं, धरम जहाँ आकुलता नाहीं ।५।

दोहा— सुख साधक क्षायक करम, जग आश्रय गुण खान ।
धरम चित दृढ़ धारकर, वीर रतन गुण वान ।

धर्म महिमा

चौपाई—लोक पूज पद धरम सुकरता, दुख दारिद हर भव भ्रम हरता ।
चौ कषाय सब, ममत मिटावे, मोह विना चैतन्य दिपावे ।१।
सम्यक दरश ज्ञान चरित्र से, धरम दश लक्षण मरम गहेसे ।
अनुपम सुख होवे अविनाशी, शालि अमल तुष बिन सुख राशी ।२।
धरम प्रीत जिन उर में आनी, पंडित वर वह विज्ञ सुज्ञानी ।
जगत पुज्य सु श्रेष्ठ कहावे, दुविधा बिन निज आतम ध्यावे ।३।
जग संपति वैभव तरु छाया, सुभग दीप्त सोहे क्षण काया ।
देह जगत नहिं प्रीति सु योगू, सुविज्ञ तजे इनको बिन शोगू ।४।
वश जो इनके मोह भुलाहीं, जनम मरण अति छोर न पाहीं ।
भोगे भोग जनम धर सारे, भये न पूरण तृष्णा जारे ।५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा—उपजो व विरक्ति भाव, विमुख भोग चक्री सू मन ।
नारि रतन निज नाहि, दिव्य ध्वनि रवि किरण सुन ।६।

चक्रवर्ती वैराग्य

चौपाई—सुचक्री मनमें करत विचारा, पायो जग सुख अपरम्पारा ।
कबहुं न पूरण मन अभिलाषा, उपजी बहुतक भोगन त्रासा ।१।
अज्ञ हूओ विषयन मन मोहो, हीरा जनम अकारथ खोयो ।
दुःखकर उदित भोग दुख सेये, दुख को बीज अमित दुख देवे ।२।
सुख आतम को जो अब चाहो, धन्य भाग पथ पा अवगाहो ।
मगन भोग रच आनंद चाहें, घृत मिसरी शठ अगनि बुझाहें ।३।
नागिन तृष्णा जब डस खावे, लहर मोह की भोगन आवे ।
काया मैली मल मय थैली, नव मल द्वार श्रवें घिन घैली ।४।

नर्सर पत्य नारि पाप

सोरठा—नारी नर की रोकनहारी, नारी जग में अति दुख भारी ।
काय मोह विष नारि बढ़ावे, विषय विकार नारि संग लावे ।१।
परम हितू लागत अति प्यारी, चितवन ताकी सुध बुध हारी ।
नाते रिश्ते नारी ही ते, नारी गये भये सब रीते ।२।
मध्यम मारग को सहचारी, सहचरता ताकी दुखकारी ।
द्विपद चतुष्पद झटति कहावें, षट पद अष्टपद सु बन जावें ।३।
आगे बेलि बढ़त ही जावे, मधु मांखी मधु मांहि समावे ।
स्वातम हित ना तब हो पावे, थकित अचल अति दुरगति पावे ।४।
धन धान्यादिक भवन सुवसना, परिग्रह तृष्णा परवश फंसना ।
नारी कारण सब संग्रहता, नारी जग शिका भरना तकना ।५।
मुक्ति रतन जग में जो चाहो, माता भगनी सुता जु पाहो ।
धरम करम सब नारि अधीना, विषयी विषभर शिव शिव कीना ।६।
नारी नर को प्राण है, नारी करे कल्याण ।
विषय विकारी नारी तज, नारी रतन जी दान ।७।
ऐसे देखत जो मन राचे, चिंतामणि खोवत, गह काँचे ।
राज-ठाठ मद अघकर धरना, इन वश भ्रमणो भवदधि भरना ।५।
सोरठा—नारि पाप अघ मूल, बंधक परिजन रतन के ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कमला चंचल शूल, विषय मक्र भव सिंधु के ।६।

चौपाई—धन्य योग शुभ तीरथ आयो, महा भाग विभु दरशन पायो ।
दिव्य ध्वनि सुन जिय हरषायो, आतम हित पथ परगट पायो।
विनाशीक जग वस्तु सारी, इनकी प्रीति महा अघकारी ।
सम रतनात्रय हित ना कोई, अचल परम सुख यातें होई ।
वीर साज सज असि चमकाऊं, जिन मुद्रा बुद्धि मोह नशाऊ।
बिन संयम यों जीवन खोये, आतम बल बिन रुल दुख ढोये।
संयम हित कर से का डरना ? खोये बिन क्षण अब जग तरना
मोह तिमिर वश पथना सूझो, बिसर स्वपद मिथ्यात अरुझो।
सुख मानत पर से बहु भटको, मिटो न अब तक जियको खटको
अनंत चतुष्टय का मैं स्वामी, निर विकल्प, अविचल अभिरामी।

सोरठा—दृश्यो जग विड़ रूप, चक्री रतन सु विचार दृढ़ ।
सरव प्रिय सुकुमार दियो, राज विधि नीति लख ।६।

चौपाई—जग की त्यागी तृण सम सिद्धी, अंतर दिवत चिदातम लबधी
बाहिर अंतर मूर्च्छा त्यागी, आत्म रतन निधि या बड़भागी ।
नरक तिर्यंच देव गति नाहीं, शठ मिथ्याती ताहि न पाहीं ।
सोलह सहस नृपति मन भाये, संयम गह सुख आतम पाये ।
धूलि तिर्थंकर शीश चढ़ाई, दीक्षित हो भव ताप जुड़ाई ।
प्रशम संवेग सु अनुकंपाई, माध्यस्थ भाव बढ़ो हित दाई ।
बाह्याभ्यंतर द्विविधि प्रकारे, मुनिवर तपते तप गुण धारे ।
मनवच काया आश्रव रोके, निर्जन वन गिरि ध्यान संजो के।
साध समिति मुनि करत बिहारा, उपदेशत शिव द्वार उधारा
निज पर तत्व प्रकाश सुभासी, उन्नत दिन दिन संयम साखी।

दोहा—संत महा सुख दाय, स्वातम हित दाता बड़े ।
वचन रतन शिव दाय, वज्र शाणि कंचन जड़े ।६।

मुनिवर बिहार

छिपे न रवि नभ छाये, महत्त महां परसोत्तम आये ।

चौपाई—पट अंतर दुति वज्र सुहावे, नव्य प्रकाश सुथट दमकावे ।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बड़े पुरुष बिहरें जब कोई, सुयश सुगंध विस्तरे अनोई ।६।
पुण्य उदय सुख क्षेत्र सुहावें, जीव सकल समता सुख पावें ।२।
मिथ्यातम लख तत्वन भागे, ज्ञान अरुण तम-क्षितिज समावे ।
सुजन स्वयं उपजत अनुभूति, जैन धरम पा बढे प्रतीती ।३।
बढ़ प्रभावना जागे भागा, लगे सुमग भवि आतम पागा ।
मन एकाग्र धरम चक्रेशा, संयम शांति धारे सुधेशा ।४।
कनक सदन मणि कलशा कीने, पंडित मरण सुधार सुधीने ।
सहे परिबह बाईस जागे, आराधन चारों अनुरागे ।५।
क्रम क्रम करके तज आहारा, वसति चटाई तजा संथारा ।
प्रियम मित्र सु मुनिश्वर मूथे, सुरग बाखें रवि प्रभ हुये ।६।

सोरठा—संयम तप परभाग, संपति रतन महा भई ।
यौवन कांति सुभाव, सुख पाये अति मोद मय ।७।

सूर्य प्रभदेव

चौपाई—लहो हूंठ कर दिव्य शरीरा, आयु अठारह सागर धीरा ।
संस्कार दृढ़ उत्तम आये, परम विभूति शांति सुख लाये ।१।
श्री जिन बंदन पूजा करतो, सुबिम्ब अकृत्रिम भज अघ हरतो ।
मणी रतन मंडित जिन मूर्त्तीं, उमगत नयन परस स्फूर्तीं ।२।
केवलि श्रुत-केवलि निज पूजा, आगम गुरु वंदत सुख दूजा ।
पंच कल्याणक लख उमगावे, पुण्य अनुबंधी पुण्य उपावे ।३।
करत धरम चरचा सुखकारी, आत्मबोध वर्धक गुण कारी ।
पुण्य उदय सुख भोग समाये, नृत्य गीत रम मोद बढ़ावे ।४।
क्रीड़ा करत फिरत वन मांही, दिव्य अप्सरा मनहिं रमाहीं ।
दुर्लभ सुख भोगे सुर मांहीं, सुधा सरस मुद सम्यक ध्याहीं ।५।

दोहा—थिति प्रभाव दुति लेश्या, विशुद्ध इन्द्रिय भोग ।
बिन ममता तजना सरल, आतम रतन सुयोग ।६।

श्रेष्ठ नरत्व

कवित्त:—पुण्य सुयोग मिलें, बहु भोग, नाहिं संयोग निवारण काजे ।
बंध किये नहिं छूटे हिये, बहु भेष किये कछु काजन सजे ।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यक्त भयो सो कहा भयो सोही, ज्ञान जगो सद ध्यानन साजे
अत रतन नर जन्म बिना नहिं पूर्ण, रतनात्रय वर-हित काजे ।२

दोहा—परम शांति धर सुरचयो, शुभ भावन परसाद ।
पुण्य योग नर तन लयो, मेंटन रतन विषाद ।३।

—ॐ—

उत्कर्ष-कांड

मंगलाचरण—

दोहा—बंदू षोडष भावना, जाकी ऊंची दौर ।
निज-हित शिव सुख साधना, करत रतन शिर मौर ।१।

चौपाई—जंबू द्वीप भरत शुभ क्षेत्रा, क्षत्राकार नगर शुभ नेत्रा ।
अमर पुरी सम शोभा धारी, सम्पन्न धन-जन जनता सारी ।१
सु नन्दी वरधंन नृप महाराजा, देवी वीखती गृह साजा ।
सु शील धरम सु गुणता धाती, शशि रवि लख मुख लज दिन राती ।२
पान हार मध जिमि अति साजे, कनक रतन ज्यों वज्र विराजे
सुरसरि वहिनन में ज्यों आगे, नारिन में त्यों राणी जागे ।३
कूंख उजालो सब सुख कंदा, नंद पूत शुभ पूनम चंदा ।
मात-तात जन, सुखद सँयोगा, परिजन पुरजन हरषित लोगा ।४
बहु विधि जनम सु उत्सव लायो, नगर देश जन आनंद छायो ।
बजीं बधाई सौहर भाये, सुत चिंतामणी, रतन उन्हाये ।५
उत्सव दान-मान बहु भीयो, वर मुंह माँगो नरपति दीयो ।
सकल नगर शोभा करवाई, मंगल-कलश दीष शहनाई ।६

दोहा—पुत्र रतन सुखदाय, कुल दीपक मन सोहतो ।
काय कांति सुभगाय, पुण्य वंत, गुण अति सोहतो ।७।

छंद—मन मोहनो सुत निरख करके, उर हपष नृप नाहिं समावतो ।
कीयो उछावो विविध विधि के, उमग धर धर अति मन भावतो ।१
चौ सँघ में आनन्द करके, देवारचन सविधि करवातो ।
शुभ पुण्य प्रगटो धन्य हूवो, धन्य दिवास पा मनसु भावतो ।२
माता मुदित का सुमोद कहिये, दुख जनन मुख विसरावतो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निरखे कभी चूमें पुलक कर, धर गोद ले हृदय लगावतो ।३।
करके फुलेल इतर सु अंजन, वसन नव, नव रुचि उर भावतो ।
कनक-मणि मय अलंकार आदिक, ले सु मनहर साज सजावतो ।४।
दिवत अरुण सो अयन सु सुत को, उमग लख उर अति अनुरागतो ।
दृष्टि बचावत दुर अरि, जनकी सुराई लोन नित उतारतो ।५।

दोहा— मात तात मोदित महा, मोहें जन-गण लोग ।
आनद वारिध उछलतो, गयो रतन दुख शोग ।।

नंद नृप शिशुत्व

चौपाई—लाली ऊषा लख मन भानो, पूरब दिश अरुणोदय जानो ।
शोभे उदयाचल सुखकारी, विकसत पदम सु, सरहिं मझारी ।१।
दिशा सु पूरब रवि—सु प्रगटावे, जग तम मेंटे तेज प्रभावें ।
मारग सूझे अति बल भासे, शक्ति प्रभाव बढ़त धन जासे ।२।
अंशु तेज दिग दशों सुहानी, सुत उदयाचल विमल कहानी ।
मोदित निश दिन बढ़त कुमारा, वारिध उमगत इन्दु उजारा ।३।
पलना पलक ललक भुइं बैठे, घुटरुन चलत उलट गिर ऐंठे ।
उठ बढ़ आगे पीछे देखें, अद्भुत ललक लचक जन पेखें ।४।
धूसर धूसरित किलक सुहाई, मुसकी अयन निरख तृपताई ।
इन्दु कला सों होड़ विचारा, बाढे निश दिन नन्द कुमारा ।५।
कला कला धर, होड़ न पाये, थकित क्षीण अति कृष्ण लखाये ।
कर शिशुत्व—पाछे पग धाये, सुभग सलोने बाल कहाये ।६।

दोहा— बाल काल विद्या सु ले, सखागम शुचिधार ।
नीति युद्ध आयुध शकुन, आयु रतन जयकार ।७।

नंद बाल्य काल

चौपाई—बिरबा कैसो पात बतावे, कितनो जल तसु वरण बतावे ।
नर कैसो तस गिरा सुनावे, मन जैसो तसु रूप सुहावे ।१।
गुण बुधिबल को करे उजारा, दीपत यश अति नाद नगारा ।
देवन दुरलभ गति मति पाई, विरदें गुणी भनत रुचिताई ।२।
सुगुण सरूप सुछवि मन हारी, सुकुल सुशील विनय अवतारी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुण्य नियोगन गजगति धारी, पितु आज्ञा परणीं सुकुमारी ।३।
माता हरषी सुख गृह छाये, सुपितृ मद को सकत दताये ।
कुल वंभव शुभ नेह सधाये सकल सुमंगल साथ सजाये ।४।
नारी प्रत्यक्ष सुरग दिखाये, सुरग बनाये सुरग उपाये ।
पुण्य वंत वे, नर तन धारी, सुगुण सुशील कुल वन्ती नारी ।५।

दोहा— नारी सच्चा मित्र हैं, नारी जग सुख द्वार ।
उत्तम नारी रतन मती, नारी धरम संवार ।६।

चौपाई—नारी से गृह शोभा पावे, नारी कुल-व्रत प्रीत चलावे ।
अनुपम नेह सु नारी दाता, सौख्य भण्डारी नारि विधाता ।१।
नारी से जग नाते रिश्ते, सरस सु व्यंजन बावर खस्ते ।
नारी मधुरस घोलन हारी, माता भगनी सुता सुनारी ।२।
उत्तम परिचारक मति दाई, मंगल धर सब मंगल दाई ।
मंगल कारी जग दुख हारी, सहृद सुगुण नारी अवतारी ।३।
नद मंत्री नारी वाल कारी, असुर संहारक सुख संचारी ।
महा पुरुष तीर्थंकर दाता, सु सुरेन्द्र पद नमत विधाता ।४।
सहज सरल सु समरगण कारी, दाता अनुपम जी हितकारी ।
विषय भोग उपभोग अगारी, साधू श्रावक धरम सँवारी ।५।

दोहा— नारी सब सुख धाम, नारी सुरग निवासनी ।
नारी गुरू महान, माता रतन उपासनी ।

चौपाई—फले पुण्य शुभ अवसर आवे, सकल सिद्धि वैभव सुखलाये ।
दीपत मोहित मन बड़ भागा, कंचन सँग जु जुरत सुहागा ।१।
पुण्य प्रताप काह ना सोहे, महा भोग भोगत मुद होवे ।
नरपति परजा सब मन भाये, सुघड़ी महुरत लगन सुधाये ।२।
उत्तम मंडप रतन जड़ाये, घंटा झालर धुज लहराये ।
शुचितम नीर सकल मंगवाये, सविधि सकल शुभ काज कराये ।३।
कर अभिषेक नृपति सन्माना, बजे वाद्य सँगीत सुनाना ।
नगर भोज राजा करवायो, सब जन गण मन आनंद छायो ।४।
गगन धरा जन मंगल गाये, नगर ग्राम गृह दीप सजाये ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नृप पद दीनो हरष अपारा, सकल प्रजा जन नृप परिवारा ।५।
पूजन जिनवर कर सुखदाई, महा सुमह कीनी उम गाई ।
सभी जिनालय गये सजाये, चतुर संघ को दान दिवाये ।६।

दोहा— अति उछाह सब देश में, थके कहत सुरराय ।
नीति बिबुध जानत समें, गहत रतन पथ पाय ।७।

सज्जन—दुर्जन

चौपाई—सुजन नवें श्री महिमा पाये, दुरजन पा वैभव इतराये ।
नवत शाख द्रुम फल सु आये, काठ न उवठो नवे नवाये ।१।
नेह बिना गुण मूल सुखावें, बिन सहाय भू पड़ विनशावें ।
बड़े बड़प्पन धर कहलावें, निज सुख पर के, हित विसरावें ।२।
सबको देवें फल सुखकारी, महत पुरुष बड़ नीति सुखारी ।
बीज किसान चतुर नाहि खोवें, लख शुभ थानक शुभ घड़ि बोवे ।३।
बाढ़त सुखद बीज फल कारा, निज पर का अति तोषन वारा ।
नंद राज सुख भोग सुहाने, योग मनोग सु अमित अमाने ।४।
निरख सुरेन्द्र सुनत मुद माने, पुण्य योग सुख सकल समाने ।
नरपति धरत धरत उमगावें, सम्यक दरश अमल सुख लावे ।५।

दोहा— अष्ट मूल गुण धर रतन, सम्यक दरश सुज्ञान ।
श्रावक बारह व्रत सुमन, निरति चार सुखदान ।६।

नंद नृप दिन चरया—

चौपाई—प्रभु गुण चिंतत प्रात सु उठते, सामायक निज तेज प्रखरते ।
शौच शुद्धि मुख धाव न करते, अभ्यंग कर व्यायाम सुमुदते ।१।
शुचि स्नान यजन-जिनवर करके गुरु पूजा स्वाध्याय सुरुचि के ।
संयम तप शुचि दान महत के, भोज राज विधि गोष्ठी करके ।२।
मोक्ष गमन हित मान उपावा, छूटन बन्दी जिमि ध्यान सधावा ।
नित प्रति याही विधि हरषावें, धरम अरथ शुचि काम सधावें ।३।
पख दिवस लख अनशन धारे, समता धर आरभ परिहारे ।
नित प्रति देव बंदना भावे, आगम भक्ति सुगुरु मन लावे ।४।
थावर त्रस सब सुख काया, स्वपर विभेदक सु स्वाध्याया ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुशक्ति समान नित तप साधे, अतिथि संभाग दान अबाधे ।५।
मुनि आचार्य पाठक अराधे, संघ चलावत बिना उपाधे ।
धरम पंथ गहि उपजत प्रीती, व्यापत मन नहिं कोई भीती ।६।
मन बांछित सुख फल सब देई, देविक देहिक ऐहिक अेई ।
धरम बड़ो इस जग के मांहो, धरम प्रभाव महत सुख आहीं ।७।
सबतें राग तजे जो कोई, सुख अविनाशी अविचल लेई ।
सुख अनन्त आतम बल आवे, दरश अनंत ज्ञान दमकावे ।८।

दोहा वर विवेक शुक्ल ध्यान सुं, आवें सुक्ख अनेक ।
धरम प्रीति खोवे भरम, भेक रतन शुभ टेक ।९।

नंद नृप नीति—

चौपाई—जतन रतन सों काल बितावे, अकारथ घड़ी एक ना जावे ।
पूरव करम भोग ले आवे, चाव धरम नित नृप हरियावे ।१।
श्रावका चार रतन श्रद्धानी, करे सुरक्षा जीवन विज्ञानी ।
नीति रीति नृप सब हितकारी, दुष्ट अधम कांपें अघचारी ।२।
सकल जीव, कारुण्य विचारें, पाप भीति सब, मन में धारें ।
बोलें वयन प्रेम रस साने, पर-हित सुखं वच सत्य समाने ।३।
स्वगरिमा, संतोष सुहाने, धीरज साहस, शील अमाने ।
सब सहिष्णु उर प्रीति सनेही, पर पीड़ा मद अधम अघोही ।४।
धरमा यतन धरम सब प्यारे, मंगल सकल सु आगम धारे ।
निज विवेक बुधि सम रस चाखें, अहित अज्ञ बिन द्वेष विषादें ।५।

दोहा— सुजन-महाजन सब रतन सरल शुद्ध व्यौहार ।
परजा राजा विमल वर, धरम प्रीति अघ हार ।६।

राज-काज, विधि

चौपाई—शक्ति समान करत सब काजा, सुपन चितारत नाहिं अकाजा ।
फैली धरम सुखद शुभ नीती, नृप उर अतिशय परजा प्रीती ।१।
प्राणाधिक जनता मन भावे, काज सरब तज नृप जन-धावे ।
परजा के हित कर सब काजा, अन्न वस्त्र गृह पूरण साजा ।२।
विद्यालय अतुरालय खोले, श्रम-कारुणिकता सुमन घोले ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कला-वनिज कौशल परवीणा, धनुर युद्ध आयुर सुख सीना ।३।
मन सौष्ठव स्फूर्ति सु शाला, आजीवक व्यायाम रसाला ।
आवागमक सुखद शुभावना, पत्राचार सहज सुख दाना ।४।
वन उपवन बहु बाग बगीचे, षट ऋतु हरित भरित फलमीठे।
सर सरिता श्रुत कूप जलाशे, अमिय मिष्ट रस तृपति सु जासे ।५।
धान्यादिक उपजत अधिकाई, करत तृप्त वरधक प्रभुताई ।
अन्न-पान मन भावन आवें, कला सरब साधन गुण लावें ।६।

दोहा— सज्जन परिजन स्वजन सु, उत्तम कुल आचार ।
प्रीति रतन विद्या गहन, नृप दीसे भू सार ।७।

।। धरम,--सुजनता महत्व, नृप मुनि बंदन ।।

चौपाई—बाढ़े धरम सुजनता रीती, स्वयं आस भय-जग-परतीती ।
सहज धरम यश पुण्य बधावे, अवसर निरख तेज ललचावे ।१।
प्रोष्ठिल मुनिवर उपवन आये, मुनि बंदन नृप नंद उमगाये ।
सकल भव्य सह परिजन आये, पाद पद्म नत अति गुण गाये ।२।
अष्ट दरब ले पूजा कीनी, गुरु गुण गान करत थुति कीनी ।
लख सुभव्यता मुनिवर वाणी, धरम दृढ़ावन सब सुखदानी ।३।
धरम जीव का तारण हारा, धरम करे जी भवदधि पारा ।
बिना धरम आकुलता आवे, बिना धरम सुख कोई न पावे ।४।
देत धरम सुख ऐहिक सारा, धरम सुरग शिव जग सुखकारा ।
आत्मिक शांति धरम से आवे, आकुलता बिन आनंद पावे ।५।
धारें धरम बड़ेन की नीति, उभय लोक हित जन परतीती ।
पाथेय मग-संरक्षक मानो, धरम प्रभाव सुक्ख मनमानो ।६।

दोहा— नर भव सब सुख साधने, धारो वृष नरराय ।
करमारण्य निवारने, धरम रतन सुखदाय ।७।

दशधा धरम

चौपाई—श्रेष्ठ धरम नृप क्षमा संभालो, मन वच काय क्रोध रिपु टालो।
मन-वच-काय सरल सम होई, अहम-भाव बिन मार्दव सोई ।१।
दम्भ कपट छल अघ उपजावे, ऋजु भाव आर्ज जव कहलावे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अप्रिय अहित कटुक वच सारा, सब अलीक तज, सत्य उजारा ।२।
इन्द्रियार्थ मन वस्तु डुबोवे, सब मल शुचिता साधक खोवे ।
षट कायिक बाधा अघ बोवे, संयम इन्द्रिय मन वश शोभे ।३।
औषधि शास्त्र अभय अहारा, त्याग धरम गह जड़त निवारा।
आत्म ज्योति वपु ममत–निवारे, आप अकिंचन बिना सहारे ।४।
निज स्वभाव ब्रह्मचर्य रमावे, सकल सुधीन, सुख सुवृष लावे ।
निज का हित पर को सुखदाई, धरम सुक्ख मय पथ-हित दाई ।५।

सोरठा— धरम जगत में सार, शिव भव जग सुख करे ।
अविनाशी अविकार, रतन डूबते उतरते ।६।

सुख हित कार्य—

चौपाई—एक देश व्रत सुखद समाजा, सर्व देश व्रत सख शिव राजा ।
नाम चितारत शिव मग पावे, नाम प्रसाद विशुद्धी आवे ।१।
सुख दायक लायक गुण बीजा, वृष सब सुखकर ज्ञानिन सीमत्र।
क्षणिक भोग शुभ योग निवारे, सुख विवेक विमल जी सुधारे।२।
जय मोह इन्द्री शक्ती सु कीने, निराकुलित सुख निज रस भीने।
छाया सम भोगन को जानो, पकड़त भागत पीठ सु आनो ।३।
जिय को सुख नहिं इनसे होई, बढ़ आकुलता बहु दुख जोई ।
कूकर सूखो हाड़ चबावे, छिदे तालु रस हाड़ मनावे ।४।
विषया कुल बल निज रस विसरे, परवश दीन अधिक दुख संघरे।
दाहक आकुलता जब जावे, निज आतम सुख क्षण कछु पावे ।५।

दोहा— आकुल हो व्याकुल महा, निज सुख रतन बिसार ।
निर आकुलता आत्म सुख, भोग भुजंग विडार ।६।

जग-स्वभाव, दर्शन, कर्त्तव्य

चौपाई—गुणी गुणत चिंतत मन ऐसे, अथिर असार जगत सुख कैसे ।
जग की प्रीति महा दुख देवें, प्राणी नींद न सुख की लेवे ।१।
चपला सम चंचल जग सोई, यौवन तन धन विन से खोई ।
मानुष कुल भव संगति पाई, आरोग्य इन्द्री को सुलभाई ।२।
जैन धरम का शरणा पाये, बल–विवेक पौरुष मन भाये ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन मुनि तपसी सद् गुरु ज्ञानी, जिन शिव-सुख की रीति पिछानी ।३।
ऐसो अवसर न बारम्बारा, विकृत सुख जग खंग की धारा ।
मृग तृष्णा वश मोही धावे, जनम अकारथ हीरा जावे ।४।
मरण पाय शठ दुरगति पाहीं, विकल-विलख पाछे पछताहीं ।
सुहित सुपथ भाज यानें लीजे, मोह ताप बिन निज रस पीजे ।५।

दोहा— दृढ़ विचार नन्दराय उर, जागो हृदय विवेक ।
जोति जगी निज, घट लखो, उमग रतन शिव टेक ।६।
लगे हलाहल विषय घट, जो भोगे पुत्र योग ।
सब निष्फल अब दीसते, मुनि वच रतन उद्योत ।७।

जीव, दुख-योग, भोग

चौपाई—दुख सागर जग अगम अपारा, मोह मगर का ये आगारा ।
आदि अंत बिन सब जग दीखे, लख विडम्ब को जीव न सीखे ।१।
पुरुष शलाका तीर्थ सुज्ञानी, सुतंत्र भये तज शिव विश्रामी ।
छोड़ें तृण सम अति सुख पाये, सुख माने जग रहे भरमाये ।२।
क्षुधा तृषा ज्वाला तन दाहे, विषय कषाय व्याधि दव खाहे ।
घिन कर उपजत घिन तन ठाँहीं, कैसे रागें भवि या माहीं ।३।
धरम रतन, लूटत वर जोरा, लगे चोर इन्द्रिय चहुं ओरा ।
पूरब दुख भोगत दुख देई, दुख कर मरण सु पुनि दुख सेई ।४।
दाह उपावत जाके भोगा, कौन निरोगी चाहत रोगा ।
नाहीं शुभकर निश्चय भोगा, ग्लानि पूर्ण नहिं साधन योगा ।५।

दोहा— अल्प पुण्य पावें कहां ? हितकर सुख जग योग ।
पुण्य बढ़े तृष्णा बढ़े, आकुल रतन मनोग ।६।
बल क्षायक परवश करण, मोह दाह दुख भार ।
ज्ञान अरुण ढापन जलद, भोग कुगति दें डार ।७।

—ॐ—

नंद राज-वैराग्य

चौपाई—काया जग, चिंतत, बड़-भागी, सुलटा मन नृप नन्द, विरागी ।
माया ममता मोह निवारे, सकल परिग्रह चौबिस डारे ।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री गुरु वचन चरण रुचि धरके, दीक्षा लीनी संशय हरके।
शरणा जो सत-गुरु की आवे, गुरुवर भकती पार लगावे।२।
सद गुरू महिमा अगम अपारी, गुरू प्रसाद मुकति अनिवारी।
आतम बल गुरू प्रगट दिखावे, अघ दुख ताप भुवन के जावे।३।
मन अति निरबल, सबल सुहावे, लखत गुरु मन-सिज तप जावे।
कर्मा धीनता फटक न पावो, आतम जोति स्वतंत्र लखावे।४।
मोक्ष महा सुख निकट सु पावे, दुरगति टार सुगति उपजावे।
अनन्त चतुष्ट अविवल पावे, करम महा रिपु विनय सुनावे।५।

दोहा— महिमा गुरु की अगम अति, सुख-हित मुकति सुद्वार।
दायक रतनात्रय सुनिधि, धरम रतन सुख सार।६।

सुगुरु महात्म्य

चौपाई—सुगुरु समान न कोई दूजा, निश दिन करत सुभवि गुरू पूजा।
गुण—गुणज्ञ—गुरू, भव्य बनावे, ध्यान ज्ञान आसन चित लावे।१।
जगत काय संवेग विलोके, बानि विवेक हित—गुरु सुपेखे।
मंद कषाय सु धीरज समता, कारुण्य मय मंगल जिय करता।२।
धारी परम्परा गुरु ज्ञानी, राग रोष बिन मोह विज्ञानी।
नय प्रमाण विधि सम्यक जाने, रतना त्रय दृढ़ प्रीति सु आने।३।
प्रशम संवेग सु करुणा धारी, सदा भाव मध्यम अविकारी।
निजानन्द रस आतम साने, वपु-जग भव—सों प्रीति न भाने।४।
धरम प्रभाव बढ़ावत नीके, चिते शिष्य सुहित नित ही के।
आप तिरे औरन तिखावे, गुरू एसे भव पार लगावे।५।

दोहा— सुगुरु सुकाल सुभाव वश, नरपति रतन निहाल।
दीक्षित हो लीनो सुयश, भव वन छुटो कराल।६।
केश लोंच कर असन तज, दीक्षा विधि अनुसार।
काल लब्धि आई निकट, रतन महाव्रत धार।७।

नन्द मुनि

चौपाई—सुत को राज-पाट सब दीना, यक्ष्य सुबिध निशल्य प्रवीणा।
सब पै क्षमा करी क्षमवायो, निर्भय निसंग सु गुरु पद नायो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुरू भक्त मुनि, नन्द कहायो, अल्प काल आगम सब पायो ।
ज्ञान सु आतम, भावत जोड़ी, जग निधि जिनके सन्मुख भोंड़ी ।२।
आतम सुख बल उमगत आवे, करम करील सु दूर पलावे ।
द्वादश तप अति अरनि जलावे, आतम कंचन अति दमकावे ।३।
नियम-महत-तम परत सुहागा, दीपै मल-तम मोह सु भागा ।
षट मासिक अनशन तप धारे, करम शिखर पै वज्र प्रहारे ।४।
जगो ज्ञान जासों सुखदाई, पढ़े अंग ग्यारह मन लाई ।
पंच महाव्रत समिति सुधारे, मन वच काय त्रियोग संवारे ।५।
अक्ष विजय पंच करते धीरा, धारें मूल सुगुण मुनि वीरा ।
उत्तर गुण साधत—गुरू ज्ञानी, जिन शिव मग की गैल पिछानी ।६।

दोहा— नंद यती आनन्द धर, करें करम निरमूल ।
निकस रहे भव जाल से, धरम रतन सुख मूल ।७।

तद-प्रभाव-फल

चौपाई—नींद हरे अनशन सुखकारा, ऊनोदर तप ध्यान उजारा ।
व्रत परि संख्या तिसना मारे, रस परित्याग सु निज रस धारे ।१।
विविध शय्यासन काया साधे, काय क्लेश सु मन को बाधे ।
षट विधि तप यों बाहिज धरते, मन वच काय निखार परखते ।२।
प्रायश्चित कर बल सुख भरते, आगम रुचि तप विनय अरघते ।
वैय्याव्रत कर दुख पर हरते, स्वाध्यायन गुण द्रव्य परखते ।३।
चिनमय रम पर ममत निवरते, व्युत्सर्ग तप स्वातम रचते ।
ध्यान आर्त रौद्र सु भव-पीरा, धरम शुक्ल सद ध्यान गहीरा ।४।
षट तप अभ्यंतर शुचि करते, जग भव तारक सेतु सु गढ़ते ।
द्वादश धर तप करम खिपावें, बाहिर भीतर शुचिता पावें ।५।

दोहा अरणि दझाये बिन रतन, कनक शुद्ध ना होय ।
जीव-विराग विशुद्धिता, प्रगट तप धर सोय ।६।

ज्ञानानन्दी नंद-मुनी

चौपाई—मगन निजातम रस मुनिराया, साधत बल स्वातम मन काया ।
आगम मन्थत तत्व निकालें, निधि सम गहें रतन गल मालें ।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आगम ज्ञान, बढ़त बल जागे, अमृत-पान करत दुक्ख भागे।
आगे जाके जग सुख फीके, नश्वर पराधीन भ्रम जी के।
आतम सुख बल जग रुचि नाशे, जीव दारिद्री इस वश भासे
चाह जहां पै दारिद होई, चाह गये बड़ धनपति सोई।
आत्म बड़प्पन मन को भायो, दीन भिखारी बनत लजायो।
नव बल सिंह वृत्ति क्षण मांही, सफल सुखद कर उद्यम पाहीं।
बिना दुक्ख फल नव सुख भोगी, इष्ट वियोग न अनिष्ट संयोगी
भारत रौद्र ध्यान नहिं धारें, चौकड़िया झख तिनकी मारें।

दोहा— आर्त्त रौद्र कु ध्यान बिन, धरम ध्यान अनुराग।
शुकल ध्यान सोपान पग, साधु रतन बड़ भाग।

ध्यान-विश्लेष

चौपाई—आरत ध्यान सदा दुखदाई, शोक विधायक कुगति सहाई।
इष्ट वियोग अनिष्ट सु योगी, आकुल निदान चौ-दुख योगी।
मृष सु हिंसानंद अघ भरना, पापी भाव रौद्र लख झरना।
चौर्य परिग्रह भाव आनंदी, दुख भव कारण शिव सुख द्वन्दी।
जीवन इन वश स्वातम भाने, मारग हित को दुखकर माने।
इन वश जिय भवदधि डूबे, नीति धरम नहिं सतपथ सूझे।
गति तिरयंच नरक ले जावें, किये हरष अघ फल विलखावें।
इनको तजते सो सुख पाते, धरम ध्यान गह सुगति सु पाते।
ध्यान धरम भव दो सुखदाता, धारत जीव लहे सुख साता।
आज्ञा अपाय विपाक विचार, संसथान वर विचय शुभ धार।
जिन आज्ञा माने हितकारी, निर विवाद सुख शिव भंडारी।
कर उपाय फल करम विचारे, लोक रूप लख आत्म संवारे।

दोहा— ऊरध मध्य पताल, चौदह राजू लोक सब।
जीव करम फंस जाल, धरम रतन पायो न जब।
धरम ध्यान से सुक्ख ले, सुरग मोक्ष पथ पाव।
धरम शिरोमणि रतन धर, उभय लोक सुखदाव।

शुक्ल ध्यान

चौपाई—प्रथग्वर्त्तक अपन पो भासे, एकत्व वितर्क स्वयं प्रकाशे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूक्ष्म क्रिया प्रति पत्ति वरके, व्युपरत क्रिया निवृति धरके ।१।
ध्यान मुहुर्त यदि ऐक रमावे, केवल ज्ञान मोक्ष सुख पावे ।
बल वीरज आबाधित आवें, अविचल अविनाशी सुख लावे ।२।
ध्यान न पूरण जब तक पायो, उद्यम तब तक हित चित चायो ।
धान साथ तुष आपहिं आवे, सु ऋद्धि तप बल से उपजावे ।३।
करम कालिमा निज वल खोवे, सुख विल से अविनश्वर होवे ।
केवल दरशन, ज्ञान समावे, शुकल ध्यान को भेद जु पावे ।४।
ऐसो शुकल ध्यान हितकारी, ध्यान धरम तज हों शिवचारी ।
शुल्क ध्यान जों लों नहिं आयो, धरम ध्यान तौलो मुनि भायो ।५।

दोहा— दिव्य ऋद्धि जानादि धर, मुनिवर नंद महान ।
सुविज्ञ रतन नर जन्म फल, शौर्य्य अमलान ।६।

सद-भव-प्रकाश—

चौपाई—निधि आवें ज्यों-ज्यों गुण रीती, उर अति शुद्ध सरलता नीती ।
सदा दया निरबल पै होई, बड़ो हरष सद धरमी जोई ।१।
द्वेष-राग ना अगनि जलावे, आत्म रमण सुख मंगल लावे ।
शुचि मन तन शुभ भाव बढ़ावे, बढ़े-भाव फल बढ़कर आवे ।२।
बढ़त भाव शुभ लाभ कमावे, दुक्ख—हानि सब दूर भगावे ।
बढ़ सुभाव आतम रम जावे, परमातम पद तक ले आवे ।३।
बिना भाव नहिं, कारज होई, चाह भाव सब यातें सोई ।
प्रेम प्रीत कर जग ब्यौहारा, सहित भाव फल गुण सुखकारा ।४।
बिना भाव फल निष्फल हो ही, सुगुण रूपता भाव सनेही ।
धरे भेष जो भावन जाने, बिना भाव नहिं भेष सुहाने ।५।

दोहा— सुबल सदा फलदाय, प्रगट भाव शकती नई ।
ठौर रतन सुख दाय, बढ़ भाव शुभ भावना ।६।

भावना महत्व—

चौपाई—चिन्त भावना सद् गुण जागे, दोष गये दुख निज सुख पागे ।
उत्तम ठान भावना होवे, उभय लोक हित सुख सब देवे ।१।
उन्नत भाव सु उन्नति लावे, आत्म-महा बल तेज बढ़ावे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निम्न भाव गति नीची जावे, अशुचि अयश अघ सिंधु डुबावे ।२।
करे भावना व्यय न होवे, अविचारी शठ, अघ दुख बोवे ।
उच्च भावना दुक्ख मिटावे, सहानुभूति कर, पर दुख जावे ।३।
उत्तम भावन प्राणि बचावे, नर सुरदि गति उत्तम पावे ।
महत भावना बुध जन धारें, मोक्ष तीर्थंकर कर्म निवारे ।४।
मुक्ति तीर्थेश्वर बहु जाहीं, सोलह कारण भावन भाहीं ।
ऐसी रतन भावना धारो, आधि व्याधि दुख दारिद टारो ।५।

दोहा— सोलह कारण भावना, दया भाव चित धार ।
सफल रतन मुनि साधना, पद तीर्थंकर सार ।६।

नंद मुनि चिंतना

चौपाई—नन्द विचारत मुनि चित ऐसे, मिथ्या मोह मिटे जो कैसे ।
जीव-दुखी आरत क्यों होवे, मोह उदय निज,-सरधा खोवे ।१।
करत परस्पर दुख कर कामा, निज अरि स्वयम् कहां विश्रामा ।
सकल जीव सुख पावें कैसे, मित्र अभिन्नता पंथी जैसे ।२।
जग के सारे मम हितु प्राणी, लगत दूर अति निज नादानी ।
गुण गाहक बन सद् गुण धारें, करुणा सुधा विषमता क्षारें ।३।
मन में जब सत् सरधा आवे, वारधि भवना डूबन पावे ।
मिथ्या दौड़ भरे जग माँही, दुख मृग तृष्णा वश अधिकाहीं ।४।
दास बने तो दास रहावें, नमत रुलत भव पार न पावें ।
कब स्वबल मैं ऐसो पाऊं, जग भव के दुख सरब छुड़ाऊं ।५।

दोहा— सुखी करण सबके बढ़ीं, मन सु भावना आहीं ।
ज्ञान-तरंग उमगत चढ़ी, सद मग रतन दिखाहीं ।

सम्यक दर्शन

चौपाई—सम्यक दरश अष्ट गुण भाया, शन्क कांक्षणा बिन सुखदाया ।
घृणा न गुरु लख तत्व सुहाया, दोष ढके पर गुण मन भाया ।
वृष पथ डिगते ताहि दृढाया, वत्सल भाव उर धर्म दिपाया ।
अष्ट सुगुण सब सम्यक पाये, पलटे दोष तजे-सुख छाये ।
धरम-मार्ग मद गहत नशाये, बढ़े अहं गुण मार्दव जाये ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुल जाति बल धन प्रभुताये, ज्ञान रूप तप मद उपजावे ।३।
इनको अहम तजे सुख मानो, मुकती मारग सरस पिछानो ।
कुगुरु कुदेव कुधर्म कु शरणा, नुति थुति तिन सेवक करणा ।४।
षट अनायतन वीरज नाशें, बचें जु इनसे निज परकाशें ।
मूढ़ भाव निज सुख विनशाये, देवागम गुरु परख न आये ।५।
अज्ञ मूढ़ मति जगत भ्रमाये, दोष पच्चीसा जो लिपटाये ।
दोष बिना निज सरधा आये, निज बल सम्यक रतन दिपाये ।६।

दोहा— अष्ट अंग सम्यक्त धर, दोष अष्ट मद टार ।
षट अनायतन मूढ़ त्रय, धारें रतन विचार ।७।

षोडष कारण भावना

चौपाई—शुचिता सम्यक दरशन लावें, जग भव पाये यातें ढावे ।
शुचि सद मारग कब दरशाऊं, कब मैं स्वातम वल प्रगटाऊं ।१।
सातों याते भय मिट जावें, आकुलता भय-तजते जावे ।
दरशन ज्ञान चरित आधारा, विनयी धारे धरम उजारा ।२।
सुगुण शील सत आतम-रामा, सहस अठारह दोष न धामा ।
ज्ञानाभ्यास सु तत्व उजासे, मोह महातम विभ्रम नाशे ।३।
गुण संवेग सु थिरता लावे, अघमल जग भव व्याधि मिटावे ।
चौ विधि दान देय हरषावे, धरम दया उर सुख यश लावे ।४।
द्वादश विधि तप करम जलावे, साधु समाधि सु गुण उपजावे ।
गुरु वैयाव्रत हृदय दृढावे, अरहन्त भक्ति कु विषय मिटावे ।५।
आचार्य जजूं सु विमल चरित्रा, पूजूं पाठक सौश्रुति पवित्रा ।
प्रवचन भक्ति करूं बन ज्ञानी, परमानन्दी राह प्रमानी ।६।
षट आवश्यक उर हरषावे, निधि रतनात्रय निजहिं रमावे ।
धरम प्रभाव सर्व सुख लावे, वात्सल्य सकल प्राणि जु छाये ।७।

दोहा— चिंतत षोडष भावना, धरम प्रीति उमगाय ।
पद तीर्थंकर साधना, बंध रतन फल दाय ।८।

चौपाई—प्रकृती शुभ तीर्थंकर नामा, बंधा भावना फल अभिरामा ।
धरम जगत सुख पूजा सोई, शिव सुख पावें करम बिगोई ।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोक तीन सुख प्राणी पावें, शिव पथ लख वृष मारग भावें।
पंच कल्याणक जिससे हो हैं, जग तीर्थंकर दुख भव खो हैं।२।
बल जिसके इन्द्रासन हिलता, सुख मय मुक्ति मार्ग जी खुलता।
जासों पूज पना जग होई, करम अनादि मलिनता खोई।३।
पुण्य कल्याणक भव्य कमावें, पुण्य प्रभाव लखें सुख पावें।
समवशरण भवि जीव सु आवें, सुन दिव्य ध्वनि शान्ती पावें।४।
गुण छयालिस धारक अर्हंता, दोष अठारह विन भगवन्ता।
जगत श्रेष्ठ तीर्थंकर होई, सुख अनुपम जग शिव विलसेई।५।

दोहा— महिमा तीर्थंकर महा, स्वपर सुहित करतार।
रतन चतुष्टय गुण सहित, पावें भवदधि पार।६।

समाधि मरण नंद मुनि—

चौपाई—निरति चार चारित्र मुनि साधें, आराधन चारों आराधें।
द्वादश तप तपते मुनि धीरा, धरम धरें दश विधि गंभीरा।१।
मन वच काय त्रियोग सधावें, धरम यतिश्वर रुचिवर ध्यावें।
सत पथ भव्यन को दिखलावें, क्षीर-नीर विधि, तत्व लखावें।
पंचाचार धरत गुरू सोई, प्रापति बोध सु आतम जोई।
नंद महा मुनि नन्द विधाता, उनसा वे ही यति जग त्राता।
धरम बंध ना पूरब हो तो, शिव सुख पद अविनाशी हो तो।
धरम राग भी जग में राखे, गये राग सुख शिव आ झांखे।
अन्त समाधि मरण मुनि करके, प्रायोपगमन मरण सु धरके।

दोहा— अच्युतेंद्र क्षण में हुओ, अति तप के परभाव।
सुष्ठ राग फर फ़ंद लख, पायो रतन भण्डार।

—ॐ—

मंगलाचरण

दोहा— धरम शरण भव दुख हरण, सुख दायक सुख मूल।
आधि व्याधि व्याधा हरण, नमत रतन शिव कूल।

चौपाई—सुभग दीप्त अति काय सुहाये, शुभ परमाणू वैक्रियक छाये।
पूरण यौवन इक क्षण पायो, पट आभूषण मणिमाल सजायो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुखद सुहावन कोमल शैय्या, क्षेत्र सुहावन सुखद समैया ।
पुष्पोत्तर मन हरण विमाना, वास्तू-कला सज्जित विज्ञाना ।३।
पथ बीथी सब वस्तु सुहावें, नृत्य गान वादित्रा लुभावें ।
अति सुन्दर नर नारी सोहें, दृष्टि सु पथ जो सब मन मोहें ।४।
आश्चर्य सहित चित्त हर्षायो, कौन ठान यह मैं क्यों आयो ।
शिष्ठ सुष्ठ प्रीतंकर पूरें, देव अंगना क्यों मो घूरें ।५।
सभा सिंहासन सैना किसकी, अतुलित वैभव संपति सुख की ।
सुखद सलौने जन हरषायें, आया कैसे, कौन जनायें ।६।

दोहा— चितवत इन्द्र सु मनहिं मन, कौतूहल उपवेश ।
बिबुध सचिव अवसर परख, नमत रतन सविशेष ।७।

वैभव बोधन

चौपाई—देव दयालु दयाकर सुनिये, खोय सकल भ्रम श्रम सु हरिये ।
धन्य दिवस क्षण थानक भू आ, धन्य भाग हम सबका हूआ ।१।
सारी सम्पति शुचि आगारा, सुरग शिखर वर अच्युत प्यारा ।
मन बांछित सुख साधन सारे, जग दुरलभ सुलभित रतनारे ।२।
कल्प वृक्ष अरू चिन्ता मणियां, सुलभ स्वयं मंगल शुभ लड़ियां ।
स्वयं ऋद्धि श्रम बिन अति सारी, सतृष्ण नेह सु सब नर नारी ।६।
सुखदा ऋतु अति परम सुहावे, दीप रतन गणि दीपत भावे ।
प्रहर अष्ट सब सुखकर भाते, दुक्ख दीनता नाम न पाते ।४।
पुण्य धरा सुख शीतल धारा, पाप पंक तम नाहिं पसारा ।
जिन अरचा चरचा श्रुत गोष्ठी, गीत संगीत, नृत्य जु श्रेष्ठी ।५।

दोहा— देव विमान असंख अरु यथा योग शुभ रीति ।
बहु रूप रतन मणि अती, शोभे युगलन प्रीति ।६।

अच्युतेन्द्र-वैभव—

चौपाई—सामानिक दश सहस सुहाये, अतुल ऋद्धि वर, आदर पाये ।
त्रायत्रिंश तेंतिस कहलावें, अनुरागी सुत सम मन भावें ।१।
सहस सु चालीस रक्षक देवा, विनयी महा करे नित सेवा ।
शत ढाई सुर मध्य सभा के, पांच शतक सुर बाह सभा के ।२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लोक पाल दिश चारों चारा, सुरी बत्तीस बतीसन प्यारा।
इक इक दिशि के रक्ष प्रमाणो, आज्ञाकारी, पद विभु मानो।३।
अष्ट महादेवी तुम सेवा, इक लख सहस चौबिस सु भेवा।
शकती रूप धरन शुभ धारें, मोहक शद्भुत काय संवारे।४।
बल्लभि का सुरि त्रेसठ सोहें, ऐश्वर रूप विभव मन मोहें।
शत ढाई इनको परिवारा, देवी सुगुण रम्य आगारा।५।

दोहा— दोय सहस इकहत्तरा, सुरि विदुषी गुण खानि।
पुण्यवान आज्ञा रतन, शीश धरें सुन आनि।६।

चौपाई—सप्त प्रकारी बल धर सेना, गज सेंधव रथ बलद पदेना।
गन्धर्व नृत्य की जु मिल ऐना, इक इक अधिपति सब इन बेना।१।
सहस बीस गज सेन, सुहाये, दुगुण दुगुण इक तें सब गाये।
सभा अप्सरा तीन प्रकारी, वाद गीत नृत आभा धारी।२।
प्रथम सभा पच्चीस जु खासा, दूजी जानो सरब पचासा।
नव शिख शत अन्तिम अभिलाषा, मोद भरें मन तन उल्लासा।३।
पुण्य नियोग रम्य सुख सुविधा, ग्रहण कीजिये तज मन दुविधा।
अधिपति हो विभु काज समारो, सविधि होय सब हेतु तुमारो।४।
स्वामी विभु तुम सेवक सारे, धरो मोद तज भ्रम को प्यारे।
मल वर्जित दीपत छबि काया, सकल सुयोग पुण्य विभु थाया।
टिमक वि वर्जित सुभग सलोना, काय हस्त त्रिय राजिब नयना।
अवधि दीप्त भू षट तक जानो, गमना गमन वैक्रिय मानो।५।

दोहा— बाबीस सहस शक जाहिं जब, अमिय पान आहार।
पक्ष बीतें बाबिस रतन, श्वांस सुगंधित सार।६।

अवधि प्रकाश—

चौपाई—वचन सुनत मुद अवधि प्रकाशा, सकल वृत्त पूरब निज भासा।
धरम सुफल अति मोद प्रमानो, फलो प्रत्यक्ष सु परगट भानो।१।
निष्कषाय तप घोर किया था, ध्यान अध्यन पूर्ण हिया था।
चित भावना उत्तम भाया, विषय कषाय काम विघटाया।२।
दशधा धरम धरे थिरताई, परिषह विजय करीं दृढ़ताई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बर विवेक मुनि धरम समारा, फलो सुकृत सुख अपरम् पारा ।३।
धरम समान न संगी कोई, पार उतारे भवदधि सोई ।
उन्नत जीवन पाप निवारे, सिद्धि ऋद्धि बहु संपति धावे ।४।
दे बांछितता आवे शरणा, शक्र विभव सुख वैभव वरणा ।
सुरग मुकति निधि भव-भय हरणा, शुचिता साधक नित आचरणा ।५।

दोहा— धरम सु सेवत भव्य नित, क्षण ना करे विश्राम ।
जतन रतन धर भक्ति उर, सुखी चिदातम राम ।६।

धर्म अभिरुचि अच्युतेन्द्र

चौपाई अच्युतेन्द्र चिंते मन गोई, धरम साधना वर गुण कोई ।
बल विवेक कौशल धन धरना, धरम भाव मणि मुकुट सु वरणा ।१।
संयम साधक क्षेत्र न ये ही, धरम भाव शुभ शक्ति पये ही ।
करूं जिनेश्वर भक्ति पूजा, प्रथम काज यह अवरन दूजा ।२।
शुचिता कर लीनो परिवारा, चैत्य अकीतम बिम्ब निहारा ।
अति सु तृप्त मन पूजा कीनी, थुति नुति कीनी अति गुण भीनी ।३।
चरचा धरम करत सुख पायो, विमल दरश सम्यक मन भायो ।
तत्व पदारथ नव सब सूझे, नाम थापना भाव द्रव्य जे ।४।
नय प्रमाण गुण-परजय भाने, अनेकान्त स्याद्वाद सुहाने ।
निर्देश पाती साधन अधिकरणी, थिती विधान लखे अनुकरणा ।५।

दोहा— सत संख्या स्पर्श क्षेत्र, काल सु अन्तर भान ।
अलप बहु रत्न भाव से, निश्चय तत्व प्रमान ।६।

चौपाई—करत तत्व चरचा मन राते, पुण्य सुखद फल भोगत ताते ।
अधितम भोगे भोग अमाने, पुण्य प्रभाव सुरुचि उर आने ।१।
अंतर उमगत चेतन राया, संयम बाहृत क्षेत्र न काया ।
बाइस सागर यों सुख बीते, मिले भोग भोगे मन चीते ।२।
आगम देव गुरू का शरणा, मोद समाज सकल उर भरना ।
मन में जीव जगत हित भावे, उमगत उमग, उमगते आवे ।३।
प्रशम भाव भर सुख अवलोई, शक्ति समान करत हित सोई ।
पुण्य अनुबन्धी पुण्य बढ़ावे, जगत श्रेष्ठ सुख सहज जहिं पावे ।४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गान बाद्य संगीत सुलयता, मंगलकारी सुर अनुसरता।
नित नव यौपन सौह्यद मीता, सकल सुमंगल मोद पुनीता।५।
उपमा सुख की बने न कोई, कौन सुक्ख जो ना विलसेई।
सारे भोगत धरम चितारे, कैसे भव जग भार उतारे।६।

दोहा— सुख मय बीतो काल, लख काहू पै ना परो।
दीप्ति मंद ना माल, धरम रतन नित आदरो।७।
सुर संबोधे नेह धर, संयम सुखद महान।
अवश रतन आयो निकट, अवधि ज्ञान प्रमान।८।
जहाँ सफल श्रम रतन सब, मोद धरें गुणवान।
परमाणु वैक्रिय खिरे, मानुष भव सुख खान।९।

सम्यकत्वी देव

कवित्त—देव बने अति भोग सने नहिं, छोड़ सके उर मोद समाने।
पुण्य संयोग बढो जग योग, धरें बल विक्रम गौरव माने।
लिप्त दिखे पर लिप्त रहे नहिं, सम्यक जोति सदा उर भाने।
देव धरम गुरु प्रीति धरे मन, योग धरन चित में अकुलाने।
उच्च विचार सदा उर आवत, कांति सुभग तन कीं शुचिताई।
आयु बड़ी बिन व्याधि जड़ी शुभ, नित नव यौवन दुति तरुणाई।
शुभ ऋदि सु सिद्धिद्वार खड़ीं, सोच करन नहिं दाव कदाई।
पक्ष अयन ऋतु भेद नहिं कछु, सौख रतन तट तिनको शाई।
कर जोड़ खड़ीं सुर बाल महाँ, मन भावन गावत चक्षु चलाई।
जोर करे नहिं भूख तृषा कच्छु, श्रम करते नहिं आलस आई।
सुनंद सुगंध समीरण क्षेत्र, नहिं जग में या सम उपमाई।
बहु सुख साधन रतन अमाने, सँयम तप की दुरलभताई।

सवैया

सुख-सच्चा सुख—सुक्ख अधिक अधिकेरतन, परिजन पुरजन लोग।
बल कांति गौरव सुमन, मिले अनुपम भोग।
मिले अनूपम भोग, शोक नहि कबहूं आवे।
परकृत बाधा रहित, आप सब साज सजावे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पावे अधिकारी आयु, चैन सन्तोष न आवे।
पुण्य विकलता सहित, सुख ? पुण्य-पाप गमावे।

संयम

कुण्डली—संयम तप धारें सुजन, करें महत्व करम दुख हान।
पुण्य पाप धन जगत जन, देंय नहिं निरवाण।
देंय नहिं निरवाण, जगत में रख भटकावें।
सच्ची सूधी राह, जीव नहिं यातें पावें।
आधि व्याधि दुख सहें, विकल हो जग भरमावें।
जग से छूटें रतन, वही जो संयम ध्यावें।

मंगलाचरण

दोहा कर्म कालिमा करि कुशुल, शुद्धातम अम्लान।
नमूं सिद्ध परमातमा, कारण जग कल्याण।

कुण्डलपुर

चौपाई—धरम चिंतना फल शुभ जागो, धारे भाव शांत तन त्यागो।
पुण्य योग फल पुण्यन माचे, पदम सदा सरवर नहिं राचे।२।
मानुष देह लही शिव करणी, शिव-सुख वर्धक भवदधि तरणी।
सत मानव गौरव निज पावें, जीव देश कुल पथ हरषायें।३।
जम्बू दीप भरत शुभ कारी, क्षेत्र सुखद सुंदर मन हारी।
सोहत मध्य सु देश विदेहा, कुंडलपुर उर ज्यों जिय देहा।४।
पूरित धन धान्यादिक भूमी, इन्द्रपुरी लाज सुरगन झूमी।
धूली जाकी शुचितम पाई, सुर सुरेंद्र जन शीश चढ़ाई।५।
सत्य अहिंसा नाद सुनावें, स्व स्वतंत्रता जीवन गावे।
जग हित काज करे जो कोई, माने जग जी ताको सोई।६।

दोहा— शुभ परमाणू जगत के, लीनी शरणा आय।
महावीर पद परस के, शुचितम रतन कहाय।७।

चौपाई—धनपति शुचिमन नयरि बनाई, कनक रतन मणि जड़ित सुहाई।
मधवा देखन ताको आवें, पुण्यवान सब सुख विलसावें।१।
लोक तीन पति आश्रय पावें, महिमा ताकी कैसे गावें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुरन्दर पुण्य वन्त विज्ञानी, अति गुणज्ञ गुण प्रीति दरशानी ।२।
शुभ योजन बारह लंबाई, शोभे योजन नव चौड़ाई ।
प्रकृतिक दृश्य लखे मन मोहे, अटवी वन उपवन मन मोहे ।३।
कुंज निकुंज सु उत्तम झरना, सरिता सर आमिय गुण गहना ।
पौन वहत अति मंद सुगंधा, स्वेंद ताप श्रम हर आनंदा ।
आवत जावत ऋतु शुभ आवें, करत चक्रमण हिय हुलसावें ।
सब दिशि अरुणाचल रवि सो है, अरुण लोक त्रय को नहिं मोहै ।

दोहा— अम्बर भू मनहर अमित, प्रकृति महा सुखदाय ।
नर नारी जी मोहने, सुगुण रतन समुदाय ।६।
अरुण प्रकाशक सकल जग, श्रम भ्रम रतन जु खोय ।
मग सूझें निरभीक पथ, बढत महातम लोय ।

चौपाई—सुरही गौ सम गाय सुहावें, सरस सनेह सहज सुख लावें ।
दूध दही घृत सिरजन हारी, नव जीवन यौवन दातारी ।।
सुभग कांति वपु गुण चिकनाई, दीप्त प्रसाधक सु गुरुताई ।
बल प्रताप सौभाग बड़ाई, उत्तम आयू बहु गुणताई ।
नाना व्यंजन कर गुण राशी, मन मोदें तन शक्ति विकासी ।
धन धान्यादिक साधन द्वारी, महा सनेही सुरही प्यारी ।
नर नारी सब दिपत प्रसन्ना, सुर नहिं इन सम दूजा आन्या ।
वस्त्रा भरण सहित छवि कैसे ? नभ मण्डल उड़गन शशि जैसे ।
दुति काया तैसे आभरणा, मणि कांचन पावत मुद शरणा ।
काज करें सब मोदन हारे, बल वय गुण निज सुबुधि सुधारे ।
दीखें काज करत सब कोई, गुण बल श्रम परतक्ष फल देई ।
पशु पक्षी बहु भांती सुहाने, वरधक मोद प्रकृति मन भाने ।

दोहा— दीन दुखी लखन परें, याचक तन क्षीण ।
साधत योग परस्परे, बुध जन रतन प्रवीण ।७।

चौपाई—कनक रतन मणि खनिज पसारा, अम्बर अन्न परचूना सारा ।
धातु भाण्ड बहु विधि सुनाना, उत्तम विक्रय क्रय सु ठाना ।
महत रीति गह बड़े कहावें, मन कृत वाणी उच्च सुहावें ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यथा योग गुण आदर देवें, बड़े विनय लघु नेह सुमोवें ।२।
उत्तम नीति-धरम उर धारें, सदा भीति अघ-पाप निवारें ।
जिन गुण सुमरत शैया त्यागें, काम क्रोध आलस भय बाधें ।३।
नित्य क्रिया शुचिता हित करते, शुचि हो मन तन इष्ट सु भजते ।
नर नारी जिन पूज रचावें, गावें मिलकर मोद बढ़ावें ।४।
आगम चरचा विनय अधारी, गुरुवर भक्ति विषे चित भारी ।
मुनि को देकर करें अहारा, अन्न पान शुचि रुचिकर सारा ।५।

दोहा— अन्न-पान उत्तम रतन, उत्तम काय विचार ।
मन तैसो वरते विमल, सज्जनता आधार ।६।

चौपाई—चल शुभ नीति वनिज व्यापारा, शुद्ध सत्य शुचि रीति मझारा ।
लेन देन कम अधिक न चाहें, उत्तम वस्तु देत उमगाहें ।१।
सुरुचि काम सबके अनुसारा, उचित मान श्रम का हितकारा ।
स्वामी सेवक उर गुण प्रीती, न्याय निपुण मय वरते नीती ।२।
नृप-परजा में शुचि व्यौहारा, जनक-पूत वत नेह अपारा ।
गृह गृह गृहणी धरमा चारी, श्रेष्ठ सु व्यंजक गीत गुहारी ।३।
प्रेम नेह वर घुल मिल रहते, उच्चा दरश धरत सुख गेते ।
अमर सदन जिमि हर्म्य सुहावें, ललक सुरेंद्र भरें जन्मावें ।४।
आत्म हृदय वपु सुख सब भोगी, वैभव मंडित गुण सन्तोषी ।
मुदित होंय लख मंगलकारी, देश देश के आनर नारी ।५।

दोहा— ईति भीति व्यापे न कछु, षट ऋतु जन सुखदाय ।
जनम रतन फल भोग सुख, निरखै सबे सुहाय ।६।

चौपाई—पशु जु पक्षी मिल सब हरषाते, विविध भांति के मुदित सुहाते ।
सरव दिशा सन्देश सुनावें, निज समूह हिल उर ललकायें ।१।
साँझ गीत गा निशा बितायें, ब्रह्म मुहुर्त सु तान सुनाये ।
नव शक्ति नव चैतन्य पावें, सज कर नव वल कारज धावें ।२।
आवें साँध काल श्रमहारी, दिन कारज पूरें नर नारी ।
व्यापारी व्यापार जु मोड़ें, मोद भरे तोषित हित जोड़े ।३।
कृषक लौट खेतन से आवें, बाल वृंद शाला से धावें ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर शुचिता मिल, अनथऊ करते, परिजन स्वजन मिल सुख भरते ।४।
घर सामायिक बिभु गुण गाते, गुणत तत्व उर सरधा लाते ।
वन तें विचरत गौ गृह आवें, धूल धरा उठ नभ मुसकावें ।५।
घर घर जलें दीप जलें तमहारी, दुति सुहावन स्वपर उजारी ।
गंध उड़त घृन अति मन भीनी, शुद्ध समीर निवोग नवीनी ।६।
पुष्प परस बह पौन सुखारी, पुलकें किलकें कुमर कुमारी ।
गृह स्वामिन गृह काज निवारें, जिन भक्ति स्वाध्याय विचारें ।

दोहा— ज्योत्सना शुचि शशि उदय, निरखे आनंद होय ।
रतन ताप मन के हरे, नभ उड़गन अवलोय ।८।

चौपाई—सस्वर पाठ बाल हितकारी, बुद्धि विकासक, मंगलकारी ।
उभय साँध्य अति सुख सर सावें, नव बल जीवन गुण भर पावें ।१।
निशा शयन सब निश्चित करते, बल दृढ़ शासन भय परिहरते ।
बाधक नाहिं किसी का कोई, क्षुभित धरें मानस नहिं कोई ।२।
बिना याचना चाह पुरावें, बड़े सुजन पर दुक्ख मिटावें ।
दीन दुखी सुध नित सब लेवें, दान गुपत दे दुख हर देवें ।३।
दीन पना नहिं गौरय छाये, बड़ी नीतियो, सब मन भाये ।
परहित में धन जो आ जावे, सफल महातम योग सु भावे ।४।
धन संपति श्रम वनिज अगारा, धान्य आदि बल भूमि सहारा ।
बिन माँगे मिल सब कुछ जावे, कानों कान न कोय लखावे ।५।
चाहत मन ना माँगन धावे, सकुच धार गुप दातु भिजावे ।
दाता याचक गौरव शाली, निज गुख वैभव मन खुशयाली ।६।

दोहा— धन बल गौरव हृदय में, शोभें उच्च विचार ।
देवन दुर्लभ सुजन मन, महारतन व्यवहार ।७।

सिद्धार्थ नृप श्रेष्ठत्व

चौपाई—सर्व श्रेष्ठ गुण धरत समाजा, सिद्धारथ सर्वोपरि महाराजा ।
अनुपम वैभव-ता-धन धारें, धीरज वीरज गुण अघ हारे ।१।
करें प्रजा के सुख कर काजा, देत बड़प्पन सुगुण समाजा ।
बल पौरुष सेना अधिकारे, विभ्रत भू काँपत अरि द्वारे ।२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ईति भीति नहिं बाधा कोई, सुलभ सकल संपति दृग जोई।
धरम धरत लख गुण धर ज्ञानी, आधि व्याधि की नाहिं निशानी।३।
सुजन सदा तिनके गुण गावें, पंच पाप लख दूर रहावें।
श्रावक षट गुण नित नृप भेवा, करत उछावो हरषें देवा।४।
उत्तमता लख शीश झुकावे, शरणा पाकर मोद मनावे।
बड़े नृपन सों शुचि मन प्रीती, आदर पावें सब श्री नीती।५।
निज निज के सब काज संवारे, दुविधा मन ना कोई धारें।
नृप चाले जैसी जन नीती, फलित होय सुख जन जन प्रीती।६।

दोहा— सुभग सिद्धारथ काय, सुगुण महागुण विस्तरे।
शरणा नव निधि पाय, सुजन रतन मोदित करे।७।

महारानी त्रिशला देवी

प्रिय कारणि त्रिशला महरानी, शील शिरोमणि मैना वाणी।
महा सुभग दुति रति उन्मानी, सहज सुगुण शोभे गुण खानी।१।
निशपति नयन चन्द्रिका भावे, सहस त्रांशु ज्यों रोहणि भावे।
हरि कमला शिव उमा लुभावे, प्रिय कारणि त्रिशला नृप गावे।२।
धरम धुरन्धर पति अनुगामी, मन तन स्वस्थ सकुलशिर नामी।
पति रुचि उर सब जानन हारी, मोदन तोदन रस अवतारी।३।
सरस सलज नम देत अहारा, सुगुण स्वाद बाढ़त कर धारा।
पावें भोजन सो बड़ भागी, महा तृप्ति पावें, गुण रागी।४।
अती-प्रीति उर स्वामि जिमावे, पुलक रोम तन मन सुख पावे।
मृदु वच सरस कहत हरषावे, मन तनका श्रम बयन भुलावे।५।
विधी परायण नीतज्ञ भारी, सुरुचि समय शुभ सुख गुणकारी।
नारिन के षट गुण सुखकारी, सुरभित तापा आश्रय भारी।६।

दोहा— पूरब पुण्य बसाय, जुड़ों युगल सुख कारणो।
अति सुख नरपति पाय, धरम रतन हित मांडणो।७।

माता त्रिशला

उड़गन मध नभ शशि निश सोहै, प्रिय कारणि त्रिशला तिय सो है।
नारिन में नारीत्व जगातीं, सदाचरण जग आनद दातीं।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रीति अती नारिन प्रति गाढ़ी, विकसे गुण सौरभता बाढ़ी।
आनंद गृह गृह में सरसावें, सद गृहणी पथ मात जगावें।२।
सुंदर मन-कर कर जय कारा, धन बलतें अधि को गुण दारा।
परजा बहु-गुण युगल सराहें, शुभा शीष नित दम्पति पाहें।३।
गृह जाके शुभ नारी होवे, सकल सिद्धियां ता गृह सोवें।
जो तिय होवे अति गुण वंती, गृह होता निधियां अनगिनती।४।
कौन सुक्ख नर वह नहिं पावें, धरम अरथ सुख काम सजावे।
मोक्ष मार्ग हित साधन हारी, जा गृह हो कुलवंती नारी।५।
आपद विपद हरे मन चंगा, सारे सुक्ख कठौती पंगा।
नारी त्याग रूप सुख दानी, उभय लोक हित धरम निशानी।६।

दोहा— उभय लोक कुल सुख घनो, ऋद्धि सिद्धि अवतार।
पुरुषारथ चारों भनो, सिद्ध रतन शुभ नारि।७।
माता सोहे सुगुण मणि, निज पर घट उजयास।
नृप जन जग के भाग बड़, मात रतन सुख रास।८।

सुत बांछा—

चौपाई—दम्पति सुख अति पुण्य पसारे, शेषादिक कह साहस सारे।
चल कुटुम्ब गृह प्रीत मझारी, नगर देश हित करुणा भारी।१।
सब जीवन को सुख सब होवे, राज चले जग सुख सुख संजोवे।
आशा ऐक उदित मन माँही, नहिं पायो कुल दीपक ठाहीं।२।
सूनो ता बिन उर अंधयारो, गृह वैभव सुख राज पसारो।
चिन्ता उर आयू संग बाढ़ै, मोह तिमिर जड़ अति मन गाढ़े।३।
धरम सहाय कठिन नहिं कोई, फले धरम जब प्रापति होई।
उर जानत सब चित न जावे, मन की रहमन कहत न आवे।४।
किलक शिशू गुण चित्त चुरावे, उमगं धड़क छाती रह जावे।
उत्तम शिशु कुल ऐकल तारे, सब जग कुल के काज संवारे।५।
आशा धरत मुद मनमें सोई, माता ममता मंयि गुण गेई।
धरत प्रेम अति शिशु गुण भेई, बिसरें नेह मात शिशु नेई।६।

दोहा— प्रेम मगन माता हृदय, रमत शिशु न धर नेह।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चाहत उत्तम रतन सुत, फलें भाव निज गेह ।७।
जननी जनियो सुत महा, व्याधि हरे दुख शोक ।
द्योतित कुल भू धरम गृह, यशी रतन त्रय लोक ।८।

चौपाई—मन में धरत महा अभिलाषा, बंध्यापन नाशन तिय आशा ।
पलटे मन तब करती ईच्छा, शूर शिरोमणि सुत सु अच्छा ।१।
दाता उत्तम जग में शोभे, पूत कपूत सु गरिमा छेभे ।
धरम नीति कुल रीति नशावे, मिले चैन नहिं, रंचक तावे ।२।
पूत सपूतहिं, उर मैं चाहों, नातर भली बांझ रहि आहों ।
प्रबल भाव उर आशा लायो, मन प्रभाव शुभ काय सुमायो ।३।
मन अति हरष भरो उमगायो, अति प्रफुल्ल उर मोद सवायो ।
प्रहर तीन निशि के जब बीते, सुपन दिखे सोलह अनचीते ।४।
मुख अति दीप्त कपोलन लाली, नयन मुसक दरशत हरियाली ।
बिरद वाद्य ध्वनि शैय्या त्यागी, नित्य क्रिया कर शुचि बड़ भागी ।५।

दोहा— अषाढ़ शुक्ल षष्ठी दिवस, लखे सुपन धर मोद ।
बंश गगन घहरे जलद, बाढ़ो रतन प्रमोद ।६।

—ॐ—

मंगलाचरण

दोहा— सिद्ध-सकल सिद्धी करण, मेंटें करम किलोल ।
सुख सब भेंटत रतन आ, चिंता मणी अमोल ।१।

चौपाई—नित्य नेम करके नित भांती, नृप पद दरशन मन मुसकाती ।
सजे साज सब सहकर ले से, पदम सुहात अरुण द्रह जैसे ।१।
पग धारत गज गमानि कैसे, पुलक अंकुरित भू हो जैसे ।
जन-जन जय जय करत सुभावें, नर नारी लख पुष्प चढ़ावें ।२।
प्रतिहारी अग्र विरद उचारें, चितवें नृपति मुदित अवधारें ।
नमें नृपति पद आदर भीने, सभा सकल जयकारा दीने ।३।
सुपुत्रवती होओ तुम माता, गुरुजन आशिष दें मुद गाता ।
अरध सिंहासन नृप बैठाये, मोदित हृदय नयन हरषाये ।४।
उत्सुक शांत मुदित उर प्रीती, श्रवण चहत कछु नयन सरीती ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोदित गिरा सुनी मनहारी, नाथ ! आज मो अचरज भारी।
सुख मय सेज नींद शुभ आई, ब्राह्म मुहुरत सुपन सुहाई।
देखत सुपन हिये हरषाऊं, लख सतृष्ण निरभे सुख पाऊं।
कौतूहल लख उर में बाढो, आनद उमग पुलक हिय गाढो।
मोद वढो ना सकत छिपाई, नाथ ! चरण मैं आ शिरनाई।

दोहा— वात पित्त कफ सम सभी, मन काया सब स्वस्थ।
उन्मीलित सुख सेज पै, सुनो रतन इति वृत्थ।

माता के सोलह स्वप्न

प्रथम मदोन्मत कुंजर श्वेता, बलद शुभ्र स्कन्ध नादेता।
केहरि केशर दिव बल शाली, कमला सन अभिषिक्त कमलाली।
पुष्प माल युग गंधित पेखीं, शशि दिप तारा गणन विशेषी।
उदय गिरि अरुणोदय माहीं, कनक कुंभ युग पत्र आछाहीं।
क्रीड़ित मीन युगल अवलोको, पदम प्रपूरित हृदहिं विलोको।
गरजत सिंधु क्षुभित अति सोहै, सिंह पीठ मणिमय मन मोहै।
शक्र विमान सुरम्य विशेरबो, निकसत गृह कणपति भू पेखो।
महा राशि रतनन दुतिकारी, लखी निरधूम अंगनि सु भारी।
क्रम से सोलह सुपन सुजानो, देखे रयानि अन्त अम लानो।
उर हरषो अधिको सुख पायो, मुख ऐरावत शुभ्र समायो।
ऐसे सुपत कभी ना आये, अचरज अचित जु मनमें छाये।
पुलक उमग वपु मोद बढ़ावे, थिरकन सकल रोम सहलावे।

दोहा— विरद भनक शैय्या तजी, उपजी विभु पद प्रीति।
मोद विह्वल अचरज लखू फल सुनु रतन प्रतीत।

मातृ स्वप्न फल प्रेक्षा

चौपाई—पुण्य प्रसाद नाथ उर आनो, करन दरश चित हित उमगानो।
कर निशल्य विभु भेद सुनाओ, शुभ शीघ्रम आनंद घन लाओ।
मृदु वच गुण रस नृपहिं सुहाये, धन्न। देवी शुभ अवसर आये।
सुमन साध पूरणता लाई, सफल जनम गृह कुल सुखदाई।
पूरब भव जो तप था कीना, सुफल रतन सुख अमरत भीना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जग नारी फल उत्तम आया, गौरव जग जननी तुम साया ।३।
सुत तीर्थंकर अन्तिम जाया, गारिमा पूरण तुमको पाया ।
जग-जननी पद जग-गुरूमाता, पावें त्रैजग पथ सुख साता ।४।
धन्य होय जग तुमसे बामा, आनंद दायक तुम सुख धामा ।
धन्य योग दिन जीवन पूरा, ध्यान ज्ञान सरधा सुख मूरा ।५।
धरम धरे फल उत्तम आवे, शाण चढ़े मणि अति दमकावे ।
उर विवेक वर किरिया होई, धरम विचार शुद्ध फल देई ।६।

दोहा— श्रम मन का सब मेंटकर, भरो हृदय जय घोष ।
जग तारक तेरो सुवन, सुफल रतन उदघोष ।७।

तातोत्तर स्वप्न फल—

चौपाई—प्रिये सुनो परि पूरण काजा, ज्ञान तीन शोभित गण राजा ।
गज पति तीर्थंकर अवदाता, धरम विस्तारक परम विधाता ।१।
शुभ्र वृषभ चक्रत वृष रेखा, केहरि करम विनाशक पेखा ।
श्री अभिषिक्त सु इन्द्रन पूजा, माला सौरभ जग नहिं दूजा ।२।
अमरत वयन सु चन्द जनावे, अरुण तेज तम दूर भगावे ।
पूरण घट निधि ज्ञान सु भरना, मीन केलि सुख पर दुख हरना ।३।
सुलक्षण महा सरोवर भाना, नवों लब्धि सागर उमगाना ।
अद्भुत सिंहासन के देखे, सुर पुर नयत सुरेश विलोके ।४।
नाग भवन दृश अवधि सुज्ञानी, पुंज रतन रतनात्रय खानी ।
करम विनाशक अनल बतावे, गज प्रवेश सुत महिमा गावे ।५।

दोहा— सुनत मोद आयो महा, उर नहिं माय समाय ।
सुवन रतन उत्तम अहा । नयन रहे सकुचाय ।६।

गर्भ कल्याणक—

चौपाई—सकल सभा सुन जन हरषाने, जन जयनाद किया मुद ठाने ।
सब नर नारी मिल आशीषें, धन्य मात ! जी ओ शत शीषें ।१।
पुरजन परिजन सुन हरषाये, जग जननी पद बंदन धाये ।
आनंद उर नृप अधि अधिकायो, मान सन्मान करत सुख पायो ।२।
उमड़ो नगर हरष ईक बारा, मनो आज ही सुख अवतारा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुण्यवन्त आगमन सुहाना, जल थल नभ दीखे सुख साना।
मंद सुगंध समीर सुहाई, उर की सारी तपन जुड़ाई।
द्रुम बेली अंकुर लहराये, सुगुण कोयलिया कूक सुनाये।४।
अंशुमालि पथ अपने आये, पौरुष बल नव जग अधिकाये।
सुरभि बसंत रागनी लाई, चैतनता दिग चौ विखराई।५।

सोरठा— पुण्य पुरुष अवतार, सुक्ख सकल बगरो जगत।
छायो अपरम्पार, शब्द शकति ओछी रतन।६।

चौपाई—ध्वनत पवन सौधर्म लखाये, बजे वाद्य अनहद गुण गाये।
शकेन्द्र हरष उमंग अपारा, आयो ततक्षण सज परिवारा।१।
मात तात पद नुति थुति कीनी, जय जग-जनती मात प्रवीणी।
जगत तात लख नम हरषावें, धन। तीरथ शुभ क्षेत्र सु गावें।२।
जगपति जग गुरू सुत तुम नामी, बंदन शत शत विभु गुण धामी।
करि सुरेन्द्र बहु भांति अरचा, फैली गृह गृह शुभ गुण चरचा।३
सबने हिय अति मोद बढ़ायो, मात तात अभिषेक सुहायो।
वस्त्रा भरण सुमणि पहिनाये, शुचिता सज्जित दम्पति भाये।४।
सकल सुजन कीनो जयकारा, नभ भू हरष ऐक सम तारा।
मघवा विनवत कियो पयाना, प्रभु को मोदित गरभ कल्याणा।५।

दोहा— महा अमोलक रतन यो, प्रभा देत दरशाय।
अंशु मालि नभ आवते, जलज सुथल विकसाय।६।

चौपाई—मुदित मात अति मन हरषाई, पुलक धरे तन मलहन आई।
मंगल वाद्य बजे सुखकारी, मग शोभित पुष्पन कर भारी।१।
नर नारी जय नाद सुनावें, आदर पुण्यवान बहु पावें।
फैली सकल देश शुभ चरचा, पुण्य सराहें पाते परचा।२।
नृप वर जिन पूजन रचवाई, सस्वर मंगल पाठ ध्वनाई।
नगर उछाह जगो अति भारी, अलकापुरि सम नयरि समारी।३।
सरब सुक्ख छाये जन अधिकी, खिंचे न रेखा तापे कम की।
करत सेव अति जन कर विनती, सेवत निशदिन पद अनगिनती।४।
माता सबका मोद बढ़ावे, धरे हरष माता सकुचावें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूरें सब विधि मन की बांछा, दुख क्यों सहजी मात आकांक्षा ।५।

दोहा— जग जननी सब मान हर, विनय करत भर पूर ।
मात सुलख हरषित रतन, सुख पावे गुण भूर ।६।

कुमारिका देवियां आगमन—

चौपाई—षट कुमारिका सुरि गुणवंती, बहुतक आईं विनय धरनती ।
माता जय जय तुम जग नामी, सरल सुभग उत्तम परिणामी ।१।
पाद पद्म तुम मन हरषायें, धन्य भाग हम दरशन पायें ।
त्रिलोक पति विभु की तुम माता, पुण्य आपके जग सुख साता ।२।
नित नव सुख साधन सम्पन्ना, मात होहूं हम पै प्रसन्ना ।
मात करें सब सेवा तेरी, आज्ञा दो पूरें सब चेरी ।३।
सुरियां रुचिक वासनी धाईं, कौमार भृत्य करके हरषाई ।
इन्द्राज्ञा धर शीश परमाना, जागे भाग चरण शुचि आना ।४।

दोहा— चरण शरण लेकर हमें, करो कृतार्थ जिन मात ।
देओ आज्ञा रतन सब, परम प्रफुलित गात ।५।

—ॐ—

माताज्ञा

चौपाई—कहे मात मृदु वचन सुखारी, सफल कामना होय तुम्हारी ।
कर सहयोग परस्पर सेती, सब हरषाओ सुगुण समेती ।१।
कारज निज मो आनंद देवे, करत काज जड़ता नहिं भेवे ।
कारज कितनो मलहन ठाहीं, मैं तो सकुच रही मन मांहीं ।२।
कहूं कछू तुम अन्य प्रकारी, व्यापे क्षोभ नृपति मन भारी ।
मन यातें सहयोग सु चाहे, वही करो जो तुम्हें सुहाहै ।३।
सज्जन जन की श्रेष्ठ सु प्रीती, सुख वरधक यशकर अनचीती ।
अति गुणज्ञ दीप्ति बुधि तन भारी, जैसा मन तन वाणी प्यारी ।४।
सब मिल साथ रहो नित नेरे, मोह प्रमाद न आलम घेरे ।
संग सखी हो रह सुख पाओ, सीखो जो तुम हमहिं सिखाओ ।५।
वचन सुनत देवीं मुसकानी, सकुच गईं उर कृतज्ञ अमानी ।
माता हम तो दास कहावें, पा दुलार हम बलि बलि जावें ।६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महत जनन की बहु प्रभुताई, सहस जिव्ह थकते गुण गाई।
गुण कैसे कर तुमरे गावें, ? शरण चरण पा आनन्द पावें।७।

दोहा— बड़े नरन के होत हैं, वचन बड़े व्यौहार।
लोक त्रितय पति मात तुम, नमें रतन सुख धार।८।

संत प्रकृति

चौपाई—सुनत सुयश विज्ञ उर सकुचावें, क्षुद्र सुनत मुद हंस इठलावें।
सदा देत गुण भाव दिखाई, दीन हीन मद शुचि विभुताई।१।
श्री शोभा लज्जा हीं देवीं, धृति धैर्य्य कृति कौशल देवीं।
श्रेष्ठ भाग्य बुद्धि शुभ वरणा, सब सुख साधन लक्षमी शरणा।२।
प्रिय कारणि शुभ त्रिशला देवीं, धैर्य शौर्य धृति बहु गुण सेवीं।
विमल बुद्धि कौशल गुण ज्ञानी, शील शिरोमणि शोभा खानी।३।
कनक दीप्ति गुण शुद्ध सुराशी, परत सुहागा अनल प्रकाशी।
बहु मूल्य मणि सुखद सुमानो, चढ़े शाण अति द्युति दमकानो।४।
स्वच्छ नीर स्फटिक समावे, शुची विमलता उत्तम पावे।
विकसें गुण सत सँगति पाये, गुणज्ञ मात सब मोद सु पाये।५।

दोहा— पुण्य मणी जिन गाँठ में, सुख का ओर न छोर।
सब मन इच्छित साध्य हो, मिले रतन भू फोर।६।

मोद मय षट-नव मास

चौपाई—षट नव मास मोद अति छाये, आपहिं सुखद साध्य नित आये।
रतन कोष नित राय बढ़ावें, ठूंठ कोटि मणि त्रिसँध्या पावें।१।
धन धान्यादिक संपति सोई, बढ़े फाड़ छप्पर सुख देई।
नूतन अटा भवन छबिताई, बाट हाट सब नये सुहाई।२।
कोट खातिका सर सरिताई, बाग घाट बन शोभा छाई।
शोभें अतिथालय सुख धामा, विशद भवन अरचा दुतिदामा।३।
गुणी गुणज्ञ शोभें नर नारी, बल वैभव छबि रूप सवाँरी।
निश दिन बढ़ें बढ़त अति जावें दिनकर छिप निशि अयन छुपावें।४।
निश द्विज श्री वाहन सब गायो, मानो अहं विभव लपटायो।
अचरज इत यह आंखन देखो, मथत सुधा घृत अवलोकी।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा— पूरण घट बोले नहीं, अरधं रतन छलकाय ।
अति वैभव मानी नहीं, क्षुद्र बहनि उफनाय ।६।

मातृ सुत गुण चितना

चौपाई—गुण वैभव वारिध उन्मानो, अधिक अधिक तम बाढ़त मानो ।
पुण्य पुरुष स्वागत मन भायो, धरत बड़प्पन सुर सम छायो ।१।
सुख साधक सामाग्री सारीं, सकल पदारथ हित सुखकारी ।
मनुज शिरोमणि जग हरषावे, केहरि सम जय घोष सुनावे ।२।
शूरवीर हो सुत गुण धीरा, ज्ञानी ध्यानी सुक्ख अंकूरा ।
शीतलता सब जग में छावे, दीन क्षुद्र पन आर्त मिटावे ।३।
सुर नर शक्र सबन मन भावे, वर स्वरुचि रोचकता लावे ।
मन माता सुत सुगुण विचारी, महावीर गुण धर सुखकारी ।४।
धन्य बनूं जग मैं बड़भागी, पावन सुगुण सु सुत अनुरागी ।
मन माता जो जैसो चाहे, गुण सब तैसे सुवना पाहे ।५।

सोरठा— सुत गुणज्ञ सुखदाय, ललियाइत मुख पेंखने ।
दिवस बरष सम जाय, नित उर रतन कुदेरनो ।६।

गर्भ-काल

चौपाई—मन एकान्त में करत विचारा, कब हो है मम गृह उजयारा ।
शकुन सुखद सब मंगल नीके, कुल दीपक बिन लागत फीके ।१।
जबसे श्रवन पड़ी शुभ बाता, महा हृदय उमगो गण राता ।
घड़ि आ है कब वह सुखदाई, सुत निरखों आनन मन लाई ।२।
सुवन सुगुण शुभ चिन्तत ऐसे, चातक स्वाति नीर जल जैसे ।
शुक्ल अषाढ़ मास शुभ आयो, अच्युतेन्द्र चय उरता पायो ।३।
नखत अषाढ़ लगन शुभ मांही, षठीं दिवसमोद अधिकाहीं ।
फड़के अंग उमग अधिकाहीं, फुरहरे रोम पुलक उमाहीं ।४।
पूरित आशा मन की आई, धन्य घड़ी बड़ भाग समाई ।
बीतत दिवस गिनत सुख लावे, सुखमय नींद सु चित समावे ।५।
निरखत प्रात उषा की लाली, नयन बाह्य झंकत खुशयाली ।
चिबुक कपोल अरुण मुसकाई, मन बाँछित वर ऋद्धी आई ।६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा— शैय्या छोड़ी मोद धर, मन शुचि जप नवकार।
सामाइक शुभ भाव कर, स्वातम रतन सँवार ।७।

मातृ सुखद भाव

चौपाई—मिष्ट वाद्य ध्वनि मंगलकारी, विरद बखानत सुर नर नारी।
सुरी नमत नित शीश झुकाके, अभिवादन करतीं चित लाके ।१।
माता मन की सुखकर प्यारीं, सब विधि तन मन जानन हारीं।
लख शुभ लक्षण ज्ञान प्रसादे, आनन्द भेरि दई बजाके ।२।
सकल सँग शुभ आनंद बाढ़ो, निश दिन धरम नेह उर गाढो।
करें देवियां माता सेवा, माता मोदें धरत सनेहा ।३।
निर बाधा सब कारज करतीं, परम हुलस सेवत तन मन तीं।
कोई मंगल द्रव्य सु धरतीं, कोई रतनन हार सुवरतीं ।४।
शैयासन रुचि कोई धरतीं, दिव्या भरण माला मुद गुथतीं।
चौकी चन्द्रहास कर कोई, वस्तु भोग लातीं मुद होई ।५।
कोई बुहारी गंध सिचाई, पुष्प गुच्छ को दीप सजाई।
पट श्रृंगारत सुख ले कोई, गीत बीन सस्वर भर कोई ।६।
नृत्यत कोई कथा सुनावें. उपवन कोई चक्रण धावें।
कर निज कारज सब हरषावें, मोदित माता मोद बढ़ावें ।७।

दोहा— बीते सुख मय मास नव, क्षोभ रहित दिन जाँय।
नव स्फुरन तन उमग नव, गरभ रतन सुख दाय ।८।

गर्भागत सुत दर्शन

चौपाई—सुत के गुण माता दरशावें, बुद्धि कारण सु कार्य बतावें।
गुणी सुवन गुण मोद बढ़ावे, मन सत सँगति चरचा भावे ।१।
वीर तनुज बल वीरज जागे, नीति राज मन शासन लागे।
वणिक वृत्ति व्यापार समावे, लेन देन बहु लाभ सु भावे ।२।
सेवक कर सेवा हरषाने, साधू सकल क्षेम मन आने।
ध्यान रौद्र आरत मन आवे, मानी क्रोधी दुक्ख सतावे ।३।
सत बल माता निज बल लावे, मात भाव सब सुत उर आवे।
जैसो सुत निज माता चाहे, गुण बल बुद्धि सु ज्ञान उमाहे ।४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुखित क्षुभित कोपी मन माता, ईर्ष्या निद्रा दुर्गण बहु माता ।
धरे विचार हीन शठ कारी, सुत ताको दुर्बल अविचारी ।५।
उत्तम भाव मात सुधारे, धनी यशस्वी सुबल गुण कारे ।
दानी ज्ञानी सुत स्वाभिमानी, सुगुण मात सुत परम विज्ञानी ।६।

सोरठा— सुत की गुरू महान, गुण सुख माता भरन उर ।
देय रतन निवारण, धरम अरथ सुख भोग सब ।७।
चाहे सुत जो लेय, माता मन दुरगुण सुगुण ।
अपयश यश सुतदेय, सुगुण रतन उत्तम सुखद ।८।
वीर मात गुण कोष, जग भव ज्ञायक भीति सब ।
परम हृदय सन्तोष, जीव रतन करुणा धरे ।९।
बल आतम पहिचान, दरशन ज्ञान अनन्त सुख ।
बल अनन्त सन्मान, बांछा रतन निर्वाण हित ।१०।

कवित्त— धरम कथा रुचि मात धरे अति, पुरुष शला का सुगुण चितारे ।
पुण्य सजे अघ ताप भजे, मन मोद धरे उर समता धारे ।
धीरत्व वीरत्व भाव जगे शुभ, निरद्वन्द अभय गुण प्रजारे ।
जड़ चेतन गुण भेद लखे सब, अनंत चिदातम रत्न उजारे ।

माता ज्ञान वैभव

चौपाई— स्फुरित बुद्धि मात उर भारी, अचरज करें सुरी गुण धारी ।
उर बिनोद कौतुक मन धारी, चाहें तोष मात अवतारी ।१।
विनय सहित प्रश्नें सुकुमारी, देओ माता शंक निवारी ।
पूज्य जगत को तुम समतारी, कौन होय तुम सम महतारी ।२।
माँ मेरी विनती सुन लेओ, उत्तर परथम मोकों देओ ।
जोड़ हाथ दूजी शिर भावे, माताज्ञा हित पहल रचावे ।३।
अपनी अपनी विनय सुनावें, स्वय हरष जननी हरषावें ।
कविता करके कोई बूझें, आनंद उत्तर चाहत सूझें ।४।
कम धर मात सकल कहलावे, बात एकहि मन सब खिल जावें ।
कटिन पहेली कोई लावें, पा प्रति उत्तर सकुच समावें ।५।

दोहा— मुद विनोद यों अहर्निश, सत संगति सुखदाय ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उभय ओर मंगल बढ़े, मातृ रतन मन भाय ।६।

देवी प्रश्न १—जग काया सु विरक्त जो, उर रमणी अभिलाष ।
निस्पृह मन मूर्च्छा धंसे, कौन विलक्षण सुभाष ।१।

माता उत्तर—धर विराग जग देह से, मुकति वधू उर चाव ।
मन निस्पृह सुख शिव रचे, आतम अद्भुत भाव ।२।

प्रश्न २ रा—सदा अदृश्य दृश्यत महा, अविनाशी अविकार ।
देह विनाशक को कहो, माता करो विचार ।३।

उत्तर २ रा—अनन्त चतुष्टय चिन्मयी, अविनाशी अविकार ।
काय विनष्टक है वही, देव अरहंत सकार ।४।

चौपाई—प्रश्न ३—कैसे धरमात्मा पहिचाने, कौन सुगुणता लख उर आने।
कार्य भले पहिचान बताओ, माता यह मोको समझाओ ।५।

उत्तर ३ रा—शुद्धा चरण शुचि चारित्र ध्याहीं, शाँत भाव धारक सुख पाहीं
अहंकार तज मार्दव भाया, गुण सज्जन धरमात्मा गाया ।

प्रश्न ४।५।६।७ कौन पाप का चिन्ह बताओ,? दुख पावे क्यों जीव सुनाओ।
पाप कुफल गति का माँ होई, शुभ हित-रीति बताओ सोई ।

उत्तर-४ था ५ वाँ पाप दया बिन हिंसा मूला, अलिक चोरि परिग्रह अघ
अब्रह्म चर्य कषाय मिलाये, खोटी साँगति पाप सजाये ।
पाप कषाय करे हरषावे, करे विसाँगति मन हुलसावे ।
पाप मूल जुविकृति दुखदाता, पावे या वश जीव असाता ।

उत्तर ६ वाँ ७ वाँ—निंद्य कार्य गति अप्रिय सोई, कष्ट व्याधि बहु पाप
दुरगति-दायक अघ दुख शूला, जिय जो जाने सुख प्रतिकूल
सुख मानत जिय सुगति समानो, प्रिय भावत सबको सुख दा
मधुर बानि वरणीं हितदाता, सदा चरण सुख पूरक साता ।

दोहा— प्रश्न करें सुरि चाव धर, उत्तर माता टेक ।
गरभ रतन मानो महत, विकसित विमल विवेक ।

लघु प्रश्नोत्तर—

चौपाई—उभय लोक हितकारी को है ? धरम तीर्थंकर अर्हंत जो है ।
जगत गुरू गुरुअन में को है ? सर्वज्ञ विरागी हितकर सो है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रेष्ठ प्रमाण वचन जग किसके ? दोष रहित ज्ञायक जित हित के ।
जनम विनष्टक अमृत कैसा ? ज्ञानामृत अर्हंत उपदेशा ।२।
ध्यान योग को इस जग मांहीं,? धरम शुकल ध्या श्रुत आत्माही ।
का कारज करनो झट सोई ? नाश विषय भव चतुष्टे जोई ।३।
सज्जन का जग में को साथी ? धरम दयामय आपद घाती ।
धरम शुभ लक्षण कार्य बताओ, धरम तनों फल जग को गाओ ।४।
द्वादश तप दश वृष त्रय रतना, शील महाव्रत दान सुकरना ।
इन्द्र चक्रि अहिपति पद पाना, सुख वैभव छवि धरम प्रमाना ।५।

दोहा— पापी की पहिचान जो, दीजो रतन बताय ? ।
अति कषाय रौद्रादि धर, पर निद कोष सुहाय ।६।

चौपाई—कौन महा लोभी जग मांहीं ? चारित्र तप गुण मुक्ति सुहाहीं ।
कौन विचारक जग में जाने ? देवागम गुरु संद वृष माने ।१।
को धरमात्मा मात बताओ ? जिन आज्ञा वृष व्रत धर पाओ ।
कौन पथेहू परभव माहीं ? पुण्य व्रतादिक पथ सुख दाहीं ।२।
सफल जनम इस जग में किसका ? भेद विज्ञानी इच्छुक शिवका ।
सुखी कौन जग परिग्रह डारे, ध्यानामृत पी योग सवाँरे ।३।
किसका चिंतन जग में कीजे ? विषय करम हन शिव सुख सीजे ।
विमल उद्योग सु किसमें करिये ? मुक्ति रतनत्रय तप आचरिये ।४।
कौन हितू नर श्रेष्ठ कहावे, ? छुटा पाप तप दान करावे ।
कौन अरि जग में जु पहिचाने ? निज पर तप बाधक रिपु माने ।५।
सफल कौन मानुष तन पाया ? सम्यक दरशन रतन सजाया ।
सबसे प्रथम काज का करना ? सद् दरशन शुभ प्रापति करना ।६।

दोहा— पात्र प्रशंसित को रतन, तन निरबल तप घोर ।
दान सुपात्रहिं देत जो, लघु निधि पै शिर मोर ।७।

चौपाई—को जग में हो तुम सम माता, जो तीर्थंकर सुत उर धाता ।
काहि सराहिय जग पंडिताई, सदा चरण विवेक विकसाई ।१।
का शठता शुभ क्रिया भुलावे, सुहित ज्ञान तप वृष विसरावे ।
चोर महा को धरम नशावे, पंच करण अघ अनरथ भावें ।२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शूरवीर को धैर्य समाँरे, कषाय मोह जु परिषह जारे।
माता देव कौन को कहिये, अनंत चतुष्टे अघ विन लहिये।३।
महा गुरू को परिग्रह डारे, मुक्ति अभिलाषी भवि हित धारे।
बहु तक प्रश्न सुरिन मिल कीने, धर विनोद माँ उत्तर दीने।४।
जो तीर्थं कर माता होई, ज्ञान आचरण अनुपम सोई।
धरे महातम सुत जो चाहे, वंस गुण कृत निज़ उर लाहे।५।

दोहा— वीज रतन ता गुण धरे, विटप सुफल तस पाय।
बोय बीज को शाम्र को, कलमी आम न पाय।६।

मातृ श्रेष्ठता—

चौपाई—गुणज्ञ रसज्ञ तज्ञ विज्ञ शुभ जाता, सुभग काँति सुषमा विख्याता।
शौर्य तेज बल अति गुण शीला, मृदुता मय बानी श्रेष्ठीला।१।
वर विवेक उर आगम ज्ञाता, नीति राज आयुर विद्धाता।
स्वातम रुचि निरभय अति भारी, पुण्य पुरुष सुधन्य महतारी।२।
महा बुद्धि अति सद्गुण शीला, गृहणी रतन महापति शीला।
स्वयम् गुणी पुण्यी अति भारी, पुण्य श्रेष्ठ मन कोख उजारी।३।
नित प्रताप रवि सदा प्रकाशी, वृषभ मिथुन अति अधितम भाषी।
मुक्ता सीपहिं से चमकाये, चढ़े शरण बहु सौरभ लायें।४।
अमृत सम पय मिष्ट सुखकारी, मिश्री मिश्रित सु मिष्टता भारी।
शिष्ट मिष्ट उत्तमता गाढ़, गुण सब उर तीर्थंकर बाढे।५।

दोहा— पुण्य वान अति सुख लहें, नव नित मोद अपार।
माता सुख कह को सके, जयो रतन जग सार।६।

चौपाई—गरभ राग महाराणि सौहै, अयन काँति दीपत मन मोहै।
महत गुणों की भाण्डागारी, मानो धरणी रतन भंडारी।१।
पद मघवानी कर नित सेवा, महा नारि पन को मह भेवा।
आनन्द उत्सव नित नव होते, श्रेष्ठ सु मंगल चरनन सेते।२।
सकल मनोरथ पूरण जाके, मन बाँछित सब योग सुधा के।
संसकार शुभ सुत के कीये, सुर नर सबके आनंद हीये।३।
मास नवों जब पूरण हूओ, संवत् मास सकल नव भूओ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाख कल दुति तेरस भारी, यमणि योग शुभ लगन मंझारी ।४।
चैत्र मास नव शाखा आये, उच्च भाव ग्रह स्वगृह भाये ।
नव जग आनंद मधु ऋतु छाये, आगम महावीर दरशाये ।५।

दोहा— जन्म हुआ प्रभु वीर को, सकल लोक हरषाय ।
नर नारक सुर मोद अति, रतन घोष जय गाय ।६।

सवैया— बसंत ऋतु हितकर रतन, धार शिरोमणि सार ।
आवत नव नव उमग ले, महावीर जय कार ।
महावीर जय कार, जगत में शान्ति राजे ।
मेंट घृणा विद्वेष, हृदय मधु प्रेमिल साजे ।
अभय पाँप जग जीव, स्वयम के गौरव भीने ।
नाहिं दीन मति हीन, शक्ति सम पर दुख छीने ।१।
पापन की होली जली, मल कलंक भये राख ।
नव किसलैयाँ उर खिलीं, दीं पर हित नव शाख ।
पर हित दीं नव शाख, स्वयं सन्तोष समाये ।
नित नव आनंद रंग, सत्य आबीर रंगाये ।।
नेह बसंती रंग, योग मय बाजे साजे ।
धरें रतन मन मोद, अहिंसक वीर समाजे ।२।
शूर वीर रण धीर, लड़ें नित स्वामी काजे ।
धरें न पाछे पाँव, काल जो नयन विराजे ।।
नयन विराजे काल, शक्ति ले सन्मुख धावें ।
असि कृपाण धनु बाण, गदा मुगदर जो पावें ।।
बरछी भाला तीर, परि भीर नाहिं डरावें ।
गजरथ सेंघव आदि, जीत कर शंख बजावें ।३।
मोर्टार बम टेंक, राईफल तोप जु एटम ।
उद्जन या प्रक्षेपास्त्र, हो हाइड्रोजन बम ।।
लख हाईड्रोजन बम्ब, बढ़ें, रुके न रोके ।
जल थल नभ के माँहि, बाँकुरे जो रण भूके ।।
कितना हो रिपु दूर, सहज ही रतन गिरावें ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काम क्रोध मद लोभ, माय से पार न पावें ।३।
महावीर चमकृत रतन, काम कषाय नशाय ।
जग काया के नेह बिन, निरमल करे सुभाय ।।
निरमल करे सुभाय, जीव का मान प्रमाने ।
चेतन जड़ गुण अर्थ, जानकर स्वरुचि ठाने ।
सदा अरूप निष्कलंक, जान महावीर सु सच्चा ।
जग वैभव शिव लेय, सदा सुख रतन सु अच्छा ।४।

अवतरण काण्ड

दोहा— करम-हरण कलि मल दहन, वीतराग हितकार ।
नमत रतन महावीर पद, सर्वज्ञ शिवंकर सार ।१।

महावीर जन्मोत्सव—

चौपाई—महावीर जनमत सुख छायो, सख लोक जिय आनंद पायो ।
आनंद उमगो शान्ति लायो, जीव नरक भी क्षण सुख भायो ।१।
बाजी भेरीं मंगल कारा, वीणा तुरही शंख नगारा ।
उर निज हरष, हरष सब साये, सुगुण बधाई मंगल गाये ।२।
सुख बहु बच्चा-बच्चा पाये, पुण्य सुयोग मुदित मुसकाये ।
देविन कर शुचि मन हरषाये, अति सुख आये विहसत साये ।३।
मुख शिशु धात्री श्रम बिसराये, अयन निरख सुत बलि बलि जाये ।
अरुण उदय छबि तेज जनावे, छबि शिशु गौरव बल दरशावे ।४।
किरण उद्योत तिमिर द्युति पावे, जग मँगल कुल दीपक लावे ।
दीप्त काय अति शब्द न आवे, सुमणि पेटिका रतन बतावे ।५।
दिग सब निरमल गंध समीरा, शृत पूरण गंध ताप उदीरा ।
कल्प विटप शुचि पुष्प सुहाये, सुर नर सब हरषे बरसाये ।६।

दोहा— पुष्प वृष्टि गिरि श्रृंग सम, गंध सरब दिश छाय ।
रतन मणी बरसे असिम, छबि नहिं शब्द समाय ।७।

कुण्डलपुर शोभा

चौपाई—दुल्हन साज नगर अति कीनो, द्वार मणी घृत दीपक दीनो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोटिक रवि शशि सम उजयारो, सुवल तेज गौरव द्युति भारो ।१।
मुंह मांगो वर याचक दीनो, नृप उछाव मन भाव नवीनो ।
आनंद लहर हृदय सरसाई. लेन हार नहिं दृष्टि लखाई ।२।
सव जिन आलय गये सजाये, सुख सरजक पूजन रचवाये ।
मंगल कारज वहु विधि कीने, जो चित चाहे प्राच्य नवीने ।३।
अलका पुरि लखकर शरमावे, ऐसा अवसर मुझे न आवे ।
दिवि दिवेन्द्र हरष छलकाये, मन की रोके रुके न आये ।४।
आनंद मंडित मोद रुझांई, लहरें इन्द्रासन घहराईं ।
वादित्र वजन अपन पो लागे, ध्वनि यश वर्धमान रस पागे ।५।

दोहा— कल्पन दिवि घंटे घने, ज्योतिष रतन मृदंग ।
शंख नाद अति भवन गृह, व्यंतर पटुह पटग ।६।

इन्द्रावगम-ऐरावत सज्जा

चौपाई- मुदित उत्तंग श्रृंग इंद्रा, वैभव गरिमा सुख बल वृंदा ।
अवधि विचार जान जग गाथा, सप्त पैड़ चल नायो माथा ।१।
सम्यक दरशन उर में साजा, देव धरम गुरू गुण मन गाजा ।
सुमन जन्मोत्सव हित अभिलाषा, कैसे अवसर चूकूं खासा ।१।
आज्ञत सकल सेन परिवारा, मोद सुधर्म इन्द्र अति भारा ।
धनपति ऐरावत सजवायो, लख योजन वपु अति मन भायो ।२।
शोभत अष्ट अयन मन हारी, वदन वदन वसु दन्त उजारी ।
दन्त दन्त इक सखर सोहे, देखत जन को अति मन मोहे ।३।
शतक पचीस कमलनी तामे, कमलिन कमल पचीस रमामें ।
शत अठ दल इक कमलन राजे, आभा दुति धर अरुण उमाजे ।४।
दल-दल सुरि इक नृत्यत जावें, नव रस भाव सुहित मन भावें ।
उमग मोद वारिध बगरायो, सुख रस सीचें मन भरमायो ।५।

दोहा— प्रभु के पुण्य पसाय, पागो मन उत्साह नव ।
शकेन्द्र रतन सकुचाय, कैसे प्रीति निबाहुं सब ।६।

चौपाई—गजपति अतिशय अनुपम शोभा, शक्र शची आसन छबि लोभा ।
सुरन सैन सज शोभत कैसे, उठत तरंग सिन्धु नद जैसे ।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौ दिश जै जै घोष सुनावे, दृष्टि जहाँ तक मुण्ड दिखावे।
सजे इन्द्र ईशान सु आये, परिकर सह सैन्यादिक लाये।
सनत महेन्द्र इंद्र सुम धावें, पुलक धार मन वैभव छाये।
जय जंकार भरत सब आये, सप्त सैन्य सज सन्मुख भाये।
आगे सेना सप्त सुहाई, चालो पुनि ऐरावत छबि छाई।
वर विभूति सामानिक चाले, देवी देव घिरे खुशयाले।
वाजे वाद्य अतुल जयकारा, साज गीत गंधर्व सम्हारा।
केई नृत्य करत संग धाये, क्षत्र ध्वजा कइ चमर ढुवाये।

दोहा— सौधरम इन्द्र बिभुति बहु, चालो हरष अगाध।
पुण्य रतन अवसर भलो, टोरन भव की व्याधि।

शचि-शिशु-दर्शन

चौपाई—पुर लख तीन प्रदक्षिण दीनी, सब सुख भरन महातम भीनी
जय जय नाद गगन अति छायो, देव दुन्दभि सु शष्द सुहायो
सुर सुरियाँ खग मण्डल छाये, दम्पति शक्र राज गृह आये।
इन्द्र शची प्रति आज्ञा कीनी, लाओ त्रिजग नाथ गुण भीनो
उदय पुण्य थारो अति साहू, दरश प्रथम विभु को तुम पाहू।
शची सुनत मन मोदित हूजी, वरमन चाहो आशा पूजी
अतिशय मोद धरे हरषाई, पति पद नाय मगन गुण गाई।
गृह प्रसूति शचि पहुंची जाई, मात-कुमर लख हरष भुलाई
कर प्रणाम बहु स्तुती कीनी, आरति त्रिजग मात गुण भीनी
महा देवि तुम हो जग माता, अनुपमेय महि देव विधाता
त्रिभुवन पति की सिरजन हारी, जगत श्रेष्ठ थुति बने न धारी
नारी अग्रणि तुम गुण ज्ञाता, शोभा नारित्व तुमसे पाता।
अपूरब रवि सु धरम प्रजाली, पुण्य तुमारे भुवि खुशयाली।
अभय दान जग, जीवन दीनो, शील सन्तोष दया सुख दीनो

दोहा— सहस्त्राक्षी नुति थुति करे, मात सकुच मुसका
गुण शिशु माता सुख वरे, रतन महातम पा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मातृ-निद्रा

चौपाई—मोद मगन माता भरमाई, पलक झपे कछु नींद समाई।
सकुच धरे गुण धर गुणताई, शिशु गुण अधिक महातम पाई।१।
शुभ अवसर इंद्राणी पायो, गाढ़ नींद मां शिशू उठायो।
मायावि शिशु अनुरूप सुलाई, मां निद्रित विभु लेके धाई।२।
दीपत विभु मुख छबि मय गाता, फेरे हस्त मुदित उर गाता।
चुम्बन करत ललक मुसकानी, विकासी कांति लखे मुद मानी।३।
बाला रुण सम अति विभू प्यारे, नयन सफल तन अमल हमारे।
कुमारी मंगल द्रव्य सुलाईं, ले मंगल कर सन्मुख धाईं।४।
धुजा कलश शिर छत्र संवारे, स्वस्तिक चमर सु झारि धारे।
दरपण बिजन। लेकर आईं, धुनत नगारे उर हरषाईं।५।
आईं शचि के आगे आगे, मानो भाग सभी के जागे।
शचि उर उमगत वारम बारा, निरखत पुचकारत पग धारा।६।

दोहा— शचि शिशु कर शचि पति दियो, महा मोद तन छाय।
पुण्य रतन शुभ तेज़ लख, अमोल मणि कर भाय।७।

इन्द्र प्रथम प्रभू अवलोकन

चौपाई—निरखत बाल भूप मनहारी, कांति तेज छबि दुति बलिहारी।
नयन तृपति नहिं निरखत पाये, सहस नयन झट इन्द्र बनाये।१।
ज्यों ज्यों निरखे मुद नव पावे, पूज्य पुण्यतम हृदय भावे।
बाल देव शशि सम सुखकारी, जग परकाशक अघ तम हारी।२।
परमानन्द प्रभू मम देओ, आप समान हमें कर लेओ।
नरपति अहिपति शक्र तुमारे, चरण कमल यश भृंग गुंजारे।३।
धर्म तीर्थ प्रवर्तक स्वामी, ब्रम्ह तुम्हीं जग हो बड़ नामी।
ज्ञानोदय गिरि के रवि देवा, सकल करें योगी पद सेवा।४।
मुकती अधिपति भव्यन हितकारी, ज्ञान विकासक जग उद्धारी।
अष्ट करम नष्टक शिव दानी, जग गुणज्ञ प्रभु अनुपम वाणी।५।

दोहा— सुरग मोक्ष दाता प्रभू, सन्त नमत गुण गाय।
धरम रतन धारक विभू, पदतर धरम सुहाय।६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नमन करत चरणन परत, गावत भक्ति बढ़ाय।
आज्ञाकारी चरण के, देव रतन सुख पाय।

चौपाई—स्तुति करत थके दिवीराजा, बनीं न स्तुती पूरण काजा।
लिये गोद त्रैजग महराजा, करम सिंधु अंजुलि कर साजा।
ऐरावत पै विभु मुसकाये, उर्ध्व गमन शुभ राह दिखाये।
इन्द्र इशान लखत हरषाये, प्रणम्य शीश त्रय क्षत्र सजाये।
सरब लोक प्रभुता विभु लीनी, सोहें क्षत्र यथा रथ सु दीनी।
सरब जीव की रक्षा सु चाहो, जग भव के संकट सब बाहो।
सनत कुमार जु महिन्द्र इन्द्रा, चमर ढुरावें उड़गन चंद्रा।
वैभव चरणन में चमकावें, अन्तर वैभव बाह्य दिपावे।
जय जयकार सुरन घन घोरा, आनद सागर उमगन छोरा।
दरशत हरष रोम हुलसाये, वाद्य नृत्य संगीत समाये।
किन्नर गन्धर्व सब गुण गावें, विमल भाव भव सफल बनावें।
लख विभूति सु धरम रुचि भारी, सम्यकता धारें नभ चारी।

दोहा— सफल जनम मानो हरी, अमल आत्म दरशाय।
ज्यों ज्यों गुण चिंते रतन, करम बंध बिनशाय।

चौपाई—मन सुमेरु सम ऊंचा पाया, करन नहवन सु विभुता लाया।
शोभा यात्रा अपरम पारी, उच्च विभूति जगत इक ठारी।
करत शोर आगे को धाये, नव छबि यौवन भू बिखराये।
नव नभ भू सुख कर दिखलाये, नव आनंद दुति उर चमकाये।
सकल साज सह श्रृंग सुहाये, द्वीप समान सुमेरु दिखाये।
गूंजा नभ गिरि अमल उंचाई, जय जयकार ध्वनि गुंजाई।
ऊंचो योजन महा प्रमानो, सहस निन्यानवे भू पर मानो।
ऐक सहस भू तल में गायो, लक्ष्यमेक शुभ जगत जनायो।
पांडुक वन शुचि तापे सोहै, पांडुक शिला अमल मन मोहे।
उर विशुद्धिता विमल बनावे, विमल महा अविचलता लावे।

दोहा— शत योजन लम्बी शिला, चौड़ी अरध प्रमान।
वसु योजन ऊंची रतन, अरध चन्द्र परमान।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वसु गुण धारक जो रतन, अष्टम भू विलसाँय ।
अष्ट रतन उर में सजो, अष्ट करम विनशांय ।७।
सजो अष्ट गुण रम्यता, दाव रतन शुभ आय ।
उभय लोक आतम सुखी, चाहो शिव दवशाव ।८।

चौपाई- मणि मय अमल शिला दुतिधारी, मंडप तापे मणिमय भारी ।
जड़िन चदेवे दुति धर साजें, झालर इन्द्र धनुषता लाजें ।१।
फरश बिछे मखमल के भारी, कनक थंभ सौहें सुखकारी ।
निरखत जन को मन ललचावे, निरख निरख सुख नव रस पावे ।२।
मंगल अष्ट दरब शुभ कारीं, शिला मध्य शोभें दुति धारी ।
चमर क्षत्र स्वस्तिक शुभ ऐनां, कलश धुजा बहु बीजन ठौना ।३।
शिला मनोहर शुभ वैडूरी, अरध सिंहासन मणिमय धूरी ।
दक्षिण सौधर्म इन्द्र समाजें, वामें बहुते इन्द्र सु साजे ।४।
रतन सिंहासन प्रभू बिठाये, गिरि प्रदक्षिणा इन्द्र सुहाये ।
मुकता झालर बहु लटकाये, अथिर विभूति अधर दिखलाये ।५।
पूरव दिशि मुख विभुवर कींनो, मंगल विभुति शोभित सुर भीनो ।
पुण्य प्रताप सकल सुख देई, पुण्य भाव तीर्थंकर होई ।६।
सोलह कारण भावन भाओ, सुख समृद्धि जग शिव विलसाओ ।
व्रत तप संयम शुभ फल लावें, सुगुण ऋद्धि बहु पुण्यन पावें ।७।

दोहा— मणि मंडप दुतिमान बहु, झूलें पुण्य सुमाल ।
निज थानक तिष्ठें रतन, देवी देव रसाल ।८।

जन्माभिषेक

चौपाई—गीत नृत्य बहु वाद्य सुहाये, पुष्प वृष्टि जय घोष रमाये ।
कलशा क्षीरोदधि शुभ लाये, कर-कर करि सुर भर ले आये ।१।
कनक कलश गल मुकता माला, अष्ट सहस कर शीश सु ढाला ।
बसु योजन कलशा लम्बाई, चार सकल योजन चौड़ाई ।२।
इक योजन मुख मुकता माला, उभय इन्द्र शुचि विभु शिर ढाला ।
सहस ऐक अठ भुजा बनाई, धारा वारिधि सम घवराई ।३।
कलश धार कर इन्द्र दु सोहें, सुर तरु भाज नांग दुति जोहैं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुखद दृश्य लख जै जै कारा, बहें करम अघ शुचितम धारा ।४।
शीश गिरी जल गिरती धारा, खंड शतक होतो तिह वारा ।
धारा सो विभु शीश सुहावे, फूल कली सम उछलत जावे ।५।

दोहा— कलश शोर अति ही हुओ, पांडुक तरत दिखाय ।
प्रगटो क्षीरोदधि नयो, विभुवर रतन पसाय ।६।
चिन्ह सु धारा पग विभू, लखो पुरंदर भाय ।
दीनो विभुवर चिन्ह सो, केहरि रतन बताय ।७।

प्रभु नन्हवन प्रभाव

चौपाई—जल धारा कण उड़ते जावें, शुचि पद परस मनो शिव धावें ।
परम पवित्र शुचि प्रभुवर गाता, नाहक शुचि करने की वाता ।१।
अघ निज पुंज किये घिनकारे, यातें ढोरत चमर विचारे ।
नयन पाणि मन रसना सारी, गहे चरण शुचि चरण तुमारी ।२।
करम कालिमा धूजन हारी, मिटे दैन्य दुखिता भय कारी ।
गंधोदक ले मस्तक लीना, शुचि स्पर्श मन तन शुचि कीना ।३।
पुस्याँकुर वर्धक जल धारा, जनम जनम सब खेद निवारा ।
सबको शाँति मिले सब नादें, शुभ भावन फल सब शुभ सादे ।४।
शुचि अभिषेक सकल हित करणा, अघहारी शुभ शुचितम शरणा ।
अष्द दरब ले पूजा कीनी, सेतु बंध सम जग यश भीनी ।५।

दोहा— इंद्राणी शुचि थुति करे, वस्त्राभरण सजाय ।
तिलक दृगाँजन मुद भरे, महा रतन हरषाय ।६।

प्रक्षालन—

चौपाई—अतिशय जनमोत्सव सब कीनो, सुर सुरेन्द्र परिकर गुण भीनो ।
विभु गुण सुमरण कर कर थकते, सहस आठ शुभ नाम सुवरते ।१।
कंचन क्षीर कुंभ से अधिके, सुगुण सुखद शीतल विभुवर के ।
सौधरम इन्द्र स्तुति कर हारे, सुगुण अमित नहिं जाँय उचारे ।२।
इक से इक गुण रस अधिकाहीं, समझत बनत कहत कछु नाहीं ।
बहुतक थुति नुति पूजा कीनी, अष्ट दरब शुचि बहु विधि भीनी ।३।
शुचितम मन इंद्राणी पायो, पुण्य तेज शुभ भाग जगायो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वस्त्राभरण सकल पहिनावे, उत्तम मणी जड़ित छबि छावे ।४।
टीक दृगाँजन तिलक लगावे, शोभत शिशु दुठ दृष्टि न पावे ।
करती शुचि धर आनंद कैसे, जैसे सागर रोकत कर से ।५।
प्रभु को परस परम सुख पावे, करत आरती हिय उमगावें ।
धन्य मात पितु जय अवतारी, जग कुल दीपक कलि मलहारी ।६।

दोहा— पुनि पुनि चूम कपोल वर, उरतें लेयं लगाय ।
कबहुं दिखावत नेह धर, रतन पलट मुसकाय ।७।
इन्द्र बहुत उत्सव कियो, नृत्य कियो बहुभाय ।
मोहे निरखत सकल मन, जग वैभव रतनाय ।८।

पुनरागम कुण्डलपुर

चौपाई—सहस्त्राक्ष विभु रूप निहारें, महा मोद उर गोद सुधारें ।
सब लेकर आ सुर परिवारा, कुण्डलपुर अति मोद सु धारा ।१।
कर मणि चूरण चौक पुराये, शुचि सिंहासन रतन जड़ाये ।
मात तात सुत ता पधराये, काँति अनूपम मन शुभ भाये ।२।
मन सुमेरु के शीश विराजे, शुभ्र वचन पाँडुक वत छाजे ।
मणि थंभन सिर मण्डप सोहै, विविध झूल झालर मन मोहे ।३।
मुकतक माला शुभ्र सुहाई, जगत शुभ्रता अधर झुलाई ।
परम शुभ्रता विभुवर धारें, करम कालिमा हन शुचि धारें ।४।
सकल सुरासुर इन्द्र सु आये, लख निज ठान तिष्ट हरषाये ।
धवल चन्द्र यश विभु परछाहीं, पुण्य महातम सुबुध सुहाहीं ।५।

दोहा छंद— मंगल मय आशीष दे, वरसावें पुष्प सोय ।
निरखें विभु छबि ध्यान से, सरब भ्रमति रत्न खोय ।६।

इन्द्र स्तवन—

चौपाई—शक्र विविध विधि भाव सजाके, शुचि थुति करत प्रभु गुण गाके ।
सहज पवित्र अति नाथ सु जानूं, शुचि विधि तप अघ करने ठानूं ।१।
जग भूषण विभु नाथ श्रद्धानूं, उर गुण ग्रहण सु भूषण आनूं ।
प्रभु सत्ता तुम जग विस्तारी, सुक्ख करण भविजन आधारी ।२।
जग कल्याण कर विभु तुमही, मोह कूप काढन अवलंब ही ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोह मल्ल क्षायक तुम वाणी, धर्म तीर्थंकर तार...-यानी ।३।
मिथ्या अघ हर वचन कहेंगे, परम मोक्ष सुख भवि जन लेंगे।
जनम सफल शुचि करण विधाता, तारण तरण रतनात्रय दाता ।४।
महा भाग भवि आज्ञा करते, मनमें चाह मुकति सुख रमते।
नेह भक्ति नित भवि उर बोलें, मोह जयी शरणा शिव खोलें ।५।

दोहा— जन्मोत्सव पाकर विभु, कृत्य कृत्य मम देह।
उज्जवल मन अति सु भयो, रतन सुभक्ति सनेह ।६।

चौपाई—जनम सफल भयो स्तुति कीनी, सेवत चरण सु आतम भीनी।
शाण चढ़े मणि रतन छबेही, न्हवन कर सोहे शुचि देही ।१।
जगन्नाथ तुम जग हितकारी, परमानन्द विज्ञान सुधारी।
धरम तीर्थं दर्शक गुण धीरा, स्वेदादिक मल रहित शरीरा ।२।
करम बिनाशक मुक्ति प्रदाता, मोह जयी सुरगादिक दाता।
पंच कल्याणक तुम शुभ सोहें, मुकति रमावर महिमा मोहै ।३।
जगत तिमिर नाशक वर वीरा, सज्जन गुरू त्रिभुवन पति धीरा।
शत शत तुमको विनय प्रणामा, मुक्ति मार्ग दरशक सुख धामा ।४।
जग संपति हित थुति नहिं चाहों, मुकति वरन अभिलाष उमाहों।
दाता तुम सम नहिं जग माँही, तुमही तुम सम दूजो नाहीं ।५।

दोहा— कीनी बहु थुति विनय धर, उमग हरष उर लाय।
गुण प्रीती वर बुद्धि से, इन्द्र रतन नम पाय ।६।

चौपाई—सुस्तुति विमल भाव धर कीनी, मन की तपन दूर कर लीनी।
जग व्यौहार चरण अनुरागा, नाम करन करने चित पागा ।१।
श्री वर्धत भवि गुण अधिकाया, वर्धमान सन्मति मन भाया।
महावीर पथ जग सिर मोहे, अन्तर करम शत्रू जय हो है ।२।
सफल मनोरथ सब अघ हरणा, मात तात मन मोद सु भरणा।
अति मन सरधा उर अनुरक्ती, विधिवत बहु विधि शक्र सुभक्ती ।३।
धन्य युगल जग पुस्य निधाना. विश्व पिता-माता गुण ठाना।
जग त्राता गृह तुम उपजाये, जगत मान वर यश अधिकाये ।४।
विश्व सु मंगल हित बड़ भागी, लोक गुरू गृह चैत्य समागो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थुति सुरेन्द्र कर शीश नवायो, दम्पति नन्द सवायो ।५।

दोहा— देव इन्द्र नर नारि सब, उर नहिं हरष समाय ।
फैली पुण्य सुगंधता, सुमन रतन सुखदाय ।६।

इन्द्र नाट्य

चौपाई—उमग इन्द्र शुभ रूपक कीनो, गान वाद्य नृत सुर सुर भीनो ।
जन्मोन्सव सुख गुण अति भरना, सुखद विमल दृश्यत अघ हरना ।१।
पूरब भव सब दृश्य दिखाये, कैसे महावीर बन पाये ।
निरखत सुर नर अति मन मोहें, मघवा नृत्यत सुरतरु सोहें ।२।
लखत नृत्य ताँडव मुगधाये, भाव भंगिमा अति रस छाये ।
सहस बाहु नृत्यत भू डोले, थूल सूक्ष्म बहु ठाठ अमोले ।३।
क्षण में निकट दूर क्षण जावे, ततक्षण उड़ आकाश दिखावे ।
भुज अंगुलि पै परियाँ सोहैं, नाट्य हथेली अतिशय मोहे ।४।
कोई नाभाँगुलि धुमकावें, कल्प बेलि सी भुज लिपटावें ।
अनुपम ऐसो नृत्य सु हो है, नृत्य कला रुचि तन मन मोहै ।५।

दोहा— पंचमेरू जिन बंद के, दे मृदंग पै थाप ।
अद्भुत मनहर दृश्य लख, दरश रतन गुण आप ।६।
प्रत्या प्रत्यक्ष नृत्य बहु, इन्द्र जाल गुण मेल ।
मन रंजक प्रासाद मय, रतन सुहावत खेल ।७।

चौपाई-शक्र कला नृत किनि मध छिटकी, शोभा शशि ज्यों उड़गन किकासी
उमगत जल निधि आनंद धावे, इन्द्र चन्द्र लख अधि लहरावे ।१।
मुदित भये दरशक पुखासी, विसरी सुध बुध तन मन-खासी ।
लखो न ऐसो नृत्य जनायो, विभु प्रसाद उर नयनन पायो ।२।
धन्य धन्य चउ ओर सुनावे, युगल सुपुत्र शक्र कोइ गावे ।
सार पदार्थ पुण्य जग माँहीं, सिद्ध मनोरथ सकल सदाहीं ।३।
बल पुरुषारथ शुभ प्रगटायो, जग सुख पा भव, बंध खुलायो ।
वर विवेक सरधा उर आवे, अतुल अलौकिक अतिबल पावे ।४।
निज गुण रम परवशता खोवे, पा निज गौरव शिव सुख जोवे ।
पुण्य गाँठ दुति रतन दिपाये, सेव करन इन्द्रादिक आये ।५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सोरठा— वगरो आनद सार, मघवा मुद निज धामगो।
देवी देव कुमार, सेव जतन हित रतन के।६।

सुरेन्द्र गमन

चौपाई—कांति प्रभु की अति मनहारी, छांड़त इन्द्र चिन्त मन भारी।
चितवत पुनि पुनि आगे जाहीं, अलट पलट लख कदम बढ़ाहीं।१।
आगे बढ़त कदम सकुचाहीं, भाव जलधि डुवत उतराहीं।
नाग भूप गति उर उन्माहीं, भाव उगले लीले पर समाहीं।२।
दृष्टि जहाँ तक जाय पसारे, निरख विभू गति ठिठकत धारे।
अत्ती राग गति सब जग माँहीं, सुख सयम बिन सपने नाहीं।३।
पुनि पुनि आनद भरत सुरेशा, जय जय करत धन्य विभु शेषा।
अब भव सागर अल्प निहारे, विभु हैं पार अपन पो धारे।४।
अवसर ऐसो मो कब आवे, अल्प अवधि जग बड़ी लखावे।
मन उतरन भव, वारिधि आने, क्षणिक विलंब लगत अधिकाने।५।

दोहा— विषय कषायन रत रहो, नहिं जानो शुभ काल।
रतन जु आतम सुख चहो, छोड़ जगत जंजाल।६।

महावीर शिशुत्व

मंगलाचरण

दोहा— सदा स्वरूपा चरण मय, कर आत्म अविकार।
शुध परणति चारित्र नमूं, रतन त्रियोग संवार।१।
बढ़त काल वपु दुति बढ़े, बाढें श्री भगवान।
निरखत मोहें सकल मन, धरम रतन सुख दान।२।
सदा स्वरूपा चरण मय, करे आत्म अविकार।
चारित्र परणति को नमूं, रतन त्रियोग संवार।३।
काल बढ़त वपु दुति बढ़ें, बाढें श्री भगवान।
मोहें निरखत सकल नत,पुण्य धरम रतन सुखदान।

चौपाई—नव नित सुकला पक्ष धर वाढे, ज्योत्सना शुभ अति सुख गाढ़े।
दोज मयंक सुगति अनुसारे, बढ़त पुलक विभु की मनहारे।
उदित अरुण परताप सँवारे, काय कांति बल गौरव धारे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शोभित वीर महा सुख कंदा, कला सु पूरण पूनम चंदा ।२।
मणी पालना पट चीनाई, धारत कला सुनव सुघराई ।
लगीं डोर रेशम चहुं ओरें, खींचत तनिक सु भरत हिलोरें ।३।
खेल खिलौने बहुतक सारे, लटकें मणी जड़ित दुति बारे ।
प्रभु मुसकाय कबहु किलकारें, कबहुं सोवत पलक उघारें ।४।
लखत मात पितु जन सुख पावें, सुभन झूलना झूल झुलावें ।
चुंवन कभी कभी दुलरावें, सुखमन वाँछित पुण्य बधावें ।५।

दोहा— बाहिज अंतर जगत अति, छलक हरष सुखदाय ।
जतन रतन सों लालवें, परसत निरख अघाय ।६।

चौपाई—क्रम कर बैठन भू विभु लागे, मुसक किलरम आनंद पागे ।
खेल खिलौना खेलन भाये, कबहुं मोदले गह फटकाये ।१।
निकल दाँत दो दो शुभ आये, किलकत विभु मोती दमकाये ।
उठे जतन सो दो पग धार, चलत घुटरु अन, मुद मन पारे ।२।
बहुतक सखा सँग आखेलें, कबहुं खींच बढ़ं कबहुं ठेलें ।
सोने सी सब देह सुहाई, बाल गगन में रवि समताई ।३।
कबहूं बाहर रज में खेलें, निरखें पितु झट गोदी ले लें ।
चुम कारत बहु धूल झरावें, धूल बुरी कह ग्लानि करावें ।४।
सब खेलत पितु हमको रोको, इनको देखो उनको देखो ।
मीठी वाणी बाल सुहावे, आपा निज का सहज भुलावे ।५।

दोहा— सुत अति लागत मोहतो, सुभग काँति गुण धार ।
प्रिय भाषी उर सोहने, सदा रतन हिय हार ।६।

जन्म अतिशय—जन्मत अतिशय रूप सुहायो, काय सुगंधित रुच मन भायो

चौपाई—विना स्वेद वपु सुभग सुहावे, चारू काँति काया दमकावे ।
प्रिय हित वचन सदा सुखसाने, अनुपमेय बल अतुल अमाने ।१।
श्रोणित श्रेष्ठत सदातन माँही, सहस आठ शुभ लक्षणा ठाहीं ।
सम चतुर सँसथान सुहायो, वज्र वृषभ सहनन दृढ़ पायो ।२।
दश अतिशय जन्मत सुखकारी, सब तीर्थंकर पदवीं धारी ।
वर्धमान विभु के जब आये, बाढ़त नित प्रति सब सुख दाये ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नयन तारिका पलक संचारें, मोदत जन मन शिशु निहारें।
क्रीड़ित पथ में इक दिन आये, खेलत खेल सखा मुद पाये ।५।
सुगुरु विजय सँजय मन भारी, दूर निरखते शंक निवारी।

दोहा— मुनिवर हरषे मोद अती, जय सन्मति शुभ लाभ।
दरश तीर्थंकरु शंक विन, मिटो रतन उर दाम ।६।

बाल क्रीड़ा—पूरण रस सरवर अति सोहे, मुखरित पदम देख मन मोहे।

चौपाई—गगन इंदु भोभे छबिदाई, शोभे नभ मंडल विभुताई ।१।
दिव प्रताप गौरव रवि पाये, अमित तज ग्रीष्म अधिकाये।
सुभग वसन भूषण मन मोहे, सुभग कांति वय लघु अतिसोहे ।२।
शशि रवि दुति तन विभु इकठाईं, षट आभूषण दिप तट पाईं।
सजकर साज वीर जब डोले, शशि मंडल भू भरत हिलोरे ।३।
मणी भूमि अति रतन सुहावे, छिटक छबा शुभ शांति बधावे।
पान अहार सुखन मिल करते, भिच बनाय शुभ मान रुचि भरते ।४।
सबको नीति रीति बतलाने, सुगुरु समान सुगुणता लावें।
सखा न छोड़त सँग सुहाये, मात तात सिख मोद न भाये ।५।

दोहा— चाहत शिशु मन प्रेम को, देय रतन सो लेय।
निज सुध भूलें भेद को, मन विश्वास सनेह ।६।

क्रीड़ा नंद—गुजें प्रसाद नृपति दिन राती, किलक बाल बृंदन मन भाती।

चौपाई—माता मोद कहो नहिं जानो, शिशु क्रीड़ा लख मन रातो ।१।
खान पान सुधि सबकी राखें, प्रेम सहित नब षट रस चाखें।
ऐसो आनंद पितुवर पायो, बर नृप पद जीवन नहिं आयो ।२।
नित नव जीवन नई उमंगे, मृदुल मधुर सु नेह तरंगे।
चैतनना थिरकत सी छावें, मुदित सृष्टि सब मन को भावें ।३।
जैसे राज काज कृत छूटें, बाल वृंद सँग आनन्द लूटें।
लखत प्रजा गण आदिक सारे, ओब मुस्तक देखत रतनारे ।४।
निरखें रंजत रुक जन जावें, कोन सु लखयों हृदय बढ़ पावें।
मानव ऋद्धि काहि ना भावे, सबको सन्मति सुख पहुंचावे ।५।

दोहा— बीतो सुखमय काल, कुमर स्फुर आयो नवो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आनंद जो शिशु बाल, स्फुर रतन सु नवनवो ।६।

कुमार काल-मति श्रुत अवधि सुबल विकसायो, क्षीर नीर गुण भेद समायो

चौपाई—सज्जन बिद्या गुण सन्माने, सुविज्ञ लखे गुण आदर आने ।१।
विविध सुविद्या कुमर सिखाईं, अपने आप स्वयं प्रगटाईं ।
क्रीड़त तब दया बहु सुखदाई, जागृत ज्ञान सदा विकसाई ।२।
देख सुजन अति आदर देवें, बाल प्रभु भ्रम सबका खोवें ।
जीत सकत नहिं जीतन हारे, अस्त्र शस्त्र बल पौरुष वारे ।३।
धरम ज्ञान का पार न कोई, अचरज महा बुद्धि मन सोई ।
धन बल वैभव गुरुत बतावें, दीप्त काँति गुण सुभग दिखावें ।४।
बाल चन्द्र सों जोति सवाई, मोहित सुर गण लोग लुगाई ।
गौरव सु गुरु अधिष्ठित पावें, जगत गुरू जग वंद्य सुहावें ।५।

दोहा—
गुण पाये सब होत है, गुण की पूजा होय ।
गुण गरिमा सुख पोत है, सुगुण रतन उदयोत ।६।

चौपाई—अष्टम वय धर व्रत सुकुमारा, मूल आठ द्वादश व्रत धारा ।
मद्य मांस मधु घिन बुधिहारी, सेवे रुचि धर घोर संसारी ।१।
दया भाव उर संयम पागे, पंच उदम्बर फल सब त्यागे ।
अभक्ष अनिष्ट चलित रस छोड़े, अनुपसेव तज सतपथ जोड़े ।२।
हिंसा झूट चौर्य अघकारी, अब्रहन परिग्रह जु अविचारी ।
ये पथ दुरगति सब करवावें, स्वातम बोध जीव नहिं पावें ।३।
पंच पाप ये अघ उपजावें, सेवत मिष्ट विपाक विकारी ।
व्रत इन त्यागत होवें नीके, सुधरे जनम कटत अघ जीके ।४।
सप्त शील अणु विरती धारें, अघ सुमेंट वसु करन निवारें ।
सु अक्ष विजय मन थिर करवावें, विघट द्वंद जग सब सुख पावें ।५।

दोहा—
महावीर विरती भये, अष्ट मूल गुण धार ।
द्वादश व्रत धारी रतन, खोलत वज्र किवांर ।६।

व्रताचरण प्रभाव

चौपाई—पर पीड़ा अति निंद्य निरखते, दुखी दीन लख दुख परिहरते ।
संघ सरब मुद आनंद भरते, साधन यथा साध सब करते ।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कीरत जगत व्यापी द्युतिकारीं, सज्जन मोद कुजन दुखभारी।
संगम नाग दुष्ट-मद भारी, शठ चालो दुठ मन अविचारी।२।
क्रीड़ित बाल संघ पै आयो, महा सुवन लख आनंद छायो।
कठिन कराल विकट तन धरता, बालक वृंद सुआकुल करता।३।
निरख रूप ध्वनि सब अकुलाये, कूंदे फांदे जान बचाये।
सुध बुध सारी दई गवांई, दीन असहाय भर करुणाई।४।
निरख वीर सब भारत रोके, नौ दो ग्यारह रुके न रोके।
नाग खाय रुष तिन पै आयो, लखत कुंवर तब सन्मुख पायो।५।
विजय वीर श्री गौरव शाली, अतिबल जुटे विकट बल शाली।
अधिक भार सह सको न धीरा, कम्पो ना मन क्षण महाबीरा।६।

सोरठा— मोहत अति सुकुमार, मस्तक ऊपर मोद से।
दीप्त रतन जय धार, उदया चल रवि राजते।

चौपाई—बिना खेद कुंवर सुर जीता, शीश पाद धारत अन चीता।
फणपति लजित मुदित सुकमारे, सहज सरल बल अघ मद झारे।१।
प्राणन पै सोचो बन आई, देहैं कोपत खेल मिटाई।
निज बल अधिक मान गरभानो, बिन विवेक फल पा अकुलानो।
महत जनन सों रार-मिताई, देत बडप्पन अरु गरिमाई।
बड़ी सदा विभु की शरणाई, शरण वीर दें, गह शरणाई।३।
नातर लाज विभु की जै है, अतिबल शरण पाय सुख देहै।
पूरब पुण्य सुबल कछु आयो, नत विनम्र वच नाथ सुनायो।
नवत नीच निपुणमति दोनों, गरिमा पर निज लघु दुठ छोनों।
निपुण निरख हित पर सकुचावें, परकी नवन सुलख नव जावें।

दोहा— महावीर तुग धन्य त्रिभु ! काज सुधारन हार।
दीन दुखी प्रतिपाल हो, कृपा रतन हिय धार।

संगम स्तुति

चौपाई—क्षमो प्रभु मम मोद बढ़ाओ, मैं हूँ शरणा लाज बचाओ।
कीरत जैसी मैं सुनि काना, पायो अधिको इन्द्र बखाना।१।
अज्ञ हूओ मैं क्षोभ दिवाओ, क्षमो प्रभूमो दास बताओ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुनत वीर झट दया समाये, क्षमा करन सुर मन हरषाये ।२।
लखत छिपे वालक जुर धाये, मारो-पीटो शोर मचाये ।
पापी कायर निर्लज जाये, अबल बाल लखते डरवाये ।३।
कठिन वीर वर हाथ जुआयो, पूरो बदलो सकल चुकाओ ।
कहैं विभु सुनो सखा हमारे, मोद मिलो बहु हमको प्यारे ।४।
आयो अब यह शरण तुमारे, बोलो अब सब वचन संवारे ।
साहस इसके को पहिचानो, निज दल विलग अकेले आनो ।५।

दोहा— संगम करित निज सुनी, प्रभुवर हृदय विशाल ।
मन वच तन हूओ विनत, रतन नवावत भाल ।६।

संगम विनय

चौपाई—वीर धीर विभु तुम जग स्वामी, करम विनाशक तुम शिवगामी ।
जग रक्षक सु तुम धीरज धारी, अतुल पराक्रम यशी-बिहारी ।१।
भेंट गमन—निरभय मृत्यु जयी बड़ नामी, विनय करूं कैसे तुम स्वामी ।
कीर्ति तुमारी जग में छाई, गुण धर पुण्यी सज्जन भाई ।२।
विनय भेंट लघु विभु चित देओ, अपनो सेवक लखमो लेओ ।
कारज आवे ऐसो कोई, पूरों आज्ञा पात सोई ।३।
प्राणदान विभु तुमने दीनो, देऊं का मैं सोच गहीनो ।
नमत भयो विभु चरनन आगे, लियो लगाय सु उर अनुरागे ।४।
सखे ! कहा तुम मन भरमाये, मन निश्चित रहो सुख पाये ।
सज्जन धारो उर समताई, पर पीड़क छाँडो अधमाई ।५।

दोहा— अब तुम सच्चे मित्र हो, धरो हरष हिय मांहि ।
गमनो अब निशंक मन, शरण रतन भय नांहि ।६।

चौपाई—करत बड़प्पन धर जे काजा, गावत यश तिन को सुर राजा ।
गमनत संगम पुनि शिर नायो, महत भाव विभु लख उमगायो ।१।
गुण गावत फिर-फिर छबि देखे, श्रद्धा गौरव धर अवलेखे ।
कसक रही मन में कछु नाहीं, महा बड़प्पन विभु अधिकाहीं ।२।
सेवत चरन अति सुखमाने, बनी न भक्ती शक्ति प्रभाने ।
चितवत जावत सुख अभिलेखे, पुण्य प्रताप विभु बल देखे ।३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सखा संग ले विभु गृह आये, मित्र-मिलन शुभ सु सब सुख लाये।
सुख-दुख पूरब कृत जो आवें, मिल अनुशासित सहज समावें ।४।
मुदित सभी हरषित बल पाये, उमगत विचरत सब गृह आये।
धरी भेंट माता ढिग आये, विनय सहित सब भेद सुनाये ।५।

दोहा— करी बड़ाई सबन मिल, सुन आश्चर्य अधीर।
संगम पर जय धारनो, जयो रतन महावीर ।६।

चौपाई—सबके मन अति शंक समाई, विस्मय हरष क्षोभ इक ताई।
अचरज कैसे वीर निवारो, सँगम अगम वली भयकारो ।१
धन्य धन्य तुम अति बल वीरा, आज निवारी सबकी पीरा।
गावें गुण बहु आनंद लाये, थाल रतन ले आरति गाये ।२।
माता विस्मृत अश्रु छल काये, शोका नंद नयन भर लाये।
लख दौड़ीं आँचल छाये, फ़ेरत हस्त अयन चुमकाये ।३।
शृत सुगंध ले, छींटे देतीं, धूल पोंछ सब मुख मल धोतीं।
कैसी घड़ी अशुभ तर आई, लाल घिरो मेरो कहं जाई ।४।
काहु डाँट कोई खिसयाई, सेवक धमक रोष नृप जाई।
सुध बुध कोई रखता नाहीं, अधिक राग वश जिय अकुलाहीं ।५।

दोहा— साथी धो सब हाथ मुंह, लगे जिवन जिव नार।
माता परसें लाड़ रुच, रतन हृदय हिलकार ।६।

नृपति उद्वेग

चौपाई—सुनत नृपति भट दौड़त धाये, शंकित आकुल मन घबराये।
निरख सुतासुत आनंद भारी, पुलक गोद ले, व्यथा निवारी ।१।
चुंबत माथ हाथ बहु फेरें, जुग जुग जियो अशीषन मेरे।
बोलीं माता जेवन देओ, छलको राग नयन-हृदये ओ ।२।
कोऊ बालन बरजत नाहीं, ना सुध राखत जावत काँही।
सँग न कोऊ या रखवारे, बागत यों ही भ्रमत विचारे ।३।
बोले बाल सुनो सब माता, खेलत हम सब एकहीं साथा।
सँगम ऐका-ऐक सु आयो, जित तित भागे लख नहिं पायो ।४।
कही वीर से तुम भी आओ, कहाँ भगे ये। रार रचायो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सब हम सिमट बचावन धाये, रोंके-भींचे दया दिखाये ।५।

दोहा— बहुत भेंट बाने दई, वीर नाहिं कछु लेय ।
जबरन दीने रतन जुट, लाये धार सनेह ।६।

बीर मात प्रतिवेदन

चौपाई—कही कुंवर तब पूरी बाता, कैसे चक्र भेद सुन ताता ।
कैसे करी भेंट सकुचाई, कैसे शरणा मान बड़ाई ।१।
ऐसे अब वह कभी न आहै, आहै तो अति आनंद लाहै ।
गयो खेद भ्रम सर्व नसाई, महावीरता सुत सुखदाई ।२।
जन गण मन सुन अति हरषायें, बाल शौर्य सुख देश मनायें ।
देत आशीष जु हृदय सोही, जयो वीर जय, जग सिरमोही ।३।
पुण्य बड़ो यश तुमने लीनो, बाल बचाय नाक शुचि कीनो ।
विपदा सारी सहज मिटाई, काहू आँच तनिक नहिं आई ।४।
जय-जय-जयों शुभत मुद होते, पुनि-पुनि कहते तृप्त न होते ।
सुनत प्रताप पुत्र जयकारा, मात-तात मुद शोक निवारा ।५।

दोहा— जननी जनतो रतन सुत, दानी ज्ञानी शूर ।
बाँझ भली माता कुसुत, काँति मिले ना धूर ।६।

सुपूत-कपूत

चौपाई—ऐक सुसुत जग नाम कमावे, संपति यश कुल दीप जगावें ।
वर सुपुत्र महावीर कहावे, धीर गुणज्ञ भव व्याधि मिटावे ।१।
मात-पिता कुल गौरब आने, देश जाति पथ धर्म सुहाने ।
चले कुमारग धरत अनीता, संपति शौर्य सुयश धन भीता ।२।
कुल वैभव गुण धरम गंवावे, महा प्रमादी कुसुत कहावे ।
कटुक वचन बोलत अविचारी, अबुध दीन दुखकर व्याधि चारो ।३।
मद्य माँस मधु को नित खावे, धर अव्रत कुल शील मिटावे ।
पर दुख निरख दया नहिं लावे, पेटार्थी जग बोझ बढ़ावे ।४।
अति दुख भोगत जग भव भारी, आर्त–रौद्र धर नरक सुदारी ।
कुपुत्र कुमात कुक्रोख प्रजावे, सुयश रूप कुल क्षति पहुंचावे ।५।
यातें भली बाँझ जग लागे, शाँति काँति सुख देश बचावे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धरम रीति गह सुत सुख पावें, उभय लोक हित करित पावे ।६।

दोहा— सिंह एक सुत जग भलो, सोवें निरभय मात ।
बाराही बारह अबल, कीच रतन लपटात ।७।

महावीर अग्रता वैचारिक क्रिया

चौपाई—सब में वीर महा यश पावे, सूर तेज जिमि गगन सुहावें ।
गीत नृत्य संगीत स पेखें, पट आभूषण सज दुति लेखें ।१।
कबहुं सुधारत कभी दिखावें, दे औरन को आनंद पावें ।
कबहूं चरचा कबहिं सु अरचा, कबहुं संयम रतन सु चरचा ।२।
दान सुतप नित करते कोई, आतम दरश सु निधि मन गोई ।
नव पदाख सप्त तत्व भावें, सम्यक रतनात्रय रुचि लावें ।३।
बारह तप दश धरम सुहावें, नित्य क्रिया कर आनंद पावें ।
आतम बोध जगो सुखदाई, कला बहत्तर विद्या आई ।४।
समझ ज्ञान नित नव-नव जागे, यौवन आ त्यों त्यों मुसकावे ।
बाल सुलभ बीती चपलाई, गंभीर सु धीर यौवन ताई ।५।

दोहा— यौवन काल सुहावनो, कांति रूप निखराय ।
शोभा लख रवि-शशि लजें, गौरव रतन अमाय ।६।

महावीर यौवन वपु विन्यास

चौपाई—श्रृंग शिखा सीशिखा सुहावे, लोक शिखर का बास बतावे ।
केश कृष्ण सोहत घुंघराले, पाप पुंज बाहिज अघकारे ।१।
माथे मुकुट सु मणि मय साजे, धरभ शिखर पट शोभा साजे ।
चिबुक कपाल कांति शशि मोहें, अष्टम भाव कला धर सोहें ।२।
इंद्र चाप सी मनहर भोहें, देखत नयन पदम उन मोहें ।
कानन कुंडल ज्योतिष मंडल, आनन दिपत चन्द्र आखंडल ।३।
ओष्ठ बिंब फल शुक सु नासिका, मुकता दंत शुभ्र चंद्रिका ।
केहरि वक्ष सु रतन मणि माला, छिटकत चंद्र छटा दुति शाला ।४।
उदर गुहा अति शोभा शालो, नाभी मध्य पदम करणाली ।
शाखा भुजा देव तरु मानो, दायक सुफल सुरक्ष धर जानो ।५।

दोहा— दीप्त नरबन की पदमवत, पन्ना दुति उनहार ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कटि केहरि शोभ रतन, कर धन नाग पाशार ।६।

शरीर शौष्ठव—

चौपाई—केथ थंभवत उरूवा सोहें, पुष्ट जानु तन भार बहो हैं ।
अरुण चरण लख कमल लजाने, सरवर छिपे सु शशि सकुचाने ।
द्युति तारिका नख शरणाई, वंद्य चरण त्रिभुवन हरषाई ।
अंग प्रत्यंग लखत मन मोहे, निरखत नयन विना मिटकोहै ।२।
निरखत पुनि पुनि तृप्ति न आवे, जगत सम्पदा वलि वलि जावे ।
कनक वरण शोभे छबि भारी, विश्वतेज परगट इकठारी ।३।
शुभ परमाणू जितने जग में, आय जुड़े सब ते विभु तन में ।
बाहर छबि अन्तर शुचिताई, सुगुण महत सब सहज सुहाई ।४।
शील दया शुभ तोष बतावे, बल विक्रम दृढ़ तेज दिपावे ।
श्रुति धृति शम दम कांति सु लावे, शौर्य धैर्य मृदु वाणी गावे ।५।

दोहा—
अनुपम रूप लहो प्रभू, रतन रूप गुणवान ।
गुण विवेक परमानिये, सुगुण क्षमा कर भान ।६।
निरखे दृग मन सोहनो, गौरव कांति अपार ।
आधि व्याधि बिन तन बनो, धात्रि रतन गुण धार ।७।

लक्षण व्यंजना—

चौपाई—खेद रोष मद राग न आने, बात-पित्त-कफ दोष न भाने ।
दिव्य काय धरमादिक साजा, धरम प्रभाव सुभगता साजा ।१।
श्री वृक्ष शंख पदम स्वरत्तिका चामर, पुराकुश तोरण चक्रा ।
छत्र ध्वजा सिंहासन मीता, फणि भुवि कुंभ युगल वारिधिता ।२।
सर विमान सुर युगल मनुज का, केहरि तोमर सुरसरि शक्रा ।
शशि रवि गोपुर सेंधव बिजना, माल मृदंग मेरू मुर लीना ।३।
वीणा नाग अभूषण बागा कांतित, कुंडल दीपक-जागा ।
वज्र रतन भू धान सु क्षत्रा, कमला सरस्वती महल नक्षत्रा ।४।
प्राप्त हार कनक सुरबेला, चूड़ा रतन महानिधि बेला ।
गाय गरूड़ चक्रुर जंबु वृक्षा, कमठ चिनाई गृह सिद्ध वृक्षा ।५।

दोहा—
शत इक वठ वमु लक्षणा, नौ शत व्यंजन भान ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सोहें रतन सो लक्षणा, दीप्त छबि शुभ थान ।६।

चौपाई—जग जितने शुभ चिन्ह गिनाये, शोभें विभु तन सबहिं अमाये।
प्रकृति तीर्थंकर सु पर भावे, शरण पाय तिण्ठें बड़ भागे ।१।
प्रिय हित मित सत वचन सुहाये, वर विवेक दुति विक्रम आगे।
धरम अवतार विरत सुपालें, मन वच तन सब दूषण टालें ।२।
करत ध्यान शुभ निरत विचारा, भोगोपभोग पुण्य सु धारा।
मति श्रुत अवधि ज्ञान अनुसारी, साधत साध्य सुगुण भन्डारी ।३।
वंश सु मनु जग जोति जगावें, मानवता शुभ पाठ पढ़ावें।
बल वैभव को गौरव देवें, दीन-दुखी का दुखहर लेवें ।४।
अजुव्रत धरें कर्म षट साधें, श्रावक श्रेष्ठ सु सम्यक लाधें।
निज गुण जोति बढ़त सुख माने, धरमा-धरमी मरम पिछाने ।५।

दोहा— मन काया आकुल-विगत, नहि निदान दुख लेश।
लखत रतन असफल सरब, राग रोष मद क्लेश ।६।

पाणि ग्रहण चर्चा

चोपाई—अधितम श्री यौवन दमकावे, सुबुधि काँति बल काया धावे।
उमगत गौरव लख ललचाके, सरसिज चरण नमत पद जाके ।१।
नृपति भेंट ले आ शिर नावें, वर गुण हित वर सकल सुभावें।
विनती मात तात प्रति करते, सुत पाणि ग्रहण आश वरते।
निरख विरति सुत सुख जगमाँहो, मोह राग उर दरशत नाहीं
कैसे सुत को कह समझायें, उठत हूक मन दचनन आवें
मारग उभय ओर नहिं नीके, ललित उगलत पीराजी के।
प्रबल मोह अति ज्ञानी मोहे, अनहित सुहित लगत भल सोहे
कहत विराग प्रबल भय आवे, नयनन सुख सोही मन भावे।
जग सुरीति उर नाहिं भुलावे, चिग निज-पथ को सुख पावे।

दोहा— गृह कुलको अति मोहमन, कहत वचन सकुचाय
सुगुण चन्द्र जग काय भय, मन लख रतन भ्रमाय ।१।

मातृ-वेदना-बाल वृंद वार्ता

चौपाई—चिंता निश दिन माता आवे, चैन न निशि दिन सावन पावे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वधू सु निरखन मन ललकावे, विना यतन शुभ घड़ी न आवे ।१।
पूछत सखा सुवन प्रति ऐसे, सधे वत्स गृह भार न मोसे ।
गृह-स्वामिन भामनि गृह लाओ, काको कहुं हाँ तुमहिं बताओ ।२।
निरखो चित्र पट ये अति प्यारे, सुभग कांति नयना रतनारे ।
शील धरम कुल संपति साजा, सोहत वैभव बड़ महराजा ।३।
करनो स्वागत तुम मन चाहें, आज्ञा धारण शिर ललचाहें ।
वरध मान उर की तुम जानो, सब कहो जैसी सोइ मानें ।४।
मेरे महावीर आधारा, कोई अवरन वासे प्यारा ।
सबहिं कही मेरी मन माने, मौन सु इसमें पूरण ठाने ।५।
वद्ध तीर्थेश्वर आदि जानो, गहे राज गृह तीरथ भानो ।
निज कर तब विधि पूरण करके, चाह करे जो हिय अनुसरके ।६।

दोहा— बृद्ध पनों हमरो लखो, चाह न उरहिं अमाय ।
पौन्न रतन आंखन लखों, जनम सफल हो माय ।७।

मित्र अनुभूति मातृ संदेश

चौपाई—मृदुल सखा वच विनत सु गाता, विनय हमारी सुनो सुमाता ।
संग में रहें सदा सु जानो, अंतर मित्र अभि न उरमानो ।१।
साथी युगल भये बहुतेरे, चाहत सब यों ऐरे-फ़ेरे ।
महावीर सुनते टरकावें, एक कान सुन दूजे उड़ावें ।२।
सार न काया जग में कोई, अशुचि अमावन थिर ना होई ।
ममत कीच फसत भ्रम धारे, रतन शिरोमणि जीवन हारे ।३।
जग के नाते भवदधि भरना, इष्ट लगे भव सागर तरना ।
सकल स्वतंत्र नहिं अनुचारी, आशा करूंन मैं जग बारी ।४।
बड़ी भूल कछु मेरी भानीं, लखो नेह मेरो मुद हानी ।
धरम मित्र सदा सब हितदाई, सेयो धरम पंथ प्रिय भाई ।५।

दोहा— निज गुण निज अंतर सजो, परकी तज के आस ।
सिद्ध सुरूप रतन भजो, परवशता दुख फांस ।६।

बाल-निवेदन

चौपाई—धीरज कछु दिन माता राखो, पूरण तत्पर तुम सब साखो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सफल यत्न फल जैसे आहै, माता करण प्रथम सुन पाहै ।१।
करन बात कछु वीरन देहैं, क्षण में पलट-उलट समझे हैं ।
आसन हम सब फिर भी छोड़ें, छेड़त चरचा मुख ना मोड़े ।२।
बहुतक है विभु ज्ञानी जानो, मिलकर हम सब्र ओछे मानो ।
कहाँ विराग युं इसवय लाये, आनंद सरग नहिं मन भाये ।३।
निश्चल निजानंद सुख मानें, सुख परवश दुख रूप बखानें ।
आतम चरचा सन्मति रीती, जग की प्रति बतावत भीती ।४।
सुख जग में ना कोई शरणा, नाहक फंस क्यों पचपच मरना ।
जगत द्वंद आकुल तालावें, आकुलता दुख मूल बतावें ।५।

दोहा— सुखा भास फूलो जगत, दुख वेदन अधिभार ।
सुख बिन आकुलता रतन, निरत जगत सुख सार ।६।

चौपाई—सब चाहत हम उर सुन माता, गृह शोभे गृहणी सुखदाता ।
औसर सु अनबेषत तत्परा, इच्छित हो सुपरा सत्वरा ।१।
माता क्षोभ सकल पहिचाने, पर बसाय विन, सकुचित आने ।
सखी सहेली सब पुरबासी, काह हरो नहिं; तात उदासी ।२।
देत उलहना माता सबको, महा मोह धर ना सुख जनको ।
चिंतित होकर नृप रह जावें, वर इच्छुक बात न बहकावें ।३।
मन में उठत टीस अतिभारी, निकसे शल्यन चुभे दुखारी ।
विभु वर कान परी कछु चरचा, सुख पथ सांचे देवें परचा ।४।
अशुचि सुदेह घिनोनी मैली, धोये क्षीरोदधि तेब मैली ।
वेदन जहाँ तहाँ उपचारा, औषधि व्याधि बिना बेकारा ।५।

दोहा— नारी जग जंजाल, प्रबल राग मोही वरै ।
विवश फिरत वेहाल, रतन सुखी जग दुख हरै ।६।

तप-कल्याणक

दोहा— नमत स्वरूपा चरण को, निज सुख रूप समाय ।
बाधा पर की भव मिटे, नमत रतन शिरनाय ॥

महावीर चिंतना

चौपाई—सुख कारज करते सुख आवे, उल्टे मारग जिय दुख पावे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्रव्य स्वतंत्र स्वयम् सुख राशी, परकृत योग विकृत जगवासी ।१।
धरे विकृति निज चेतन बाधे, आकुलित जगत दुख लाधे ।
स्वातम सच्चा सुख जग सोई, सुखी परम परमातम होई ।२।
स्वातम विस्मृति से जग जानो, चिंतामणि तज काँच प्रमानो ।
आत्म रमणता निस्पृह पावे, संस्कारता अति श्रम आवे ।३।
निजानंद उर जब उमगावें, निमित स्वयं तैसे बन आवे ।
वैभव आदिक सरब पसारा, विन अनुभूति भार दुख कारा ।४।
सुख के सब मैं साधन पाये, विन आकाँक्षा यत्न सु आये ।
इनमें सुख ना आत्म सु पायो, सब सुहात सब जीव अमायो ।५।
सोचत स्मरण बहुतक आये, पूरब भव सब आ दरशाये ।
लागो भय कर सब विन सारा, आतम एक चिदानंद प्यारा ।६।

दोहा— बरस तीस यों हो गये, लब्धि जगी नहिं काल ।
चेतो चेतन रतन अब, आगे वृद्ध कराल ।७।

चौपाई—चिंतत यों निज रस छलकायो, प्रगटो स्वबल सुख दरशायो ।
पुर्व भवान्तर जु तन पाये, स्मृति पटल सो सब उभराये ।१।
निज बल कैसे भ्रम वश खोयो, बहु जग भ्रमते भार सु ढोयो ।
निज बल पायो दुख विलगायो, सुख भायो सुख साधन लायो ।
निज बल को अब शीघ्र सँजोऊं, महत कार्य बिन विरथा खोऊं ।
मोह जयूं रतनात्रय धासू, परमानंद दशा विस्तासूं ।३।
गये काल नहि पाछे आवे, जल सरिता उद गम नहिं धावे ।
ऐतो समय सु विरथा गोयो, स्वात्म सुधा बिन सुखना जोयो ।४।
वासु पूज धनि मल्लि सु नेमा, लहे षाश्वं सुख आतम क्षेमा ।
बाल ब्रह्म चारी गुण धोरा, यौवन तप-तप निजरस वीरा ।५।

दोहा— करना हित तप धर बड़ो, सु आयु अलप शरीर ।
चिदानन्द सँयम साजो, सदा रतन सुख क्षीर ।६।

चौपाई—अलप आयु पा काल गवाँवें, सँयम रतन न शठ पावें ।
ज्ञानी हो मारग नहिं लागे, अज्ञानी भोले जु दुख पागें ।१।
नयनवान हो कूप जु परते, नयन भार निष्फल मुख धरते ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन जाने हों जो अपराधा, ज्ञान प्रभाव टले जग बाधा ।२।
बन ज्ञानी जो पाप कमावें, वज्र लेप हो जिय चिपटावें ।
मोह पाप का बाप सु जानो, सँतति राग रोष तस मानो ।३।
इन वश भ्रमकर अद्य उपजाते, दुरगति अनन्त काल भ्रमाते ।
स्वपर भेद सु जीव पिछाने, करम उपाधि बिन आतम भाने ।४।
सफल ज्ञान जो करम नशावे, सँपति वह जु सौख्य बढ़ावे ।
नर तन सफल मोक्ष सुख भरना, सदा काल नहिं नर अवतरना ।५।

दोहा— ज्ञान सफल सँयम सजे, जग का तजना भार ।
सन्मुख होना मोक्ष के, दीक्षा रतन संवार ।६।

चौपाई—धन यौवन गृह ममत निवारें, विरति भाव अघ मोह विदारें ।
गृह वासी नहिं ममत निवारे, राग रोष धर करम संवारे ।१।
मुकति महा सुख सो नहिं पावे, विना मोक्ष भव सागर धावे ।
जीवन विफल विषय गह होवे, यौवन मद्य पिये बुधि खोवे ।२।
कामदेव वश जग जिय नाचे, अवश अशुचि मन तिय तन राचे ।
दुख की खानि जगत दुख बेली, विषय विकार हलाहल थैली ।३।
बाल काल विद्या गुण धारें, संयम तप यौवन अवधारें ।
वृद्ध पने गहते संन्यासा, मुकन होंय नाशें भव फांसा ।४।
अज्ञ सुबाल तरुण मद धाई, शिथिल वृद्ध पन जनम गवांई ।
आतम सुख को जो तुम चाहो, उर विवेक तप घोर उमाहो ।५।

दोहा— अनुभव निज आतम जगो, मिटी भोग भव प्रीति ।
निजानंद रवि जग मगो, जीत रतन परतीत ।६।

चौपाई—वर्धित वर्धमान उजयारो, विघट महातम मोह अंधयारो ।
निज बल प्रगट निजातम भासो, कारागृह सम गुह दुख वासो ।१।
सुजन समाज राज रखवारे, धर सु प्रीति निज करज सवांरे ।
इनमें फंसे धंसें जग माहीं, निज आतम सुख मुकति नाहीं ।२।
काल लब्धि शुभ अवसर आयो, उमगो हृदय रत्नात्रय भायो ।
सँचेग विवेक सुभव प्रतापे, जग निज जानो अब पर भावे ।३।
सुजन इष्ट सँगी सुख दाती, विस्मृत करण आतम गाती ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0:In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोह-कषायी भ्रमतम सोवे, बिना सँवेग नहिं मुनि होवे ।४।
शुद्धातम को स्वाद न आवे, काय क्लेश कर मुक्ति न पावे ।
ठग वंचक बहु भेष बनावें, बूड़ें भवदधि और डुबावें ।५।

दोहा— सरधा ज्ञान चारित्र त्रय, मनके रोकें वेग ।
निजानंद अमृत सुमयी, विमल रतन सँवेग ।६।

चौपाई—वर्धमान दृढ़ निश्चय भारी, जगकर भोग रोग अघकारी ।
जग में थिर नहिं कोई करणा, शरण सहायन धन जन वरणा ।१।
दुखकर भरो जगत व्यौहारा, जीव अकेलो बिना अधारा ।
काया अपनी अपनी नाहीं, कोई किसी का जग ठाहीं ? ।२।
काया अशुचि महामल धूरी, याको नेह महा दुख सूरी ।
कायाग्य को सौरभ येही, संयम सजो बनो नहिं मोही ।३।
वस कर गृह सँयम नहिं होवे, ध्यान सुतप वन माँही भेवे ।
काया जग को नेह न तोड़े, निश्चय सुजन सु आपहि छोड़े ।
यातें याको पाय सँयोगा, कर लीजे तप करनो योगा ।
जानो याको यही सुभावा, कारज साधे साधत दावा ।५।

सोरठा— उपजो रतन विचार, ज्ञान लहर लहरत चले ।
पुनि पुनि विविध निखार, चित हृदय भव दुख दले ।६।

दोहा— ओंकार पद प्रणभकर, वीतरागी विज्ञान ।
जग भव दुख हर चन्द्रमा, निज स्वरूप अमतान ।

अनित्य भावना—

चौपाई—आयू जग की यमने घरी, बाल तरुण विरधा पन जेरी ।
काया व्याधि नाग की बामी, इंद्री सुख क्षण भंगुर नामी ।२।
श्रेष्ठ मनुज तन सब में मानो, बीते क्षण में काल समानो ।
थिर नहिं मनुवाँ बुद्धि सुधारी, सकल यत्न धर सुगुण भंडारी ।३।
कर निज अवधि सुपूरण नाशै, नाहिं सँरक्षित मृत्यु मुहाँसे ।
व्याधि मृत्यु के बादल आवें, वर्ति कपूर समजी उड़ जावें ।४।
अगनि रोग की काप जलावे, विकल जीव बंदी दुख पावे ।
नरक कषाय तपन धर जावे, निंद्य चपल कारज विनशावे ।५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऋद्धि सिद्धि वर चक्र सु जानो, मेघ चंचला अस्थिर भानो।
पुण्य प्रभाव मिले सब सोई, क्षण भंगुर जग थिर नहिं कोई।६।
थिरता का में मनहिं विचारो, सदा मोक्ष थिर अचल निहारो।
यौवन पाय धरम तप धरते, अनुपम सुख सज्जन हिय भरते।७।

दोहा— नित्य नहीं पर्याय है, द्रव्य शुद्ध थिर सोय।
निज में थिरता मोक्ष है, लेहु रतन अवलोय।८।

अशरण भावना

चौपाई—शरण ना जग में कोई जानो, औषधि मंत्र तंत्र बल खानो।
शक्र नरेन्द्र चक्रि न कोई, सिद्धि ऋद्धि मणि मुक्ता लोई।१।
विद्या बल कछु काम न आवे, मरण शरण नहिं जगत बचावे।
ढूंढ़त शरण मरण सब पावें, करत विलाप न निज बल पावें।२।
शरण धरम इक ही जग माहीं, शरण तासु भय मृत्यु सु नाहीं।
आत सुगुरू श्री जिन वाणी, स्वबल दर्शक शिव सुखदानी।३।
व्रत रतनात्रय धरम सु गाये, अघतम भंजक सब सुख लाये।
परमेष्ठी भव सिंधु तिरावे, परमातम पद को उपजावे।४।
आप समान सबन को करते, निंद्य दैन हर सब सुख भरते।
द्वेषी रागी पाप बधावें, कुगति द्वार भव सिंधु डुबावें।५।

दोहा— धरम ऐक जग शरण लख, श्रेष्ठ रतन सुख देय।
शरण अन्य जग भ्रम भरो, शरण अपनयो खेय।

संसार भावना—

चौपाई—चौगति सागर दुख को जानो, सौख्य न इनमें रंचक मानो।
जीव भ्रमे भ्रम वश सुख माने, मोह महामद पिय भुलाने।१।
कूकर शुष्क हाड चबावे, छिदे तालु निज स्वाद अनावे।
औंधी समझ परी परभावे, मृग-मरीचका सुख पर आवे।२।
परवश परे भार बहु ढोये, निज शकती सुख वृथा खोये।
पर विष गये अपन पो भासे, सहज बुद्धि सुख बहु विधि जासे।
चिदानन्द-सुख जीव पिछाने. बिन उपाधि निज माँहि समाने।
शुद्ध निजातम रतन सँजोवे, चउगति फिरन सहज जी खोवे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विषय राग भव दुक्ख बढ़ावें, लोक तीन भ्रम छोर न पावें ।
जग स्वरूप यों रहे भुलाये, धन्य भाग अब तीरथ पाये ।५।

दोहा— प्रमाद योग मिथ्यात् वश, अविरति के परभाव ।
सदा चतुरुंगति दुख भरे, जगत रतन अटकाव ।६।

एकत्व भावना—

चौपाई—लोक तीन जग जीव अकेला, जन्मत मरत भरत दुख भेला ।
निज-निज करणी फल सब पावें, बिछुड़े-मिलें मिले छुट जावें ।१।
सुख दुख साथी जग नहिं कोई, व्याधि उपाधि न बाटें कोई ।
करम धरम सब स्वयं कमावे, बनें भाव जिमि फल तसु पावें ।२।
सुख अनुभव सुरगों में आवे, नरक पाय दुख अति विलखावे ।
मति तिर्यंच दुख सुख बहु पावें, जीव अकेला आवे जावे ।३।
नर कुटुम्ब साथी कहलावे, पूर्व सुकरणी योग चुकावें ।
निज कृत आवें निज कृत जावें, निज निज काल पाय बिलगावें ।४।
परणति जैसी क्षेत्र सु पावे, पर कोई परना द्रव्य मिलावे ।
मोह उदय जिय निज कर माने, लख प्रत्यक्ष पर भ्रमता ठाने ।५।

दोहा— धरम सहाई सब समे, सकल सौख रतन दातार ।
सदा सगेलो भ्रम वमे, निजानंद आधार ।६।

अन्यत्व भावना

चौपाई—काया-जीव दिखे इक सारा, आतम परसे भासें बारा ।
संग होई मृत्यु-भये न जावे, जीव अकेला भरमत धावे ।१।
नहिं तन अपना क्या संगी, शुद्ध सुचेतन लोक शतरंगी ।
द्रव्य-भाव मन पुद्गल नाते, निज नहिं राग रोष पर माते ।२।
काया वच सुख दुख जड़ रूपा, चिदानंद चैतन्य अरूपा ।
अमल रतनात्रय चेतन धारे, चित योग पर झूठ विचारे ।३।
निज रस रच पर ममत निवारो, का राचो इन छूटन हारो ।
ध्यान धरत इमि तजे सुधीरा, महायो अरू ज्ञानी बीरा ।४।
गृह संपति का होवे साथी, देह न अपनी गृह फुटपाथी ।
निज परयय सम तन अनुकूला, लगें भले भूले भ्रम फूला ।५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा— पुद्गल पुद्गल के सगे, चेतन चेतन भान।
अज्ञ रतन पुद्गल पगे, याकर नहिं निखान।६।

अशुचि भावना

चौपाई—मल कर भई महा मल गैली, मल की खानि काय घिन घैली।
मल घट रस श्रोणित मज्जेली, मांस अस्थि नस चर्म मढेली।१।
मेद वीर्य धर दुरगंध थैली, मुत्र पुरीष कफ राधिक जैली।
अशुचि अपावन निरख न भावे, उघड़त चाम लखत भय लावे।२।
सज्जन चेतन बंदी तामें, पावत दुख अति मुर्च्छि दशा में।
परवश रच पर भ्रमता भारी, जीरण कुटी काय मल धारी।३।
क्षुधा तृषा भय व्याधि जरानी, अनल दहत बहु शिव सुख घानी।
काम कषाय राग रोषारे, अहि झंकत भयकर कण धारे।४।
गंध सुगंधित लेप सजाये, वपु क्रदैघ्न दे गंध गंवाये।
पोषे अति दुख दोष सजे है, सुर शिव सुख तपते येदै है।५।

दोहा— काया अशुचि स्वाभाव, चेतन शुचि रूप।
चेतन तप बल परखिये, सदा रतन चिद्रूप।६।

आश्रव भावना

चौपाई—मिथ्या अव्रत-अलस बसाये, आवत कर्म सदा बहु भाये।
कषे पच्चीस सु योग मिलाये, रुकें न रोके चेतन छाये।१।
पानीं छेद नाव भर जाये, वाढ़ै नीर नग्व डुब जाये।
आश्रव भवदधि जीव डुबाबे, डूबत उमगत जिय दुख पाये।२।
चंचल योग प्रबलता लाये, जनम मरण दुख जीव उठाये।
चहुंगति भ्रमते ओर न आये, दीन भयो अज्ञ आश्रव भाये।३।
करम कोर भव चक्र चलाये, वायु जगोदधि नाव बहाये।
करत उपाय सुमग पं आये, कहाँ गमाय रतन पछताये।४।
चारित्र संयम तप सु जगाये, मिले मोक्ष सद ज्ञान उपाये।
स्वातम रवि निजञ्चावि दमकाये, गये मोह सब शोक पलाये।५।

दोहा— नर भाव उत्तम कुल रतन, आयु अरोग सुज्ञान।
सफलो रतनात्रय यतन, विमल करन भव प्राण।६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संबर भावना—

चौपाई—कर्माश्रव संवर रुकवावे, करम रुकत जिय सुख अति पावे।
इंद्रादिक पद मोक्ष सुलावे, पाये निज पद जीव सुहावे ।१।
चारित तेरह विधि मन भावे, बारह भावन गुपति सधावे।
वृष दश परिषह बाइस गाये, सामायिक आचार समाये ।२।
आगम पाठ करम रुकवाये, धरम शुकल युग ध्यान बढ़ाये।
नाव छिद्र मध डाँट लगाये, पानी आवन राहन पाये ।३।
शम दम बल यों करमन आवे, परम आनंद जीव सु पावे।
चिदानन्द अनुपम रस छाये, मिट परवशता जिय हरषाये ।४।
शिवका संवर द्वार दिखाये, सकल सुक्ख जग के पछयाये।
मनुजत्व विकस मन उमगाये, अवसर रतन संभल सुमाये ।५।

दोहा— करम रुकत बोझा घटे, पावे जिय सुख चैन।
मुगुण रोध खाई पटे, ज्योति रतन दिन रैन ।६।

निर्जरा भावना—

चौपाई—आत्म रमणता योग सधावे, संचित पूरब करम झरावे।
पंच महाव्रत समिति सु पाये, इंद्रिय जय स्व विजय लखाये ।१।
योग निरोध विमलता लाये, चढ़ गुण श्रेणी करम खिपाये।
करम बंध बहु तोड़ गिराये, निराबाध सुख अविचल आये ।२।
चिदानन्द बल तप दरशाये, अविपाक सु निरंजरता जु पाये।
आत्म रमणता सुख रस छाये, अनंत चतुष्टय जिय, प्रगटाये ।३।
योगि अरु तीर्थेश्वर ध्यावें, महा मोक्ष पद यासों पावें।
अपने आप करम झर जावें, नव नव नित सु आय बधावें ।४।
सविपाक यह निरजरा सोई, सुखहारक भव सिंधु समोई।
अविपाक धरते जु बड़ भागी, शिव साधक भव भोग विरागी ।५।

दोहा— करम हरे निज थिर करे, सुख अविचल दरशाय।
रतन निरजरा शिव वरे, गुण अनंत प्रगटाय ।६।

लोक भावना

चौपाई—द्रव्य जहां षट लोक कहावे, ऊरध मध्य अधो कहलावे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अविनाशी आकृत्रिम सोहे, चौदह राज जिय थल मोहे ।१।
अधो भाग भू नारक मानो, पटल उनचास सप्त सु ठानो ।
बिल चौरासी लख कहलाये, शीत ताप दुख अशुभ समाये ।२।
अज्ञ मिथ्यात कषाय प्रभावें, मार काट भय-दुख उपजावें ।
नाभि लोक मध जंबु द्वीपा, लवण आदि वारिधि बहु रूपा ।३।
पांचो मेर कुलाचल तीसा, गजदंत वीस वक्ष र वनीता ।
शतक असी सब शृंग कहावें, इक्ष्वाकार चतुष्टय भावें ।४।
मानुषोत्तर परवत भारी, मनु अगम्य आगम अनुसारी ।
दश कुरु क्षेत्र सिद्धारथ वृक्षा, नगर देश सु सत्तर अच्छा ।५।
करम भूमि सब पंद्रह मानो, मोक्ष गमन शुभ क्षेत्र सुहानो ।
नद सरिता सर कुंड समाये, श्री आदिक देवी मन भाये ।६।

दोहा— सप्त कोटि लक्ष बहत्तर, श्री जिन भवन पताल ।
अट्ठावन शत चार मध्य, नमें रतन त्रै काल ।७।

चौपाई—अरुण इन्दु ग्रह पुण्य सुतारे, खग मंडल मध लोक संवारे ।
लाख चुरासी सहस संतावना, मिल तेईस अक्रीतमा भवना ।१।
कंचन मणि मय रत्न प्रमानो, लोक त्रितय जिन भवन सुमानो ।
ऊरध राजू सात सुहावे, सुरग सुधर्म तरु कल्प कहावे ।२।
ग्रैवक अनु दिश नव नव गाये, पंचोत्तर थल शिव मन भाये ।
सुरग पटल सब त्रेसठ मानो, लक्ष चौरासी देव विमानो ।३।
सहस संतानवे सु तेराही, शीश समान धरणि आगाही ।
पूरण सुख इन्द्रिय सब जानो, उपजत धरमी सुख परिधानो ।४।
जीव भ्रमे करमन के घेरे, लोक शिखर विन करम सु प्रेरे ।
लक्ष पेंतालिस शिल चौड़ाई, द्वादश योजन मोटी गाई ।५।
मनुज क्षेत्र सम लांबी मानो, सिद्ध शिला मणि रतन सु मानो ।
जीव तिलोक विषे भरमावे, करम निवार सिद्ध अचलावे ।

दोहा— अनंत चतुष्टय युक्त सु, परम सिद्ध भगवान ।
अविनाशी रमते रतन, शिव थल चिद् अमलान ।७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बोधि दुर्लभ भावना—

चौपाई—चौदह राजू लोक प्रमानो, जग त्रय बोधि सुबिन भटकानो ।
अनेक उपाधि धरे सु राचे, सुख दुख भुजंत भव जग माचे ।१।
विसर आपको रूप भ्रमाये, गुण शुचातम नहिं हृदय जगाये ।
धर जड़ संगति परवश परके, आतम निज रस चखो न वढ़के ।२।
चारों गति के रूप सजाये, साध स्वांग निज बोध गमाये ।
शुभ गति मानुष करम सु भूमी, उत्तम कुल वय आयु सु चूमी ।३।
सब पर्याप्ति निरोग सुबुद्धी, मंद राग नहिं मिथ्यात अबुद्धि ।
शर्ण जिनेश्वर की शुभ वाणी, सम्यक सरधा ज्ञान सु पाणी ।४।
ऐक ऐक ही कठिन अमानो, सकल महा मुश्किल सब पानो ।
विवेक सुज्ञान चरण सु पाये, अविचल अविनाशी निज भाये ।५।

दोहा— कठिन सुलभ जग में सभी, मिलो अनन्ती बार ।
बोधि रतन पायो नहिं, डुबो भवाब्धि धार ।६।

धर्म भावना—

चौपाई—जग सुख धरम राग सब लावे, बिना राग शिव अति सुख आवे ।
धरम बिना भव जग दुख ढोवे, पशुनर शल्य सहित दिन खोवे ।१।
नरभव लाहो धरमी लेवे, बिना धरम तन योंही खोवे ।
धरम रतनत्र य शुद्ध कहावे, धरम दश लक्षण आत्म दिपावे ।२।
चारित्र पूरण धरम कहावे, धरम अहिंसा शरण सुभावे ।
धारण योग सकल सुख करता, निजानन्द पंचम गति धरता ।३।
चिंतामणि चिंतत फल देवें, काम धेंनु सुर तरु मणि ऐवें ।
धरम सुधा सागर कहलावे, अचिंत अचिंतित सुख सब लावे ।४।
दुरलभ वस्तु सुलभ हो जावे, धरम सु त्राता सुख उपजावे ।
उभय लोक पथ साथी होवे, धरम पाथेय दुख सु खोवे ।५।

दोहा— धरम बड़ो शम दम सहित, महा रतन सुखदाय ।
वर विवेक हितकर अमित, काटि करम शिव पाय ।६।
जयवंती परमात्मा, परम ज्ञान करतार ।
वीतराग हित कर सदा, सुख आनंत दातार ।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वीर दृढ़ निश्चय

चौपाई—मन चिंतत उर गुणित विचारा, आतम हित सुख सहज पसारा।
लोक महा दुख अचरज कारी, जीव भ्रमें चौरासी सारी।१।
जीव एकाकी भव भटकावे, शरण सहाय न जग में पावे।
सब में उत्तम नर तन सारो, धारो सँयम ज्ञान उजारो।२।
अवसर गये न यों ही आवे, महाभाग अति योग सधावे।
शुभकर साधन तन मन पाये, धरूं योग सुख आतम छाये।३।
बिसरत भटकत काल गमावें, गये समय पाछे पछतावें।
मैं अब बहु तक काल गमायो, धन्य भाग अब तीरथ आयो।४।
धारूं दीक्षा सब सुखकारी, मोह ताप भय नाशन हारी।
उत्तम ऐसो काल गमाऊं, कीनी भूल सु पुनि दुहराऊं।५।

दोहा— लगो जगत विड रूप सब, मन काया व्यापार।
अथिर लखो भव रतन अब, वर सँयम सुख द्वार।६।

लोकांतिक देवागम

चौपाई—चली समीर सुखद गुण माई, आत्म सुगंध उमग शुचिताई।
क्षण में ऊरध लोक समाई, सुर लौकांतिक रुच मन भाई।१।
पूरब भव अति ज्ञान उपायो, द्वादशाँग श्रुत कण्ठ लगायो।
महायोग मन योगी भाये, पूरब बंधन जग अटकाये।२।
बाल ब्रह्मचारी जग भीती, ऋद्धि विशेष नाहिं प्रीती।
ज्ञान जगो विभु भाव सु आये, वर नियोग पूरण उमगाये।३।
विजय श्री प्रभु मोह भगाये, धार हरष दिग सबसे धाये।
पूजन वसु विधि शुचिकर कीनी, बसु गुण दायक करमन छीनी।४।
देव धन्य तुम भली विचारी, लेओ दीक्षा करम निवारी।
वर विभूति ऋध ज्ञान सु पासे, सँयम बिन नहिं भव दुख नाशे।५।

दोहा— धन्य प्रभु जग धन्य हो, धर चारित्र अनुराग।
मोह जयी महावीर तुम, महारतन बड़ भाग।६।

स्तवन—

चौपाई—जग नायक विभु तुम महावीरा, जगत गुरु ज्ञायक गुण धीरा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वयं प्रबुद्ध सु बुद्धिक स्वामी, सकल तत्व दरशक वीज्ञानो ।
शुभ विचार विभु तुमने कीना, नर भव सुयश सार जग लीना ।
थारी थुति कर सक हम नाहीं, अरुण उपासन दीपक लाहीं ।२।
सर्व पदारथ शेष प्रकाशे, शशि पुण्य ग्रह ज्योतित तासे ।
ज्ञान रवि प्रभु तत्व प्रकाशी, परम ब्रह्म होहू अविनाशी ।३।
अवसर भक्ति दरश विभु पाके, विनय विनत करते गुण गाके ।
त्रिविध ज्ञान धारक विभु स्वामी, कैसे बोध सकें गुण धामी ।४।
पथ रवि दर्शक दीप का धरिये, गुण तुम गुणत भवोदधि तरिये ।
कर सनाथ जग हित अब कीजे, निज पर हितकर मारग सीझे ।५।

दोहा— सुमग देहु दरशाय, बूड़त भवदधि जीव को ।
एकहि प्रभू सहाय, जतन रतन शिव गमन को ।६'

चौपाई—शिव उपदेश तिहारो सीढ़ी, धरि हैं रतनात्रय भवि पीढ़ी ।
इष्ट अनिष्ट सुबुधि पहिचाने, सखारथ सिधि गमन प्रमाने ।१।
सबके संबल दाता स्वामी, दीनानाथ सहाय अकामी ।
पापी पाप तजें सुख पावें, कामी काम जयो कहलावें ।२।
मोह शिखर को वज्र समाना, सुबुधि होंय विभु आप समाना ।
षोडष कारण भावन भावे, धरम तीर्थंकर और बनावें ।३।
मोह सुभट तुम निरखत कांपे, इंद्रिय विषय कषाय न व्यापे ।
दुर्जय परिषह सब विभु जीतो, घाती छाति चतुष्टय मीतो ।४।
काल लब्धि फल उत्तम आया, मुकति यान विभु भवि मन भाया ।
साध शीघ्र अब यत्न संभालो, डूबत भवदधि जीव निकालो ।५।

दोहा— असि विराग धर कर विषे, उर विवेक गुण माल ।
करम उरग निज बल त्रमें, लख त्रिरतन मराल ।६।

महावीर स्तुति

चौपाई—नमन वीर विभु जग उद्धारक, मुकति रमावर श्रेष्ठ सु साधक ।
निस्पृह महाधीर निष्कामू पातक हारी, सहस प्रणामूं ।१।
बाल ब्रह्म तेजस्वी धीर, अविनाशी अविचल महावीर ।
योगी जग बंधू गुरु स्वामी, परम धरम धर अमल अकामी ।२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शक्ति विधाता बल तुम देओ, सेवक अपनो 'वनु लख लेओ।
थुती तुमारी देवे साता, निजानंद सुख देन विधाता ।३।
जग की नश्वर परकृत माया, आत्म सुबल सुकृत गुण भाया।
धन्य घड़ी विभु कब हम पावें प्रभु समान स्वबल प्रगटावें ।४।
धर तप आगे करम खिपायें, अविचल अविकारी पद पायें।
ऐसो मारग विभू बनाओ, दीन अबल उर साहस लाओ ।५।

दोहा— लौकांतिख कर थुति नमें, सगुण भक्ति अनुराग।
नमत रतन भवदधि में, चिद् स्वरूप चित पाग ।६।

चौपाई—नम लौकांतिक धाम सिधारे, कर नियोग वरु आत्म सभारे।
अभिरुचि महावीर लख सारी, सफल कामना झटिति तुमारी ।१।
ऐसे भाव सदा उर लाओ, पाप पुन्य बिन शिव फल पाओ।
गये लौकांतिक मन हरषाके, गुणत प्रभू गुण मोद सुपाके ।२।
नाद महा देवन गृह भारो, अवधि जान मुद वीर उजारो।
माना वाहन सज सब आये, सह परिवार इंद्र सब आये ।३।
जय जय करत वीर पद नाये, मोदित निरख शाँत रस छाये।
मणि सिंहासन अति दुति कारी, वर्धमान छवि अरुण उन्हारी ।४।
नमें विभु पद प्रदिक्षण कीनी, गीत साज रस भावत भीनी।
कंचन कलश प्रभु नहवाये, सहस आठ सज गंध मिलाये ।५।
अंबरा भरण अलंकृत कीना, दिव्य-माल गल गंधित दीना।
लखत बनत छबि तेज समाई, थकें शेष शशि शक्र सुनाई ।६।

दोहा— निष्क्रमणोत्सव सु कियो, सकल इन्द्र परिवार।
अद्भुत थिर विस्मित हियो, लखत रतन नर नार ।७।

सांत्वना बोध वीरका

चौपाई—धैर्य सबन को विभु दीना, नर भव सार प्रगट जग चीन्हा।
धरम शरण सब जगती माँहीं, जासम अवर न दूजो काँहीं ।१।
जन्म सुफल अपनो जो चाहो, जगत भार तज जनम सराहो।
धन्य मात पितु बालक ऐसे, संपति छाँडें तृणवत ऐसे ।२।
जिह संपति नर सुर ललचावें, मचा रार सब धर्म भुलावे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लड़ें मरें दुरगति उपजावें, अयश काज उर नाहिं लजावें ।३।
पूजा दान तजत धन धरते, आर्त रौद्र दो ध्यान न मरते ।
करत कुगति हित सकल तमाशे, नरक तिर्यंच विषे दुख तासे ।४।
साथ नहीं भव संपति जावे, यौवन धन तन क्षणक नशावे ।
महा पुण्य कर या तन पावें, माचत यार रसस्वयं नशावें ।५।
वर विवेक जो इसके त्यागें, स्वबल पाय सु मोक्ष उपावें ।
दान धरम धर कर बटवारा, शील सँतोष सु गति पग धारा ।६।

दोहा—
नाते जग संपति भये, बिन सँपति नहिं पूंछ ।
प्राण रतन सँपति जये, जगे ज्ञान सब छूंछ ।७।
लाहो लीजो जनम को, जग माया तज नेह ।
पर के नाते तोड़ के, सफल रतन नर देह ।८।

चौपाई—मात तात सब आनंद धारो, सफल भयो सारो परिवारो ।
धन्य भयो कुल निधियाँ पाईं, नगर काल तुम धन्य सदाहीं ।१।
अवसर ऐसो मुश्किल आवे, धरम सुरथ निज बाँह चलावे ।
धन्य मात पितु सुत आशीषें, आतम धरम सुहित शिशु शीषें ।२।
मन मो दृढ़ सँयम अनुरागो, अबतो मोक्ष वरण चित पागो ।
मन वच काय विवेक विचारें, शम दम तें वसु करम उजारूं ।४।
क्षमो सकल मेरे अपराधा, अब तुम क्षमो सु भव भय बाधा ।
स्वातम आनंद अविचल लाऊं, ऐसो तब तक योग सजाऊं ।४।
करिहों नाहीं धरम विपरीती, सब राखो मन में परतीती ।
क्षमो सकल जन मेरे प्यारे, धरो धर्म दृढ़ आनंद धारे ।५।

दोहा—
सब पैहै मेरी क्षमा, सकल क्षमो निज मान ।
मन चाहो सब लेहु अब, आत्म रतन धर ध्यान ।६।
मोही मन सुनकर रतन, काँति अयन वपु म्लान ।
उमगे धरम सुवीर मन, जय जयकर सुखदान ।७।
लई विदा विभु वीर ने, उमग न हृदय समाय ।
निज रस छलके रतन सुख, देत रतन बढ़ जाय ।८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महाभि निष्क्रमण—

चौपाई—सुगम सुपथ विभु सबहिं बताया, जगत जाल वपु झूठी माया।
शिविका चंद्र प्रभा सुरराया, विनत विनय वर विभु पधराया।
दिव्या भरण सहित विभु सोहें, नंख दुति रवि शशि चरनन मों
मुदित अति शकेन्द्र सुधाया, यान माँहि शुभ हाथ लगाया।
ठहरो ! ठहरो ! शोर सुनाया, चकित सुरेंद्र सु अचरज
सब कल्याणक उत्सव करते, आज कौन विधि बाधा धरते।
दीक्षा धारक आगे आयो, सुन सुरेश मन में शरमायो।
मानुष योनि यही इक ऐसी, धारत मुद्रा श्री जिन जैसी।
सुन कह सुखति कोई आवो, ले विभूति सब मनु क्षण धावो।
कीजे झट ऐसो निखारो, सब हुलास मन आनंद कारो।
खगपति आ निज दाँव सँवारे, अधिकार सकस हृदय सु धा
गुण संपति वैभव अधिकारे, शिवका विभुवर धारन विचारे
गई सकुच भू गोचरि आगे, शिवका कर लें आनंद पागे।
अधिकारी यश जिनके कुलका, अनत अनत वह चाहें जिनका

दोहा— सप्त पेंड भू गोचरी, खगपति सप्त अकाश।
सुर सुरेन्द्र मिल सुचले, शिवि का रतन प्रकाश

शिविका गमन

चौपाई-छविकर शिव का सु इन्द्र सुहाना, अनुपम काँति सुरन दुति
नभ मडल भू छटो सुहाई, शोभा ताकी कहन न आई।
गान लेखनी तुच्छ न पावे, मन की उमग न शब्द बंधावे।
पुष्प वृष्टि सुर कर जय करते, वारिधि भव को अंजुलि भरते
शीत सलिल सुगंधा सुहाई, चली समीर सुखद मन भाई।
नभहिं दुन्दभि सुदेव बजावें, मोह जयीयश नाद सुनावें
जय। जय। आनंद। आनंद। भरते, वृद्धि वृद्धि सुर सुंदर
नृत देवाँगनि कला प्रसारें, गावें किन्नरि यश जय कारें।
दिग कुमारिका अरघ उतारें, मंगल थाल सु आरति धारें।
सज्जन सुगुण प्रीति उर धारें, धनि कुमार युव दीक्षा धारें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा— काम महाभट वश कियो, धन्यवीर पुरुषार्थ ।
पथ उत्तम श्रेणी लियो, साध रतन हित स्वार्थ ।

चौपाई—महावीर ही, समरथ ऐसे, मोह काम भट जीत सु पैठे ।
डंका तीन-लोक मधि जाको, कौन महाबल जीते ताको ।१।
प्रगट विराग भाव बल ऐसे, चित सुबुध मन वरणत जैसे ।
अन्तर अरि संवेग निवारे, पंचेन्द्री जय भोग उवारे ।२।
लोक तीन शुभ संपति जेती, चक्र विभूति तजें क्षण सेती ।
समता बिन संवेग न आवे, जग संवेग सु अथिर दिखावे ।३।
मोही मोह मगन सुख खोवें, कुटी जीर्ण में बेसुध सोवे ।
दान त्याग ताको का भावे, मीत-रीत वृष प्रीति भुलावे ।४।
अन्तकाल शिर धनु पछतावे, दुरगति पड़कर बहु दुख पावे ।
निज बल धीर वरि उर भासे, स्वातम ज्योति सु यत्न प्रकाशे ।५।

दोहा— करत परस्पर बात बहु, पहुंचे वन सब धाहिं ।
लखवो दीक्षा सुमणि अति, सभा रतन भवि माँहिं ।६।

मात पितृ मोह—

चौपाई—मोह वज्र हत तात सिहाये, वाणी मूख नहिं ओंठ सुखाये ।
धर अचरज उर आप भ्रमाये, अवसर मन भायो विसराये ।१।
शंका कांक्षा हित बल पाये, सागर भावन डुब उतराये ।
कदम वीर नहिं रुकें बढ़ाये, महावीर क्यों रुकें रुकाये ।२।
ज्ञानी लख जग काय सुभावा, स्वात्मानंद सुधातम चावा ।
दे अशीष उर शोक पलाई, जयो ! दर्शाओ ! पथ सुखदाई ।३।
वुद्धि सु उत्तम पुत्र परकाशी, शल्य आस बिन स्वयं विकासी ।
वृद्ध काल निज शकति हिरानी, पामर हीन दीन अघखानी ।४।
भावि होता हमने खोयो, पछतायो अब अटवीरा रोयो ।
मन को ऐसो दृढ़तर करना, शक्ति रहे तन तपको धरना ।५।
जान-मोह-भ्रम रूपक माता, निकसत वीर शून्य सब गाता ।
मूर्च्छा खाय गिरी भू मांही, व्याकुल सुध बुध तन की नाहीं ।६।
पर को जो संबोधन हारी, विमल ज्ञान उर शुचिता भारी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फूली सुत हित धरम समाई, दे अशीष अब भू विलखाई ।७।
परी भूमि अब विकलत ऐसे, मीन विकल जिमि जल दिन तैसे।
परिजन सेवक सारे आये, शृत उपचार सु मात जगाये ।८।

दोहा— वीर धीर अति वीर कह, लाल सुगुण उर माल।
देख तात तेरे विना, मात रतन बेहाल ।९।

मातृ-विलाप—

चौपाई—शुपक पवन ज्यों पत्रा उड़ाई, माता त्यों श्री काँति गमाई।
विना मूल ज्यों बेल सुखावे, वीर विना मन मात झुरावे ।१।
प्रवल मोह की यह अकुलाई, आशा बेलि गई झुलसाई।
गिरत पड़त उठ वन को चाली, गये वीर मग विन परिचाली ।२।
लखे लाल विन चैन न पावें, ओ माँ कह अब कौन बुलाये।
मेरा तन मन जीवन तूही, सब कुछ धन जन प्यारा तू ही ।३।
देखे तो विन भार दिखावें, जग मन आस राह उपजावे।
पूरो जीवन कैसे हो है, गत को उरको कैसे जै है ।४।
बड़ आधार ऐक तो ताता, आज भयो मो वाम विधाता।
कछु ना तुझसे कहने पाई, क्षणक बात में गई ठगाई ।५।
आ'शष तुझको दे नहिं पाई, कैसे पूता। दया भुलाई।
जग शोभा तोसों ठकुराई, मैंने खोई निधी कमाई ।६।

दोहा— पड़ी भूमि मुर्च्छित भई, अवसर चूको आज।
मो कही रतन न मानतो, करती निजकर साज ।७।
वेटा। बच्चा ऐकला, बालक वय सुकुमार।
विकट महावन बढ़ चला, असित रतन गुह द्वार ।८।

चौपाई—कोई भय जब करतो आहै, बातें ताको कौन बचा है।
शीत उष्ण वरषा बाधा, महा कहिन वन घोर अगाधा ।१।
मशक डाँस मक्षिकादिक प्राणी, पशू भयंकर तज नादानी।
वश में पच इंद्रिय कहुं होतीं ? ज्ञान ध्यान क्षण धीरज खोतीं ।२।
ऐसे कारण निश दिन आवें, उमग कवायें सुध विसरावें।
अंत काल ले नरकन जावें, गुरू बिन को सतपंथ दिखावें ।३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काम महाभट मोह जगावे, मनको थिरता कैसे भावे ।
निरख ऐकलो दुष्ट कुचाली, तोड़ें भेदें देवें गाली ।४।
दुठ सुभाव वश खेल रचावें, वनें ध्यान कैसे गुण आवें ।
बिना शय्यासन वनहिं अरक्षा, बिन सत संगति तममय सु वृक्षा ।५।

दोहा— करत रुदन कारुण्य कर, मात सु विलखत जात ।
निरख विकल नत, अश्रु झर सींच रतन मुख मात ।६।

महत्तर देवोगम

चौपाई—दृश्य कारुणिक करुणा गाई, विकल मात लख हृद उकसाई ।
देव महत्तर आ समझाये, ओ । तीर्थेश्वरी । क्यों अकुलाये ।१।
जगत गुरू विभु जग के स्वामी, बल अनन्त त्रिभुवन श्रुत नामी ।
सुपुत तिहारे आत्मान्वेषी, तारण तरण भवोदधि सेती ।२।
महामोह भट चूरन हारे, बाधें केहरि बांधन वारे ।
जग सागर में चमकृत तारे, क्रीड़त भवदधि पार उतारे ।३।
पुण्यवान जग समरथ शाली, नाहिं दीनता ? गौरव शाली ।
गृह में कल्यण रुकते कैसे, ज्ञान रतन धर विभु वर ऐसे ।४।
काया जग को मरम सु जाने, दृढ़ विराग उर लौट न आने ।
शोक महा दुख करत असाता, सार धरम गह लौटो माता ।५।

दोहा— अथिर रूप संसार लख, डर ज्ञानी हों दूर ।
इष्ट वियोगी अध जन, भरत रतन दुख भूर ।६।

चौपाई—ज्ञानवती तुम सो-हो माता, मेटो शोक सदा दुख दाता ।
घटो मोह चेतनता छाई, गई जोति फिर माता आई ।१।
अरुण विवेक हृदय प्रगटानो, शोक तिमिर तत्काल विलानो ।
महायोग सुत की मह माता, चिंते धरम प्रीति साता ।२।
परिजन भृत्य सु संग समुदाई, नाहिं शोक ना मोद भुलाई ।
चिंतत सुत गुण महिमा माने, परखो वाको परख न जाने ।३।
जन जन में जो रहो समाई, वासों आस जगत को आई ।
दया धरम को हो उजयारो, जये जगत को तारण हारो ।४।
मैंह न उरको मैं दे पाई, ना तो वाने शंक उठाई ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माह मगन रह रई ठगाई, सुगुण गंध घन मैंने पाई ।५।

दोहा— पुण्य सुगुण सुत ऊबरे, मात तात कुल लोक।
सुख दायक जग जीव को, ज्ञान रतन आलोक ।६।
माता निज गृह को गई, गृह तीरथ परमान।
निज पर हित जो बन सके, सफल रतन जनमान ।७।

दीक्षावन—

चौपाई—खंकावन लख सब हरषाये, वेलि-दुमादि सुखद सुहाये।
लदे सु वृक्ष फल फूलन सेती, शीतल छाया मनहर लेती ।१।
पुण्यवान पग जहं जहं जावें, दुख के कारण सुखद सुहावें।
महा सघन वन भारी अटवी, दुष्ट-क्रूर जी छाई पृथ्वी ।२।
पाप भार वह पाप समावें, स्वहित कारण काल न पावे।
अघ कर अघ भर योगी पावे, पूरब अघ निज करम झरावें ।३।
उत्तम ज्ञान वनी में पावें, उत्तम तप वृष दृढ़ता लावें।
अंत समाधि मरण सुख खाने, उभय लोक हित जीवन भाने ।४।
अमल अचल अविनाशी कोई, करम निवार मुकति सुख लेई।
चंद्रकांत मणि शिला सुहाई, शीतल कंदुक सम समताई ।५।
जल कण छिटके शोभा पावें, गंधित मुकता द्युति मन भावें।
शचि करत अमलोक चूरे, स्वस्तिक शुचित चहुं दिश पूरे ।६।

दोहा— मणि मंडप अच्छादि पट, ध्वजा रतन लहराय।
माल सुगंधित झूलतीं, लहर झूम बल खाय ।७।

महावीर दीक्षा

चौपाई—अष्ट सु मंगल द्रव्यें सोहें, देखत मन अति जनके मोहें।
उत्तर मुख विभु राजत ऐसे, जन नभ-मंडल शशि सम जैसे ।१।
वारण भव वारिधि दृढ़ पैठे, शिला सिंहासन मन दृढ़ बैठे।
कोलाहल मिट शाती आई, क्षणिक विकलता गगन समाई ।२।
विभु अंकप उर निर्मल धारें, परम शांत पद्मासन धारें।
अंतर बाहर एकत्व ताई, करम नाश हित चित दृढ़ताई ।३।
मध्यस्थ भाव सबन पै धारा, उत्तम धरम धरे अविकारा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाह्य अभ्यंतर परिग्रह हारे, पट आभूषण माल उतारे ।४।
आतम-हित लौं आन पुकारे, मन वचकाय सुयोग संवारे ।
दृढ़ पदमासन उर शुचिताई, ओम् नमः सिद्ध गिरा सुहाई ।५।
केश लोंच कर ममत हटाया, शिव स्वरूप सु ध्यान समाया ।
मुनि पद लियो मूल गुण धारे, शुचि अट्ठाइस मुनि के सारे ।६।
पंच महाव्रत समिती पांचो, त्रिगुप्ति वश इन्द्रिय जय सांचों ।
षट आवश्यक सप्त गुणाये, सम्पूरण अठ बीस समाये ।७।

दोहा— सुगुण मूल धर मुनि हिये, शुभ उत्तर गुणकार ।
मगषिर वदि दशमी दिना, दीक्षा रतन सुधार ।८।

चौपाई—उत्तरा हस्त नक्षत्रों बीचा, सांय काल मन जग से खींचा ।
लीनी दीक्षा करम खपाये, धरमादिक तप शरण सुहाये ।१।
जिन दीक्षा तीक्षण असि धारा, स्वातम निष्ठ सुगुण बलकमा ।
सुरग मुकति सुख यातें आवे, निर अंजन जिय मुकति रमावे ।२।
करम श्रृंग चक चूरन हारी, मोह वर्ष धर वज्र प्रहारी ।
सारे सत गुण यातें सोहें, निजानंद निश्चल सुख देहै ।३।
सिद्धि रिद्धि सब यातें आवे, सुजन श्रेष्ठता गौरव छावे ।
सम्यक रतनात्रय शुचिकाई, परम समाधि दशा धरमाई ।४।
गुणहित आवन माता जानो, या बिन जग में नहिं कल्याणो ।
समरथ होकर शकति छिपावे, चिंतामणि कर काग उड़ावे ।५।

दोहा— निजानन्द निज बल चहो, दीक्षा रतन समार ।
मगन भोग भव दह दहो, लेहै कौन उबार ।६।

अज्ञ दीक्षा—

चौपाई—बिना भाव जो वेष सजावें, निज उर थिरता वे नहिं पावें ।
आतम बल निज प्रगट भुलावें, मुक्त कहाय सु भिक्षुता पावें ।१।
आरत-रौद्र ध्यान दो धरते, दुरगति अंत काल जा परते ।
जग सिंधु नाव उपल सु जानो, पंथी डूबत आप डुवानो ।२।
इनतें धरम-रीति मिट जावे, सकुचब बुधिजन जगत हंसावे ।
मान शान मरयाद मिटावे, उच्छृंखल बहु दोष बढ़ावे ।३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यक बिन अति दूषण लावे, विघट समाज भीति बढ़ जावे।
मोही लोभी रु अज्ञ नशावें, स्वातम सिद्धि सुपथ ना पावें।४।
निज हित पर को अति दुखकारो, धरम विघातक पापाचारी।
आतम सुखद रतन निज राचो, थके स्वाँग धर तोड़ो नातो।५।

दोहा— बिन विवेक दीक्षा रतन, मन वच काय अधीर।
काषायिक परणति रतन, धरम रहित बिन वीर।६।

केश क्षेपण—

चौपाई—धरमी उत्तम भाव सवाँरें, परिग्रह अंतर बाह निवारें।
गुणी गुणों का आदर करते, ज्ञान राय तप विधि आचरते।१।
अति पवित्र लख केश संजोये, शीश विभू के आदर मेये।
मणी मँजूषा सब पधराये, पूज इन्द्र भल वस्त्र सजाये।२।
क्षीरोदधि शुभ क्षेपण कीने, बहुतक मान.केश सब दीने।
पट आभूषण सारे लीने, सविधि भक्ति कर पूजन कीने।३।
सत संगति को फल परमानो, अशुचि वस्तु अति पूज्य सहानो।
श्री जिन की करते जो पूजा, अवरन तासम कोई दूजा।४।
सुलभ सुक्ख सब वनें पुजारी, प्रीति रीति गुण भाव संवारी।
जग के सुख सारे सो पावें, काल लब्धि मुकती उपजावें।५।
शरण अरहंत जीव जु आते, अधम जीव भी शोभा पाते।
धरमी धरम भरे मन आवें, निज पर हितकर सुख सरसावें।६।

दोहा— यथा नाम तथ गुण भरे, महावीर बुधि खानि।
कंचन तन दुति तेजता, गौरव रतन महान।७।

शकेन्द्र स्तवन

चौपाई—परम श्रेष्ठ परमातम स्वामी, त्रिलोकेश्वर विभु जग नामी।
जगत गुरू गुण सागर विजयी, मोह शत्रु हन्ता शुचि तुमही।१।
गणधर शेष थकत गुण ऐसे, अनन्त गुणित गणते कैसे।
कैसे मन्द मती मैं गाऊं, अस्थिर बुधि कहते सकुचाऊं।२।
स्फुरती गरिमा प्रभू देवे, सरधा उमग-सुरग निधि लेवे।
हे। योगिन्द्र विमल गुण पूरे, मेघावरण रहित रवि पूरे।३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्याज स्तुति—इंद्रिय विषय कुटिल क्षणकाई, अस्थिर मूर्च्छा नाथ भगाई ।
प्रवल आत्म सुख इच्छा धारी, मैं निरीह तुम नाथ सुखारी ।४।
अशुचि हेय तिय तन तुम लागा, मुक्ति रमा उर घोर नुरागा ।
केसे वीतराग विभु मानूं, अनुपम राग सु शिव पति भानूं ।५।

दोहा— निधि रतनात्रय धर विभो, मृणमय रतन विराग ।
कौसे त्यागी हो विभू, कैसो उत्तम त्याग ।६।

चौपाई—वैभव राज सम्पदा नाना, अथिर विनाशक लख वन आना ।
शासुत नित्य अनूप त्रिलोका, एक क्षत्रपति निस्पृही विलोका ।१।
चपल चंचला तज जग स्वामी, मोक्ष महानिधि इच्छुक नामी ।
आशा तज बड़ आशां धारो, बिन आशा बड़ नाम तिहारो ।२।
काम विधातक आतम चारी, किम कृपालु रति वैधवकारी ।
बली मोह भट करम विदारे, दया सिध्र विभु ध्यान प्रहारे ।३।
एकहिं जग बन्धु तुम कौसे, छांडि स्वजन विभु वस्तु कौसे ।
विषधर महा भोग लख छोरे, ध्यानामृत पी प्रोषध जोरे ।४।
सत्य महाव्रत वच हितकारी, गिरा सुनत क्षुभ अज्ञ तुम्हारी ।
कौसे सत्य समत्व समारो, अवुधि उछेदक लक्ष्य तुमारो ।५।

दोहा— सुविज्ञ गुणी आदर धरें, दीक्षा सलिलाकार ।
जगत ताप शील रतन, क्षापे मुक्ति मंझार ।६।

दीक्षा महत्व—

चौपाई—दीक्षा पुण्य सलिल शुचि धारा, पावन करणी ताप निवारा ।
जग शुचिकारीं गुण सब भारी, शतशः नमन सुभदीक्षा धारो ।१।
मोक्ष सुमारग अवरत गामी, अपरिग्रही श्री तपी अकामी ।
वर रतनात्रय भूषण धारी, विमल चरण प्रति नमन हमारी ।२।
वस्त्र त्याग दिग अंबर धारे, विभव महा पद नमन तुमारे ।
मुकतेच्छुक गुण संपति स्वामी, परिग्रह रहित प्रभु प्रणमामी ।३।
उपवासी ध्याना मृत भोक्ता, अक्षया नंदी विरक्त स्तोता ।
स्वयं वुद्ध तीर्थंकर देवा, बाल ब्रह्म साधक मल छेवा ।४।
चार ज्ञान धर करम निवारो, गुणागार वृष नमन हमारो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आशा पूरक नाम तुमारो, व्रत शकति दो जो विभु धारो ।५।

दोहा— जग वैभय इच्छा बिना, मुक्ति मांहि अनुराग ।
निज सम जाको भृत्य नहिं, कहां रतन बड़ भाग ।६।
इन्द्र नमत चरनन परत, जिन गुण में अनुराग ।
परभव तप बांछा धरत, रतन चरण मन धागा ।७।

मन पर्यय ज्ञान उपलब्धि—

चौपाई—योग निरोध विभू ने कीना, सौम्य मूर्ति सब चेष्टा हीना ।
ध्यान धरो सुविमल परभाये, अमल ज्ञान मनपर्यय आये ।१।
सकल बात परमन की जाने, आत्म विशुद्धि परम आमाने ।
केवल ज्ञान सु परथम सीढ़ी, या पाते नाभव की पीढ़ी ।२।
अंतर सुगुण विभूति सवांरे, त्रिन उपाधि बाहर उजयारे ।
ध्यान योग धर करम निवारे, अनंत चतुष्टय मय गुण सारे ।३।
संस्कार दृढ़ जिन उर धारो, घट में तिनके विमल उजारो ।
स्व में रच पर परस न जाने, पर को ग्रहण छूट दुख माने ।४।
स्वाद सुधा को जिनने पायो, सलिल विमल तिनको का भायो ।
दश भव सु रहे निजहिं समाये, प्रगट आज स्वातम रस लाये ।५।

दोहा— अनुपमेय गुण धर विभो, महावीर भगवान ।
जगत शिरोमणि रतन विभु, शतशः तुम्हें नमान् ।६।
एकादशी उपवासमय, सहित मौन चिन्तौन ।
वीतराग मन धीर धर, नमें रतन शिव लेन ।७।
वर्धमान महावीर विभु, तीर्थंकर सुखदाय ।
मोह सु अरि हन सुगुण प्रिभु, नमें रतन शिव आय ।

महावीर मुनि—

चौपाई—महा अहिंसा व्रत को पालें, षट कायिक जू हिं साटाले ।
स्वातमनिष्ठ मठा सत धारें, शुचि अचौर्य गमत नि वारें ।१।
चिद् स्वरूप चैतन्य विलासी, ब्रह्मचर्य व्रत धर अविनाशी ।
मूर्च्छा बिना परिग्रह डारे, अंतर बाहर दी परकारे ।२।
पंच महाव्रत अधितम पालें, गुप्ति तीन लह शंशय टालें ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाँच समिति पालें बिन दूषण, प्रमाद विना जी रक्षा भूषण ।३।
धनुप भूमि ईर्यापथ धाकें, जीव दया कर मोद संभारूं ।
मंद तीव्र गति कबहुं न धारें, उर समता नहिं अनत निहारें ।४।
सकल जीव हित मनहिं विचारें, समिती भाषा मुनि सुर धारें ।
चरया सिंह वृत्ति धर करते, अंतराय विन भोजन करते ।५।
शुभ उपकरण शोध कर धरते, जीव दया लख करके गहते ।
जंतु रहित भू मल परिहरते, दयावतार दया शुचि धरते ।६।

दोहा— मूल सुगुण अठ बीस मुनि, उत्तर गुण बहु भेद ।
निरतिचार परमाद विन, धरत रतन निरखेद ।७।

वीर-आहार पंचाश्चर्य—

चौपाई—मुनि सुवीर अतुलित बल धारी, मुनि सुविहत चरया चितधारी।
द्वादशि मगषिर कूल सु आये, कूल राज लख भक्ति बढ़ाये ।१।
कृपण कोष वत अतिथि सुहाना, निधिसम पाय रंक सुखसाना ।
धन्य । धन्य । विभु आओ स्वामी, तिष्ठ । तिष्ठ अब अन्तरयामी ।२।
नमकर तीन प्रदक्षिणा दीनी, जल निधि भवको कोट प्रवीनी ।
अष्टांग वंदना कर हरषायो, मन वचकाय शुद्ध दरशायो ।३।
उच्चासन पर विभु पधराये, पाद प्रक्षाल करत सुख पाये ।
गंधोदक निज शीश, चढ़ायो, पुण्यी उपवासी गुरू पायो ।४।
धन्य दिवस घड़ि धन्य सुआई, धन्य जन्म गृह पात्र घनाई ।
दरव अष्ट ले पूजा कीनी, अष्ट दुष्ट भट रोक प्रवीनी ।५।

दोहा— मन वच तन विशुद्ध रतन, मिष्ट खीर दे दान ।
पंचाश्चर्य अचिंत लख, दातृ पात्र अम्लान ।६।

दान वैशेष्य—

चौपाई—सप्त सुगुण दाता विमलाये, नवधा भक्ति हृदय हरषाये ।
पंच आश्चर्य—बहुतप वर्धक शुद्ध अहारा, क्षुधा तृषादिक मेटन हारा ।१।
स्वादिष्ट विमल भाव सु दीना, दोष छियालिस बिन रस भीना ।
सुर दुन्दभि गगनांगण बाजी, जीत सांची नृपति जग राजी ।२।
जय जयकार सुरन मिल कीना, पवन सुगंधित चलि सुर भीना ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धारा रतन सु आंगन बरसी, बहु विधि पुष्प वृष्टि मन करवी।३।
निरखत सज्जन दान सराहें, दातृ सु पात्र सुगुण बलि जावें।
महा दान सुर मुक्ति प्रदाता, वरषें रतन सु लघु गुण दाता।४।
निरख सु अज्ञ निज भाग मनावें, ऐसो दान करन हरषावें।
निज भावन को शुभ फल पाये, किये भाव शुभ पुण्य कमाये।५।

दोहा— सुरग मोक्ष-हित रुचि जगी, पात्र महा पुण्यखान।
विमल रतन दुति जगमगी, निस्पृहता अम्लान।६।

सुदातृ-सुपात्र—

चौपाई—कुल गृह अर्थ सफल नृप चीन्हा, समाय हरष न उर अधिकीना।
वृत्ति सिंह महावीर विचरते, ममता मोह बिना तप धरते।१।
कर करांजलि कियो आहारा, मोदित सब जन कियो विहारा।
पवन अवध सम नाना देशा, विचरत महावीर मुनि वेषा।२।
परबत गुहा कभी श्मशाना, योग थान निरजन धर ध्याना।
अष्ट षष्ट दिन अनशन करते, षटमासिक विभु योग सुधरते।३।
वाह्य अभ्यंतर तप सु पालें, करम बंध पूरब को घालें।
आत्म ध्यान वर आश्रव रोकें, क्षमा सु भू सम सत्य विलोकें।४।
करमकत बहु अगनि जलावें, कष-पचेंद्रिय विषय गलावें।
दशलक्षण वृष रतन संभालें, पंचाचार धरत व्रत पालें।५।

दोहा— परिषह बाविस सहन कर, शम दम करम विडार।
निजानंद मय मुकति वर, रमत रतन निर्विकार।६।

रुद्र उपसर्ग अतिवीरत्व—

चौपाई—बहुदेशन मध कियो विहारा, आतम लों उरकत उजारा।
नगर अवन्ती विभूवर आये, अति मुक्तक वन ध्यान लगाये।१।
महा भयंकर थल श्मशाना, योग तहां प्रतिमा विभु ठाना।
अचल मेरू सम ध्यान समाये, लख स्थाणु रुद्र अति दहलाये।२।
धैर्य परीक्षा मन उमगाया, संग पिशाची माया लाया।
काल रात्रि वत् काली छाई, विकट रूप मुख स्वांग दिखाई।३।
किलकत अरुण नयन कर धाया, दंत नुकीले विस्तृत काया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुंडमाल उर जीभ विशाला, लपनपाट किलकांट कुचाला ।४।
ऊंचे अशुभ शब्द घन घोरा, कीना शोर विकट पबओरा ।
आयुध तीक्षण नुकीले लाया, पीटो काटो छेदोकाया ।५।
अर-सू शस्त्रन विटप गिराये, वर्षा घोर अति अगनि जलाये ।
पवन चलत देते झक झोरा, चमके बिजुरी कड़के घोरा ।६।

दोहा— जीव जंतु सब अति कपे, छिपत फिरत विललांय ।
डरप हृदय व्याकुल रतन, शरणा काको जांय ।७।
उपसर्ग भयंकर सु कियो, कांपे भू नभ रोय ।
कपो वीर कोना हियो, निज रम समता जोय ।८।

चौपाई—करम उदय ना काहू छोडें, महावीर मुख ध्यान न मोदें ।
अचल ध्यान विभुवर अति सफला, विफल रुद्र निज रंगत समला ।१।
ज्यों ज्यों रोष रुद्र मन आया, वीर हृदय त्यों ध्यान समाया ।
सिंह व्याल गज शूकर माया, महा भयावन नाद मचाया ।२।
किलकिलाट कर मारन धाया, भयकर भयको रूप सजाया ।
सेन भील संग धावा बोला, कपे भू फणपति मन डोला ।३।
महावीर विभु रहे अडोला, मन सुमेरु अचल अझोला ।
नाहिं भीति न उदविग्न ताई, ज्योति घट प्रभु अक्षण्य जलाई ।४।
चिदानंद मय भय परिहारे, शोक रोष चिंता निखारे ।
अचल चलें रवि शशि थम जावें, दुष्ट दुष्टता तज गुण गावें ।५।
प्रयल काल यदि सन्मुख होवे, योगी-थिरता निज ना खोवे ।
महायोगि सन्मति क्यों डोलें, महा शाँत मन अमिय सु घोले ।६।

दोहा— बहु तक श्रम करि कर थको, चलो ना एकहु दाव ।
मूढ़ अंध-हिय निज जको, झुको रतन पद चाव ।७।

रुद्र-स्तवन

चौपाई—विनय धार थुति कर रस भीनी, शाँति भाव गुण रतन नवीनी ।
जगत बली जग विभुवर स्वामी, जगत शिरोमणि जग गुरू नामी ।१।
महावीर शुभ नाम तुमारा, जग त्रय सार्थक भव उजयारा ।
महाध्यानि तुम परिषह जेता, निसंग पवन वत अचल विजेता ।२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षमा भूमि सम जलधि गंभीरा, महा मुदित शुचि अनिल शरीर।
करम काष्ठ दावानल भारी, जगगुण षोपक बुद्धि अपारी ।३।
सन्मति परमातम जग नामी, महाबली अविचल दृढ़ ध्यानी।
प्रतिमा योग सूधर भगवाना, चिन्मय चिन्मूरत गुण थाना ।४।
शत शत नमन करत हरषाऊं, चरण शरण नम सुख मैं पाऊं।
पारस मणि सह लोह सुयोगा, कंचन बनत भाव सहयोगा ।५।

दोहा— साहस बल दृढ़ ध्यान लख, दुरजन मन ले टोह।
सज्जन सुगुण सुमुग्ध सुक्ख, वरनन रतन न मोह ।६।

वीर विहार वैभव

चौपाई—पुनि पुनि नमत चितत उमगाया, संग पारवति रुद्र सिधाया।
चन्दनोद्धार-सप उपसरग महा दृढ़ताई, विभु विहरें चिन ज्योति सजाई ।१।
वत्स देश शुभ विहरत आये, कौशाँवी शुभ नगर सुहाये।
धानादिक धन पूरण सोहे, गुण ग्राहक धार्मिकता मोहे ।२।
कारण चरया एषणा करना, मुनि-पथ तप वर्धन अनुशरणा।
सती चन्दना महा गुणवंती, मुनि लख आवत उमग धारन्ती ।३।
निज कर देहुं मुनि आहारा, धन्य भाग धनि जनम हमारा।
शुचि आवेश भाव उमगानी, सुधि बुधि तन मन की विसरानी ।४।
निरखत गुणी सुगुण हरषावें, गुण प्रमोद धर आनंद लावें।
निज की सारी दशा भुलानी, परवश विवश निपट ह्वै कुलानी ।५।

दोहा— चेत हृदय शंकित भई, कैसे देऊं अहार।
पद कर में वेड़ी कसीं, कहाँ रतन उद्धार ।६।

चौपाई—भगति प्रभाव तुरत दरशाया, वेड़ी झरीं पुण्य बल आया।
कुमारी चंदना—पाप उदय वेदन दुखकारी, अति दुख पाये वज्र कुमारी ।१।
पुण्य पापोदय—शील शिरोमणि सुभग सुरूपा, महासती गुणवती अनूपा।
दुति रति की जग में विस्तारी, सन्मुख रती रती उन्हारी ।२।
क्रीडे बागन निज अति भोली, चेटक तनया लघु अनमोली।
दुष्ट विद्याधर झपट सु चालो, मग शशंक निज सुरत समालो ।३।
मेरी पतनी जो लख पावे, मरखाधिक बाधा पहुंचावे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छाडी तत्क्षण अरम मझारी, सटको अघ लम्पट अविचारी ।४।
उदय पाप जब आन सतावे, वाको ताकरि कौन बचावे ।
पूरब क्षण जो राज दुलारी, दूजे क्षण अति निपट भिखारी ।५।

दोहा— पाप उदय फल जानकर, जपो मंत्र नमोकार ।
साम भव दृढ़ धार उर, धरम रतन भयहार ।६।

वन प्रदेश भील कार्य

चौपाई—वन में बैठी राजकुमारी, अशरण चिंतित अरण अपारी ।
पाप रूप अति भयो दुखारी, करम उदय लख विभू चितारी ।१।
पायो सन्मुख भिल भयकारी, निरखत काँति महा भूतारा ।
समझो वन देवी अगुवाईं, ठिठको देखो कोई नाहीं ।२।
मनहर रूप सु घर ले जाऊं, सरब सुजन पर विपता ढाऊं ।
सुनते राय गांव जलवै है, ठौर नाहि कहुं भागन पै है ।३।
वेचूं याको नगर मंझारा, बहुतक द्रव्य मिले इक सारा ।
सब में हो जै है वटवारा, मिट है सारा टंटा म्हारा ।४।
सनमें हरप पकड़ ले धाया, नगर हाट कौशाम्बी लाया ।
करो घोष लो लेवन हारे, अधिक दाम वेचूं लो प्यारे ।५।

दोहा— छबि गणिका मन भाय, मोल बढ़ायो सदन सों ।
नीच भगे शरमाय, विषयी बंचक निपुण ठग ।६।

चंदना विक्रय—

चौपाई—विकल हृदय अति चंदना भारी, हा! विधना का करन विचारो ।
धरम शील या है कैसे, बचें प्रणायों तन में कैसे ? ।१।
सुमरत विभु शुभ पुण्य सु जागो, वृषभ सेन आयो बड़ भागो ।
गृह में संपति अपरंम पारा, मन सूनो नहिं भोगन हारा ।२।
ज्ञात दुखी उर दया विचारी, विकलदीन कन्या अतिभारी ।
धरम न याको आज बचाऊं, धिक धिक जनम् मनुज कहलाऊं ।३।
दाम अधिक दे ताको लीनी, पुत्रिवत लख हृदये लीन्हीं ।
गृह मेरे उर आज उजारो, सुनो सुता निज शोक निवारो ।४।
जैसे मन को तेरे भावे, सुखद मोहि करियो जो थावे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनकी देओ शल्य निवारी, सुखी होहु उर आशा धारी ।५।

दोहा— दुख अधिको कछु लघु रतन, सब शंका निरमूल ।
गर्भ गते भवितव्यता, जगत माय मद चूल ।६।

सेठ गृह चंदना—

चौपाई—विभु सुमरत मन धीरज आवे, उलझत सुलझत भय छा जावे ।
सेठ सेठानी सु समझायो, वाके मन को एक ना भायो ।१।
लायो सेठ सौत कलिहारी, यौवन सुंदर रूप निहारी ।
ठगवे मोको माया धारी, उर प्रपंच तिय गांठ मझारी ।२।
सहन त्रिया सुख दुख कर पावे, सोत शूल अति हृदय चुभावे ।
कारज वनिज सु सेठ सु भायो, देशान्तर कुं गमन बनायो ।३।
देकर सीख नारि समझायो, प्रेम सहित रख सुता सुनायो ।
कछु कष्ट न याको देहो, आऊ शीघ्र लौट संग पैहों ।४।
सुभद्रा हृदय उमग सेठानी, करिहो पूरण मनहिं समानी ।
निकसत सेठिन नाई बुलायो, कटि परसत शिर केश कुड़ायो ।५।
चंदना सु विड रूप बनायो, ऊपर सों सांकल बंधवायो ।
मनमें जब जिय पाप समावे, काज अकाज समझ नहिं पावे ।६।

दोहा— पैर हाथ बेड़ी दई, दीने कष्ट अपार ।
कोंदव भोजन दे रतन, वपु कृष्ण करनार ।७।

चंदना धर्म दृढ़ता

चौपाई—मनमें चंदना न घबड़ानी, बचो धरम सो सब सुखदानी ।
सुख के दिन गये नहिं रहाये, कटि है दुख भी धरम उपाये ।१।
सरधा धरम धरत अति भारी, कबहुं तो सुनि हैं विभु हमारी ।
अवसर दान धरम को नाही, सदा गिलानी एक मन माँही ।२।
पुद्गल राचे धरम न होवे, आत्म सजगता धर्म संजोवे ।
टूटीं बेड़ीं भगति समानी, देहुं अहार मुनिश्वर ठानी ।३।
चमत्कार भक्ती को पायो, मृतिका कलश कनक मन भायो ।
वन को धान मिष्ट रसकारी, व्यंजन सुगंधित जन मनहारी ।४।
नवधा भगति विनय उर लाई, सविधि दान देकर हरषाई ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आश्चर्य पंच भये ततकाला, सुयश नाद जय पुण्य रसाला ।५।

दोहा— आयो बहुतक द्रव्य ले, संगमें सेठ विशाल ।
सुख दुख ऐके साथ में, निरख रत्न कर्म चाल ।६।

महावीर मौन विहार—

चौपाई—चंदना पुण्योदय सु आयो, परिजन मिल आनन्द बढ़ायो ।
अघ हारक दुख वारन वारे, महावीर विचरत व्रत धारे ।१।
मौन धार वसु करम निवारें, धरम शुक्ल दो ध्यान समारें ।
सप्त करम थिति नित कम करते, पुण्य पाप सम बाधक हरते ।२।
पूरब करम किये अधिकाने, वारण तिनके उद्यम ठाने ।
विमल भाव आतम प्रगटायो, दिन-दिन तेज अधिक दुति लायो ।
आत्म विशुद्धि ऋद्धि सुभारी, शाँति चंद्रिका यश संचारी ।
निरखत आनन शांती भावे, वाणी बिन सब कुछ दरशावे ।४।
मुनि मारग को करत प्रचारा, सर्व भूत हित धरम उजारा ।
वर विवेक चारित्र्य सधावे, पुद्गल भान सुवल विकसावे ।५।

दोहा— धारो निज से नेह, करम पकड़ ढीली भई ।
आयो जी निज गेह, स्वपर रतन सु सुखमई ।६।

महावीरत्व रण कौशल साज

चौपाई—ऋजु कूला नटिनी तट आये, जंभृक ग्राम बाह्य सु डाये ।
द्वादश वरष महातप छाये, मौन अवलंबी साधु गाये ।१।
धरो ध्यान मुनिवर मनलाके, शुद्ध भाव अति योन समाके ।
सुशाल वृक्ष सोहे अति भारी, अमल शिला शुध योग विचारी ।२।
षष्ठोपवास योग सुमांडा, प्रतिमा योग महा अविकारा ।
महावीर वर उर धर ध्याना, अद्भुत समरवीर विभु ठाना ।३।
सहस अठारह शील सुहाये, महतिवीर के कवच सुभाये ।
चौरासी अति सुगुण समाने, आभूषण सब अंग प्रमाने ।४।
वस्त्र महाव्रत भावन भीने, संवेग महागज सुदृढ़ कीने ।
चारित्र भूमि समर में आये, गुण रतनात्रय बाण सजाये ।५।

दोहा— बारह तप उत्तम धनुष, दरशन ज्ञान फणीच ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रिगुप्ति सेन घिर कर रतन, करम दलें दुठ नीच ।६।

विजयी वीर—

चौपाई—सिद्धन लक्ष्य करत गुण आये, समाकित आदिक अष्ट कहाये।
प्रबल चाह जिनके उर माँही, प्रापति जग दुरलभ तिन नाहीं ।१।
पौरुष सिद्ध सुगुण मन आशा, क्षायिक भाव सकल तिन भाण।
सम्यक दर्शन ज्ञान कहाये, अनंत वीर्य सुक्षमता आये ।२।
अगुरू लघु अवगाहन नीके, अव्याबाध सुगुण रस पीके।
धरम ध्यान चौ शस्त्र सँवारे, सप्तम भू दश योद्धा मारे ।३।
त्रय मिथ्यात कषायें चारों, आये त्रय सँग साथ पछारों।
विजय प्रथम सुखकर शिवदानी, शिव प्रसाद दुति कलश सुहानी ।४।
शुकल ध्यान कर गहकर शकती, क्षपक श्रेणि चढ़ निज अनुरकती।
सोलह वीर करम के आये, महावीर बहु मार मचाये ।५।

दोहा— परकृति तेरह नाम की, दरशन वरणी तीन।
दुन्दभी रतन सुवीर की, वे भट तेरा-तीन ।६।

चौपाई—निद्रा-निद्रा प्रचला-प्रचला, सत्यान गृद्धि सु जिय सब विकला।
गति तिरयंच नरक अनुपूर्वी, जाति चऊ कर इंद्रिय चूर्वी ।१।
आतप उदोत सुक्षम सु आये, साधारण स्थावरहिं गिराये।
निज बल गिरत कषायें धाईं, अष्ट दिशाओं से गहराई ।२।
प्रत्याख्यान अप्रत्या खाना, बल पूरण चौ चौ कर आना।
पुं तिय पुंसक वेद त्रि आये, नो कषाय षट साथ सु लाये ।३।
सँज्वलन तीन बल प्रगटाये, नौ गुणथानक विभुहिं गिराये।
घोष विजय का दिया बजाई, गुण थानक दशवें में भाई ।४।
लोभ सँज्वलन जय सु पाये, क्षीण कषायी अधिक सुहाये।
महा मोह भट सहज मरोरे, वीर दरप विजयी जग तोरे ।५।

दोहा— लाँघ ग्यारमीं भूमि को, बारहवें गुण थान।
केवल ज्ञान सु क्षेत्र थित, चढ़े रतन बलखान ।६।

चौपाई—गुण थानक बारह भाया, समय अन्त दो बल प्रगटाया।
निद्रा परचला दोनों नाशीं, निराबाध निज जोति प्रकाशी ।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ज्ञानावरण पाँच निखारे, शुक्ल ध्यान के दूजे आरे।
चार दरशनावरण भगाये, पाँचो अन्तराय निपटाये ।२।
पत्रन पुंज जिमि कर इकठाये, पट अनेक तह दिये सजाये।
क्षण में तीक्षण शलाका वेधे, करम पत्र त्यों विभूवर छेदे ।३।
थान बारमो अंत सुआयो, परकृति त्रेसठ नष्ट सुपायो।
गुण थानक पाया शुभ तेरा, केवल अरुणा सु सुखद सवेरा ।४।
लोका लोक सकल प्रतिभाषे, अप्रमेय महिमा सुख साखे।
अनन्त चतुष्टय मंगल दाता, अक्षय नित्य सुख मोक्ष प्रदाता ।५।

दोहा— शुकल दशे वैसाख दिन, साँयकाल शुभ योग।
नखत उत्तरा हस्त मध, क्षायक रत्न उदोस ।६।

ज्ञान-कांड

दोहा— सत सरधा सु विवेक वर, उर चारित अमलान।
अमल शुद्ध चैतन्यता, बंदू केवल ज्ञान ।१।
अनन्त चतुष्टय सुगुण मय, वर सन्मति अतिवीर।
वर्धमान महावीर सु, नमें रतन विभु वीर ।२।

केवल ज्ञान प्राप्ति—

चौपाई—विजयी वीर सु डंका गाजा, लोक तीन शुभ आनन्द साजा।
जय जय कार सुरन मिल कीना, दुंदभि नाद संगीत सु भीना ।१।
नभ आच्छादित देव विमाना, सुरु तरु पुष्प वृष्टि गंधाना।
आठों दिश नभ निरमल भासे, बहत समीर मंद शितलाके ।२।
इन्द्र मुकुट नत आसन डोला, आनन्द अवधि जान अबोला।
समव शरण धनपति अकीना, अतिशय अनुपम प्रगट नवीना ।३।
सरब भव्य हित सब सुख दाता, केवल ज्ञानी वीर विधाता।
सुर शकेंद्र सु चरणन आये, विभव गुणातम मंगल छाये ।४।
सम्यक चारित्र ज्ञान उपाया, दरशन ज्ञान भोग अति आया।
वीर्य लाभ उपभोग समाये, क्षायिक दान सदाथिर थाये ।५।

दोहा— करम जयी वीर नाथ जु, धीष त्रिजग अति भूर।
उमगो उर शत इन्द्र सब, मोह रतन शिव शूर ।६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

केवल ज्ञान के अतिशय

चौपाई—सुभिक्ष हुआ शत योजन माँही, दिपत चार मुख दिशि सुखदाहीं।
गगन गमन शुभ शकती आई, जीव दया सब प्राणिन छाई ।१।
उपसरग आदि सब कभी न आये, थिर नख केश द्युति आये भाये।
कवलाहार सरब विभु छूटा, विद्या ईशत अनुप अनूटा ।२।
अनिमिष नैन रस मधु साने, छाया तन की परत न भाने।
केवल ज्ञान भये शुभ आये, उत्तम दश अतिशय सुख लाये ।३।
चतुर वरण सुर अति मन भाये, बाजे वाजे बिना बजाये।
महा गुणिन को आसन सोहे, सुगुण-दीनता डगमग हो है ।४।
धरत सुगुण विभु रतन अमोले, मघवासन स्वाभाविक डोले।
सब घटनायें अचरज कारी, मन सुरेंद सब निश्चय धारी ।५।

दोहा— केवल ज्ञानी वीर विभु, उपजो हरष अपार।
सप्त पाद दिश शिर नये, रतन भक्ति हिय हार।६।

इन्द्रावगमन

चौपाई—सज सज साज सकल परिवारा, चारु चरण चरनन चित धारा।
दिव्य तेज शुभ रतन जड़ाये, घन्टा धुजा अनके सजाये ।१।
सिंहासन ऐरावत साजे, दिपत आभरण शशि रवि लाजे।
शक्र सौधर्म सु परिकर सारा, मुद गजेंद्र चढ़ वीर निहारा ।२।
सेंधव शक्र इशान सजाये, वर विभूति सह उमगत धाये।
सिंह चढ़े मनतेंद्र सुहाये, वृषभ पीठ महेन्द्र लुभाये ।३।
वह्य इंन्द्र वर सारस भाया, लाँतव मघवा हंस सजाया।
साज गरुण शुकेन्द्र सवाँरे, इन्द्र शतार मयूर पधारे ।४।
आनत प्राणत आरण अच्युत, साजे परिकर पुष्पक संजुत।
कल्पवासि द्वादश विधि धाये, इन्द्र प्रतेन्द्र विभव सुं आये ।५।

दोहा— कल्पवास चौबीस शुभ, भवनवासि चालीस।
व्यंतर इन्द्र बतीस सब, शशि रवि रतन दिवीश ।६।

चौपाई—सजे सकल शत इन्द्र सुहाये, शचि वैभव वर भाव सु आये।
समव शरण निरखत हरषाये, सुविधि सकल मणि रतन दिपाये ।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनुपम समव शरण सुख दाया, धनपति मुदित महा छवि छाया ।
जाको धनपति स्वयं सजावें, उपमा ताकी जग ना पावें ।२।
धन्य सुयोग मिलो पुन जाके, अद्भुत रचना हिय हुलसाके ।
जिन प्रसाद शोभा अतिभारी, माने धनपति आश्चर्य कारी ।३।
कैसे मोसों यह बन पायो, निमित मात्र मैं जान न पायो ।
शुभ्र परमाणु दमक सुहावें, बुद्धि योग नहिं पार बसावें ।४।
बने न दूजो बनक बनाये, जोसो लागत हृदय समाये ।
पुण्य तीर्थंकर शोभा पावे, महावीर गुण आप बतावे ।५।

दोहा— समव शरण छबि गुणमयी, शोभे सुयश अकाश ।
निरख नमत भवि वृंद सब, इन्द्र रतन सुख राज ।६।
सकल इन्द्र बंदत सुमन, निज वैभव परिहार ।
करत प्रदेक्षण भाव भर, रतन भक्ति उर धार ।७।

चौपाई—कनक रतन मणि रौप्य जड़ाया, दिव्य तेज दमकत मन भाया ।
निरखत लगत नयन मन प्यारा, जग सुन्दरता ताकी धारा ।१।
उचों कोस अढ़ाई राजे, इक योजन कंदुक सम साजे ।
वीतराग विभु पक्ष विमोहे, अधर संरचना शुद्धि समोहे ।२।

धूलि शालि कोट

धूल शाल परकोटा भारी, धूल रतन कर गया संवारी ।
कनक थंभ चारों दिश सोहें, लहरत माल रतन मन मोहें ।१।
पति अरुण बहु हरित सु रंगा, कृष्ण वरण सुर धनु शो भाँगा ।
चौ दिश वेदी चारों सो हैं, शुचित द्रव्य भ्रम पूजक खो हैं ।२।
चार द्वार परकोटे भारी, कोट तीन दुति रवि शशि हारी ।
पैंडी षोडष कंचन दीनी, जिन सिंहासन अति छबि भीनी ।३।
राज सुपथ सोहस सुख दानी, शिव सुख चाहो इहि पथ आनो ।
सकल सुवख जग शिव यद लाये, सुनो घोष सब पथ दरशाये ।४।
चारों दिश में चारों मानो, दृश्य मनोहर तट मुसकानो ।
कोट तीन के भीतर जावे, ज्यों रतनात्रय मुक्ति बसावे ।५।

दोहा— मणी रतन प्रति बिम्ब लख, मन का जावे खेद ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मान थंभ चारों सुभग, कनक मयी शुभ देव ।८।

मानस थंभ

चौपाई—द्वार द्वार अति शोभा धारें, देखत भवि जन तन मन वारें।
अनुपम धुजा सु घंटा भारी, बिम्ब रतन सोहें सुखकारी ।१।
मिथ्या दृष्टि लख मान गमावें, स्वातम वैभव पा हरषावें ।
जड़ प्रभाव विभु संगत पाये, देत सुबुद्धि भाव सजाये ।२।
उठो ऊंच निज भाव सवाँरो, सिद्ध शिला लख कर पग धारो ।
ऊंचे तन मन भाव सजे हो, उठकर ऊंचे लाहो ले हो ।३।
कला अनेक धड़ अनगिनती, सिद्धि रिद्धि सँपति सु अनन्ती ।
जयति घोषण भव्य सुनावें, पावें मोकों मोक्ष सु पावें ।४।
त्रय कटनी रतनात्रय साधें, ऐक रूपता शिव आराधें ।
शरणा ताके जो भी आये, गये मोक्ष जाते सो जाये ।५।

सोरठा— मानस थंभ महान, सान बिना जिय भव हरे ।
आपा रतन पिछान, बिम्ब रनन मय देख छवि ।६।

समव शरण शोभा

चौपाई—आगे वापीं बहु सुखदाई, निरखत मोहत मन बहु भाई ।
निरमल नीर लहर उपजावे, पवन करत अठ खेली आवे ।१।
नीच सँग गति नीची मानो, ऊंचे उठकर आत्म प्रमानो ।
जग में भव रस छलकत आवे, करम पौन पाये भटकावे ।२।
वापिन शोभा अति मनहारी, पूरित पदम खेद श्रम हारी ।
दित्रें सीढ़ियाँ रतन सुहावें, कुण्ड निकट अति शोभा पावें ।३।
फिर जल खाई निरख सुहाई, पदम गीत भृंग वृंद गुनाई ।
पवन झकोर लहर लहरावें, ध्वनि कर वीर विभु यश गावे ।४।
कुंज मनोहर वन सुखदाई, षट ऋतु फूल सुफल इकठाई ।
चन्द्र कांत मणि शिला सुहावे, करत विश्राम इन्द्र सुख पावे ।५।
उन्नत नग श्रृंग अति मन हारी, आतप हर तरु फल रस धारी ।

दोहा— समव शरण शोभा विमल, मन निरखत हरपाय ।
प्रबल पुण्य भवि दरशते, दरश अभव्य न पाय ।६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुवर्ण कोट

दोहा— स्वर्ण कोट आगे वनो, उन्नत जड़ि मुक्ताव ।
चित्रित चित्र रंग सोहनो, उन्नत रतन सुभाव ।२।

चौपाई—चारों दिशा इक इक दरवाजे, मणि मंजिल त्रय रतन सु साजे ।
गन्धर्व गायक विभु गुण गावें. अति भावालय भव्य सुभावें ।१।
नृत्यत सुरि लय-ताल मिलाके, ठुमक झपट थिर भाव समाके ।
द्वार सु मंगल द्रव्यें सोहें, शतक रतन तोरण मन मोहें ।२।
महा कांति तट विभु के पाहीं, सिमट कांति जग नभ लटकाहीं ।
स्वातम निधि जिय मंगलकारी, नव निधि तिस्कृत द्वार सुडारी ।३।
मध्य राजपथ आनंद कारी, नाट शाल उभयित विस्तारी ।
खण्ड तीन ऊंची सुख दानो, शिव रतनात्रय मारग मानो ।४।
कनक थंभ शोभे मनहारी, फटिक भीत मणि तम श्रमहारी ।
गावें गन्धर्व सुर शुभ साधें, शुचि अप्सरा नृत्य मन बाँधें ।५।

दोहा— उभय ओर दो धूप घट, धूम गंध मनहार ।
सुगुण गति महावीरपट, ऊरध रतन निहार ।६।

चौपाई—आगे नन्दन वन अघहारी, षट ऋतु फल बहु पुष्पित डारी ।
वृक्ष वेली वीथी नभ छाई, चंपक सप्त परण अमराई ।१।
द्रुम अशोक वापी कमलाली, चतु त्रिकोण पूरित जलवाली ।
वन प्रसाद बहु कौतुक थाना, क्रीड़ा गृह चित्र शाल सुहाना ।२।
शिखर श्रृंग सम कलश अटारी, पंक्ति दु मंजिल भवन सवांरी ।
चैत्य वृक्ष-सुवर्ण त्रिवेदी कटिन अशोका, चैत्य वृक्ष सोहत शुभ थोका ।३।
मंगलीक वसु चमर धुजायें, क्षत्र तीन शिर अरुण दमकायें ।
पूजत भवि जिन पुण्य कमायें, प्रतिमा मनहर राह लुभायें ।४।
जंबू वृक्ष—अर्हंत बिम्ब सु मण्डल धारी, जंबू वृक्ष सोहत सुखकारी ।
सप्त परण चंपक अमराई, चैत्य वृक्ष दिग चौ शुचिकाई ।५।

सोरठा— माला पट शुभ मोर, कमल हंस गरुड़ादि बहु ।
सिंह वृषभ गज जोर, चक्र रतन धुज लहलहे ।६।

चौपाई—नभ वारिध तरंगा वलि मानो, शत अठ धुजा सु दिश लहरानो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पवन वेग पा शोर मचावें, अर्हंत पूजन भव्य बुलावें ।१।
शत दस अस्सी इक दिशि जानो, विविध रंग शुभ भव्य सुहानो।
सहस चार शत तीन कहाये, बीस धुजा सब चौ दिश छाये।

रौप्य कोट—आगे रूपा कोट सुभायो, शशि लख शरमित सुरग सिधायो।
प्रथम कोट सम कोट प्रमानो, वर विभूति निधि ऐक समानो ।३।
कल्पतरु तिनमें दुति धारी, महा नृपति सम वैभव भारी।
पट आभूषण रतन सु माला, शीतल छाँह पुष्प फल शाला ।४।

सिद्धारथ वृक्ष—अतिशय सिद्धारथ तरु सोहें, द्रुम अशोक सम उपमा मोहें।
पुरुषार्थी तीर्थेसुर द्वारी, दुख भय हर सुख भोग दिवारी ।५।

दोहा— कल्प तरु इच्छित फले, सिद्धि रतन दातार।
पुरुषारिथ करमन दले, अविनाशी पद सार ।६।

देव निवास—

चौपाई—सुरतरु फल आभूषण सोहे, अम्बर उत्तम पत्रे उनोहे।
कल्प शाख सम लटकत माला, शुभ वटक वृक्ष सु जटा विशाला ।१।
कल्पवासि सुर करत निवासा, कल्पतरु दीपांग सुवासा।
जोतिरांग जोतिष मन भाया, मालांग भवन वासि जु भाया ।२।
कल्पतरू वन घेरा डाले, कनक रतन मणि वेदि सभाँले।
चार द्वार दिश चारों सोहें, सुगुण रौप्य कर जन मन मोहें ।३।
शिखर माल मुकता सुख लावें, शुचिता भाव सु फल दरशावें।
मधुर ध्वनि मन तन हरषावे, क्षुद्र घटिका ललक सु गावें ।४।
मंगल द्रव्य सु आठ लखावें, महाविभवता विभु दरशावें।
शुभ तोरण दुति रतन दिपावे, जड़ वैभव नश्वर बतलावे ।५।
गान वाद्य नृत अविरत होंवें, विभु गुण भनत भरम जिय खोवे।
सुवरण थंभ द्वार पथ आगे, नृत्यत धुजा लखत मल भागे ।६।

दोहा— कनक रतन सु पोठ थंभ, ऊंचो करके माथ।
जयो रतन सु भोह दंभ, बीर नाथ जग नाथ ।७।

चौपाई—महावीर रिपु कर्म भगाये, विजय श्री गुण माल सजवाये।
पुरुषारथ जो ऐसो धारें, करम जयत सुख मुकति निहारें ।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चैत्य सिद्धारथ द्रुम स्तूपा, मान थंभ वृत तोरण रूपा।
काय तीर्थेसुर सु ऊंचाई, बारह गुणी अधिक अधिकाई।२।
अठ गुण उनन्त श्रृंग चौड़ाई, अधिक तूप मोटे ऊंचाई।
वेदी चौड़ी इक चौथाई, बारह गुणी काय ऊंचाई।३।
शीतल शुचि जल निरमल भारी, यत्र तत्र वाबलि जन सुखकारी।
कहीं शर्करा रसा सुहावे, अति बिशाल मंडप छवि छावे।४।
देखत कनक वेदिका मोहे, सुवन राज पथ ऊपर सोहे।
दिपम कपाट चार मन हारे, मोहक अतिशय अति गुण कारे।५।

दोहा— बीथी सुभग विशाल, गृह पंक्ति अति मोहली।
कनक थंभ जड़ लाल, चन्द्र कांत मणि दोहली।६।

स्फटिक कोट—

चौपाई—अमल फटिक मणि मय पर कोटा, शुभ्र सु जोति विनाशक खोटा
पदम राग मणि द्वार सजाये, शुभ अनुराग सु भव्य अमाये।१।
पर कोटे तीनों मन हारी, चार द्वार सबमें सुखकारी।
द्वार सकल दृढ़ ऐक समाना, निधियांदिक तोरण विधि भाना।२।
गदा कृपाण आयुध वाले, देव देत पहरा द्वारा ले।
व्यंतर भवन आदि सुर वासी, सुनियत सुरक्षा देव सुखासी।३।

श्री मंडप—स्फटिक मणि मय बनीं दिवारें, प्रथम पीठ सोलह दुति धारें।
परकोटे श्री मंडप छाजे, थंभ रतन मणि स्फटिक साजे।४।
श्री सम्पन्न सकल श्री जानो, नाम यथा तस गुण धरमानो।
श्रीपति श्री सूत सज्जन आते, लख समूह जन लख हरषाते।५।
अर्हंत ध्वनि सु द्रव्य सुझावे, सुजन गुणज्ञ मन सुन उमगावे।
वंदन आवत हिय हरषावे, जग भव वारिधि सेतु सुपावें।६।

दोहा— अरचा गुण चरचा सुनें, गहत धरम सुखदाय।
अन्त मुक्ति लक्ष्मी वरें, महा रतन निधि पाय।७।

मंडप-पीठ—

चौपाई—मण्डप मध्य पीठ का राजे, वैडूर मणि सु जोतित साजे।
पैंड़ी षोडष तापे सोहें, चारों दिशि सम अति मन मोहें।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वादश द्वारे तहां सुहाये, गमना गमन सु कोठं भाये।
मंगल दरव अष्ट शुभ मानो, प्रथम पठिका अति दुति खानो।२।
चमर दीजना दरपन झारी, छत्र सिंहासन धुज कलचारी।
पीठ कनकमय सोहत दूजी, प्रथम पीठ के ऊपर धूजी।३।
अंशुमालि निरखत शरभावे, द्युति मयंक सु ठौर न पावे।
वृषभ चक्र गज पदम सुहावे, गरुण सिंह पट माला भावे।४।
अष्ट महा गुण करत बखानो, लहरत धुजा अष्ट विधि जानो।
सोंहे तापे तीजो पीठा, अमुल रतन मय दिपत अनूधा।५।

दोहा— किरण रतन नम मनहरे, अंधकार विनशाय।
मोह लोभ तम परिहरे, जगत असार बताय।६।

गंध कुटी

चौपाई—स्वातम वैभव निश्चल धारा, विचलित वैभव जग सब सारा।
गंधित गंध कुटी शुभ सोहे, पुष्प माल बहु तक मन मोहे।१।
परस समीर सुगंध बहावे, महा मोद भर उर में जावे।
कंचन रतन आभरण सोहें, मणि मुकतामय मंडित मोहें।२।
कला विचित्रत पूर्ण सुघराई, दुति आवर्णित ना जग पाई।
कनक सिंहासन मणि जड़ाये, शशि रवि उतर मतो थिरकाये।३।
शुचि सुयोग अति द्रव दमकाये, गगन अरुण सर पदम खिलाये।
सिंहासन मणि विभु तर सोहे, महा पुरुष दुति कौन न मोहे।४।
महावीर विभु त्रैजग स्वामी, अन्तरिक्ष तिष्ठें अभिरामी।
अंगुल ऊपर चौ शुचि जानो, निजाधार निज मंडित भानो।५।

दोहा— समव शरण शोभा महा, वीर करें भव पार।
पुण्य महा शक्र धनपति, रतन रचो सुखकार।६।
गुण गुणियन सों नेह अति, करो मंगलाचार।
दूजे भव शिव पायगो, धरम रतन गुणकार।७।

———

मंगलाचरण

भव्य जन-स्तुति—

दोहा— जग उद्धारक वीर जिन, नमत रतन शिर नाय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अगणित बैठें भव्य जन, धरम विटप सुख छाँय ।१।
सत्य अहिंसा स्याद्वाद अनेकांत अविकार ।
बिना परिग्रह रतन वर, नमन सुजन शिवकार ।२।

चौपाई—वंदत विनय सहित थुति आने, सरधा सुमन भेट मुदठाने ।
शोक रोग भय दुख मिट जावे, प्रगटे निज बल अति सुख आवे ।
जगत शिरोमणि रतन अमाना, गुण अनंत दुख हारक बाना ।
केवल ज्ञान सु लक्ष्मी धारी, महावीर विभु गुण अविकारी ।४।
जगत जीव उद्धारक स्वामी, इन्द्र चक्रि नगेन्द्र नमामी ।
अविरत गुण संपति शुभ दाता, मोक्ष महालय सेतु विधाता ।५।
करुणा सागर करुणा धारी, अधम दीन हम शरण तिहारी ।
चिंतत चिंतामणि सुख देई, सुर तरु काम धेनु विलसेई ।६।
सुख अचिंत तुम सबको देओ, चिंत करे बिन कारज गेओ ।
दीन बंधु विभु अधम उधारी, बड़े भाग लहि शरण हितारी ।७।

दोहा— विपुल भक्ति हृदे विषे, शब्द अलप सकुचाँय ।
गूंगे की ज्यों मीसरी, खाय रतन मुसकाय ।८।
सुजन भव्य थुति करत अति, मोद सुगुण की ओर ।
महावीर पद रतन नम, पावें भवदधि छोर ।९।

चौपाई—सन्मति प्रभु सरवज्ञ विधाता, निर विकार निर्मल हितदाता ।
धार भगति जो शरणा आते, कौन पदारथ सुख नहिं पाते ।१।
आधि व्याधि नासे भव पीरा, जन्म जरा मृतु हर अतिवीरा ।
द्रव्य अरथ तत भाव बताते, नय प्रमाण गुण दोष सुझाते ।२।
सप्त भंग स्याद्वाद दिखाते, अनेकांत जिय भरम भगाते ।
जीवन मरण सत्य सब कैसे, अविनाशी हो जीव सु कैसे ।३।
ध्रुव उत्पाद सु व्यय इक साथा, द्रव्य पर्याय सुगुण की गाथा ।
उत्तम जीवन अरु जग मरणा, कैसे भवदधि पार उतरना ।४।
सकल धरम विद्या गुण दाता, सर्वज्ञ हितैषी वीर विधाता ।
महावीर दृढ़ आसन धारी, वर्धमान पद तम भ्रम हारी ।५।

दोहा— नमन श्री महावीर पद, निज पर हित करतार ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धरम धुरंधर परम गुरू, शरण रतन दातार ।६।
जग शिव वैभव सरब सुख, मुक्ति भुक्ति दातार ।
अतिशय भारी रतन लख, नमें अचंभित द्वार ।७।

अष्ट प्राप्ति हार्य—

चौपाई—सन्निधान विभु का दुतिकारी, अशोक विटप हर शोका भारी ।
लख विषाद दुख मोह पलावे, नाम यथा गुण तस दरशावे ।१।
शालि तरु महावीर सुहावे, लखते मन का खेद मिटावे ।
पुष्प रतन मणि पत्र उनमानो, निरखत आनद उर सुखदानो ।२।
चलत समीर हिल पत्र सु शाखा,हरित हरित उर गुण रस माखा ।
श्रावक वृंद उमड़ते आवें, पत्र वृक्ष हिल ललक बुलावें ।३।
पुष्प वृष्टि सुर विविध विधी के, गंध मई भू सुख जियनीके ।
सु छत्र शीश त्रय शशि रवि लाजें, त्रय लोकेश्वर घोष सु साजें ।४।
शोभा शीश प्रभु के पावें, भवि दुख हारें गौरव पावें ।
सत संगति सु महत वढ़ायो, ऊपर विभु के मुदित दिषायो ।५।
दण्ड रतन मणि कांति सोहे, निरखे रवि शशि भ्रम सु हो है ।
लगत मनोहर सुख कर मानो, सुगुण उच्च पद मुद कर आनो ।६।

दोहा— चेतनता विन जड़ मई, चरण प्रभू परसाद ।
चित्ताकर्षक द्युति जई, मेटें रतन विषाद ।७।

चौपाई—ढुरत चमर चौंसठ मनहारी, श्वेत वरण दुति निरमल धारी ।
अन्तर बाहर शुचिता धारी, मुकति वधू वर वीर पुजारी ।१।
साढे बारह कोड़ि सु वाजे, बाजत मोह महाभट लाजे ।
श्री जिनवर की महिमा गावें, विस्मृत भव्य हरष उर आवें ।२।
आभा भामण्डल प्रगटाये, सुगुण तेज अन्तर दरशाये ।
दरशें सात सुभव विस्तारी, सौम शाँति सुख शुचिताकारी ।३।
दिव्य ध्वनि हित कर भ्रम हारी, सुगुण पदारथ सकल उजारी ।
निर अच्छर सब हित सुख दानी, अनेकांत स्याद्वाद प्रमानी ।४।
समझे सकल सभा सब प्राणी, गंगा एक भाण्ड उनमानी ।
छवि सिंहासन अद्भुत छाजे, कनक रतन त्रय पीठ विराजे ।५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा— प्राप्ति हार्य सु अठ भले, दुति गौरव गुण धार ।
जयत मोह पुण्यन फले, सौख्य रतन करतार ।६।

द्वादश सभा

चौपाई—दिपत सिहासन श्री वृषराजा, अंतरिक्ष विभु वीर विराजा ।
अर्हंत गुण अति महिमा धारी, अनंत चतुष्टय सु अविकारी ।१।
समव शरण अति वैभव शाली, द्वादश सभा सुगुणतम माली ।
प्रथम पूर्व दिश थानक जानो, गणधर श्री मुनि उत्तम ठानो ।२।
आसन कल्पवासिनी दूजा, आर्थिक श्राविका लख सु तीजा ।
सुरियां जोतिष चौथे ठांहीं, व्यंत राणियां पंचम माँही ।३।
षष्टम भवन वासिनी सोहें, सप्तम भवन वासि सुर मोहें ।
अष्टम व्यतर संघ सुहाया, जोतिष नवमें जोति सुहाया ।४।
कल्पवासि सुर दशमें जानों, अंतर बाह्य विभूति समानो ।
मानव इक दश विद्या बाना, सब तिर्यंच द्वादश में आना ।५।

दोहा— चिदानन्द सुख चाह उर, जग शव दुख भय भीति ।
धरम चाव चित रतन अति, महावीर पद प्रीति ।६।

बौधर्मेंद्र समवसरण प्रवृष्टि—

चौपाई—शक्र सकल साथी परिवारा, दरश धर्मामृत चाखन धारा ।
उमग सु श्रोतृ भगति सुखदाया, जय जयकार किया गुण गाया ।१।
समव शरण लख विभव विगाया, पद यात्रा शुभ भक्ति समाया ।
समव शरण पर दक्षिणा कीनी, बार तीन सरधा रस भीनी ।२।
शरणा अति-भव्यन का सो है, मंडप महावीर सुख दे है ।
इन्द्र प्रविष्ट दिपत सु कैसे, सरिता सागर ढुरती जैसे ।३।
जय जय करत भक्ति गुण गाके, जिनवर दरशन हिय हरषाके ।
मानस थंभ सु चैत्य स्तूपा, पूज जिनेन्द्र सु भक्ति अनुपा ।४।
समव शरण रचना छबिताई, करत इन्द्र मन निरख बड़ाई ।
लखत जिने सुर मोद समाया, जय जय करके शीश चढ़ाया ।५।
महा गुणी नित पूजें ध्यावें, नमत इंद्र उर अति हुलसावे ।
पातक पात सकल उड़ जावें, सुख गहीर निज दरशत पावें ।६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा— चौ दिश वीर जिनेश मुख, ध्यावे गुण मन लाय ।
छूटें पातक जनम के, धन्य रतन नैनाय ।७।

इन्द्र-पूजन-आयोजना—

चौपाई—करत नमन बिनवै बहूवारा, शक्र शची उर भगति अपारा ।
देवी देव सकल गुण गावें, बन्दे चरण गुणत सुख पावें ।१।
पद पुनीत नख जोति सुहानी, इन्द्र मुकुट पड़ द्युति अधिकानी ।
चमक मुकुट उड़ हिये समाये, अयन नयन मन कांति बढ़ाये ।२।
मन की उमग ओंठ भर आई, वाणी झलकत रूप सुहाई ।
अष्ट दरब शुचि मन कर लाये, यथा योग विधि थाल सजाये ।३।
द्रव्यें पुनीत सु परम सुहाई, शुक्र पुजारी बढ़ गरिमाई ।
चरण पूजने कर शुचिताई, शुचितम पट आभरण सजाई ।४।
साजे साज भगति अनुसारी, पूजा रची महा मुद कारी ।
गावत विभु गुण नृत्यत जावे, अंग उपांग नव हरष उपावे ।५।
निरख सु ऐसी भक्ति को, स्मित विस्मित जीव ।
धन्य घड़ी नयनन गढ़ी, निरखें रतन सदीव ।६।

भजन— महावीर स्वामी, तुम्हारा सहारा ।
करो बेग मोकों, भवोदधि से पारा ।१।
हिंसा असत्य चोरी, अब्रह्म परिग्रह मोरी ।
फंसकर विकल बना जग, दे दो मझे किनारा ।२।
कोई वरण न मेरा, करता फिरा मैं फेरा ।
कर्मों ने आके घेरा, पाया है अब सहारा ।३।
चारों गति में घूमा, सारा त्रिलोक चूमा ।
धारा जो जैसा तन में, तस भावना को धारा ।४।
चारों कषाय धरके, आतम अजान करके ।
दासित सदा सहा मैं, जाका न पार वारा ।५।
कहता मुझे सकल जग, जागो यहाँ भरे ठग ।
पर जागने न देता, झूठा रतन किनारा ।६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपने को जान पावें, अपने में आ समावें।
अपना स्वरूप निश्चल, तुम जो रतन सो धारा ।७।

श्री

महावीर भगवान की जय

सौधर्मेन्द्र-महावीर-पूजन—

दोहा— चिदानन्द चैतन्य मय, चिद् विलास चिद्रूप।
करम कलंक कला जयी, महावीर शिव भूप ।१।
निरविकार सरवज्ञ शुचि, वीर हितंकर स्वामि।
वर्धमान गुण मल रहित, अती वीर जग नामि ।२।
सन्मति धर सब सुख लियो, औरन को सुख हेत।
नमन करूं चरणन परूं, रतन त्रियोग समेत ।३।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र ! अब अश्र अवतरत अवतरत।
(इत्याह्वानापनम्।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ।। ठः ठः स्थापनम्

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र। अत्र मम सन्निहतो भव भव वषट्।

परि पुष्पाँजलि क्षिपेत्

अष्टक

शुचितम शीतल सरस सुमन ले, शुचि सुगुण शील सम समतानी।
नीर रतन सम्यक्त सु पावन, कंचन भाजन ले दुति दानी ।१।
महावीर तीर्थेसुर हितकर, विभु वर्धमान सुख गुणखानी।
वीर धीर अति वीर ध्यान धर, हे सन्मति। नायक सुखदानी ।२।

ॐ ह्रीं श्री रननात्रय धारक त्रियोग निवारक महावीर जिनेद्रे भ्यो जलं निर्वपामिति स्वाहा।

सुगुण सुगंधित तपहर चन्दन, शुचि दिव्य ज्ञान कर सुखदानी।
गुंजित भव्य भ्रमर भ्रम तम हर, ज्ञानावरण अरुण उन्मानी।।
महावीर तीर्थेश्वर हितकर, विभु वर्धमान सुख गुण खानी।
वीर धीर अति वीर ध्यान धर, हे सन्मति। नायक शिव थानी ।२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं ज्ञानावरण विध्वंसक महावीर जिनेंद्रे भ्यो,सुगंधम् निर्वपामिति स्वाहा

उज्जवल अक्षत शुचितम दरशन, शक्ति प्रपूरित अमलानी ।
दर्शनावरण विनाशक विभुवर, मुक्ती सौख्य अनुपम दानी ॥
महाबीर तीर्थेश्वर हितकर, विभु वर्धमान सुख गुण खानी ।
वीर धीर अति वीर ध्यान धर, हे सन्मति । नायक शिव थानी ।३।

ॐ ह्रींदर्शनावरण करम विनाशक महावीर जिनेंद्रेभ्यो अक्षतं निर्वपामितिस्वाहा

अंतराय विन सुगुण सुगंधित, भांति भांति ले गंधानी ।
दान लाभ उपभोग निरन्तर, गुण भोग बीर्य धर असमानी ॥
महावीर तीर्थेश्वर हितकर, विभु वर्धमान सुख गुण खानी ।
वीर धीर अति वीर ध्यान धर, हे सन्मति । नायक शिव थानी ॥

ॐ ह्रींश्रीअन्तराय कर्म रहिताये महावीर जिनेन्द्रेभ्यो,पुष्पं निर्वपामितिस्वाहा।४।

सुरस सुसज्जित रस पय मज्जित, वर व्यंजन क्षुधहर आमानी ।
क्षुधा वेदनी घालक जिनवर, अपनाओ विभु निजकर जानी ॥
महावीर तीर्थेश्वर हितकर, विभु वर्धमान सुख गुणखानी ।
वीर धीर अतिवीर ध्यान धर, हे सन्मति । नायक शिव थानी ।५।

ॐ ह्रींश्रीक्षुधा वेदनी विनाशक महावीरजिनेन्द्रायेभ्यो,नैवेद्यं निर्वपामिति स्वाहा

मोह तिमिर हर सुगुण प्रकाशे, स्वपर विवेक जग भासानी ।
पाद पद्म तुम स्वा परकाशक, शुचि दीप्ति रतन लघुता हानी ॥
महावीर तीर्थेश्वर हितकर, विभु वर्धमान सुख गुणखानी ।
वीर धीर अतिवीर ध्यान धर, हे सन्मति । नायक शिवथानी ।६।

ॐ ह्रीं मोहांधाकार विनाशक महावीर जिनेंद्रेभ्यो दीपं निखपामिति स्वाहा।

सुरभि सुगंध सुरीभिता छिटकी, दुठ कर्म कालिमा विघटानी ।
ध्यान दहन वसु कर्म गंध धर, शुचि सुगुण विमलता उमगानी ।
महावीर तीर्थेश्वर हितकर, विभु वर्धमान सुख गुण खानी ।
वीर धीर अतिवीर ध्यान धर, हे सन्मति । नायक शिवथानी ।७।

ॐ ह्रीं श्री दुष्टाष्ट कर्म विनाशक महावीर जिनेंद्रेभ्यो धूपं निर्वपामिति स्वाहा

सु मोक्ष महा अमृतफल हितकर, स्वात्म तुष्टि वर अन्नतानी ।
क्षायिक भाव विमल फल कारण, सु प्राप्त सफल तक ढिग आनी ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महावीर तीर्थेश्वर हितकर, विभु वर्धमान् सुख गुण खानी ।
वीर धीर अतिवीर ध्यान धर, हे सन्मति । नायक शिव थानी ।।
ॐ ह्रीं श्रीमहामोक्ष फल प्राप्तक महावीर जिनेन्द्रेभ्यो फलं निर्वपामिति स्वाहा
अरघ सु पावन सुगुण महाघन, रुच-रुच रुचिर सु मुदकर मानी
धन्य जनम दिन योग सु पूरण, वर शरण रतन विभु चरणानी ।
महावीर तीर्थेश्वर हितकर, विभु वर्धमान सुख गुण खानी ।
वीर धीर अतिवीर ध्यान धर, हे सन्मति । नायक शिव थानी ।।
ॐ ह्रीं श्रीवसुगुण नव केवल लब्धि प्राप्तक महावीर जिनेंद्रेभ्यो अर्घंनिर्वपामिति स्वाहा ।

जय मालिका—

दोहा—
सुमन सुगंधित लेयकर, पुण्य सुगुण सुखकार ।
पुष्पाँजलि चरणन धरूं, स्वातम गंध प्रसार ।१।

पुष्पांजलि-क्षेपण—

शची अग्र हो उल्लासित, पुण्य भक्ति गुण खानि ।
स्वस्तिक कीनो चाव धर, पंच रतन चूर्णानि ।२।

चौपाई—जय जय जगत देव विभु स्वामी, गुरूवर पुज्य अन्यतम नामी ।
वंदनीय गण बंदत चरणा, परम गुणि योगेश्वर शरणा ।१।
धरमी यजत महा धरमात्मा, यति सुबुद्धिक विमल ज्ञानात्मा ।
पतियों के पति महा विजेता, जित इंद्रिय स्तुत्य सु ध्येता ।२।
जिनमें उत्तम दातादानी, परम हितैषी हित धरनामी ।
अभय करण जग भय से भारी, सुरक्षक शरणहीन शरणारी ।३।
करम जाल नाशक शिव गामी, मोक्ष प्रकाशक बंधु नामी ।
वीतराग निस्पृह निरलोभी, महा अहिंसक सत्यक शोभी ।४।
ब्रह्मचर्य धर निर्ग्रंथ राजा, निरबांछक निर दंभ विराजा ।
अचरज भारी मोकों आवे, कारण कौन महातम लावे ।५।
जग सुख विमुख महा सुख बाँछक, कैसे होहू प्रभू अबांछक ।
मुक्ति रमणि की उर में आशा, महाराग वश तिय अभिलाषा ।६।
त्रिजग ईश्वर विभु कहलाओ, महालोभ शिव राज्य सुभायो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुण रतनात्रय आदि संग्राही, संग्रह महा कहाँ अपरिग्राही ।७।
करम दीन हंता महा सिंहक, कैसे हो विभु महा अहिंसक ।
सु अक्ष कषाय जयी गुण धारी, कहाँ अचोर्ता रही तुमारी ।८।
जग काया कर इच्छा हीना, लोक अग्र इच्छुक गुण भीना ।
देविन मध्य घिरे सुख पाओ, कैसे ब्रह्मचारि कहलाओ ।९।
एक सु आनन चऊ दरशावें, दंभ और कछु छल कहलावें ।
श्री सम्पन्न विभवता साजा, मुक्ति रमावर निर्ग्रंथ राजा ।१०।
अनुपमेय गुणों के स्वामी, महा परिग्रही क्यों बड़नामी ।
स्तुति अस्तुति ऐक परमानूं, स्वातम बल प्रगटावन भानूं ।११।

दोहा— दरश करत जीवन सफल, पद-यात्रा कर दोय ।
पूजत कर हूये विमल, नयन रतन अवलोय ।१२।

ॐ ह्रीं सर्वातिशय गुण निधि विराजमान श्री महावीर जिनेन्द्रेभ्यो पूर्णार्घं निखपामिति स्वाहा

सुरेंद्र का महावीर विभु स्तवन—

चौपाई—प्रणमत शीश काय सेव्याया, चिंतत मन रसना गुण गाया ।
सफल जनम विभु शरणा आया, नर भव लाहो पा सुखदाया ।१।
गुण अनंत तुम को कथ पावे, काँत परस पारस चमकावे ।
सर्व प्रधान जगत गुरू स्वामी, अनंत गुणि लोकोत्तम नामी ।२।
परमातम विभु केवल ज्ञानी, अनंत चतुष्टय सु सुखदानी ।
अनुपम श्रीपति मंगल दायक, श्रेष्ठ सुबुद्धिक वीर विधायक ।३।
त्रिजग ईश्वर श्रद्धेय नामी, लोकोतिशय युत प्रणमामी ।
धर्म रूप दिव्य काय तुमारी, धर्मोपदेश विभु चमत्कारी ।४।
धर्म मुर्ति धर्म चक्र सु धारक, नमस्कार तुमको शत सहस्त्रक ।
हे नाथ । भक्ति श्रद्धा सुं आयो, चरण नमत बहु विधि गुण गायो ।५
सुगुण समाधि मरण विभु देओ, करम विनाशक थुतिफल येओ
जब लों मोक्ष निकट नहिं आयो, शरण रतन लो कृपा बनाओ ।६

दोहा— नमन करूं निज गुण सजू, करम कलंक विनाश ।
निज निधि दायक वीर जिन, स्वातम रतन प्रकाश

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुष्पांजलि क्षिपेत् इत्याशीर्वादः—

दोहा— बहु स्तुति करके विनय, पुनि पुनि मस्तक नाय ।
धरम लाभ हित रतन, उर निज प्रकोष्ठ सु जाय ।१।

दिव्य ध्वनि अवरोध—

मंगलाचरण

दोहा— जिन वाणी सुख दानि नम, द्वादशांग गुण गाय ।
दरशे हित अनहित रतन, केवल ज्ञान उपाग ।१।

इंद्र चिंता—

चौपाई—श्रोता सारे आशा धारें, सभा जु द्वादश विभू निहारें ।
शाँति छवि लख आनद आवे, वर विभूति सब उमग बढ़ावे ।१।
विभु वच सुनिवे मन अभिलाषें, कौन सुपथ हित विभू प्रकाशें ।
आसन निज निज मुद मन बैठे, प्रभुवर ध्वनि कब मन तम मेटे ।२।
गये पहर त्रय बुझी न आशा, मार रहे मन उर अभिलाषा ।
बाधा न जहाँ चिंत न आवे, व्याकुलता नहिं आन सतावे ।३।
आशा करते दिन टल जावें, निशि भी टले न अवसर पावें ।
मौन समव शर्ण विभु का चलता, वैभव शांति मन आकर्षता ।४।
श्रृंग विपुलाचल ऊपर आया, देखत जन गण मन लहराया ।
छियासठ दिवस गये विश्वासा, उठ विचार मन शक्र सु भाषा ।५।
क्षमता शाली मुनि यां नाहीं, यामें कोई गणाधर नाहीं ।
देवे रहस तत्व परकाशे, द्वादशाँग शुचि सार उजासे ।६।

दोहा— दिव्य ध्वनि यातें नहीं, वीर विभू धर मौन ।
यातें कीजे काज वह, सधे रतन शिव भौन ।७।

चौपाई—चिंतवत इंद्र अवधि परमानो, करूं उपाय जो हो सुखदानो ।
बसत विप्र इक गाँव विद्वाना, विद्या मंडित वैभव ज्ञाना ।१।
ज्ञानभिमानी गौतम जाना, पंच शतक वर शिष्य सुहाना ।
उभय भ्रातृ अति बुद्धि धारे, निगमागम विद् जन रतनारे ।२।
महावीर तट जो आ जावें, ज्ञान सदन मणि कलश सजावें ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निज हित लखके, सब हित साधें, जगत जीव हित पथ आराधें ।३।
आवें जैसे करूं बनावा, आना उपाय बिना न आंवा ।
धरो रूप अति वृद्ध दिखाया, लकुटी करमें लटपट काया ।४।
द्विज वर पै जा विरद सुनाया, करो दया मुझ पै गुरू राया ।
श्रेष्ठ विप्र गुरू अति विद्वाना, कोई तुम सम जग ना आना ।५।

दोहा— अर्थ कहो मम काव्य सु, मेरे गुरू गह मौन ।
निवहे रतन सु जीविका, प्रगटे यश तुम मौन ।६।

सुरेन्द्र-गौतम-संवाद

चौपाई—जन समूहित नाव हमारी, चले सहज विधि कृपा तुमारी ।
कहत विप्रवर पृच्छत बारी, का दो दक्षिणा हे शुभकारी ।१।
वृद्ध कहे समुचित समझाओ, निज शिष्य मुझको तुम सु पाओ ।
मैं नीके तीकों समझाऊं, नातर तुम गुरू शिष्य कहाऊं ।२।
संग मंडली अरु दो भ्राता, शिष्य गुरू का धरि है नाता ।
साक्ष उभय मेरी सुन बाता, सत्य व्रति मैं अलिक न भाता ।३।
नगरपती अरु कश्यप देवा, किये विप्र साक्षी स्व मेवा ।
अपना तुम अब काव्य सुनाओ. पाकर उत्तर कार्य बनाओ ।४।
मोदित शक्र सु गायो काव्या, मुद गौतम उर आयो श्राव्या ।
ऐसो काव्य कभी ना जानो, सुनते मनमें खेद समानो ।५।

काव्य—त्रैकाल्यं द्रव्य षटकं, सकल गति गणा सत्पदार्था नवैव ।
विश्वं पंचास्ति काया, व्रत समिति चिद सप्त तत्वानि धर्मा ।।
सिद्धे मार्गा स्वरूपं, विधि जनित फलं जीव षट काय लेश्या ।
एतान ए श्रद्दधति जिन वचन रतो मुक्ति गाँभीरु भव्यः ।१।

भावार्थ—काल तीन षट-द्रव्य बताओ, सत पदार्थ नव गति गण गाओ ।
अस्ति काय जग पंच सुझाओ, व्रत-समित चिन धरम सुनाओ ।
सप्त तत्व सिध मार्ग जनाओ, जी विधि-फल षट भाव सु कायो ।
जिन वच ए सब सरधा भानो, मुक्ति पथिक शुभ भव्य बखानो ।

दोहा— काव्य श्रवत चक्रित सुमन, नहिं पायो सब भेद ।
करना ना बहुतक कठिन, मान रतन उर खेद ।८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विवश गौतम द्विजवर उत्तर—

चौपाई—गहिर काव्य गुरू तेरा गाया, मनको मेरे तनिक न भाया ।
वने बात नहिं तुझसे कोई, शास्त्रार्थ गुरू तेरे सोई ।१।
काल लब्धि जब हितकर आवे, स्वयं बनक तैसी बन जावे ।
शतक पाँच शिश दोऊ भ्राता, चल विहरत लहरत गज माता ।२।
विज्ञ विचारत सु मन बहु बाता, जीत हार मीठी फल दाता ।
दुर्जय द्विज गुरु होय विधाता, महत संग अति फल शुभ साता ।३।
गुरुता लखकर गुरू बनाऊं, महा ज्ञान धाता वन जाऊं ।
विजय वाद जो यदि बन आये, ऐसे ज्ञानी शिष्य सुहाये ।४।
काव्य एक सुन बुधि सब हारी, ज्ञान सु पूरण कितना भारी ।
स्मृति वेद पुराण ना गायो, कैसो ज्ञान सकल समुदायो ।५।
गहन सिद्धान्त रतन सु कविता, बाढ़े मोद निजातम सविता ।
चिंतत चित यों तट तक आयो, समव शरण लख अचरज पायो ।६।

दोहा—
समव शरण दुति मय निरख, वर विभूति नहिं पार ।
सरधा लहरे रतन मन, मान थंभ मट टार ।७।

मानस्थंभ प्रभाव—

चौपाई—विभु के द्वार शीर्षता धारे, मानस थंभ दिपत गुण धारे ।
दरशत मन का मान गलावे, गुणी विनय वर घोष उजारे ।१।
गौतम निरखत मोद समावे, सकल समूह सु छबि ललचावे ।
संपति भाव विभव बहु भाँती, तेज महतपन गौरव धाता ।२।
ज्ञानी ज्ञान विनय मन धारे, उज्जल ज्ञान शक्र निखारे ।
मानस थंभ प्रभाव प्रसारे, गयो अहंगल विनय उजारे ।३।
श्रवणत करित हिय हुलसावे, ज्ञान पिपासा—जग रस छावे ।
मान गये मृदुता उर छाई, ज्ञानवान रुचि ज्ञान समाई ।४।
ऐसा वैभव चरणन लोटे, निरविकारता सुक्ख समेटे ।
आश्चर्य भरो चकित सु बाढ़ो, चाहत ज्ञान विभव रस गाढ़ो ।५।

दोहा—
शास्थार्थ भूलो सुमन, शांति ज्ञान छबिदाय ।
मैं भी ऐसा होऊंगा, ज्ञान रतन विकसाय ।६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौपाई—निज की विभु से तुलना कीनी, वाम उचाई निज लख चींही।
ऋद्धि अनेक महात्म भारो, विना चिंत सब द्वार निकारो।१।
मुद्रिका एक सु जिय ललचावे, प्राण मान जिय मन गरभावे।
विभु ने ऐसी प्रभुता पाई, टिक न सकी झूठी गरिमाई।२।
महा ऋद्धियाँ विभु को सोहें, विभु अलिप्त मन तनिक न मोहें।
मणी सिंहासन निर्ग्रंथ देखो, द्वादश सभा सकल निरपेखो।३।
इनकी वात सकल सुन जाऊं, अपना पथ मैं सुगम बनाऊं।
गुण अनुराग सु मन उमगायो, दे पर दक्षिणा शीश नवायो।४।
विनय विना नहिं ज्ञान जु भासे, यथा विनय तद ज्ञान प्रकासे।
शाँत छवी लख शाँती आई, स्वात्म विशुद्धि गुण गरिमाई।५।

दोहा— वद्धाँजलि कर थुति करी, प्रगटो हृदय ज्ञान।
निरविकार त्रिभुवन धनी, नामी रतन महान।६।

स्तवन-गुण-गौरव—

चौपाई—महिमा अगम महा विभु धरते, निज समान सब सेवक करते।
अद्भुत स्वामी सरवज्ञ ज्ञाता, वढ़ो नाम गुण देवे साता।१।
नाम नहिं विभु अपनो चाहो, नाम बड़प्पन कैसे लाहो।
धरम राज धर्म चक्रि धरमा, धरमा ग्रणी सु तीर्थंक मरमा।२।
धर्मेश्वर धर्म नेता नामी, धर्माढय धर्मधर धर्मा स्वामी।
करत धरम सु धर्माराध्य, धर्मेश धरमवित सु धरमाढय।३।
धरम ज्येष्ठ धर्म वंधु त्यागी, धरमात्मा बड़ धरम सु भागी।
धरम भाक शुभ धरम सुभरता, सु धरमज्ञ सकल भय परिहरता।४।
धरम धीर अति धरमी स्वामी, धरम राज शिव सुक्ख विश्रामी।
धरम पती धर्म धुजयी नामी, धरमावतार धर्म ध्येतामी।५।

दोहा— धरम वीर जग दुखहरो, करते आप समान।
अधिक विशेषण को धरो, अंत रतन निरवाण।६।

चौपाई—महापूत मह मान्या देवा, महाव्रति अति धीर स्वमेवा।
महानाद धारक मह तेजा, महा तपा महेश्वर देवा।१।
महो दांत योगी मह ध्यानी, महा कासविक महा सुज्ञानी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महाचाढय त्राता महात्मा, महेशिता मह दाता अगमा ।२।
महावीर सु महा मह करमा, जगन्नाथ जगपति जग धरमा ।
जगत श्रेष्ठ मान जग दीशा, जग भरता जग पति जग ईशा ।३।
जगत सेव उन्नत जग वंधू, जगत पूज जग स्वामी सिंधू ।
जगत गुरू नेता जग धीशा, जग जेता तीर्थं तीर्थेशा ।४।
तीरथ कृत तीरथ वित गाथा, तीथ भुतात्मा तीरथ नाथा ।
शुभ तीर्थात्मा तीरथ नेता, सु तीर्थज्ञ तीथार्ह्य विजेता ।५।
तीरथ कारक तीरथ राजा, तीर्थभूत तीर्थाक विराजा ।
तीरथ तुम पद तर में सोहे, तीर्थ सकल सो विभुपद मोहे ।६।

दोहा— तीरथ कारण नाम है, तीरथ नायक स्वामि ।
जजत रतन सब सुखलहे पुनि पुनि विभु प्रणानी ।७।

चौपाई—विश्व पितामह विश्व तत्वज्ञा, विश्वाग्रणी विश्वेष विश्वज्ञा ।
विश्वा राध्य विश्वाचर विश्ववेड्या, विश्व धरम कृत विश्वेधीड्या ।१।
विश्व व्यापि विश्व वित विश्वात्मा, विश्वनाथ विश्व नायक आत्मा
विश्व धृति धर्मा शुभ सर्वज्ञा, सर्व बुधाग्रणि सरव लोकज्ञा ।२।
सर्वात्मा सर्व-धर्मेशा-सार्वा, सर्वदर्शि सब वित सखाही ।
सरव् देवाधित सर्व लोकेशा, सरब करम हृत सरव विद्येशा ।
सरव धरम कृत शरम सु भाका, माने तोनों जग तुम धाका ।
गुण अनन्त सार्थक तुम नामा, थाकें वरणत शेष विश्रामा ।४।
शत-अठ अतिशुभ धर अनुरागा, गुणा हृदय रस भकती पागा ।
निधि अनन्त जो पावे दीना, चमकृत निरखे गहवे हीना ।५।

दोहा— निज बल बुद्धी लेय सब, करी भक्ति उमगाय ।
महा नाम जग ताप हर, सदा रतन सुखदाय ।६।

चौपाई—बहुतक कीनी थुति बहु भाँती, निरमल हृदय विप्र गुण धाती ।
वैभव संपति नाहीं चाहूं, निरविकार मन धर हुलसाहूं ।१।
चिंतामणि पावे बुधि कोई, काहे सम्पति भार बहोई ।
अनंत चतुष्टय सु विभु पाये, निरभय निकल अमल रस छाये ।२।
कोटिक रवि शशि जहां सुहारें, मनको तुम सम तुमहिं निखारे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रेष्ठ सु शांत मृदु अणु आये, सुभग शाँति दुति तन निरवराये ।३।
चरण तुमारे जहां सु सौहें, तीरथ थल जग भवि मन मोहें ।
धन संपति जग जीव सुध्यावें, पाछे छांड़ी तुम वे आवे ।४।
मेघ धार नभ तारा मण्डल, जगत जीव वारिध आखण्डल ।
गुण अनंत तुम अगम कहाये, मुझसा दीन कहां गुण पाये ।५।

दोहा— जगत शरण लोकोत्तमा, मंगल मय मल हीन ।
डुवत भवदधि तुम रतन, खींचो लख अतिदीन ।६।
जव तक निज परसे नहीं, जग भव से अति नेह ।
अथिर सरव भाषे अवे, स्वातम रतन विशेह ।७।

गौतम-पृच्छा—

चौपाई—मन धीरज अकुलता खोवे, सफल हेतु पथ तृपति समोवें ।
पृच्छत द्विजवर विनय सुधारे, समाधान दो शरण तिहारे ।१।
जीव अजीव आदि सब तत्वा, कैसे पुण्य पाप फल सत्वा ।
श्रेष्ठ निम्न सु क्यों कर होवे, धरम कहो विभु सुख सब होवे ।२।
लोक काल सव भेद बताओ, कालिक श्रेष्ठ पुरुष समझाओ ।
प्रश्न भव्य शुभ वाणी गूंजी, सकल जीव सुख आनंद पूंजी ।३।
मौन प्रभाव महा सुखदायो, वैभव ताका उर दरशायो ।
वाणी हित प्रिय सत्य समायो, गौतम गुणकर भव्य सुहायो ।४।

दोहा— जयो धन्य जग में गुरू, पायो तुम परसाद ।
महावीर विभु देशना, सुनो रतन हित साथ ।५।

महावीर विभु देशना—

ओंकार धुनि सार, गूंजी जग हित सत्य मय ।
द्वादशांग सुखकार, प्रगटी पुण्य सुयोग जय ।

चौपाई—गौतम मुख्य सत्य को जानो, सत्य सुहितकर सुख संधानो ।
उत्तम सत्य कहावे सोई, वीतरागी सरवज्ञ भनेही ।१।
वस्तु स्वरूप यथावत जाने, माने सो सब सत्य सयाने ।
आगम सत्य रीति वतलाई, जग स्वभाव सु वस्तु लखाई ।२।
दरशन ज्ञान मई सो जीवा, चैतन्य भाव धरत सदीवा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जितने जग में भेद दिखाने, सबमें चेतन एक प्रमाने ।३।
बिन उपयोग सु जीवन हानो, चेतनता हो जीव सु जानो ।
मुक्त सु इक दूजे संसारी, मुक्त अभेद भेद संसारी ।४।

दोहा— अष्ट करम मल रहित जो, सुगुण अष्ट गंभीर ।
अविचल अविनाशी सुखी, मुक्त रतन वर वीर ।५।
वाणी सुनते हरष अति, कापै वरणो जाय ।
जी हुलसे गौतम सहित, सकल रतन हुलसाय ।६।
विपुला चल गौरव भलो, प्रथम देशना लाभ ।
असित श्रावणि प्रति पदा, मेटे रतन सु दाभ ।७।
निज निज भाषा हित सकल, समझे सब सुख होय ।
जीवन मल मानो धुले, स्वातम निरमल सोय ।८।

मंगलाचरण

दोहा— नमूं सिद्ध परमात्मा, निज गुण पूरण रूप ।
निर विकल्प निश्चल अमल, कृत्य कृत्य शिव भूप ।१।

चौंदह जीव समास

चौपाई—शिखर लोक के जिनका वासा, अनंत चतुष्टय जु परकाशा ।
थावर त्रस दो जीव संसारी, इंद्रिय त्रिय तक विकल मझारी ।१।
थावर विकलत्रय पच इन्द्रिया, जानो भेद तीन सो जीया ।
सुर नर पशु गति नरक मिलाये, चार भेदगति चार कहाये ।२।
पंच भेद इन्द्रिय विध मानो, थावर पच इक त्रस षटकानो ।
पंचेंद्रिय विकलेंद्री-थावर, सात भेद यों जानो हित धर ।३।
संज्ञि असंज्ञि विकलेंद्री योगा, थावर पच मिल अष्ट सु योगा ।
दो ते चौ औ पंच इन्द्रियी, पच थावर सु नव लख सिन्द्रियी ।४।
पृथु जल अनिल अनल पहिचानो, इक साधारण वनस्पति मानो ।
दो त्रै चौ अरु इंद्री पांचों, दश विधि जगत जीव यों सांचों ।५।
पंच थावर त्रस के चौ मानो, सूक्षम बादर ग्यारह जानो ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

थावर दश अरु विकल पचेंन्द्री, बारह भेद त्रने यों सेद्री ।
दश विधि थावर सूक्ष्म बादर, संज्ञि असंज्ञि विकल तेरह धर ।७।
सूक्ष्म बादर संज्ञि असंज्ञी, द्वे ते चौ मिल सप्त सु रंगी ।
पर्याप्त अपर्याप्तक जानो, चौदह जीव समास सु मानो ।८।

दोहा चौदह जीव समास लख, जानो भेद अभेद ।
जीव रूप पहिचानिये, लीजो रतन विभेद ।९।

चौरासी लाख जीव योनि—

चौपाई—लक्ष चौरासी योनी भानो, मन दृढ़ कैसे होतीं जानों ।
पृथ्वी जल अग्नि सहित सु वायु, इतर सु नित्य निगोद समाऊ ।१।
सप्त सप्त लख षट गुण मानो, ब्यालिस लख सब योनि प्रमानो ।
ऐक सधारण दश लख जानो, लाख सु बावन इकन्द्री मानो ।२।
दो ती चौ सब दो-दो लाखा, विकलेंद्री षट लाख सु शाखा ।
मानुष चौदह लाख सु योनी, धारे जीव सदा दुख श्रोणी ।३।
देव नरक तिर्थंच पचेंद्री, बारह लाख योनि जीवेन्द्री ।
थावर बावन त्रस जु बत्तीसा, लाख चुरासी भणत गणीशा ।४।
जिय सुख दुख भ्रमते उपजावे, करोड़ कुलों में जु उपजावे ।
परजय अश्रित नाम कमावे, बिन उपाधि निज रूप समावे ।५।

दोहा— कौन जीव किस विध बसे, धरे कौन से भाव ।
निज समझो आपो लखो, जतन रतन शुभ दाव ।६।

चौदह-मार्गणा

चौपाई—गति सुचार पंच इंद्रिय मानो, पन्द्रह योग काय षट जानो ।
सु वेद तीन पच्चीस कषायें, अशुभ भाव शूभ षट लेश्यायें ।१।
षट सम्यक दो जीव सु भेदा, द्विविध भव्य अभव्य जु वेदा ।
अष्ट ज्ञान सु कुज्ञान समाये, सँज्ञी असंज्ञी जीव कहाये ।२।
अनहारक आहारक जीवा, मार्गणा चौदह सु सब जीवा ।
जीव ऐक में चौदह जानो, कोई भीं हो जीव सु मानो ।३।

गुण स्थान चौदह

चौपाई—मिथ्यात सासादन मिश्र अव्रत, एक देश संयत अरु अप्रमत ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अध: अपूरव अनिवृत्ति करणा, सूक्ष्म सांपरायिक वरणा ।४।
उपशाँत कषै सु क्षीण कषाया, सयोगि अयोगि चौदह भाया ।
मोक्ष महल की सीढ़ी ये ही, सुख त्रिकाल जी सुख विलसेई ।५।
इक गुण थान अभव्या सोहे, ग्यारह अंगी मुनि भी ले है ।
विष धर कृष्ण मिष्ट पय पीवे, बढ़त महा विष पर में जीवे ।६।
थानक तेरह भवि के होवें, दूरा भवि सम अभवि सु सोवें ।
गुणस्थान चौदह परमानो, जीवन कोई थान समानो ।७।

दोहा— आगम विधि कथनी सुगम, जीव तत्व दरशाय ।
आध्यात्मिक आगे सकल, सरस रतन मन लाय ।८।

आध्यात्मिक-जीव प्रकाश—

चौपाई—जी गुण दोषों नाम धराये, बहि अंतर परमात्म कहाये ।
फल परणति कर त्रिविध प्रकारा, चेतन भेद तीन अवधारा ।१।

बहिरात्मा जीव—

चौपाई—गुण अवगुण तत अतत समेटे, पुण्य पाप गुरू कुगुरू न गेते ।
आगम अनागम देव कुदेवा, हेया हेय रहित बुध छेवा ।२।
बिन विचार असमर्थ विचारा, गहे अनुसार रुचि अविचारा ।
सत्य असत्य नहीं पहिचाने, जड़मति विषय जन्य सुखमाने ।३।
ज्ञान अज्ञान न निरमुख होवे, पुण्य चहत रस पापन डोबे ।
उलटी समझ जगत दुख पावे, व्रत तप श्रुतना आतम पावे ।४।
स्वानु भानु बिन जग में राचे, जगत भवार्णव पचि पचि माचे ।
पथिक जघन पथ जो मिल जावें, आप भमें जग अन्य भ्रमावें ।५।

छंद दोहा— वहिरातम बिना विवेक, नेह न लावें सुबुधि जन ।
चेतनता रतन विशेक, धी धर सुख विल से सुजन ।६।

सोरठा— उर विवेक गल माल, जड़ चेतन अन्तर लखें ।
निज पर भेद विशाल, धारें हितकर तज अहित ।७।

अन्तर आत्मा—

चौपाई—सुबुधि विवेक शील धर होवे, अंतर आतम जग दुख खोवे ।
आगम तंत्र धरम गुण जाने, अतत सुतत्व शुभाशुभ भाने ।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देव अदेव धरम आ धरमा, मार्ग कुमारग मरम अमरमा ।
आत्म तत्व भव देव विचारे, ध्यान सु चिंतन योग उबारे ।२।
निज बल ज्ञान विभेदक राखे, अधम तजे रस उत्तम चाखे ।
परम विज्ञानी अंतर आत्मा, जड़ता रहित भजत परमात्मा ।३।
उत्तम मध्यम जघन विचारा, त्रिविधि भेद सु धर अविकारा ।
चौविस परिग्रह मुनिवर डारें, उत्तम अन्तर आतम सारें ।४।
मध्यम एक देश व्रत धरते, विरति निरत गृह निजहिं संवरते ।
विरत धरे विन सम्यक होई, जघन सु आतम अंतर गोई ।५।

सोरठा— उर अति विमल विवेक, सम्यक दरशन साज हिय ।
सुगुण दृष्टि निज टेक, अन्तर आतम रतन लख ।६।
नहिं सप्त भय पास प्रशम, आदि चौ गुण सहित ।
अंतर आत्म प्रकाश, निज पर तारण तरण चित ।७।

परमात्मा—

सोरठा— परमातम दो भेद, सकल निकल जाने सुबुधि ।
सदा रतन निरखेद, अनंत चतुष्टय गुण धनी ।१।

सकल परमात्मा

चौपाई—घाति निवार नवों निधि जागीं, सर्वज्ञ हितंकर परम विरागी ।
जग भव वारिधि काढ़न हारे, मुक्ते इच्छुक अतिशय उर प्यारे ।२।
जलाधि भाव भव शरण सहाई, महा पुरुष गुरू धरम दुहाई ।
जगत वंद्य तीर्थंकर होवें, दे उपदेश भरत तम खोवें ।३।
करम करे विन सु पराकरमी, निज गुण साधक स्व अनुकरमी ।
निष्क्रिय जिनको जग ने माना, जग को देवें मरग विपुल खजाना ।४।
निज को सुख सुख पर को देवें, मारग उत्तम उत्तम सेवे ।
अल्प लेय जो अधितम देवें, शांति सुधा आतम सँजोवे ।५।
मध्यम मारग जग शिवकारी, करुणा सागर सुगुण भंडारी ।
सु एकल जग भव जन हितकारी, अधिक देंय लघु चाह चितारी ।६
जघन मार्ग जो परथम सीढ़ी, सु धरे बढ़कर निज पर पैढ़ी ।
विन उपदेश करम उपदेशी, मूक केवलि केवलि विशेषी ।७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा— करत पराक्रम भाव सों, जग को दें निज दाय ।
सुखी सकल परमात्मा, उत्तम रतन सुभाय ।८।

निकल-अमल परमात्मा—

चौपाई—परम ज्ञान मय शिव पद धारें, द्रव्य भाव नो करम निवारे ।
क्षायिक अष्ट सुगुणता आई, लोक श्रेष्ठता त्रिभुवन गाई ।१।
जगत जेष्ठ तिन को शिर नावें, मुकुट मणो शिव लोक रहावें ।
मुमुक्ष सकल तिन ध्यान सुधरते, सहज मोक्ष सुख श्रेष्ठ सुवरते ।२।
अविचल निजानन्द सुख धारें, अमल विमल निज आत्म सवाँरे ।
सदा काल रहि हैं अविनाशी, गये मेंट जग भव दुख फाँसी ।३।
सुखी सदा चैतन्य समावें, लेंय न जग से सुक्ख लुटावे ।
सत पथ जग को नित दरशावें, विकट दीनता जीव भगावें ।४।
स्वतंत्र परमपरा सु नादें, लो किमच्छ अमुल्य वर साधें ।
चेतन दरशन लाभ दिखावें, जीव राह नित भटके पावें ।५।

दोहा— चेतन मयी सदीव, काल त्रितय द्रव्य भाव सों ।
अकल विमल वर जीव, जींव रतन यथार्थ में ।६।

गुणस्थानी जीव—

चौपाई—बहिरातन गुण थानक मानो, प्रथम थान बहिरातम जानो ।
मानो दूजो बहि गुण थानो, बहिरातम मध्यम जिय आना ।१।
गुण थानक तीजो लघु लेई, बहिरातमता तीनो सेई ।
अंतर आतम त्रिविध प्रमानो, उत्तम उत्कृष्ट बार थाँनो ।२।
अन्तर जधन सु चौथे भानो, मध्यम सप्तक लख गुण थानो ।
चौथे क्रम कर बारह पावें, अन्तर आतम, आतम ध्यावें ।३।
परमातम पद दोनों आये, थानक तेरह चौदह पाये ।
प्रथम सयोगीं तेरा पावें, चौदह अंत अयोगी आवें ।४।
अक्षर—ह्रस्व काल परमानो, अयोग चतुर्दश सुध गुण थानो ।
क्रम कर श्रुत जग नाम सु पामें, सिद्ध अभेद सदा परणामें ।५।

दोहा— आतम इक गुण भावतें, त्रिविध रूप मय जोय ।
चौदह गुण थानक भरे, विमल रतन विलसोय ।६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धरे प्राण जग में फिरे, विकल जीव विड रूप।
दश विधि संज्ञायें वरे, अमल रतन शिव भूप।७।

जीव के दश प्राण—

चौपाई—पंच इन्द्रिय मन वचन सु काया, आयु श्वाँकोच्छ्वास समाया।
जग जीवन दश प्राण समानो, द्रव्य प्राण धर जीवन मानो।१।
प्राण भाव दो विधि कर जानो, दरशन ज्ञान मई इक मानो।
चेतनता यातें दरशावे, बिना भाव नहिं जीव रहावे।२।
द्रव्य प्राण संज्ञी शुभ गाये, दश सब धर पच इन्द्रिय पाये।
मन के बिना असंज्ञी जानो, प्राण नवों पच इन्द्रिय मानो।३।
चउ इन्द्रिय के आठ कहाये, बिना कर्ण मन आठों आये।
सात त्रि इन्द्रिय जीव धराये, चक्षु कर्ण मन बिना भू थाये।४।
दो इन्द्रिय के छह सब प्राणा, कर्ण चक्षु मन नाक बिगाना।
आयु श्वाँस काया सप रसना, प्राण चार इक इन्द्रिय वरणा।५।

दोहा— स्पर्श रसन अरु नासिका, नेत्र कर्ण परमान।
इन्द्रिय पाँचो जीव जग, सदा रतन पहिचान।६।

नयागत जीव—

शुद्ध निश्चय नय से जीव

चौपाई—चेतन मय उपयोग सरूपी, करम त्रिविधि विन सदा अरूपी।
पर से रहित सदा आकरता, असँख प्रदेशी निज गुण धरता।१।
निश्चय नय कर ऐसो भानो, शुद्ध सुनय धरके परमानो।

अशुद्ध निश्चय नय से जीव—

अशुद्ध सु निश्चय नय अनुसारा, जानन निज भोक्ता करतारा।
सकल शुभाशुभ का ये भरता, रागादिक भावों का करता।
आत्म ध्यान विन करम कमावे, शरीयादि थिति नाना पावे।३।

सद्भूत व्यवहार नय से जीव—

पुण्य पाप फल में उलझावे, व्यौहारी नय मन यह भावे।
असद भूत व्यौहार भुलावे, अपन भाव उपचरित समावे।४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

असद भूत व्यवहार नय से जीव—

घट पट आदिक महल बनाता, पर कर्तत्व विषे मन राता।
निज परणति तज दुरगति राचे, अटक रतन जग भटकत माचे ।५।

दोहा— अमल विमल पर कर रहित, शुद्ध जीव परजय।
सुर नर तिर नारक रतन, सब विभव पर जाय ।६।

जीव-प्रदेश—

चौपाई—आतम तन अनुरूप अकारा, समुदघात कर लोक पसारा।
प्रसर संकोच दीप उन्मानो, क्षेत्र बराबर जोति समानो ।१।

समुद घात भेद—

कषाय वेदना धैक्रि वारे, मरण सु तैजस अरु आहारे।
केवली समुदघात सप्तानो, केवलि समुद घात किविलानो ।२।
केवलि आहारक पहिचानो, तैजस मिल योगों के मानो।
चार शेष जग प्राणी करते, कषै वेदना वैक्रिय भरते ।३।

—'जीव के' सुभाव विभाव—

ज्ञान उपयोग जीव सुभावा, मति ज्ञानादिक तास विभावा।
अक्त्म प्रदेशी शुद्ध सुभावा, नर नारक परजाय विभावा ।४।
आत्मा ऐके घर पर जाये, व्यय उत्पाद ध्रौव्य समाये।
विविक्षा नय सु भेद परनाने, विशुद्ध भाव सु दरशन ज्ञानो ।५।
निज उपयोग धरे थिरतांने, आवागमन सकल परिहाने।
पर में रचे जगत भटकावे, व्यय उत्पाद सु स्वांग धरावे ।६।

दोहा— दरशन ज्ञान मयी रतन, जीव सदा निरखेद।
पौरुष बिन निज करम वश, जीव लहे बहु भेद ।७।

मंगलाचरण

दोहा— दरशन ज्ञान मयी सदा, विमल जीव निज देश।
नमत रतन शुद्धातम को, जा सम नाहीं शेष ।१।

अजीव-द्रव्य

चौपाई—चेतनता विन जो दिखलाये, प्राण बिना अजीव कहावे।
इक अजीव विधि पांच समाये, अरूपी रूपी द्वै विधि गाये ।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुद्गल धर्म अधर्म सुजानो, आकाश काल सुपाँच प्रमानो

पुद्गल भेद, प्रदेश गुण

मिलकर विछुड़े जड़हिं रहावे, अणु स्कंध द्विविध कहलायें।
अविभागी अणु अणू कहावे, अधिक मिले स्कंध बनावें।१।
बीस सुगुण लख पुद्गल जानो, स्पर्श आउ रस रूप पंचानो।
गंध द्विविध सब बीस मिलाये, द्रव्य पुद्गल सु सदा समाये।१।
सूक्ष्म सूक्ष्म, सूक्ष्म कहावे, सूक्ष्म थूल नहिं नयन दिखावे।
बाहर सूक्ष्म थूल जु होवे, थूल थूल सब पुद्गल भेवे।३।
इक अणु सूक्षम सूक्ष्म जानो, करम प्रकृति सब सूक्षम मानो।
सूक्ष्म बादर ध्वनि सम जानी, बादर सूक्षम छाँह धुपानो।४।
स्थूल अगनि जल नेत्र लखावें, थूल थूल भू गृह श्रृंग भावें।
स्वाभाविकता अणु दरशावे, गुण विभाव स्कंध बतावे।५।

दोहा— गुण चारों पुद्गल विषें, स्पर्श रूप रस गंध।
अणु स्कंध नित पाइये, मिलें रतन स्वच्छंद।६।

पुद्गल के उपकार

चौपाई—मन वच तन अरु सथा, उच्छासा इन्द्रिय आदि सु पुद्गल खासा।
जीवन मरण सुखादिक सारे, जड़ उपकार जीव तित धारे।१।

धर्म द्रव्य

जीव सु पुद्गल गमन सहावे, धरम द्रव्य तसुनाम सुपावे।
धरम विना नहिं गमन जु होवे, पर उपकारक शक्ति समोवे।२।

अधर्म द्रव्य

ठहरत पुद्गल जीव विचरता, सहाय द्रव्य अधर्म स्थिरता।
प्रेरक काहू के ये नाहीं, करत सहाय दरब ठहराहीं।३।

आकाश द्रव्य

द्रव्य आकाश नेय अवकाशा, लोक अलोक दुभेद उजासा।
द्रव्य वसत षट लोक अकाशे, दरब नाहिं आलोका काशे।४।

आक्रिय, अरूपी, द्रव्य

क्रिया हीन त्रि नित्य अरूपी, धरम अधर्म अकाश स्वरूपी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काल द्रव्य भेद प्रदेश

नियत वर्तना काल करावे, निश्चय अरु व्यौहार समावे ।५।
असंख कालाणु निश्चय काला, समयादिक व्यौहार विशाला ।
नित्य अवस्थित किरिया हीना, एक प्रदेशी काय विहीना ।६।

शेष द्रव्य प्रदेश

जीव धर्म अधर्म लोकाशा, असंख प्रदेशी जिनवर भाषा ।

आस्तिकाय

जीव धरभ अधरम आकाशा, पुद्गल अस्तिकाय प्रकाशा ।७।

छहों द्रव्य

इनका होवे नियत अकारा, काय मान यातें अवधारा ।
काल भूप अणु अणु विखरावे, रतन राशि नहिं काय समावे ।८।

दोहा— जीव सु पुद्गल धरम सह, अधरम और अकाश ।
काल द्रव्य मिल होत सब, छहों द्रव्य गुण राश ।९।

प्रदेश प्रमाण

दोहा— अणु जितना प्रदेश इक, जितने अणु प्रदेश ।
अनंत प्रदेश अलोक सु, लखो रतन निज देश ।१।

आश्रव तत्व—

चौपाई—आश्रव करम सु आवन द्वारा, बढ़े नाव जल छिद्र सुरारा ।
चुम्बक खेंच लोह जिम लेवे, जीव किरियात्यों करम समोवे ।१।
द्विविध भेद सु आश्रव जानो, द्रव्य–भाव लक्षण पहिचानो ।
करम आदि रागादिक लावें, द्रव्य आश्रवसु विबुध भनावें ।२।
मिथ्या अविरति योग प्रमादा, आश्रव भाव कषायन लाधा ।
इन वश करम जीव उपजावे, जीव सदा जग बोझ बढ़ावे ।३।
आश्रव द्वार करम जो आये, द्रव्य भाव दो भेद कहाये ।
द्वेष राग परिणाम सु नाना, बंध हेतु ये आत्म विज्ञाना ।४।

बंध तत्व

जीव करम मिल इक रस पावें, करम बंध सो नाम धरावें ।
प्रकृति थिति अनुभाग प्रदेशा, चारों बंध प्रकृति गण वेशा ।५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निज सुरूप जब जीव भुलावे, अशुभ अनरथक बंध बनावे।
कषै जोर थिति फल अनुभागा, बंध दुष्ट जग धारे रागा।६।

दोहा— विविध भाव आतम वरे, बंध हेतु सोपान।
ऐसी गरिणति बंध तस. सार रतन कर दान।७।

प्रकृति बंध

चौपाई—वरग अष्ट सब करम सजाये, करम आठ विधि नाम धराये।
शत अड़तालिस प्रकृति सु जानो, अनंत भेद विविध कर मानो।१।
ज्ञान वरणी दर्शनावरणि, करम वेदनी अग्र मोहनी।
आयू नाम गोत्र अंतराया, प्रकृति अष्ट विधि वर्ग समाया।२।
ज्ञान सु दरशन को अवरोधे, करम सरब निज नाम सु बोधे।
वेदावी सुख दुख वेद करावे, मोह अश्रद्धा चरित—भुलावे।३।
काय में आयू रुकवावे, नाम करम आकृति स्वाभावे।
गोत्र सु ऊंच नीच विधि धारे, अन्तराय सब विन्घन द्वारे।४।
आठों परकति जीव नचावें, जिय स्वरूप निज भाव न पावे।
निज स्वरूप विन जग जिय डूबे, पद पद विकल दीन गिर कूवे।५।

दोहा— करम आठ पुद्गल मयी, नाहि जीव पर जोर।
निज भूले दुरगति लयी, लख निज रतन निचोर।६।

स्थिति बंध

चौपाई—दरशन ज्ञान अरु वेदनीया, लखथिति अंतराय अधिकीया।
सागर कोड़ा कोड़ी तीसा, थिती बंध इक करम महीसा।१।
करम मोहनी अधितम मानो, सत्तर कोड़ा कोड़ी ठानो।
नाम गोत्र अधि बंध समाई, कोड़ा कोड़ि बीस परमाई।२।
सागर ततिस आयू ठानो, उत्कंट अवधि तनों परमानो।
सागर सब में संख्या लीजे, एके काल सब बंध सुभीथे।३।
जघन थिती करमन अनुसारा, करम वेदनी महुरत बारा।
नाम गोत्र लघु मुहुरत आठा, शेष मुहूरत अंतर ठाठा।४।
मध्यम थिति सब विविध प्रकारा, मध्यमता मय भाव सुधारा।
जीव तीव्र-सम भाव जु धारे, अधितम मध्यम जघन सुखारे।५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बंध-फल

अशुभ करम अनुभाग जु लाये, निंब कांजि विष हला हलाये ।
शुभ करमन फल अति शुभकारा, गुड़ शक्कर मिसरी अम्रितारा ।६।
सकल करम अनुभाग सु धारा, सुख दुख भोग विविध परकारा ।
करम परमाणु आत्म प्रदेशा, ऐक मेक इक क्षेत्र प्रदेशा ।७।
बंध तनो परिणाम सु आवे, यथाकाल फल वेद करावे ।
बंध दुख-सागर दुख की धारा, करें सुबुधि । तिन बारा न्यारा ।८।
दरश ज्ञान सुध चरित समारे, करम दुष्ट तप बल निखारे ।
बंध बिना निज रूप रमावे, शिवानन्द रस स्वातम आवे ।९।

दोहा— चेतन निज परिणाम वर, नाहीं रतन मलीन ।
वीतराग बन करम हर, निज वैभव सुख लीन ।१०।

संवर तत्व

चौपाई—आवत करमन को जो रोके, संवर तत्व सुबुधि नित धो के ।
ध्यान धरत उत्तम नीरोधे, द्रव्य संत्रर योगि नित सो धे ।१।
द्वादश तप दश धरम सवाँरे, दुर्द्धर बाइस परिषह धारे ।
समिति पांच त्रय गुपती धारे, चारित पाँच सुविध अनुसारे ।२।
ये सत्तावन आश्रव टारें, ध्यान धरें शिव पंथ निहारें ।
द्वार सकल आश्रव के रोकें, आश्रव बिन नहिं बंध विशेकें ।३।

निर्जरा तत्व—

जो करके तप करम खपाये, निर्जर तत्व सु शिव दरशाये ।
दोय भेद कर बुधजन भाने, सविपाक अविपाक परमाने ।४।
करम खपें तप धर अविपाके, धारत मुनिवर ध्यान लगाके ।
जगत जीव सवि पाक सु करते, खिरत ऐक बहु करम सुभरते ।५।
करम श्रृंखला टूट न पावे, अकाम निर्जरा नाम सु पावे ।
अति वल तप धर करम झरावे, सकाम निर्जरा शिव दरशावे ।६।

दोहा— संवर निर्जर इष्ट जिय, साधत वर शिव पीव ।
साधो हित स्वातम रतन, मेटो भ्रमण अतीव ।७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोक्ष तत्व—

चौपाई—छूटे करम मोक्ष सुख आवे, अव्या बाध अमलता छावे।
मुकति जीव बिन बंधन भाने, निर्भय अविनाशी सुख साने।१।
अचल सुक्ख बिन आकुल साता, बिना करम नर मुक्ति सु पाता।
शरीरा कार ज्ञान गुण राता, अनुपम स्वात्मानंद विधाता।२।
लोक शिखर सोहत जग भेका, नित्य अनंत बिमल बिन शोका।
विषया तीत सुक्ख निज भोगी, सुक्ख सकल जग लघु लख योगी।३।
इक क्षण सुख सिध जग अधिकानो, लोक काल त्रय मिल लघुकानो।
जीव सुभाव उर्ध्वगति कारी, सिद्धालय तिष्ठें नित अविकारी।४।
आलस तज मति मान सु साधो, धर रतनात्रय तप आराधो।
दरशन ज्ञान मोक्ष सुख बीजा, उपादेय गुण भव्यन सीझा।५।

सोरठा— मोक्ष महा सुख भूप, अनन्त चतुष्टय वर अति।
अष्ट सुगुण चिद रूप, स्ववश रतन अक्षय अनंत।६।

मंगलाचरण

दोहा— महावीर गिरि श्रृंग उंच, वाणी सुर सरि धार।
जीव भव्य हित साधनी, नमत रतन शतबार।१।

नव पदार्थ—

चौपाई—लखो वस्तु सत तत्व मंझारा, जीवादिक शिव सप्त सु धारा।
पुण्य पाप अरु तत्व मिलाये, नव पदार्थ जग माहि कहाये।२
पुण्य पाप जग कारण दोई, मुक्त जीव नहिं इन वश होई।
जग पदार्थ लख ज्ञानी जागें, निज बल बढ़ते करम सु भागें।३।

पाप-पाप कारज—

दुख का कारण पाप सु जानों, बाधक गुण संवेग जुमानो।
निरभय जीव जगत में राचे, फले पाप मग लखे न सांचे।४।
पाँच मिथ्यात सु दुष्ट कषायें, कुटिल ध्यान प्रमाद बसायें।
भारत रौद्र ध्यान असंयमा, मिथ्या लेश्या भाव अधरमा।५।
कुगुरु कुदेव कुधरम सु सेवा, पापोपदेश महा अघ लेवा।
बिन विवेक निर्दय मिथ्याती, विषय मगन हिंसक संपाती।६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आत्म प्रशंसक पर गुण निंदक, असत-वाक श्रुत-मिथ्या वंचक ।
धरम कृतघ्नी शास्त्र उछेदक, पापारंभी निंद्यप सेवक ।७।
मारन ताड़न में रुचि राखे, पूजा दान सुपथ सब नाखे ।
निरबल अति बहुरोष बतायें, इह-पर भव अति दुक्ख उठायें ।८।

दोहा— व्रत तप संयम रहित सु, बिन विवेक बेकार ।
निर्दय निर्भय रतन वह, खोले श्वभ्र किवार ।९।

चौपाई—जिनवर जिन श्रुत जिन गुरु भूला, इनके निंद्यन अति अघ मूला
जगत रतन सुख तुम जो चाहो, पाप काज तज अमरत पोहो ।१।
फले पाप अति दुख जिय पावे, अबल असहाय रंक विकलावे ।
सुखमय काज बनत विनशावे, निज बल विघटे बुधि विसरावे ।२।

पाप का फल

चौपाई—सुत कपूत दुर्व्यसनी होवे, अरि सम गर्हित भ्राता जोवे ।
कुलटा तिय धातक परिवारा, दारिद रोग शोक वधकारा ।३।
अंधे गूंगे वहरे पुंगले, अंग हीन कुबड़े औ पगले ।
दीन कुरूप दास दुर बुद्धी, पापाचारि सु आगम विरुद्धी ।४।
पापोदय के फल दुख खानो, नीच मलेच्छ अबुद्धिक मानो ।
दुख को अति पर भव में पावें, सांतों नरक फिरत दुख धावें ।५।
दुख की खानि तिरग परयाया, दुरगति लहत त्रिजग भरमाया ।
भोगोप भोग तुष्ट न होवे, वन अन्यायी भोग संजोवे ।६।
पापात्मा दुख शील अभागा, बहु वियोग दव दुक्खन पागा ।

पाप कार्य

जन पशू पक्षी करत वियोगा, परदारा धन वस्तु संयोगा ।७।
पूजा दान बिना धन चाहे, दुख दारिद फल पापन आहै ।
सुखी रतन जो होना चाहो, प्राण जाँय भल पाप न लाहो ।८।

दोहा— पाप महा दुख रूप, संक्लेशित दुरगति करे ।
पुण्य रतन जग भूप, सुख शुभ लहि मुकती वरे ।९।

पुण्य के कारण

चौपाई—सम्यक दरशन ज्ञान चारित्रा, शुभाचरण अनुष्ठान पवित्रा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

व्रत धर योग सु इन्द्रिय भरता, नियम सु यम कषाय बिन धरता ।१।
करे सेव अर्हंत नित पूजा, गुरु उपासना स्वातम भीजा ।
ध्यान अध्ययन नित उपदेशा, शुचि वैराग धरम मन वेषा ।२।
पाप विमुख फल चिंता नाहीं, आत्म निष्ठ मन करुणा ठाहीं ।
देवागम गुरू परख प्रवीणा, पंच परमेष्ठी जप गुण भीना ।३।
आतम निंदक पर गुण साके, पात्र दान रस समता जाके ।
सत्य इष्ट मरयादा राखे, धरम अनुरक्ती हित मित भाखे ।४।
प्रिय अप्रिय निज को जो सोई, सबको व्याप्त सुख दुख होई ।
सरल भाव मत ऐसे आने, मोह राग नहिं मत्सर ठाने ।५।
षट गुण नित आवश्यक साधे, कारुणिकता जु सरव अवाधे ।
सबको हित जग-भव भाये, पुण्य काज सुख शिव उमगाये ।६।

दोहा— पुण्यवान सो है रतन, अघ जग तन भव भीती ।
संयम व्रत तप यतन उर, पुण्य धाम शुभ मीत ।७।

पुण्य–फल

चौपाई—पुण्य सुयोग सकल सुख आवे, गिन का जग सुख शिव पथ लावे ।
सुभग सु मोहक रमणि सुशीला, काँति रूप धर सुत गुण शीला ।१।
सहोदर सखा सु हृदय ताता, शिष्ठ स्वजन परिजन सुख दाता ।
सौम्य सुष्ठ शुभ वयन शरीरा, अतुलित वैभव भोग गंभीरा ।
गुण लावण्य रूप गुण पूरा, सँपति अवरणीय सुख शूरा ।
दासी चपला मन हरषावे, लोक पूजता पुण्य उपावे ।३।
चक्री इन्द्र तीर्थंकर होवे, गुण वैभव ऋद्धि सिद्धि लेवे ।
सकल सुलभ जग वस्तु कहाहां, भिन्न सुयोग सु पुण्य बसाहीं ।४।
मुक्ति विश्व का राज सु पावे, जग वैभव सब चरण सुहावे ।
पुण्य सु वांछक उर अभिलाषा, सम्यक हो जग छूटे बासा ।५।
धरे भाव वत्सल शुभकारी, पूजन दान प्रभा वन धारी ।
धरम लाभ फल मुक्ति पसारा, सुख विषाद विन कांक्ष निवारा ।६।
मारण ताड़न कारण तोड़े, वनत वियोग सुखद मुख मोड़े ।
सुत वैभव धन तिरिया आवे, पुण्य फल उदय फल धरम सु पावे ।७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा— शुभ भावन कर पुण्य फल, फले पुण्य सुख भूर ।
विमल रत्नात्रय रत्न ले, करो करम निरभूर ।८।
पुण्य भाव शुभ द्रव्य बढ़े, पुण्य काज व्यै होय ।
विकल भाव धर द्रव्य जो, अवसर रतन सु खोय ।९।

तत्व हेयोपादेयता

चौपाई—मुनि निरविकल्प विज्ञ गुरु भारी, सिद्ध रूप स्वात्मता धारी ।
जीव उपादे निश्चय सेती, हेय मिथ्यामति विवहारोती ।१।
ध्यान धरम रति निमित अजीवा, निर विकल्प विन हेय सदीवा ।
मोक्षार्थी को आश्रव बंधा, दिखें हेय जग-भव के खंधा ।२।
बंध पुण्याश्रव रागिन प्यारा, पापों कर उत्तम लख धारा ।
बंध पापास्त्रव जिय दुख दाता, स्वयम् प्रत्यक्ष सु हेय-असाता ।३।
सर्व काल हो संवर निर्जरा, उपादेय तत्व मानो खरा ।
अक्षयानन्त रतन सुख सागर, सविधि आदेय मुक्ति सु आगर ।४।
उपादेय गहते बुधिवाना, अनुपदेय विधि विविध सु आना ।
जानि हेय त्यागें गुण धीरा, पापाश्रव भव जग दुख सीरा ।५।

दोहा— देशव्रति सम्यक्त वर, बंध पुण्याश्रव लाय ।
मंद कषाय मिथ्यात कर, अल्प रतन पुन पाय ।६।

सम्यक्ती एवं मिथ्यात्वी बंध–फल

चौपाई—दुराचारि जिय करतब हीना, बंध मिथ्याती पाप प्रवीणा ।
संवर निर्जर मोक्ष सु तत्वा, वर रतनात्रय योगि स्वमित्वा ।१।
निरविकल्प परमेष्ठी आत्मा, करे सु संवर भव्य महात्मा ।
मिथ्या दर्शन कुज्ञान भुलाया, पाप बध आश्रव उपजाया ।२।
सम्यक दर्शन ज्ञान सु करता, पंच अचेतन बुधि भवि हरता ।
बंध पुण्याश्रव समकिति धारे, विमल विभुति तीर्थ कर तारे ।३।
पुण्याश्रव मिथ्यात्वी बंधा, सदाविकल जग काया खंधा ।
पापाश्रव मिथ्यात्वी बंधा, धर अज्ञान जिम पशु स्वच्छंदा ।४।
दुख भव भव में जग भरमावे, कटुक करेले नीम चढ़ावे ।
सम्यक धर लघु पाप जो होवे, करत यत्न बहु पुण्य समोवे ।५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संवर निर्जर मोक्ष प्रदाता, मुक्त निजातम सुक्ख समाता।
संवर निर्जर सब सुख लावे, आश्रव बंध अजीवत गावे।६।

दोहा— पुण्य पाप सप्त तत्व सु हेय अहेय विचार।
सुफल विफल समझो रतन, जीव सरव हितकार।७।

नरक गति के हेतु-पाप परिणाम—

चौपाई—पर तिय परधन आरंभ लोभी, दुर्व्यसनी श्मशु चित क्षोभी।
क्रूर हृदय अति दुष्ट सुभावा, निर्दय निंद अवाँछित भावा।१।
विषयामिष लोलुप हृद हीना, वस्तु वीभत रुद्रचित चीन्हा।
मिथ्यामत आगम मतवारे, गद उदण्ड दुर्जनता धारे।२।
जिन गुरू आगम धरम विहीना, कुगुरू कुदेव कु आगम भीना।
मोही मद भर अघ अवधानी, पाँच पाप धर अतुल अज्ञानी।३।
मिथ्या दृष्टि व्यसन मुदारी, मित्रसु अघ जिन पापाचारी।
धरम द्वेष धर सु दुराचारी, शील रहित दुठ शठ अविचारी।४।
सज्जन साधू नाहिं सुहावे, पापी अधमी नरक समावें।
लेश्या कृष्ण रौद्र उर ध्याना, अंत पाप गृह नरक निदाना।५।
दुख मय अति दुख जहं पै भारी, सुख नहीं निमिष रंच मंझारी।
लड़ें परस्पर दुख उप जावें, प्रकृति जन्य दुख जीव उठावें।६।

दोहा— छुअत भूमि दुख अति घनो, शीत उष्ण भयकाय।
अंग भंग कर नारकी, बाधा अमित अभाय।७।
परणति सम भूमी मिली, दुक्ख सरब दिश छाय।
पूरण आयू बिन रतन, मारकाट भरमाय।८।

तिर्यंच गति के हेतु

चौपाई—मायावी मन कुटिल विधाना, परधन बंचक मूर्ख महाना।
मिथ्यागम धर व्रत कर हीना, शील रहित पशु धन मद भीना।१।
कुतीरथ गामक अधि स्नाना, शुचि बिन भोज धन सब ठाना।
करम नीच वच न्याय अप्रीती, आर्त-अज्ञ कर्त्तव्य अनीती।२।
सकुच बिना कापोल्या लेश्यी, गति तिरयंच धर नाना भेषी।
महा अधम गति पशु दुख खानी, अल्प आयु धर मरण समानी।३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC-0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं लेश सुख नहिं स्वाधीना, व्याकुल जनम भार बह दीना।
छेदन भेदन ताड़न तपना, वध बंधन संक्लेशित मरना।४।

निगोद के हेतु

विषयासक्त अधिक मिथ्यात्वी, नास्तिक अज्ञानी परचाती।
दुराचारि परलोक न जाने, चारित धरम नहीं तप ध्याने।५।
आगम जिनकी रीति न भावे, आगर दुख सु निगोद समावे।
करते जनम मरण अकुलावे, निकसन की पर ठौर न पावे।६।

दोहा— जन्म मरण अठदश भरे, श्वाँस ऐक के माँहि।
सदा अवचनी दुख रतन, काल अनंत उठाहिं।७।

देवगति के हेतु

चौपाई—उर भकती जिन सरधा पूजा, गुरू तीर्थंकर ज्ञानि अदूजा।
नित धरमात्मा मुनिनर बंदे, लख अर्हंत निर्ग्रंथ आनंदे।१।
महाव्रती अणुव्रति तप धारी, इन्द्रिय जयी कषाय विडारी।
षट आवश्यक नित जो साधे, पंथ धरम चित नित आराधे।२।
आर्त रौद्र तज खोटे ध्याना, धरम शुकल शुभ ध्यान सुहाना।
लेश्या शुभ सब धारक होई, धरम बुद्धि धर जिन वृष सेई।३।
सम्यक दरशन उर मणि हारा, कानन कुण्डल ज्ञान संवारा।
चारित्र माथे मुकुट दिपावे, जग वपु भोग संवेग सु भावे।४।
दश विधि धरम धरत अनुप्रेक्षा, धरम आचरण विशद विविक्षा।
धरमी धरम प्रीति गुण धारी, श्रावक मुनि पद सुरग उघारी।५।
शम दम कर दुठ करम न आवें, शुभ करमन का शुभ फल पावें।
बहु सुख सब पुण्यात्मा पावें, इन्द्रिय सुख ले, करम उपावे।६।

दोहा— अज्ञ बाल तप राग शुभ, भवनात्रिक में जाँय।
बुद्धिमान सुर कल्प के, सम्यक रतन दर्शाय।७।

मनुष्य गति के हेतु

चौपाई—मंद कषायी मृदु स्वभावा, संतोषी चित सहज सुभावा।
देव धरम गुरू सरधा धारें, गुणी निरख मन हरष समारे।१।
आरम्भ परिग्रह अल्प सु राखें, एक देशव्रत समता साखें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फल पुण्योदय लहें विभूती, मानुष तन संपति अनुभूती ।२।
शील सु तप विन गति हों चारों, भाव प्रमाण सुगति ता सारों।
शाँत भाव मृदु शुभ गति करता, अशुभ भाव गति अधम सुधरता ।३।

भोग भूमि का कारण—

सरधा भकती शुचि आहारा, देत सुपात्र भोग भू प्यारा ।
साधन सुख कर भोग अपारा, दान सुभाव फले अविकारा ।४।

दोहा— सहज भाव गुण धरम रुचि, जाकी जैसी दौर ।
सुगति अगति वैभव रतन, सुख दुख पावें ठौर ।५।

स्त्रीत्व के हेतु—

चौपाई—सेवत काम तृप्त नहिं होवे, सज तिय रूप सु माया मोवे ।
अज्ञ रागान्ध सु शील विहीना, मिथ्या मति,तिय वेद धारीना ।६।

पुरुष वेद के आधार—

माया रहित कुटिलता हीना, पूजा दान विवेक प्रवीणा ।
सम्यक्ती उर विषय संतुष्टा, पुरुष वेद के कारण इष्टा ।७।

नपुंसक वेद के आधार—

मन उपभोग काम रति भीना, परतिय बाँछक आरत दीना ।
काम किलोल मगन नित रहते, नापुंसक ते जग दुख भरते ।८।

दोहा— पर में रच निज रस बमें, मनसिज के वश होय ।
वेदन तन के त्रिविधि विधि, तजत रतन शिव जोय ।९

लूलेपन के हेतु

चौपाई—बिन शोधे भू मारग धावें, अधिक भार वह पशु कुदावें ।
दया हीन अज्ञ कुतिरथ गामी, लूले पन की यही निशानी ।१

बधिरता के हेतु, ज्ञानावरणोदय

धरमात्मा को दोष लगावें, केवलि आगम हृदय न आवें ।
कुत्सित कथा श्रवण अनुरागा, निंदाग्राही ईर्ष्या पागा ।२
ज्ञानावरण उदय अनुकूला, लहत बधिरता आज जु फूला ।
असत वाक गह पर झुठआवे, करण उछेदक तस फल पोवे ।३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निंदा के हेतु

शठता वश पर-दोष सु भावे, पर गुण वीरत सहन न पावें ।
करम निंद्य कर नीति मिटावें, निंदा तिरसकार जग पावें ।४।

अंधता के हेतु-दर्शनावरणोदय ।

बिन देखे निरखो बतलावे, कर कटाक्ष नयना मटकावे ।
लखत गुप्तांग तिय विक्ष निहारे, कुगुरु कुदेव कुवृवता धारे ।५।
चपल नयन मन कुतीरथ दर्शी, दरशन बाधक नयनाकरषी ।
मन मत्तंग वश मद वर गामी, दर्यूनावरण अंध अघ धामी ।६।

गूंगेपन के हेतू-ज्ञानावरणोदय

विकथादिक तिय कथा लुभावे, देवागम गुरू दोष लगावे ।
विविध कु आगम पढ़े पढावे, निज महत्वहित इच्छा भावे ।७।
सु श्रद्धा विनय रहित गुरूताई, कर कुतर्क आगम पंडिताई ।
सत वच मुख भेदक अविचारा, ज्ञान विघातक गूंगी धारा ।८।

दोहा— शठता पाई करम वश, ज्ञानावरण सुभाव ।
अनगरली वाचालता, गूंगेपन को दाव ।९।

विकलेंद्रियता के हेतु

चौपाई—उन्मत तत्व अरथ गुण धारे, सत्य असत्य पिछान विडारे ।
देव धरम गुरू मरमन चीन्हे, श्रद्धा शील शुभ गुणक रहीने ।१।
ज्ञान काज अति बाधा डारे, ज्ञानी निंदक विवदा–डारे ।
ज्ञानावरण उदय परमाने, विकलेंद्रिय दुख परत उठाने ।२।

असाता वेदनोदय—

विषयन लम्पट धरम विहीना, भोगत भोग पुष्ट तन कीना ।
निशि को भोजन अभक्ष भुंजावे, परपीड़ा निरदयता भावे ।३।
जत तप यम संयम कर हीना, शोक ताप दुख रुदन मलीना ।
करुणा कारक आरत भीना, उदय असाता वेदनि चीन्हा ।४।

साता वेदनोदय—

धरमा चरण करत तप जोई, ममता तज तन दया हृदेई ।
सम भावी नहिं रागी मोही, शुभ करमी परताप विगेही ।५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पक्ष रहित मन ना इठलाते, व्याधि बिना सुख शाँती पाते।
मन वच तन संयम शुचि धारें, वेदनीय साता निरधारें।६।

दोहा— दया भाव हिरदे विमल, पर दुख करते दूर।
फलता साता वेदनी, सदा रतन सुख पूर।७।

सुभग नाम कर्मोदय

चौपाई—सुगुणशील दृढ़ जिन उर भूषण, अलंकार यम तप आभूषण।
व्रत संयम शुभ नियम प्रवीणा, नमन देव गुरू सरधा चीन्हा।१।
गुण पूजक सेवा फल लाते, लावण रूप अलोकिक पाते।

दुर्भग नाम कर्मोदय

सु अज्ञ पशू सम काया भेवी, कुगुरू कुदेव कुधर्म कुटेवी।२।
अशुभ करम फल अशुभ शरीरा, लख कुरूप मन व्यापे पीरा।
विन संयम तन मन भरमाया, मद धर दुरभग नाम कमाया।३।

सौभ्य नाम कम

जिनवर जिन श्रुत जिन गुरू सेवी, सदा नियम तप व्रत चित देवी।
इन्द्रिय जय तन ममता त्यागी, सौम्य कर्म कर नयन सुभागी।४।

दारिद्रय के हेतु

मुनि तन निरख घृणा मन लावे, लावण्य धन सु अहं जनावे।
परदारा रत अलिक उचारें, गृह द्वेषी दारि दाता धारें।५।

दोहा— सुजन सुजनता धरत उर, शुभ फल करम उपाय।
मलिन वचन तन मन करम, अशुभ रतन फलदाय।३।

शठता के हेतु मति ज्ञानावरणोदय

चोपाई—देवागम गुरू परख न जाने, धरम पूज ज्यों त्यों कृतठाने।
छल बंचकता समुद सिखावे, निन्द्य अज्ञ शठ सु मति किम पावे।७।

विद्वता के हेतु

(मतिज्ञानावरण क्षायोपशम)

सविनय तत्व अतत्व विचारे, धरम सार गह सरधा धारे।
धरम काज तप करे करावे, जग संवेग विद्वता पावे।५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विद्वता—श्रुत ज्ञानावरण क्षायोपशम

पठन पाठ विधि-पढ़े पढ़ावे, दे उपदेश भव्यता पावे ।
धरम काज तत्पर सत भाषी, वक्ता सदा सुश्रुत परकाशी ।

शुभ नाम कर्मोदय के हेतु

जग काया भव भोग विरिक्ता, धरम जिनेन्द्र गुरू अनुरकता ।
सरल हृदय गुण आर्जव धारी, शुभ करमी शुभ परणति सारी ।

अशुभ नाम कर्म के हेतु

परधन परतिय हरत कुटेवी, कुटिल अपुण्यी बाधा देवी ।
जधन आचरण मगन सुमाता, अशुभ परिणाम अशुभ विधाता ।

दोहा— अशुभ अशुभ फल को करे, यथा विटप जस बीज ।
जैसो चाहो मन बुवो, ऊंच रतम बड़ चीज ।

पापात्मा के लक्षण

चौपाई—पापी मिथ्याती रुदुर बुद्धी, नरक दुक्ख पाके बिन शुद्धी ।
करत नरक हित गमन पयासा, पापात्मा उर पापन वासा ।१।

धर्मात्मा के सक्षण

धरम क्षमादिक तप व्रत धारे, सत रतनात्रय पात्र निहारे ।
पूजा दान करत सुर आये, परम सुथानी धरमी भाये ।२।

धर्म फल,

श्री जिन आगम गुरु श्रद धानो, पूजन वंदत थुतो सुहानी ।
सत पात्रन प्रति नेह अपारा, उत्तमोत्तम शुभ धरम पसारा ।३।
धरम साध में वैभव तजते, अतुलित भोग धरम फल फलते ।

पुण्य दान फल—

जिनवर गृह कर विम्ब सु दाना, शिशु विद्यालय दृढ़ श्रद्धाना ।४।
धरमात्मा लख दान सु येते, जग प्रतिष्ठा सुख यश लेते ।
परभव वैभव सुख बहु पावें, सकल कल्याण मार्ग खुल जावें ।५।

कार्पण्य फल

धार कृपणता दान न देते, पूजादिक शुभ बीज न बोते ।
महा अज्ञानी लोभी जानो, कृपण सु नर तिर्यंच समानो ।६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा— अफल कुफल निष्फल रतन, धन्य सफल जो जीव।
निज परणति सुख खेत है, सम्यक धार सदीव ।७।

गुणी बनने के हेतु

चौपाई—गुण सेवी गृह बहु गुण आवें, गुण गुरूता चिंतन तें पावें।
गुणी जनन को आदर देवें, परगुण मानत गुण गह लेवें ।१।

निर्गुणता के हेतु

गुण औगुण को भेद न जानें, ग्राहकता बिन गुण विन शाने।
विनय रहित मद धर अकुलाने, ज्ञान पिपासा बिन गुण हाने ।२।

सेवक के हेतु

कुगुरू कुदेव कुधरम सु सेवा, निज बल परगट ज्ञान न भेवा।
चंचल भय मन काजन ठाने, धरम करम बिन सेवक आने ।३।

वैभव के हेतु

मन वच काय धरभ चित लावें, श्री जिन आगम उर गुरू ध्यावे।
पुण्य योग सुख संपति आवे, अतुलित वैभव निज बल पावे ।४।

सुत विहीनता के हेतु

व्रत बिन निरदय उर सुत चावें, वध कर सुत पर देव मनावें।
उदय मिथ्यामति सुत ना पावें, अल्प आयु—गुण काल समावें ।५।

बंध्यत्व के हेतु

खोटे देव गुरु न पद अरचा, शील सकुच बिन अभक्ष न परचा।
पूरब पाप उदय बल जाये, व्याधि अगुणता सुत ना पाये ।६।

दीर्घाष्क सुत प्राप्ति के हेतु

निज सुत सम सब सुत उर आने, हार्दिक नेह सहज शुभ माने।
देव धरम गुरू आगम भकती, मिथ्या रहित अहिंसक वृत्ता ।७।
असन पान सब विधि अनुसारे, सबल सुतन मन सुत अवधारे।
शुभ भावन कारज शुभ होवे, अलौकिक दीर्घायु सुत होवे ।८।

दोहा— व्रत तप संयम रतन शुभ, देवागम शरणार।
गुण वैभव सुत यतन शुभ, संपति सुख करतार ।९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कायर पुरुष के हेतु

चौपाई—जप तप उत्तम नियम न भाना, धरम कार्य मन ध्यान न आना ।
दीक्षा धरण चरल असमरथा, पाप प्रभाव जु कायर अरथा ।१।

क्षमाशीलता के हेतु

साहस धर तप योग सधावे, ध्यानाध्यन व्युत्सर्ग समावे ।
धीरज धार धरम अनुष्ठाना, सहत कष्ट परिषह असमाना ।२।
शक्ति यथा दुठ करमन रोके, क्षमा सहित मन अविचल होके ।
निज बल निज सुख रमण सु होवे, पुण्य प्रभाव क्षमार्थी पावे ।३।

अपयश के हेतु—

बिन विवेक जो सत ना जाने, सत को असत सत माने ।
कुदेवागम गुरू सेवा करते, अपयश करम अबुध बल धरते ।४।

शीलवानता के हेतु

मन वच काय शील सत साधें, सत संगति सत धरम अराधें ।
देन धरम गुरू यज व्रत धरते, शीलवान सुख यश जग भरते ।५।
माता बहिन सुता पहिचाने, वचन भंड नहिं मुख उर आने ।
विषय अरुचि तन साज उदासी, सात्विक भोजी शील विकाशी ।६।

कुशलता के हेतु

मिथ्या धरमी तप व्रत हीना, जग सुख विषय कुमारग लीना ।
अशुभ करम मय शकती खोवें, दुःशीली अघ धारक जु होवें ।७।
निज आतम करतब नहिं जाने, विषय लोलुपी नाते हाने ।
धरम नीति जग नेह भुलावे, अबल कुशील कुमारग जावें ।८।

दोहा—
बिन विवेक अपयश लहें, धरम नीति यशखोय ।
सद् विवेक आवेश बिन, रतन अभय सुख सोय ।९।

सत संगति के हेतु

उत्तम यतन सहित गुण भेवें, ज्ञानवंत गुणि चित गण देवें ।
जिन मुनि जिन धरमी मन भाते, महत पुण्य सत संगति पाते ।१।
परवल त्यागत निज बल होवे, सुरग मोक्ष सुख ला जो देवे ।
सुपथ-अरथ करतब दरशावे, सत संगति गुण सब लावे ।२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुसंगति के हेतु

सज्जन गुण मन प्रति न धरते, अनादरी गुण ना आचरते ।
खोटी संगति दुरगुण लावे, अधोगति नीच कुसंगी पावे ।३।

विचार साफल्य पना के हेतु

सूक्ष्म बुद्धि धर करत विचारा, आगम अनागम सत्य उजारा ।
अतत-सुतत अरु दान कुदाना, धर्मा धरम सु गुण पहिचाना ।४।
उत्तम लगन सु कारज शकती, सत संगति हित गुरू भक्ती ।
उच्च भाव दृढ़ उत्तम पावे, सफल परीक्षक देव बधावे ।५।

मूढ़ विचारणा के हेतु

निज विवेक बल कामन लेवे, परख अयोग योग निज खोवे ।
श्रेष्ठ नेष्ठ सब सम कर माने, देवागम गुरू नाहिं पिछाने ।६।

दोहा— मूढ़ निंद्यता जग लहें, कबहु न निज हित जोय ।
सुपक्ष घात कर बुधि गहे, सुख शिव रतन न होय ।७।

उच्च गोत्रता को हेत

चौपाई—श्री जिनवर गुरु संघ सु सेवा, सगुण भक्ति थुति शुचि चेत भेवा ।
गुण गुणिजन मुद करे प्रशंसा, उच्च गोत्र पावे बिन शंसा ।१।
धरम नीति गह पर हित चाहे, शम-दम त्याग शाँति मन भावे ।
सब जीवों को निज समजाने, करुणा धरत उच्चता आने ।२।

नीच गोत्र के हेतु

स्वात्म प्रशंसा परकृत निंदा, कुगुरू कुदेव कुवृष आनंदा ।
परकृत गुण वृष दया न जाने, नीच गोत्र का करत निदाने ।३।
निज हित लाभ अधिक रति ठाने, देश धरम हित काज न जाने ।
अति लोभी माया धर मानी, विभव अफल लघु गोत्र निशानी ।४।

मिथ्यात्व के हेतु—

कुगुरु कुदेव सेव फल जानो, मिथ्या भावन अधिक सभानो ।
मिथ्या मति मिथ्यात्व संजोवे, अबल भीत बंचक बुध खोवे ।५।
पुण्य पाप फल कृत नहिं जाने, शुद्ध चिदातम रूप न भाने ।
ज्यों त्यों करत काल जो खोवे, स्वार्थी अधम सुवृष मणि खोवे ।६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्यक्त के हेतु—

अनेकाँत मय सूक्ष्य सु दृष्टी, मारग हेय तजे निज गुण या धृष्टी ।
जिन आगम गुरू धरम चितारे, सरधा सुगुण चितारत धारे ।७।
प्रशम भाव गुण मोद सु धारे, पर हित कारज करुणा सारे ।
मानत शठ धी ना समझाये, बैर विरोधन सम्यक पाये ।८।

दोहा— जीव मात्र करुणा धरे, धरम रतन जग नीति ।
अभय दान संकट हरे, जनम मरण दुख भीति ।९।
ऊंचे सुख के सेतु ये, विल से जग सुख प्रीति ।
रतन निरनता लाँयगे, महावीर-आ भीति ।१०।

काँति तप बल के हेतु

चौपाई—सत धरमी पर लोक सुधारें, मोक्ष मार्ग चित आगत कारें ।
स्वर्ग मोक्ष-बाँछा बिन आशा, मौन गुप्ति तप निर अभिलाषा ।१।
काय कलेश उत्सर्ग सु धरते, महा सुभगता तप बल मढ़ते ।
काय सुदृढ़ मन कांती पावे, आत्म बली गुण सब ठहरावे ।२।

निर्बल तप के हेतु

समरथ हो जप तप नहिं साधें, काय मगन अघ पुंज अगाधें ।
साहस बिन सामर्थ न आवे, बिना योग पथ ना दरशावे ।३।
जग भव काया ममत समाये, धर उमंग अज्ञ साधु कहाये ।
स्वातम जोति जगा नहिं पाये, निंदनीय तन दुरबल आये ।४।

मुक्ति स्वरूप—

त्रिविध करम मल जहाँ न होवें, निरविकार आकुलता खोवें ।
शुद्ध चिदातम अव्याबाधी, निज बल सुख गुण पुंज समाधी ।५।

सोरठा— मुक्ति लोक त्रय सार, जु अविनाशी अनंत सुख ।
बलगुण ज्ञान अपार, रतन अमल चिद नित अचल ।६।

चौपाई—शाश्वत सदा मोक्ष सुख ठानो, निजानंद मय अमल अमानो ।
करम कलंक परस ना पावें, निज कर निज रस रमत सुहावें ।१।
शुद्ध चिदातम निरमल जोती, सदा विमल घट बढ़ नहिं होती ।
दरशन ज्ञान अनंत दिपावें, बल अनंत सुख निज दरशावें ।२।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निज परणति सुध आनंद लावे, स्वतंत्र सिद्ध सुगुण अचलावे।
गुण रतनात्रय मारग माँहीं, निज सुभाव त्रय रतन सदाहीं।३।
मारग ये ही ये ही सु सिद्धी, सबसे महत सु आतम रिदधी।
इसका स्वाद जबे जिय पावे, कबहुं तत्व नहिं अवर सुहावे।४।
करम गये सब थिर ये सोई, प्रगटे बिलग न जिय से होई।
उपशम क्षायोपशम जु लावे, किये यतन थिर सदा रहावे।५।

दोहा— जीव सो सुख अमृत चखे, पय मिसरी क्यों खाय।
चित चैतन निज रस छलक, रतन सुधा बरसाय।६।

मगलाचरण

दोहा— महावीर पद वंद के, गौतम गुरू मनाय।
सतपथ दायक रतन जो, मारग सुख दरशाय।१।
मुकुट रतनात्रय शिर मलि, शील हिये गल माल।
निज में निज कर निज रमे, निज गुण मालामाल।२।

रतनात्रय महिमा—

निश्चय रतनात्रय

चौपाई—सम्यक रतनात्रय जो ध्यावे, मुक्त दशा निस्चय उपजावे।
सम्यक दरशन ज्ञाना, सम्यक चारित मिल इक ठाना।१।
सुरग मोक्ष सुख मिल दरशावे, सम्यक रतनात्रय सब भावे।
निज हित जिनने हृदय सु धारा, लहि सुख तिनने याहि सवाँरा।२।
द्विविध प्रकारी याको जानो, इक निश्चय व्यौहारु दुभानो।

निश्चय रतनात्रय—

निज आतम को निज में भाने, सदा अबाधित निश्चल माने।३।
घटे बढ़े नहिं रुके रुकावे, पर द्रव्यन में ना अटकावे।
पर से भिन्न सदा निज रूपी, चैतन्य शुद्ध विमल स्वरूपी।४।
धरधा करके ज्ञान प्रमाने, धर थिरता रतनात्रय भाने।
निज कर निज में रम सुख पावे, जगत सुक्ख सब लघु दिखलावे।५।
जग में धड़ो रतनत्रय धामा, बुधजन तातें करत प्रणामा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शिव सुख सत्वर चेतन पावे, छलक जगत सुख पाछे धावे ।६।

दोहा— धरत रतनात्रय सुबुधि सु, सब सुख चरण दिलाय ।
सहज रतन चिंतामणी, लो सुख मन यदि भाय ।७।
थिरता आवत भय लखो, तब कीजे अभ्यास ।
विधिवत थिरता लीजिये, शुद्ध रतन सुख रास ।८।

व्यवहार सम्यक दरशन

चौपाई—शंकादिक वसु दोष निवारे, वसु गुण सब निरद्वंद समारे ।
दरशन आये मद ना होवें, वसु मद टरत निजातम भेवें ।१।
षट अनायतन शठता छोड़े, दोष पचीस बिना हित जोड़े ।
सप्त तत्व लख सरधा धारे, श्री जिनेन्द्र निर्ग्रंथ चितारे ।२।
धरम दया मय धर हित दाता, सम्यक व्यव हारी सु धाता ।
अर्हंत जैसा कोइ न देवा, गुरू निर्ग्रंथ भवो दधि छेवा ।३।
जिनमत सम मत दूजा नाहीं, निज पर सुखदायक जग माँही ।
जिन आगम सत तत्व दिखाहीं, निस्पृह हितकर राह सुझाहीं ।
पंच परमेष्ठी शिव सु वास्ता, श्रेष्ठ रत्नात्रय मुक्ति रास्ता ।
उत्तम पात्र समान न दाना, ध्यान श्रेष्ठ आतम कल्याणा ।५।

दोहा— मुनि ज्ञानी गण प्रीति अति, धरम सुक्ख गुण खानि ।
जग तन विषय सनेह कर, रतन धरम सुख हानि ।६।

चौपाई—द्वादश तप बल करम नशावे, अन्य कुलप नहिं मुकती लावे ।
महा मंत्र इक जप णमकारा, खोले सुरग मोक्ष सुख द्वारा ।१।
सम्यक के सब ये दृढ़ मूला, [illegible]दायक रतनात्रय अनुकूला ।
इंद्रिय करम सरब दुख दाता, उभय लोक दुख महा असाता ।२।

सम्यक्त्व का महत्व

सम्यक मोक्ष भुवन की पैढ़ी, श्रेष्ठ सुव्रत की उत्तम सीढ़ी ।
सम्यक बिना ज्ञान अज्ञाना, चरित्र कुचारित्र हो मन माना ।३।
जप तप सारे निष्फल जावें, सम्यक दरशत सुख फल कावें ।
मलावरण बिन गुण बल लावें, सहित यतन निरमलता छावें ।४
सब सुख सम्यक दरशन लावे, सकल पदारथ सिद्धी पावे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पर को चकाचौंध मिट जावे, आतम रवि गौरव प्रगटावे ।५।
शशि रवि नहि जाको परकाशें, सम्यक दरशनता उर भासें ।
निज को गुण यदि जोति प्रकाशे, सदा सुथिर सुख उत्तम तासे ।६।

दोहा— सम्यक साधे सुख अचल, निरमल ज्ञान सु होय ।
अविनाशी पद को वरे, अमल रतन शिव जोय ।७।

व्यवहार सम्यक ज्ञान

चौपाई— सम्यक गहकर अविचल राखे, चिंतत तत्व ज्ञान रस चाखे ।
धरमा धरम हिताहित भाषे, बंध मोक्ष सद ज्ञान प्रकाशे ।१।
सम्यक साथे ज्ञान कहावे, दरशन बिन जि कुज्ञान भुलावे ।
निज गुण सम लख चेतन जानो, पर परणति तज आप पिछानो ।२।
ज्ञान नयन विन अंध समाना, ज्ञान बिना दुख भव अति नाना ।
वीतराग सर्वज्ञ जो जानें, जिन आगम माँही सो आने ।३।
जिन आगम शुचि रवि उन्हारा, सत्पथ दरशक भ्रम तम हारा ।
सिद्ध भये सो अब जो हो हैं, महिमा सारी ज्ञान लहे हैं ।४।

दोहा— अतत सुतत कृत अकृता, उपादेय जिय ज्ञान ।
गुण अवगुण लख ज्ञानकर, ज्ञान रतन परधान ।५।

व्यवहार सम्यक चारित्र—

दोहा— चारित्र सब सुख मूल है, चारित्र उत्तम जोति ।
विन चारित्र परिणाम नहिं, सुख बल रतन न जोति ।१।

चौपाई—हिंसा असत चौर्य परदारा, ग्रहत परिग्रह पाप दुखकारा ।
छोड़त इनके सुव्रत आवे, पंच समित त्रय गुप्ति उपावे ।१।
सब चारित व्यौहार कहावें, कारण मुक्ति भुक्ति सुख लावें ।
करमाश्रव अवरोधक जानो, सँवर कारण इनको मानो ।२।
चारित्र विन अति काय कलेशा, जप तप कोरा परतक्ष भेषा ।
सँवर बिन मुकती नहिं आवे, बिन चारित सँवर ना पावे ।३।
मुक्ति बिना सुख अविचल नाहीं, जगत वंद्य धारत विभुताहीं ।
निज बल गुण चारित दरशावे, अमल विमलता चारित लावे ।४।
उपसर्ग परिषह विजय करावे, चारित्र आतम जोति जगावे ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राणाधिक चारित्र को जानो, जो सुख चाहो तो सरधानो ।५।
श्रेष्ठ अबंधक हितकर भाई, चारित्र साधे सरव भलाई ।
चारित जग गृह नीति जगावे, उर विश्वास अभयता लावे ।६।

व्यौहार रतनात्रय

सम्यक दरशन सम्यक ज्ञानो, सम्यक चारित विवहा रानो ।
मिल तीनों रतनात्रय भानो, सखारथ सिद्धी दृढ़ थानो ।७।

दोहा— सम्यक रतनात्रय अमल, धर विवहारी जीव ।
लहे ज्ञान आरोगता, रतन लोक दो पीव ।८।
गह रतनात्रय सुख अती, जग सुख काय मनोग ।
चिदानन्द सुख अनुभवे, मुक्ति रतन शुभ योग ।९।

निश्चय सम्यग्दर्शन

चौपाई—आत्म स्वरूप विमल श्रद्धाना, दर्शन ज्ञान मई निज जाना ।
अमल नित्य लख निज गुण ठाना, सम्यक दरशन निश्चय माना ।१।

सम्यक ज्ञान

चेतन सत नित द्रव्य रहावे, पर द्रव्यन तैं भिन्न दिखावे ।
आतम चेतन तत्व सु ज्ञाना, निश्चय वेदे सम्यक ज्ञाना ।२।

सम्यक चारित्र—

स्वात्म लीनता चारित्र मानो, विकलप रहित सु निश्चय थानो ।
आतम निज में सदा रमावे, निश्चय सम्यक चारित्र पावे ।३।

रतनात्रय महत्व

इक इक गुण सुख अनुपम लावे, निजानंदता आतम पावे ।
महा मोक्ष सुख त्रय मिल जानो, मुक्ति पथिक करते दृढ़ ध्यानो ।४।
निज में लख निज, निज सरधानो, निज में लीन महा सुख खानो ।
मोह धंध को तोक उतारो, निज में हो थिर मुक्ति पधारो ।५।
मीक्ष-काल जो तीनों होवें, या से हो हैं, अन्य डुबोवें ।
निज को यातें रूप पिछानो, उत्तम काल लब्धि ये मानो ।६।
अवसर चूके जिय पछतावे, गयो समय फिर को लौटावे ।
शुभ कारज जिय सत्व कीजे, नर भाव लाहो निज गह लीजे ।७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा— निश्चय निज को लक्ष्य कर, कर व्योहारो काम ।
थिरता जब तक ना रतन, जीव कहाँ विश्राम ।८।
निश्चय अरु विवहार दो, मुक्ति मार्ग जग मांहि ।
सिद्ध भये अरु हो रहे, होवें रतन अगाहि ।९।
रतनात्रय दो रूप नहिं, मुक्ति मार्ग दो नाहिं ।
थिरता निश्चय शिव वरे, शिव मग विवहा राहिं ।१०।

द्विविध-धर्म—

चौपाई—धरम ऐक विधि सुख करतारा, धारें विविध अनुसारा ।
शकती सबल निवल विधिकारा, धरम जगत सु द्विविध प्रकारा ।
अनगारी आगारी धारे, मुनि श्रावक निज बल धर सारें ।
श्रावक धरम सुगम सरलाई, मुनिवर पथ दृढ़ शिव सुखदाई ।२।
धरम करत सुख वैभव लावे, धरम रतन बल शिर दरशावे ।
श्रेणी श्रावक इक दश जानो, आगे समता बढ़ अधिकानो ।३।

दरशन प्रतिमा

अष्ट मूल गुण सरधा धारे, सातों विसन हृपय से टारे ।
देव धरम गुरू आगम ध्यावे, दरशन प्रतिमा सो आराधे ।४।

व्रत प्रतिमा—

पंच-अणु गुण-त्रय व्रत धारे, चारों शिक्षाव्रत अघ टारे ।
काया सुरक्षा षट नित पाले, यश वैभव पा शिव पथ चाले ।५।
निरतिचार महाव्रत बांछा, व्रत प्रतिमा सोहे विन शंसा ।
अंत समाधि मरण सु धरावे, मनुष भवन मणि कलश सजावे ।६।

सामायिक-प्रतिमा—

समता धर सामायिक करते, जग-भव अघ त्रै कालिक हरते ।
आदर सहित पाठ दृढ़ करते, साध योग सामायिक धरते ।७।

दोहा— बल कषाय चौ क्षीण कर, स्वातम लक्ष्य संवार ।
थिरता उर में रतन धर, सामायिक सुखकार ।८।

प्रोषध प्रतिमा

चौपाई—धरम ध्यान निज-चिंतन करते, प्रोषध सोलह प्रहर सु धरते ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शयन पान भोजन अघ तजते, प्रतिमा प्रोषध रतन सु सजते ।

सचित त्याग प्रतिमा

दया धरन पालत बहु भांतीं, प्रतिमा सचित त्याग मन भाती ।
फल जल पत्र बीज लखे जीवा, लेय नहीं बिन अचित कदीबा ।२।

रात्रि भुक्त त्याग प्रतिमा

निशि में चारों तज आहारा, दिन में मैथुन छोड़ विचारा ।
प्रतिमा छटवीं सुर सुख लावे, श्रावक क्रम बढ़ करम खिपावे ।३।

ब्रह्मचर्य प्रतिमा

आतम भाव लीन जिय होवे, माता भगनी सुता सु जोवे ।
निरविकार कर निरमल आत्मा, ब्रह्मचर्य सु उत्तम प्रतिमा ।४।

आरंभ त्याग प्रतिमा

कृषी वनिज आदिक अनुरागा, सबको पाप भीरू मन त्यागा ।
स्वपर दया सु ममत निवारे, प्रतिमा आरंभ त्याग सु धारे ।५।

परिग्रह त्याग प्रतिमा

परिग्रह अंतर बाहर खोवे, धर त्रियोग वर आतम जोवे ।
श्रावक सुर पूजित सो मानो, प्रतिमा परिग्रह त्याग प्रमानो ।६।

दोहा— प्रतिमा उत्तम आत्मा, निज निधि स्वातम जोय ।
बाढ़त ज्यों सुख त्यों बढ़े, रतन उमग भवि लोय ।७।

अनुमति त्याग प्रतिमा

चौपाई—धन अरजन कारण आहारा, अनुमति तज गृह कारज न्यारा ।
उन्मुखता स्वातम उर धारे, प्रतिमा अनुमति त्याग समारे ।१।

उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा—

सिंह वृत्ति कर शुद्ध अहारा, ऐक ठौर दिन में इक बारा ।
निमित बिना निज लख के लेवे, प्रतिमा उद्दिष्ट त्याग जु भेवे ।२।

प्रतिमा महत्व प्रकाश

श्रावक प्रतिमा ग्यारह धारें, जनम जनम के पाप निवारें ।
इस भव यश पर भव सुखदाई, सुर नर असुर नमत गुण गाई ।३।
उत्तम मध्यम जघन प्रकारा, बल जिन जैसा तिस तिन धारा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साधत सम्यक दरश उपाये, वर विवेक महिमा प्रगटाये ।४।
साधे चारित्र करम खपाये, पुण्य धाम अघहर सुख लाये ।
विचरत निरभय निज रस छाके, चिंतामणि अनुभव निधि जाके ।५।

दोहा— पुण्य पाप संवर करत, करे निरजरा सोय ।
निज गुण रस मोदित रतन, देंय करम अघ धोय ।६।
स्वातम पग प्रतिमा चढ़े, सुख पावे सो जीव ।
निज धरमन श्रावक वढ़े, रतन लोक द्वै पीव ।७।

मुनिव्रत

चौपाई—मुनिगण सकल देश व्रत धारें, अणुव्रती इक देश संवारें ।
पंच महाव्रत समिति जु पाचों, इन्द्रिय जय पच स्वातमता चों ।१।
षट आवश्यक गुणति सु साधें शेष सप्त गुण धर जय लाधें ।
केंश लोंच धर नग्न शरीरा, न्हवन दंतवन बिन मन–धीरा ।२।
धरा शयन अनु दिष्ट अहारा, पाणि पात्र कर विधि अनुसारा ।
प्राण जाँय पै व्रत आराधें, अनशन योग अतापन साधें ।३।
परिषह बाइस जय हरषावें, मौन धार निज आनंद पावें ।
मूल अट्ठाइस गुण सब धारें, उत्तर गुण धर करम निवारे ।४।
धरत धरम दश विधि सुख लावे, मुकति सुक्ख सो तदभव पावें ।
धर्म सर्व कल्याण सु करता, या सम बंधू सखा न भरता ।५।
सव कालिक संयम सुखदाया, सँयम सहित सफल नरकाया ।
बिन सँयम नर पशू समाना, सदा रतन सँयम गुण थाना ।६।

दोहा— व्रत दे सुख जग में महा, उत्तम दे परयाय ।
मोक्ष सर्वारथ सिद्धि दे, श्रेष्ठ रतन गुण दाय ।७।
जिनकी होनी विमलतर, सो धारत भवि जीव ।
नित्य निरंजन अचल सुख, रतन होहिं शिव पीव ।८।
दुख भुगते जग में बहू, मिलो न ऐसो दाव ।
काल लब्धि जिनको भली, सूझे रतन उपाव ।९।
काल अनन्ते भ्रमण में, गये महा दुख पाय ।
अब तो चेतो रतन कछु, मिले मिले ना दाय ।१०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काल चक्र

चौपाई—काल ऐक शुभ द्रव्य सु जानो, निश्चय अभेद रूप प्रमानो ।
काल अनन्त काल इक होवे, किये भेद बहु अंत न होवे ।१।
वीस कोड़ा कोड़ि इक मानो, कल्पकाल सागर परमानो ।
लखो भेद दो ताके बीचा, उत्सरपणि अवसर पणि भींचा ।२।
काल आयु वल रूप बधावे, उत्सरपणि सुख शील सजावे ।
अवसर पणि क्रम जानो क्षीणा, उभय भेद मिल कल्प प्रवीणा ।३।
सुखमा-सुखमा, सुखमा आवे, सुखमा दुखमा तीजो पावे ।
दुखमा-सुखमा, दुखमा जानो, दुखमा-दुखमा षट सब मानो ।४।
प्रथम तीन की शुभ गरिमाई, शोभे भोग भूमि सुखदाई ।
उत्तम मध्यम जघन कहाई, चार तीन दो सागर जाई ।५।
कोड़ा कोड़ी को परमानो, सागर नव भू भोग अमानो ।
इक सागर में करम सु भूमी, कोड़ा कोड़ी लस तन वीनी ।६।
सहस व्यालिस बरस कम जाये, शेष काल सभइन में आये ।
करम भूमि इन रचना जानो, करम महत अधिको प्रमानो ।७।

दोहा— संयम सब नर देह तें, भोग भूमि तष नाहि ।
सब होवें दम्पति युगल, रतन सु भोग सदाहिं ।८।

भोग भूमि संरचना

(प्रथम द्वितीय तृतीय काल)

दोहा— सु कल्प वृक्ष पूरें सकल, बाँछित वस्तु अपार ।
षट ऋतु सहज सुहावनी, कोय न बाधाकार ॥

कल्पवृक्ष

चौपाई—दश विधि कल्प तरु शुभ राजे, सकल भोग सामाग्री साजे ।
मदाँग तुर्याग विभुषण लाये, दीपाँग मालांग सु वीणाँये ।१।
पटाँग गृहाँग सु भोजं गाना, दश विधि भाजनाँग मिल माना ।
देते सकल सुरुचि अनुसारो, सारी बाँछा पूरण कारी ।२।
पल्य तीन दो इक सब आयू, इन अंतर दिन भोज उपायू ।
वेर विभीतक आमल कारा, इष्ट प्रमाण मिष्ट आहारा ।३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हेमचंद्र वपु प्रियंगु आभा, वपु निहार बिन अमल प्रभावा।
नव यौवन नित काँती सोहे, विकल क्रूरता नाही ही है।४।
पच इन्द्रिय नर तिर्यंच होवें, दिन उनचास सु यौवन लेवें।
कोस तीन दो इक आकारा, चय पावत जा सुरग मझारा।५।
शाँत सुभावी सहज सुरूपा, शुभ लेश्या धर सुक्ख अनूपा।
कल्प तरू सब आशा पूरें, विन चिंता नित भोगन भूरें।६।
छींक जमाँई अन्त बतावे, सीमित गण नहिं कुटम बढ़ावे।
भोग भूमि तीजे तक आवे, चौथे काल करम भू लावे।७।

दोहा— दान सुफल दे भोग भू, चयकर सुरग सु जाय।
उभय जनम सुधरे रतन, दान अमित फल दाय।८।

अवसर्पिणी चतुर्थकाल

करम भूमि—

चौपाई—अवसरपण को चौथो आई, करम भूमि रचना जन भाई।
सहस व्यालिस वरस कमाये, कोड़ा कोड़ि जलधि शुभ आये।१।
पुरुष शलाका त्रेसठ होवें, धरम पंथ हित सुगुण कहावें।
निज हित कारक इक ये काला, शिव सुखहार उछारन वाला।२।
इरा विदेह सु भरत मझाँरा, करम भूमि पथ मोक्ष सहारा।
शाश्वत करम विदेह सुभूमी, चौथो काल सदा बृष चूमी।३।
असि मसि कृषि सु शिल्प वणिज्या, गो सँवर्धन श्रम सुख सज्जा।
निज हित आतम ध्यान सुवरते, करम काटि शिव सुर सुख धरते।४।
कोड़ वरस पूरव इक आयू, काय पाँच सौ धनुष ऊंचायू।
पंच वरण सब होंय शरीरा, नाम करम जस रंग गहीरा।५।

दोहा— करम भूमि आवे रतन, मनु देवें बुध लार।
जाकी जस भवितव्यता, लें मति तैसी धार।६।

कर्मभूमि महत्व

चौपाई—चौबीसों तीर्थंकर होते, दुख सु भरत ऐरावत खोते।
क्षेत्र विदेहा सहा प्रमानो, बीस अधिक सत्तर शत मानो।१।
जिय लख समव शरण हरषावे, जीव भव्य सँबोध सु पावें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धरम प्रवर्त्तक विश्व सु नाथा, बाधा भव हर करत सनाथा ।२।
उत्सरपणि के तीजे काला, ऐसी रचना हो सम काला ।
बहुते कल्प काल के बीते, हुण्डा सरपणि काल अचीते ।३।
घटे सु अघटित काल प्रमानो, सु गृह सुता तीर्थंकर आनो ।
चक्री हारें जिन धुनि रुक जावे, उपसरग सु तीर्थ कर पै आवे ।४।

दोहा— बहुतक हों अद्भुत अती, अघटित सब घट जांय ।
हुण्डा सरपणि काल फल, अचरज रतन उपाय ।५।

वर्त्तमान चौबीस तीर्थंकर

चौपाई—इह कालिक चौवीसी जानो, ऋषभ अजित संभव गुण खानो ।
अभिनंदन सुमति विभु सु पदमा, प्रभु सुपारस चंद्र गुण शरमा ।१।
पुष्पदंत शीतल श्रेयाँसा, वासु पूज्य विमल सु प्रशंसा ।
अनंत धरम सु शाँति कुंथा, अरह मल्ल मुनि सुव्रत कंथा ।२।
नमि सु नेम पारस महावीरा, चौबीसों सब शिव सुख वीरा ।
वंदत चरण सु पथ दरशावे, बूड़त भवदधि जीवन पावे ।३।
अरध कल्प के भरत सुजानो, वर्त्तमान चौबीसी मानो ।
ऐरावत में ऐसे होवें, सुख शिव गहते भवि हित जोवें ।४।
ढाई द्वीप सु क्रम यह जानो, क्षेत्र ऐरावत भरत सुमानो ।
कल्प काल मिल दुगणे सोई, सदा विदेह क्षेत्र सुख देई ।५।

दोहा— जग शिव सुख गुण खेत सब, तारण तरण महान ।
लख तीर्थंकर भरत के, काल रतन ये जान ।६।

बारह चक्रवर्ती—

चौपाई—भरत सगर मघवा को जानो, सनत शाँति कुंथु अरह सु भानो ।
सुभुमि महा पदम लख सु ऐसा, हरीषेण जय सु बलभद्रेशा ।१।
छहों खण्ड पृथ्वी को साधें, सुर नर विद्याधर आराधें ।
अतुल विभूति चक्र धर नामी, महा पुरुष द्वादश बड़नामी ।

नव बलभद्र

विजय अचल सु धरम प्रभाये, सुदर्शन नन्दि नंद मित्र गाये ।
रामचंद्र बलदेव सुभाये, महात्म अति बलभद्र सु पाये ।३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नव नारायण

त्रिपृष्ठ द्विपृष्ठ स्वयं भु माना, पुरुषोत्तम, पुरुष सिंह सुभाना ।४।
पुण्डरीक दत्त लक्ष्मण जानो, अंत कृष्ण नारायण भानो ।
अधिपति खण्ड त्रि भू के होवें, अधो लोक पति रौद्र समोवें ।

नव प्रतिनारायण

अश्व ग्रीव तारक अरू मेरक, निशंभू कैटभ मधु सूदन इक ।५।
बलि हन्ता रावण जरा सिन्धू, अरध चक्रि नारायण द्वन्दू ।
अरध कल्प के ये शुभ रतना, पुरुष शला का त्रेसठ यतना ।६।
नारायण गति के अधिकारी, परिग्रह रौद्रता अध सु द्वारी ।
पुण्य पुरुष फल पुण्य उपावें, अद तद कोई शिव पद पावें ।७।

दोहा— एक काल तीर्थंकरे, चक्री बलभद्र सोय ।
अरध चक्रि नारायणा, प्रति नारायण लोय ।८।
पुरुष शलाका रतन ये, निकट भव्य शुभ जीव ।
छूटें भवदधि वास से, शीघ्र रतन शिव पीव ।९।

गति शलाका पुरुष

चौपाई—निकट भव्य सब ये पद पावें, आयो लोक अंत शिव पावें ।
व्रत तप धर कोई शिव जावें, कोई सरवारध सिधि पावें ।१।
अनुक्रम जैसो फल तस पावें रौद्र भाव धर शुभ्र उपावें ।
निज बल सबल सु मोक्ष उपावें, तत्क्षण कोई भव धर उपावें ।२।
शिव तीर्थंकर तद्भव पावें, बलभद्र सुरग मुकति शुभ जावे ।
चकरी शिव पद तप धर पावें, नरक रौद्र अति भाव समावें ।३।
प्रति नारायण नारायण जो, रौद्र भाव गति अधों अरसूजो ।
महा ऊंच पद आकर धारें, निजानंद रम मुक्ति पधारें ।४।

दोहा— कथे कथन कथनी बढ़े, सबको जानो सार ।
उरध रतन निज बल चढे, अधो सु आत्म बिसार ।५।

पंचम काल

चौपाई—दुखमा पंचम काल कहायो, दुख वेदन बल निज बिसरायो ।
बरस सहस इक्कीस प्रमाना, धीरज बल सुख आतम हाना ।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काय रुक्ष छवि कांति बिहीना, बहु भोजी वह-बुद्धि मलीना ।
मुकती यामें जीव न पावे, कठिन योग तें सम्यक पावें ।२।

षष्टम-काल

दुखमा दुखमा षष्ठम आवे, सहस इक्कीस बरस प्रभावे ।
दुक्ख चोर नर धरम विहीना, बरस बीस वय तन कृष्णीना ।३।
ऊंच हस्त तन दो का पावे, इच्छा भोजी नगन रहावे ।
अंतिम काल, काल को आवे, आयू षोडष बरस सु पावे ।४।
ऊंची काया हस्त रहावे, यत्र तत्र पशुवत भटकन पावे ।
निंदनीय मन तन धिन दाता, दूरगति गासी सुगति विधाता ।५।

दोहा— अवसरण पूरण भये, महा प्रलय जु होय ।
अर्ध कल्प पूरण रतन, नव तम रचना जोय ।६।
उतसरपणि क्रम कर बढ़े, बाढ़े सुख अधिकाय ।
दुखमा दुखमा कर चढ़े, क्रम धर रतन बढ़ाय ।७।

त्रैलोक आकार

चौपाई—लोक तीन लख पुरुषाकारा, डेढ़ मृदंग उतंग अकारा ।
जानो नाड़ी त्रस ता बीचा, द्रव्य लोक षट सुभग बगीचा ।१।
सिद्ध शिला शिर ऊपग सोहे, सुरग कल्प सुख ताको जोहे ।
मध्य लोक यह सब मध जानो, नरक निगोद अधो दुख खानो ।२।
बाह अलोका काश कहावे, वात बलय त्रै जग लटकावे ।
केवल ज्ञान गम्य सो जानो, निज कर परगट लोक पिछानो ।३।
कोई धरम तीर्थ जो आवे, सो मन बाँछित सिद्धि सु पावे ।
जीव महातम सो अति पावे, अमृत सौख्य सदा बिल सावे ।४।
अमृत स्वाद लेय जो कोई, कैसे विष रुचि पान करेई ।
महावीर शशि सुर रस चाखें, विषय विकार सुविष रस नाखे ।५।

दोहा— काल लब्धि भवितव्यता, सुगुरू वीर परसाद ।
द्विज गौतम सम्यक्त धर, संवेग रतन सु साद ।६।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा— रतनात्रय गिरि मेरू सम, खोले शिव सुख द्वार ।
नमत रतन भव दुख हरण, वाणी सुरसरि धार ।१।

स्वातम लाभ इन्द्र भूति-गौतम—

चौपाई—सुनत वीर धुनि मुद हुलसाये, इन्द्र भूति गौतम सुख छाये ।
चित काय भव जग अकुलाये, महा भूल वश काल गमाये ।१।
जग भरमत वहु छोर न पाये, जनम मरण धारे भटकाये ।
नाग-हार गल भ्रम वश डारो, स्वातम जोति न कबहुं प्रजारो ।२।
पर वश होकर सुख नहिं पाये, सदा अवल पर दास कहाये ।
मत्त भये मद सुध विसराई, समझ राहना शिव की पाई ।३।
कुपध अन्ध चल कूप समाये, दुक्ख नरक मिथ्याँध बसाये ।
विष धर मिथ्या अति विकराला,अजगर सम भख विष अहिकाला ।४।
वारुणि पीकर मत्त जु होवे, शुचिता सब तन मन बुधि खोवे ।
परवश मिथ्या मद पी खोये, अब तक हिथ पथ नाहीं जोये ।५।
दुरगत भई त्रिलोक मझारी, अघ कीने बिन-समता धारी ।
शुभ सम्यक सुख वस्तु उपावे, उत्तम गति सुख श्रेष्ठ जु पावे ।६।

दोहा— सोगों गौ के दुग्धना, घृत पानी तें नाहिं ।
नाहीं यश व्यसनों मिले, कृपण कीर्ति ना पाँहि ।
नीच वृत्ति धन संग्रह वैभव आवे नाहिं ।
सिन्धु सु मन्थन दुख सहे, देव रतन चमकाहि ।८।

सु दर्शन-लाभ-सफल सत संगति—

चौपाई—सम्यक दरश स्वात्म रस छायो, मिथ्या अबुधि अज्ञान पलायो ।
धन्य जनम दिन चित सु भाया, सफल हुआ मैं धन्य सु काया ।१।
जगत गुरू महा पुण्यन पाये, श्री जिनेन्द्र चरण लख पाये ।
सत्य श्रेष्ठ वाणी सुख दाता, सहज सरल शुचि सुक्ख प्रदाता ।२।
वीर अरुण ध्वनि किरण प्रकाशी, सहजानन्दी परणति भासी ।
स्वपर विवेक महा सु आयो, निज बल परघट सुख अति लायो ।३।
धरम धरम फल करत विचारा, आतम उमगत सुक्ख अपारा ।
संसृति करम अनादि सुं आई, आयो अवसर देहुं उड़ाई ।४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अक्षय अविचल सुक्ख शुचि लाऊं, नगन साधु वन करम खपाऊं।
मोह मार सब सैन भगाऊं, निज आतम रच रास रंचाऊं ।५।

दोहा— परिग्रह चौबिस डार सब, बाह्य अभ्यंतर भेद।
मन वच काया रतन शुचि, मन गौतम तज खेद ।६।
उभय भ्रात बहु तक गुणी, उपजो रतन विराग।
शिष्य पंच शत साथ सब, निर्ग्रंथ हो हरषाय ।७।
दीक्षा लीनी वीर तट, परम सुतीरथ पाय।
धरम शरण लो सुख रतन, महावीर गुण गाय ।८।

विप्रवर इन्द्रभूति—गौतम-दीक्षा

चौपाई—इन्द्रभूति गौतम अभिमानी, शोभा हार हृदय शुचि आनी।
सत संगति अति शुभ परिणामा, विकसो स्वबल निजानन्दामा ।१।
सत संगति फल उत्तम पायो, ज्ञान विकस भव भाव मिटायो।
धर उर करुणा शिष्य सु बोधे, उभय भ्रात निज शिष्य संबोधे ।२।
परिग्रह तजत नगन अनुरागी, ज्ञान कला रुचि आतम पागी।
नन्द महानंद हुओ अपारा, जय जय महावीर जयकारा ।३।
विदुषी नारी नृप कन्यायें, आर्यिका बन अभीष्ट सु पायें।
जिनने निज बल अल्प जगायो, श्रावक व्रतगह चित उमगायो ।४।
नर नारी पशु आदिक सारे, शक्ति समान सु व्रत तप धारे।
देवादिक मिथ्यात भगायो, पूजा दान दया मन भायो ।६।

दोहा— निज बल शक्ति संयोज के, शुद्ध भये भवि जीव।
विमल रतन बुधिलेय के, काटत कुलिस सदीव ।७।

गौतम ज्ञान लाभ-द्वादशांगावतरण

सुरेन्द्र पूज्यता प्राप्ति—

चौपाई—सौधर्मेन्द्र अधिक हरषाया, मन भाया फल इमरत पाया।
प्रभू देशना सुन सुख दानी, शिव सुख वर्षक मुक्ति कहानी ।१।
गौतम सुफल सुभव दिन पायो, शुचि गुरू पद्म सकल शुभ आयो
मुद सुरेन्द्र वस द्रव्य सु जाये, पूजे चरण विनय बहु गाये ।२।
इन्द्रभूति घोषित शुभ नामा, यश प्रगुणित सब पूरण कामा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गण धर प्रथम कहाये सोई, ज्ञान सुगुण आदर सब कोई ।३।
प्रभुता फैली यश सुर गाये, चेतन रतनात्रय जग पाये ।
निरविकार शुध योग रमाये, सप्त ऋद्धि मुनि गौतम पाये ।४।
मन विशुद्धिता सुख सब होवे, देय ज्ञान केवल भ्रम खोवे ।
द्वादशांग मय आगम भायो, गौतम ज्ञान सिंधु प्रगटायो ।५।
प्रथम प्रहर मन भयो उजारो, चौथो ज्ञान मन पर्येय धारो ।
प्रति पदा कृष्ण श्रावण पाई, वीर देशना प्रथम सुहाई ।६।

दोहा— द्वादशांग जोती जगी, गौतम दीप सजाय ।
वांछा पूरी सकल जग, सुक्ख रतन जी छाय ।७।
अंतिम निशि पद वाक रच, द्वादशांग हितकार ।
आत्म प्रकाशित रतन वच, जय गौतम गुरुतार ।८।

श्रेणिक नृप आगमन—

चौपाई—अधिपति राजग्रही जब जानी, महाबीर आये, शिव दानी ।
उमगो हृदय सुमन हरषायो, पाद पद्म शुचि बंदन भायो ।१।
वर विभूति सजकर परिवारा, बंदन निकसो कर जयकारा ।
वादित्र सेन समूह सुहाये, क्षत्र चमर मणी मुकुट दिपाये ।२।
समव शरण लख पग पग धायो, दे प्रदिक्षणा त्रय शिर नायो ।
समव शरण लख अचरज पायो, देखत विभु पद नम सुख पायो ।३।
स्तुति करी सुगुण रस भीनी, शुचि वसु द्रव्यन पूजा कीनी ।
धन्य आज मैं, जीवन मेरा, जनम सकल भव मानस मेरा ।४।
जगत गुरू के दरशन पाये, नयन शीश पग सकल मनाये ।
नगर राज गुण धन्य सुमानूं, शुचि पद महावीर इह ठानूं ।५।
गुण चिंतन मन शुचिता आई, प्रभुता हस्त पाद जिय पाई ।
कृत कृत हुआ महा सुख पायो, शुभ गमन विभु कलुष पलायो ।६।
विभु विशाल जलयान समाना, अब भव सागर स्तोक प्रमाना ।
निर्भय हुआ विमलता आई, मुद मन विनवूं शरणा पाई ।७।

दोहा— जिज्ञासा सत श्रवणमन, मनुज कोष्ठ नृप जाय ।
धरम तत्व पुन्य पाप सु सुने रतन फल दाय ।८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुनि श्रावक शुचि धरम फल, सरधा महा विवेक ।
उपजी शुचि सुन मुद रतन, पूरब भव सुनुं देव ।९।
बोले गणधर नृप सुनो, उत्तम कीनो चाव ।
निज बल झट परगट करो, पायो रतन सु दाव ।१०।

श्रेणिक नृप पूर्व भवा-प्रेक्षा

(भवान्तर)

चौपाई—गौतम स्वामी को शिर नायो, पूछो पूरब भव मत भायो ।
सुनत प्रभु गुण धर समझावें, सकल वृतांत त्रिभव दरशावें ।१।
जबूं द्वीप गिरि विन्ध्य मझारा, कुटव ग्राम तामें वन भारा ।
खदिर भद्र परिणामी भीला, बुद्धिमान उर धारत शीला ।
समाधि गुप्त सु मुनिवर बंदे, धर्मलाभ दे गुरू आनंदे ।२।
विनय धार वह पूछन लागो, धरम कहा गुरूवर समझा दो ।
किस विधि काज धरम का करना, लाभ कौन जो धर्म आचरणा ।३।
बोले मुनिवर करुणा धारी, धर्म अहिंसा सत सुखकारी ।
मदिरा माँस मधू को त्यागो, पुण्य धरम धारो अनुरागो ।४।
फले पुण्य सुर शिव सुख होई, धरम सदा-फल उत्तम सोई ।
सकुचो भील कठिनता जानो, विनयकरी अति सरधा आनो ।५।
मैं तो भील धरम का कीजे, काज भील गुरू कैसे सीजे ।
मो पै दया करो मुनिनाथा, धार सकूं व्रत करो सनाथा ।६।

दोहा— विनवे मुनि पद जोर कर, करो कहा मुनिनाथ ।
असमर्थ सु व्रत धारने, कीजे रतन सनाथ ।७।

मुनि द्वारा व्रत दान

चौपाई—मुनिवर करुणा रस में भींजे, साधक भवि या संयम दीजे ।
पूछी तूने कागा खायो, सुन नाहीं तब वाहि छुड़ायो ।१।
नियम विना कछु धरम न होवे, कारज सिद्ध नियम धर होवे ।
सुनत भील मन आनद लायो, गुरू पद बन्द उमग व्रत पायो ।२।
काल गये कछु पाप सतायो, व्याधि असाध परीक्षा लायो ।
वेदी कहें सु ऐक उपाचा, काग माँस बस व्याधि नशावा ।३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुनत खदिर बोलो खिसयाया, प्राण जाँय भल व्रत न जाया ।
कोटि जन्म कोई व्रत हो ही, जावे काया मिल पुनि देही ।४।
मुनिवर दिग मैंने व्रत पायो, पुण्य सुरग गुरू कारण गायो ।
व्रत तोड़ों तो नरके जाओ, महा मूर्ख जो व्रत तुड़वाओ ।५।

दोहा— शूरवीर खादिर सखा, सारसपुर वन गाम ।
सुनत रतन चल भेंट ने, बिना लिये विश्राम ।६।

चौपाई—वन में पायो तरु इक भारी, विलखे दिखी भील सुकुमारी ।
पूछी भील काहि को रोवे, कहे यक्षणि सुत चित शुभ देवे ।१।
मानसिक व्याधि लेय सु रहना, अपना कौन किसे का कहना ।
सखा तिहाराँ खादिर भीला, काग माँस त्यागी व्रत शीला ।२।
मरणा सन्न लु मरण निदाना, व्रत कर हो धनि मेरा आना ।
व्रत तोड़े तो नरके जावे, दुख कारण तेरे सो पावे ।३।
मेरे दुख का कारण पूरा, सुनत भील कह मैं अति शूरा ।
व्रत वासे नाहीं छुड़वाऊं, उसे तुझे मैं सुखी बनाऊं ।४।
आयो चल झट मीत सु पासा, मिलन मीत की उर अति आशा ।
लखकर दशा मीत दुख पायो, करम उदय मन मोह सतायो ।५।
पुछे सखा कहो निज बाता, मचा रखा काहे उत्पाता ।
सभी भील लें मास अहारा, काग मास भल कौन विचारा ।६।

दोहा— व्याधा नाशन हेतु जो, जीवन राखन हार ।
काय रहे हो पुन्य वहु, समझो रतन विचार ।७।

खदिर व्रत दृढ़ता-मरण—

चौपाई—सुनत खदिर बोलो सुन माया, आज मित्र तुम बने दुखदाया ।
धरम नाश लज्जा की बाता, आशा तुम पै पर ये घाता ।१।
नरक परन की ये तुम राया, मोरो अन्त सु धरम सुनाया ।
शाँती मन में जो आ जावे, सद्गति होवे मिथ्या खावे ।२।
शूरबीर दृढ़ निश्चय जानो, करतो जय जय मुद मन ठानो ।
यक्षणी कथा कही समझाई, व्रत को महत सुमुद दरशाई ।३।
खदिर धरम अति धरो सनेहा, कीनो त्याग मांस सब देहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अधरम फलत सदा दुख दाया, मोहे यातें धरम सुहाया ।४।
धारो भाव संवेग उमाया, अणुव्रत धारक भील सु राया ।
शाँत भाव धर छोड़े प्राणा, लहि ऋद्धि सुर सुरग विमाना ।५।

दोहा— अन्तिम विधि कर मित्र की, शूरवीर गृह जाय ।
सु लखे यक्षणी रोवती, अचरज रतन समाय ।६।

यक्षणी रोदन

चौपाई—पूछे शूरवीर क्यों रोवे, व्रत धर मेरो मित्र जु होवे ।
कहे यक्षणी अरे सुन भ्राता, सखा तणी सु सुन कुशलाता ।१।
सुरग प्रथम जा उपजो देवा, महा विभूति ऋद्धि फल मेवा ।
जिन पूजाँदिक में मन धारे, देविन रच अति आनद कारे ।२।
दृढ़ निश्चय समताँ परभावा, अणुव्रत धर परलोक सिधावा ।
इक व्रत धरतो मो पति होतो, व्रत जैसो फल तैसो लेतो ।३।
लाथ गयो अब मेरो छूटो, निरखत तुम ने हो मन टूटो ।
सुनो भील सब व्रत प्रभावा, इह भव यश पर भव सुखदाय ।४।
यातें व्रत मो धारण योगू, जावें यातें दारिद शोकू ।
समाव्रि गुप्त मुनिवर पद नायो, व्रत धारत मन विनय सुनायो ।५।

दोहा— सुर सुख दो सागर लियो, धरम पुण्य फल दाय ।
खादिर नृप श्रेणिक भये, दृढ़ व्रत रतन सुभाय ।६।

चौपाई—आये राज ग्रही शुभ थाना, उपश्रेणिक नरपति गुण खाना ।
इन्द्राणी राणी सु छबि धारी, पतीव्रता गुण गण आगारी ।१।
कुल जन मन को मोद बढ़ाये, सुन तिनके श्रेणिक मन भाये ।
सकल विभव गुण संपति पाये, श्रेणी भव्य जनन की आये ।२।
मेटो त्रासा भव भटकाई, महावीर पद शरण सहाई ।
सनत वचन नृप मन अति भाया, विभव विवेक सबलता छाया ।३।
उपजी सरधा श्रेणिक राया, देव गुरू अति मन सरधाया ।
वाणी प्रीति धरम हितकारी, सुनत हरष बाढ़ो सुखकारी ।४।
विनवे मृदु स्वर विनय सुधारी, सुनहु दयामन वृष अवतारी ।
व्रत पालन नहिं मोसे होवें, कारण कौन कहो गुरू देवें ।५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहें गणपति सुनहु मति मानू, मति मिथ्या धर बन अघ खान ।
आरंभ परिग्रह मय हो लीना, विषय लिप्त चित स्व बल क्षीना ।६।
अज गुरून की भकती कीनी, आडम्बर मय दंभ प्रवीणी ।
उलटो जगो तुमारा ज्ञाना, बंधी नरक आयु अन जाना ।७।

दोहा— गती बंध छूटे नहीं, ऐक बार भव होय ।
व्रत संयम सुर सुखद जिन, धरत रतन वृष जोय ।

श्रेणिक नृप अपर-भव

चौपाई—श्रेणिक नृप मन सकुच दुखारी, चिंते कृत पूरब अधिकारी ।
अब तो धरम घाट में आयो, अब तो उत्तम ठाँव सु पायो ।१।
कहते गण धर लख उर वाणी, अब अकुलायो मत शिव प्राणी ।
दरश विशुधी सु भावन भाई, बंध तीर्थंकर प्रकृति सु पाई ।२।
निकस नरक प्रथम हिं तुम आओ, उतसर पणि के तीजे पाओ ।
महा पदम तीर्थंकर होगे, धर्म चक्र प्रवर्त्त करोगे ।३।
सत्वर निकठ भव्यता धारो, अंत काल सुख शिव पद सारो ।
जग में तनिक भूल अटकावे, महत भूल जिय सदा भ्रमावे ।४।
जग भव वारिधि भटके जीवा, आये गहें बहु नरक सदीवा ।
माने मत भय तू नर राया, सम्यक साधन करो उपाया ।५।
उपजो श्रेणिक मन परितापा, बिन भुगते नहि कटि हैं पापा ।
सुनी नहीं मैं श्री जिनवाणी, बिन विवेक छायी नादानी ।६।

दोहा— सम्यक रतन सुभाव, नरक थिती थोड़ी बची ।
स्वातम बल दरशाव, जिनवाणी शुभ सन जची ।७।

चौपाई—पूछत विनय भरे नृपराया, पुण्य धाम मैं नगर बसाया ।
सहज सरल सब करुणाधारी, करत योग सुख पर हितकारी ।१।
धरम रीति सब मनमें भावे, कोई किसी को ना झुहलावे ।
करते सब जन निन निज कामा, शाँति सुक्ख मद धर बिश्रामा ।२।
परम पवित्र चरण प्रभू लाये, ज्ञान जगो गुण वैभव छाये ।
कोई दीन दरिद्री दुख नाहीं, मेंट नृप जन आकुल ताहीं ।३।
सर्व सुरक्षण जु सबको मिलता, परजा सारी अघ भ्रम हरता ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुगति जाँय सब मन सरधानो, या कोई कुछ गती उमानो ।४।
जाऊं मैं ही नरक मंझारी, या जावे को मेरे लारी ।
मन मेरे की शंक निबारो, मैं तो भोगूं विभु उन तारो ।५।

दोहा— करि हों यतन सु चित्त मैं, लिये बिना विसराम ।
सकल सुजन पावें सुगति, नगर रतन सुर धाम ।६।

चौपाई—गण नायक गौतम समझावें, सुनो भव्य सत मन जो भावें ।
नगर काल शौरिक चाँडाला, पर घातन रत अघन रसाला ।१।
शुभा नाम दूजी सुकुमारी, पाप निरत अति अघ मग चारी ।
इनको पाप योग तुम जानो, कलुष काज फल नरक निदानो ।२।
काहू की ये माने नाहीं, शांति त्याग पथ भावत नाहीं ।
अधम काज कर अंत समावें, करम बंध कर नरकन धावें ।३।
श्रेणिक नृप तुम तज परितापा. निज करनी फल फलत सु आपा ।
अघ सब जब ये देहु छुड़ाई, गति हो उत्तम मानो राई ।४।
ऐसी होनी है इन नाहीं, अपर सुजन की कौन दुहाहीं ।
मन नृप को कछु और उमाहो, नृप बल सुफला करणो चाहो ।५।

दोहा— पकड़ काल शौरिक सबल, दीनो कूप सु डार ।
करि है कैसे हनन अब, मिटे रतन शुभ्रनार ।६।

काल शौरिक

चौपाई—पूरब सप्त भवाँतर जाने, चढ़ो काल शौरिक न माने ।
सांचो करम पाप फल होतो, मानव तन क्यों पातो मैं तो ।१।
मिले योग सुख भोग सु धामा, बिलसूं तब वन योग सुदामा ।
बिन भोंगे सब ये रुषये हैं, अबके छोड़ो फिर नातै हैं ।२।
निरभय भोगो, भोग अभोगा, जातें मिलो मनुज तन योगा ।
हिंसा आमिष मद्य आसक्ता, सप्तम नरक थान सु भक्ता ।३।
छोड़ी हिंसा नृपति विचारे, कूप पड़ो शठ भाव संहार ।
गीलो मिट्टी जब बनावे, माटी शस्त्र सुमार गिरावे ।४।
परवश भाव शुद्ध ना होवें, बिना शुद्धता सुख ना जोवें ।
फल भावन तें करम समावे, आकृति प्रकृति सु जीव बनावे ।५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा— गति जाकी जैसी बनी, करे करम उमगाय ।
गुण लक्षण तैसे धरों, जानो रतन सुभाय ।६।

शुभा कुमारी

चौपाई—शुभा कुमारी नृपति बुलाये, धारत ता हित चित हरषाये ।
महावीर पद दरशन करि है, अघ तम बिना धरम आचरि है ।१।
शुभा राग वश अंध अदूजी, चपल नयन छबि काम अरुझी ।
लपट उद्धत इन्द्रिय सक्ता, कोप धारणी विग्रयन भक्ता ।२।
व्यसनी पाप कौन न लाघे, शील रहित कछु लाजन बाघे ।
सदा स्वच्छंद धरे अघमाई, कुल जाती सब धरम उड़ाई ।३।
सुनत नयन गुलके मदमाती, मैंना निरखूं भोग विघाती ।
विन विवेक मन विना उपावे, छटा नरक गति मति तस धावें ।४।
गती बंध को नाहिं उपावा, बोयो जैसे फले सु आवा ।
मन उच्छृंखल ज्ञान न भावे, सत सरधा बिन गति पावे ।५।

दोहा— उत्तम कुल वय काँति धर, मृदु भाषी पटुनार ।
जग भव विषय न निरत उर, धरम रतन परिहार ।।
पावे दुरगति नीच सो, मिटत धरम कुल रीति ।
करम विना ऊंचो न जग, चतुर रतन शुभ नीति ।।
जावे पर भव जीव जब, नाहीं कोय सहाय ।
सहे अकेला दुख रतन, साथी कहीं न पाय ।
जाति वेष कुल धर्म पा, बड़ो बड़े नहि कोय ।
सम्यक विन असफल यतन, चारित्र रतन सु जोय ।।

दश विधि सम्यक दर्शन

दोहा— सम्यक दरशन रतन धर, नरक तिर्यग गति हान ।
आरंभ परिग्रह बिन सुगुण, टरत गती दुख दान ।१।
दरशे सम्यक जीव जो, सो है जीव महान ।
दश विधि निरखें रतन मग, शिव सुख सुरग अमान ।२।

चौपाई—सम्यक शिव सोपान प्रमानो, दश विधि लखें सुवुध धर ध्यानो ।
आज्ञा मार्ग देशना द्वारी, बीज रुची संक्षेप विस्तारी ।१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ अव गाढ़ सु परमा गाढ़ो, सरधा सम्यक दश विधि आढ़ो ।
सर्वज्ञ कथित षट द्रव्य सु माने, आज्ञा सम्यक सो बुध जाने ।२।
मुनिव्रत धर कर परिग्रह टारे, मारग सरधा जीव सु धारे ।
कथन शलाका पुरुष अराधें, सो उपदेश दरश भवि साधें ।३।
आचाराँगी किरिया जोवे, सम्यक रुचि ये तम भ्रम खोवे ।
अर्थ बीज पद रुचि जो भावे, सो शुभ दरशन बीज कहावे ।४।
सार पदारथ सुन हरषावे, सो सम्यक संक्षेप सुहावे ।
लय प्रमाण सयुक्तिक जाने, विस्तार सु सम्यक या बुध माने ।५।
द्वादशाँग शुभ सार संजोवे, अर्थावगाढ़ सु सम्यक होवे ।
पूर्ण पदारथ कर सरधाना, परमाव गाढ़ शुभ सम्यक माना ।६।
देव धरम गुरू सरधा धारे, सरधा सम्यक सत आधारे ।
दशों मार्ग शुभ सम्यक आये, इक मारग शिव सुख दरशाये ।७।

दोहा— सम्यक दश विधि रतन सब, श्री जिन वच हितदाय ।
भेदा भेद अनेक विधि, गहो रतन मन भाय ।८।
जो जैसी करनी करे, सो तैसो उपजाय ।
सम्यक फल सुख शिव वरे, सुर नर रतन सुभाय ।९।

अभयकुमार पूर्ववृत

चौपाई—नृप श्रेणिक विनबै हरषाओ, अभय कुंवर वृत गुरू सुनाओ ।
करुणामय गणपति शुचिवाणी, दरशे सुंदर विप्र कहानी ।१।
पूरब भव जिन शरणा आयो, अंत समय सन्यास धरायो ।
प्रथम सुरग तप धारत हूओ, सुख पाये अधिके सुर भी ओ ।२।
आये चय हो अभय कुमारा, प्रथम विप्र सुर क्षत्रिय कुमारा ।
जो जस पावे तस रम जावे, धरत अहं तैसो दरशावे ।३।
सारे भव निज जिय लख पावे, मद ममता सब तरत दिखावे ।
धारो सम्यक सब अवलोई, जातें दुरगति पदे न कोई ।४।
धर अमूढ़ता पाखण्ड त्यागो, उर विवेक जाग्रत निज पागो ।
देव शास्त्र गुरू गुण पहिचानो, उत्तम गुण लख सरधा आनो ।५।

दोहा— बिन छाँड़ें जग मूढ़ता, ठगे गये बहु बार ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब सत जानो ज्ञानकर, चहो रतन भव पार ।६।
धारें तप शिव पायेंगे, क्षत्र भुवन त्रये शीश ।
अभय अभय कर रतन जिय, वंदे सदा गणीश ।७।
श्रेष्ठी संग में होय के, जानो भेदा भेद ।
छोड़ी तीनों मूढ़ता, मेंट रतन मन खेद ।८।

सच्चा देव

देव महा अर्हंत निरग्रंथा, वीतराग सखज्ञ भगवंता ।
सब जीवन हित दे उपदेशा, निजानंद मुकति निवेशा ।१।
सुरग मोक्ष देवे सो देवा, निज सम करे जीव स्वमेवा ।
जनम मरण भव दुक्ख मिटावे, दोष अठारा जाहि न पावे ।२।
अनन्त चतुष्टय सुतप पावे, करम जाल बिन विमल रहावे ।
परमातम पद को जो लावे, आप तरे और न तरवावे ।३।
ऐसो देव लखे सुख लीजे, मोह राग रुष भय बिन सीजे ।
विटप आदि देवत कहुं पावें, लोक श्रेष्ठता हित लख भावें ।४।
सहें कष्ट ऋतु ना वैरागी, शक्ति हीन अवशता भागी ।
कछु करवे की शकती नाहीं, पूरब कृत फल पा अकुलाहीं ।५।
जीवन को है अति हितकारी, जग सुख कारण ना शिवकारी ।
साँचा देव परख नहिं पाते, सो भोले जग में भटकाते ।६।
निज बुध बल तें देव विचारो, चिनमय शुद्ध रूप लख धारो ।
चेतन तुम जग विकसित प्राणी छाँड़ों, परकृत मूढ़ निशानी ।७।

दोहा— दोष रहित गुण गण सहित, वीतरागी विज्ञानि ।
सब जीवन हितकार जो, देव रतन पहिचान ।८।
द्वेष राग मद मोह भय, लघु जीवन सँचार ।
स्वबल विवशता सुजयी, देव रतन हिय हार ।९।

लोक मूढ़ता

सोरटा— देव सुबुधि पहिचान, लोक अबुधिता दूर कर ।
चेतना रतन अमान जग, रूढ़ी उलझन जड़ी ।१।

दोहा— सागर सरिता सरवरा, शिकता को स्नान ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गिरि तें गिर अगनी पड़े, ना इनतें कल्याण ।२।
इरमें रहते जीव जो, होते शुचि भर पूर ।
परतक्ष उलटो देख लो, मीन रतन बिन नूर ।३।
अंतर शुचिता किम करें, बाह्य अशुचि नहिं जाय ।
सुरसरि जिन धुनि मान लो, मेटो भव भुलवाय ।४।
मन वच शुद धी करत जो, काया हो अति चंग ।
चिन्मय शुचिता कारने, करो रतन सतसंग ।५।

गुरू मूढ़ता

चौपाई—अपने को जो श्रेष्ठ बखाने, आरंभ परिग्रह हिंसा ठाने ।
द्वेष राग धारत मन मोहा, छूटे नाहीं थल मद कोहा ।१।
कारण पा जग भये उदासी, आतम ज्ञान जोति नहिं भाषी ।
करनी अकरनी नाहिं जाने, मन मानी जो गति मति ठानें ।२।
अपनो महत बड़ो कर माने, चेतन समता नाहिं पिछाने ।
निज हित स्वारथ फंस ललचावे, सूधी सच्ची राह न पावें ।३।
इनको तरनो मुश्किल जानो, कैसे तारें अन्य प्रमानो ।
जातें गुरू निरख सर धइये, वीतराग निर्ग्रंथ बुध गहिये ।
गुरू मूढ़ता जग भटकावे, जिय भटके सो जग अटकावे ।
चमत्कार पर चित ना लाओ, सुगुण रतन गुरूता लख पाओ ।५।

दोहा—
कोप अहं अति मद भरे, वचन कुठार समान ।
बड़वानल ज्यों उदधि का, शोषे जल की हान ।६।
सुर सुरेन्द्र पदवी चहे, विभु को दास कहाय ।
जीव मरम चित ना गहे, धोखा रतन दिखाय ।७।

विप्र कुमार संबोधता

देव गुरू जग अज्ञता छाये, सकल भेद तब पथिक सुहाये ।
जिव्हारथ पै मारग जावें, इह भव परभव राह बनावें ।१।
विज्ञ विप्र की अज्ञता भागी, अंतर आतम जोति प्रकाशी ।
ऐसो साथ महा सुखदाई, उभय लोक हित ज्ञान समाई ।२।
काढ़ी मन की शंशा सारी, दरशी ज्ञान कला निधि सारी ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देव धरम गुरू ज्ञान जु आयो, सबल अबल गुण रूप लखायो ।३।
सोच समझ कर जो हित जाने, साँच। झूठा जग पहिचाने ।
सरधा साँची ज्ञान जगावे, सो चारित्र बसु करमत शावे ।४।
सो जग में लूटा नहिं जावे, सो सत मारग आतम पावे ।
जग दुख नाशे करम बिनाशे, निज मुकषारथ आत्म विकाशे ।५।

दोहा— वणिक विप्र सत संग शुभ, जीव दया पहिचान ।
अपना मारग निज लखें, महा रतन सुखदान ।१।

चौपाई—चलने चलते अटवी आये, पूरब कृत कछु दाँव चलाये ।
निर्जन गिरि अति भय कर फूला, मारग भूले विधि प्रतिकूला ।१।
बहुतक यतन किये अफलाये, थक्कर बैठे पथ बिसराये ।
जानो अतंक धात चलाये, स्वबल कसौटी कस चित भाये ।२।
जीवन की आशा तज सारी, धरौ दिगम्बर भेष सुखारी ।
बाहर अंतर परिग्रह डारे, आतम जोति सु लौं उजयारे ।३।
पाप विना तप उत्तम धारे, सम्यक दरशन सज अवधारे ।
देव धरम गुरू सरधा भाई, सद् मारग धारत समताई ।४।
कोई भीति न ताके होई, लोक परलोक भय उरं नहिं सोई ।
विपति परे सद पथ ना त्यागें, धरम धार सँयम अनुरागें ।५।
अंत काल जब अपनो जानो, धर सँयास ममत उर हानो ।
नर काधा भुवि कलश चढ़ाये, पूरब कृत कछु पार न पाये ।६।

दोहा— धरम मार्ग धीरज रतन, निज बल सुख उरछाय ।
करम दुष्ठ षठ नष्ट हो, उपजे सुर परजाय ।७।
महिमा सतपथ धरम की, सुधरे दोनों लोक ।
सदा अभय ताले रतन, सम्यक सरधा जोय ।८।
आये तहंते विप्र सुत, उपजे अभय कुमार ।
नंद श्री मोदित हिये, जांय रतन भव पार ।९।

चौपाई—सुनत कथा सब मन हरषाने, अभय सु श्रेणिक मुद उर ।
सुनंद श्रीमाता हरषाई, देत बधाई जन समुदाई ।१।
कथा सुनत श्रावक उमगाने, निज शकती समतप व्रत आने ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संयम धर कइ मुनिव्रत धारे, कीनी तपस्या करम निवारे ।
सम्यक साधक बहुते हूऐ, श्रावक व्रत बहु जीवन लीये ।२।
जैसा जाको पुण्य सुयोगा, कीने भाव सु योग संजोगा ।
समव शरण विभु भव्य सु आये, जिनको भवोदधि गाये ।३।
अरध परावर्तन जिन भारा, पुद्गल को तिन दरशन धारा ।
श्रेणिक नृप मन मोद सजाये, मानो आज सुनिधि गृह पाये ।
परिजन सहित संग परिवारा, जय हो जय हो मोद उचारग ।५।

दोहा— श्री जिन चरण प्रसाद, मंगल होवें जोक में ।
रतन सु शरणा धार, बसो जाय शिव थोक में ।।

महावीर संघ वैभव

ग्यारह गणधर

छंद— इन्द्र भूति वायु भूति, अग्नि भूति जानिये ।
मौर्य मौंड्य पुत्र सु, मैत्रेय मिल मानिये ।।
अकम्पन धवल शुभ, प्रभास नाम भानिये ।
मिल्ला सु लेय गणेय अब, एकादशा प्रमानिये ।१।

दोहा— गणधर ग्यारह वीर के, गण गुण से भरपूर ।
ज्ञान चार धारी रतन, रतनात्रय वृष मूर ।२।

चौपाई—ज्ञानी एकादश गणधर भाये, गौरव चार ज्ञान गुण ठाये ।
शतक तीन श्रुत केवलि जानो, द्वादशांग अधिकारी मानो ।३।
उपाध्याय गुण गुणी प्रमानो, नव हजार नौ सब जानो ।
शतक सात सौ केवल ज्ञानी, लख तेरह सौ अवधि विज्ञानी ।४।
नौ सौ ऋद्धि विक्रिया धारी, चौदह सहस मुनी तप धारी ।
सहस छत्तीस आर्यिका सोहें, बंदत चरण सुमन हरषे हैं ।५।
लाख ऐक शुभ श्रावक जानो, श्राविका तीन लाख सु भानो ।
समव शरण जिन सदा रहायें, महावीर नम करम खपायें ।६।
देवी देव असंख सदाये, पूजा स्तुति करत उछाये ।
सिंहादिक तिर्यंच शुभकारी, समव शरण विभु सदा पुजारी ।७।
शतक इन्द्र सब बिनती करते, माथ नाय धुनि मधु गुण धरते ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अवसर सबने पुण्य कमायो, महावीर पद मग हरषायो ।८।

दोहा— करत दिव्य उपदेश विभु, गुण सुख हित बल दानु ।
आयो जाको निकट जग, प्रगटो रतन सु भानु ।९।

विभुवीर नाथ की जय ।

स्तुत्य स्तोता सौधर्मेंद्र का विहार निवेदन ।

नमत वीर भगवान को, पावे जग कल्याण ।
करुणा उर सरजे रतन, सत्य अहिंसा ध्यान ।१।

चौपाई—लखत दृश्य परहित अनुरागी, सौ धर्मेन्द्र सु करुणा जागी ।
करी विनय मन शुचि हरषाये, शुद्ध योग कर थुती बनाये ।२।
मारग सद भव्यन को सूझे, सरधा साधें मेंट अरुझे ।
अनन्त गुणाकर सिन्धू स्वामी, लोक वंद्य अति पूज्य नमामि ।३।
बहु भागन थुति सेवा पावें, स्तुति कर अघ मलहिं गलावें ।
मन विशुद्धि जग संपति पावे, गरिमा गौरव जग सब पावे ।४।
जो जिय चाहत निज कल्याणा, स्तुति क्यों नहिं करें सुजाना ।
फल विशिष्ट अति बाछा जाके, पूजन थुति तत्परता वाके ।५।
स्तुत्य स्तोता थुति फल चारों, गुण अनुरूप फलें चित धारों ।
स्तुत्य श्रेष्ठ सु गण गुण दीपें, सुगुण स्तोता विनय प्रदीपें ।६।

दोहा— स्तुत्य सुगुण सुगुण निरख, स्तोता सद्पथ पाय ।
अनन्त चतुष्टे राग बिन, धरत रतन शिवदाय ।७।

जिन स्तुति और फल

चौपाई—जिनवर गुण नुति थुति हित भाये, स्तोता वीत रागता पाये ।
पूरण ज्ञान हितंकर नामी, सिद्धि रिद्धि स्वामी शिवगामी ।१।
सब स्तोता निज धन्य मनावें, बन सेवक स्वामी गुण पावे ।
सारे सद गुण संपति पावें, स्वामी सच्चे स्वामि बनावे ।२।
पुण्य सुफल करते थुति आवे, जगत बन्धु तट झूरन जावे ।
ऐसो अवसर पा क्यों चूकूं, लख कलयाण कारि विभु तोकूं ।३।
करुणा सागर करुणा कीजे, परम शुद्ध बुधि मोकों दीजे ।
वचन किरण तम मिथ्या नाशे, अरुण तेज जो नाहिं प्रकाशे ।४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिव्य–ध्वनि मुन मोह पलावे, छिप मन इंद्री वहीं समावे ।
वज्र वचन रति पति शिर बीता, इन्द्रिय तस्कर शोश अचीता ।५।
केवल ज्ञान चन्द्र प्रगटाया, लहरत धरम सिन्धु उमगाया ।
इन्दु गिरा अन्तर चमकाई, जगत शांति शीतलता छाई ।६।

दोहा— ईश । विभू । हे देव तुम, धरम उदधि के नाध ।
निधि रतनात्रय रतन भर, पावें बुध नत माथ ।७।

चौपाई—जग जीवन को अघ दुखदाता, सुन वाणी तुम भव्य विधाता ।
बहु भवि चारित दरशन धारें, अक्षय अनन्त सु सुख मग धारें ।१।
करम रिपू हनिवे जो आगे, उत्कट भाव गहन अनुरागे ।
तिलोक पति जग नाथ तिहारे, शुचि पद भवि रतनात्रय धारे ।२।
धारें भव्य सकल सुख पावें, चिंतामणि दाता विभु नावें ।
महा धनेश्वर तुम बड़दाता, किम इच्छक त्रि रतन प्रदाता ।३।
मोह नींद वश जगत अचेता, दिव्य ध्वनि नादेत सुचेता ।
सुरग मोक्ष सर वारथ सिद्धी, अनुपम लेंय भव्य उपलब्धी ।४।
नर पशु सुर तत्पर अरि खोवे, लगे लगेंगे भवि अघ धोवे ।
जो विहार विभु तुमको होवे, लहें ज्ञान जिय भ्रम तम खोवें ।५।

दोहा— ज्ञान जगे निज रस पगे, करम करें चक चूर ।
भव्यन रतन सभालने, करो गमन तप शूर ।६।

चौपाई—सुन उपदेश भव्य बहु तारि हैं, धर कर तप जग वास निवरि है ।
लहि सुख सागर जीन रसावें, अनन्त चतुष्टय मुकति पावें ।१।
योग धरत योगी अहमिन्द्रा, कोई सुर हों कोई इंद्रा ।
पापी मोही सतपथ पावें, मोह विजय कर घोष रचावें ।२।
चतुर वणिकवर तुमहि सुजाना, ले चालो भवि निजहिं सुयाना ।
मुक्ति द्वीप को विभु पहुंचाओ, जग भव बाधा सरब मिटाओ ।३।
इन्द्रिय कषाय चोर सु दण्डक, महावीर योधा अघ खण्डक ।
करुणा सागर करुणा कीजे, मोक्ष मार्ग हित गमन सु कीजे ।४।
मिथ्या तपन धान भवि सूखे, सींचत धरमा मृत नव हूके ।
धर्मोपदेश वान भट पाये, विजय भव्य वर श्री सुख लाये ।५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिथ्या ज्ञान तिमिर हर चक्रा, सज्जित विभु वर धर्म सु चक्रा ।
गौरव कर विभु गौरव धारो, लखकर अपनो पार उतारो ।६।

दोहा— गौरव पूरित विजय की, परम दुहाई हेत ।
सुर वेष्ठित सु धरम चक्र, सत्य रतन मग केत ।७।

चौपाई—समय सु उत्तम विभुवर आया, सुपथ मोक्ष हित भवि मन चाया ।
समरथ आप अन्य न कोई, दरशक सतपथ तुम सम होई ।१।
मिथ्या मग अरू तिमिर निवारे, मोक्ष विधेय सुरग अवतारे ।
पुनि पुनि नमन तुमहिं शत वारा, अनंत चतुष्टे सुगुण भंडारा ।२।
बल अनंत गुण वन्त सु जोती, विरत महा लक्ष्मी वर मोती ।
शत सहसक तुमको नमकारा, शुचि ब्रह्मचारी सुरिन मझारा ।३।
मोह रिपू हर ज्ञान सु धारी, विभूवर तुमको नमन हमारी ।
शान्त रूप धर करम विनाशे, मुक्ति रमावर जगतत भाषे ।४।
हे विभु । सन्मति तुम महावीरा, अभिष्टतार्थ नत कोट सुधीरा ।
मन मो कछु नहिं अब अभिलाषा, जनम जनम पद भगति सु आशा ।५।

दोहा— सेवा थुति नुति भक्ति फल, रतनात्रय अमलान ।
करो अनुग्रह दीन लख, चाह रतन वरदान ।६।

वीर विभू बिहार—

चौपाई—संसकार वश गमन विरागी, पुण्य भव्य करुणा सब जागी ।
द्वादश सभा जीव सब चाले, शुभ्र चमर सुर वृंद सभाँले ।१।
शीश तीन क्षत्र दिपत लुभाये, वैभव धीश्वर गुरू गुण गाये ।
गगन अच्छादित धुजाय ताला, विविध वाद्य धुनि गुंजो आकाशा ।२।
जय जयकार शोर चउ ओरा, गुंजी दुहाई आनंद घोरा ।
वृद धी । आनंद ।। दिश सब नादें, महामोद भवि घोष निनादें ।३।
अरुण गगन जिमि विभुवर सोहें, भव्य गगन रवि द्युति सों मोहें ।
नभ मारग शुभ विभुवर चाले, शत योजन सुभिक्ष सुकाले ।४।
वन परवत नद नगर निवारा, निरभय जीव सकल अघ क्षारा ।
विधेश्वर अति शोभा धारी, दिखें सुखी सरवत्र जिय धारी ।५।

दोहा— अतिशय केवल ज्ञान वर, नमत सुरादि गणीश ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अमल रतन शुचि नमत घट, नमें ताहि जगधीश ।६।

देवकृत चौंदह अतिशय

चौपाई—सखाँगी शुचि निकसत वाणी, अरध मागधी सुर परमानी ।
विन विरोध सब जीवन मैत्री, फल अति षट ऋतु धरे धारित्री ।१।
समकाँचन भू सभासु मण्डप, शीतल पवन सु मन्द सुगन्धप ।
सकल दिशानभ विमल सु निरमल, सात सात पगतल पदमा दल ।२।
जय जयकार करें सुर वृंदा, गंधोदक मय भू सुख कंदा ।
कंटक बिन अति भूमि सोहे, चौदिश आनंद भवि मन मोहे ।३।
धरम चक्र आगे तम नाशे, मंगल दरव अष्ट परकाशे ।
पाप मेघ बिन नभ चमकाये, विपुलाचल तज वीर सु धाये ।४।
दरशन ज्ञान चरित तप दीक्षा, गुण रतनाकर रतन शुभ शिक्षा ।
परिष्कृत मुक्ति सुख दरशावे, लखत रहत तत भ्रम तम जावे ।५।

दोहा— गुण छयालिस अरहंत सब, दोष कठारह नाहिं ।
महावीर तीर्थं करो, नमत रतन हुलसाहिं ।६।
देश–देश भवि हित कियो, धरम सुपथ दिखलाय ।
सुलटे उलटे पथ–विमुख, धरम रतन की छाँय ।७।
हिंसा छिप सब दब गई, करुणा उपजी गेह ।
सरब जीव लख ऐक से, धारें रतन सनेह ।८।
पंच पाप तस्कर भगे, भगे क्रोध मद मोह ।
लोभ गये सुख ऊपजे, सुबुधि रतन उर खोह ।९।
शाँती छाई जगत में, प्रेम नीति व्योहार ।
सद् मग कर तब भान जिय, वीर रतन जय कार ।१०।

चौपाई—बरस तीस विभु कियो बिहारा, सकल भव्य कर भवदधि पारा ।
चलत चलत पावापुर आये, सकल जीव सबोध दिवाये ।१।
अन्त आयु जब विभु को आयो, दो दिन का विभु योग सधायो ।
शुकल ध्यान के अंतिम चरणा, अंत समय द्वै कर्म निर्झरणा ।२।
प्रकृति तेरह सगै इक ढाये, बहत्तर दूजे काल नशाये ।
पच ह्रस्व अक्षर समय कहाये, चौदह गुणथानक ठहरावे ।३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बन अयोगि विभु रहित शरीरा, लोक शिखर निज रूप गहीरा।
पाव पदम सरोवर ठाँही, कार्तिक श्याम अमावश माँही।४।
अंत चतुरदशि निशि को आयो, शशी स्वाति नक्षत्र शुभ छायो।
सिद्ध सुथल विभु वासा कीनो, शुद्ध चिदातम निज गुण कीनो।५।
सुर नर इन्द्र सकल मिल धाये, निर्वाण कल्याणक शुभ मन भाये।
पूज सविधि विभु मन हरषाये, धन्य जीव। सुख दिये दिवाये।६।
माटी ज्योतित दीप सुहाई, दिये दिये विभु दीप दिखाई।
उर सनेह भर जोति सजाई घट घट रतन दीप का पाई।७।
पावापुर शुभ सरवर माना, मुकती पाई सुगुण निधाना।
पावन तीरथ कीरत धामा, महावीर जग रतन विश्रामा।८।

दोहा— दुख हर सुख वरधक सदा, धरम दया अवतार।
बन्दे पद महावीर के, जये रतन जयकार।९।
जब जग चाहे शाँति सुख, करे रतन जयकार।
मन बाँछित पावे सुफल, सुगुण नाम चमत्कार।१०।
अचरज यह जग में लखो, वीतराग अविकार।
सुख पावे भवि नाम क्यों ? शकती रतन अपार।११।

निर्वाण कल्याणक

दोहा— परम सिद्ध परमात्मा, निरविकार परमेश।
परम ज्योति आनंद घन, नमत रतन निखलेश।१।

चौपाई—सकल सुरा सुर नर उमगाये, शोकानंद हृदय अति छाये।
परम विभूति नित्य विभुताई, स्वात्म निष्ठ स्वतंत्रता छाई।२।
करम उपाधि बिना शिव स्वामी, वात वलय तनु सदा विश्रामी।
जग जीवन को धीर धरावें, सदा काल चेतन दरशावें।३।
निज गुण सम्पति भास्कर, स्वामी पथ दायक अनुपम अनुगामी।
जग विभूति सब जग हित छोड़ी, निज रस सुख बाँछा भव मोड़ी।४।
चेतन निज गुण भोगें भोगा, अचल गुणों का नित उपभोगा।
निज गुण लाभ सदा शिव धारें, गुण वीराज निज अनंत सवांरे।५
सुगुण अनंत निराकुल धरता, विमल निरामय अभय अकरता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सब सिद्धन सह सदा विराजे, आत्मानन्द रतन उर साजे ।६।

दोहा— वीतराग सरवज्ञ अमल, सदा काल निज रूप ।
निरमल कर भविगण सुविद, आश्चर्य रतन अनूप ।७।

अंतिम उत्सव-काय पूजा—

चौपाई—गुण चिंतत सब जुड़ी समाजा, महावीर जय । जय शिवराजा ।
जय जय करा भरा न भगाजे, अनहद बाजे अनुपम बाजे ।१।
कनक सिंहासन विभु पधराये, सौफर्मेंद्र भक्ति गुण छाये ।
अष्ट दरब ले पूजा कीनी, धन्य साधना विभुवर कीनी ।२।
जन्मत उत्सव सब हरषाये, मरण महोत्सव आनंद दाये ।
जाना तुमने सच्चा जीना, पर हितकारी निज सुख भीना ।३।
सबको मारग मोक्ष दिखाया, उभय लोक सुख ज्ञान समाया ।
निरबल में भी बल उपजाया, सकल जीव सम चेतन राया ।४।
सम्यक रतनात्रय जो पावे, आतम परमातम बन जावे ।
दीन अनेकों तुमने तारे, पथ भटके थे जो बेचारे ।५।
काया शुचि ये तुम परभावे, शुचिता पुद्गल तुम से पावे ।
शाँति अपूरब जगने पाई, करुणा सुरसरि हृदय समाई ।६।

दोहा— पथ तुम सब सुखदाय अति, मेटे मन का खेद ।
अबल अज्ञ जग स्वार्थ भ्रम, भ्रमत रतन बिन भेद ।७।

चौपाई—दरशन फिर या तन को नाहीं, परवशता विभु सकल जनाहीं ।
शुभ परमाणू जगत सु भावें, नव जीवन चिन वैभव लावें ।१।
पथ गुण जो विभु तुमने दीने, नाम तिहारो कालुष छीने ।
अधिक नाम की तुम विभुताई, अम्बर महक तिहारी छाई ।२।
प्रभुता तुमसे गौरव पाई, कीर्ति तिहारी अमर सदाई ।
सुमरत नाम सकल सिधि होवे, मिले सरब सुख स्वबल जोवे ।३।
पथ साधक विभु काया प्यारी, प्रभुता संग विभु के अतिभारो ।
विभु भव्यन में दिये दिखाई, काया पूजन सब मन भाई ।४।
सद् मित्रन को यही स्वभावा, प्रिय सखा सुपथ लक्ष्य सधावा ।
सर्वोच्च शिखर सु मित्र उठाये, काय कृतज्ञ सब शीश चढ़ाये ।५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमोदारिक देह सजाई, भक्ति भाव बहु पूज रचाई।
धन्य मरण–जीवन जग लाया, सुख शांती बल चेतन पाया।६।

दोहा— अति मनोग्य विमान वर, विभु काया पधराय।
अगर कपूर सुगंध बहु, लिये रतन सुर राय।७।
नमन करत ज्वाला जगी, किरीट अग्नि इन्द्राय।
स्कन्ध विखर अणु पर नये, अब गुण रतन सहाय।८।

भस्म-बंदना

चौपाई—चिता भस्म सब शीश चढ़ाई, कंठ हृदय भुज माथ लगाई।
शुचि परमाणु जग में भारी, सब शुचि करें जीव संसारी।१।
शुध संवेग लोभ जिन आयो, शुभ परमाणू शुभ फल लायो।
मोक्ष सु हमको विभु पथ देहै, सिद्ध परमाणू पथ संजो है।२।
परम शांति अचरज भर छाई, लौ भई भंग विभूति समाई।
जय जय शोर सिद्ध जय हूआ, मन का भार क्षणिक कम छूआ।३।
जग काया की ऐसी रीती, मेटत बने न जग परतीती।
महावीर जयकार सुनावे, वीर नाम दुति उर झलकावे।४।
पावापुर अति जोती छाई, सुमणि दीप घृत नेह सजाई।
गुणि जन मिल सब नीति बनाई, मावस जब कार्तिक दिन आई।५
गृह का मन का कर्कट टालो, दीप मालि का श्री उजयारो।
विभु गुण सुमरत गये सभाई, दीप मालिका निश गृह आई।६।

दोहा— आनंद उर परगट कियो, घृत दीपक जलवाय।
सदा शरण दाती रतन, दीपावलि दमकाय।७।
जीने से मरना भला, कुलिस भाव धर क्रूर।
मरकर जीते जग रतन, चैतन घन सुख पूर।८।

चौपाई—पावापुर जग पुन्य सु खानो, तीरथ परम पवित्र अमलानो।
पदम सरोवर चरण सुहाये, महावीर विभु नाम सुनाये।१।
स्वपद रमाये मुक्ति उपाये, निज पद बिसर जगत भरमाये।
महावीर विभु जीवन गाथा, सत्पथ दरशक करत सनाथा।३।
सन्मति तीरथ पंथ सु चाले, जों चाले सो मुकती पाले।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परम अहिंसा धरम उर, समझे जितनो जीव।
सुख बाढ़े निरमय बने, रतन सु शान्ति सदीव ।७।

उपसंहार

दोहा— महावीर इति वृत्त सब, पुण्य पाप जग फूल।
महावीरता दरश हित, रची रतनसुख मूल ।१
सम्यक दरशन पायके, लेवें पद निर्वाण।
पढ़े सुने जो भावसों, पावे सुख कल्याण ।२।
जो या को ना आदरें, ढूढें यामें दोष।
पथ भटकें जग में अगति, धारत धनमद रोष ।३।
अन्त काल पछतायगें, नहीं गलेगी दाल।
जीव अकेला दुःख सहे, आवे काल कराल ।४।
जो हित चाहत आपनो, पढ़ो सुनो बुधिवान
सुरनर वैभव सब सुख, अंतरतन निर्वाण ।५।

गुण धर गुरु आचार्यवर, कीनो उत्तर पुरान
महावीर अर्चना करी रच महावीर पुरान
लख लाको पद्यन कियो लघु बुध भविके हेत
रतनचंद कौछल रचे, महावीर पद सेत।
चाबी इक लघु ग्राम में, मण्डला जिला मंझार
जनपद अतुरालय बहिर, जन सेवा चितधार।
वैद्य कार्य कर सुख लहें, मण्डला राखें धाम।
आत्मज श्री बाबूलाल के, पंडित जी शुभ नाम ।।
मूर बहुरिया जैन कुल, कौछल गोत्री जान
वंश बेलि परवार को, सदा हृदय गुणगान
महावीर ले विभव जग- शिव सुख लोनो सार
जीवन जो उनको पढ़े सब सुख तिनके लार
पच्चिस सौ दो वर्ष में, वीर प्रभु निर्वाण
अल्प बुद्धि रचना करी, क्षमो सकल बुधिवान
परम महावीरायणा, मन का मेटे क्लेश।
अहं राग ममता मिटे, भूल जगत परिवेश।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रत्नात्रय महिमा, निश्चय रतनात्रय २३२
व्यवहार सम्यक् दर्शन, सम्यक्त का महत्व २३३
व्यवहार सम्यक् ज्ञान, व्ययहार सम्यक चरित्र, २३४
व्यवहार रतनात्रय, निश्चय सम्यक दर्शन, २३५
निश्चय सम्यक ज्ञान, निश्चय सम्यक चारित्र रत्नात्रय महत्व द्विविध धर्म, दर्शन प्रतिमा, व्रत प्रतिमा, सामायिक प्रतिमा, प्रोषध प्रतिमा, २३६
सचित्त त्याग प्रतिमा, रात्रि भुक्त त्याग प्रतिमा, ब्रह्मचर्य प्रतिमा २३७
आरंभ त्याग प्रतिमा, परिग्रह त्याग प्रतिमा: त्याग अनुमति त्याग प्रतिमा, उद्दिष्ट त्याग प्रतिमा· प्रतिमा महत्व
मुनिव्रत २३८
कालचक्र, भोग–भूमि संरचना, कल्प वृक्ष २३९
अवसर्पणों चतुर्थकाल, कर्म भूमि महत्व २४०
वर्त्तमान् चौबीस तीर्थंकर बारह चक्रवती, नव बलभद्र २४१
नव नारायण, नव प्रतिनारायण, गति शलाका पुरुष, पंचमकाल २४२
षष्टम काल, त्रैलोक आकार २४३
स्वात्मलाभ, इन्द्रभूति गौतम, सुदर्शन लाभ, सफल सत संगति २४४
गौतम दीक्षा, गौतम ज्ञान लाभ, द्वादशांगावतरण २४५
श्रेणिक नृप आगमन २४६
श्रेणिक नृप पूर्व भवाप्रेक्षा, मुनि द्वारा व्रत दान २४७
खदिर व्रत दृढ़ता, मरण, २४८
यक्षणि रोदन २४९
श्रेणिक नृप अपरभव २५०
काल शौरिक २५१
शुभा कुमारी, दश विधि सम्यक दर्शन २५२
अभय कुमार पूर्ववृत, २५३
सच्चा देव, लोक मूढ़ता २५४
गुरु मूढ़ता, विप्र कुमार संबोधता २५५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुधरम	सुधरम	
सु अभय निरभय रतन	सु अभय रतन	८ ८
माए	मारे	८ २३
सुख दानि	सुखदान	९ १८
हरवायो	हरषायो	९ २२
सप्तवाद	सप्तपाद	९ २३
परि कर	परिकर	९ २७
मंगाल चरण	मंगलाचरण	१० ४
घर	धर	१० ८
पुरुरवा	(पुरखा)	१० ९
अरवि	अरणि	१० ११
पुष्कावती देन	पुष्कलावती देश	१० २०
पुण्डरी कनि पुरि	पुण्डरीकनी पुरी	१०–२१
अभ्द्धत	अद्भुत	१०-२२
बीलि	बेलो	१०–२५
बाधें	बाधें	११—२
पारा चारी	पापाचारी	११—६
सोठा	सोरठा	११—७
नर	दोहा–नर	११—९
हले	हते	११–१८
वीत राग	वीतराग	११–२१
पारम	पारस	११-२५
की	कों	१२–२
आयो	भायों	१२–३
भाग	भागन	१२– ९
भमते	भ्रमते	१२–२७
अकाल	अकाज	१३ १५
मति	मीत	१३–२१
परखनता		१३..२४
अन्यन	अन्य न	१३–२७
कीमानी	की मानी	१३–२७
वनें हीं	बनें हों	१४-५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यौवन बल नुण वय गुण	यौवन छबि बल वय गुण	१४—८
हरबो	हरषो	१४—८
हरवावे	हरषावे	१४—१२
सुवन	सुपन	१४—१३
भव	विभव	१४—१९
रे	धारे	१४—२३
अप्तेष्ठी	अन्तेष्ठी	१४—२६
विघना	विधना	१५—२
मती	मीत	१५—३
सुरगमरते	सुरग मरते	१५—५
अनंतमाति	अनन्तमति	१५—१२
पितृ महाऋषभषुयेवा	पितृमह ऋषभ सु देवा	१५—१५
सकस	सकल	१५—१७
होम	होय	१५—२०
षुव्रत	सुव्रत	१४—२१
पूरे	धारे	१५—२१
चतर्थ	चतुर्थ	१५—२४
जय	जग	१६— ६
सुपौच	सु पौत्र	१६— ८
व्राह्मौ	दोहा—व्राह्मी	१६— ९
सुद्धि	बुद्धि	१६—९
घन वैभव	दोहा—घन वैभव	१६—२२
पदमारायण	पद्म नारायण	१६—२७
स्वच्छ नद जल	स्वच्छ जलद नद	१७— ६
भू	भु	१७—११
सुमख	सन्मुख	१७—२०
सरयघ	सरवत्र	१७—२०
दीपानलीः	दीपावलि	१७—२५
उतरख	उतर ख	१९—२०
लखन	लख न	१९—२३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रखतहिं	निरखतहिं	१९—२६
रसंगी	पर संगी	२०—३
पौं स्व	पाँचों रच	२०—१०
णवाय	गुण गाय	२०—१६
पवे	अपने	२०—२३
बुधि	सुबुधी	२०—२५
ारण	कारज	२१—५
पना होवे	तप ना पावे	२१—९
ीघ्र	शीध्रं	२१—९
य हो जय हो सब करम	जय हो जय हो करम	२१—१३
रस्च	दुख	२१—२६
कट	छुद	२२—३
ाँसी	भाँती	२२—११
ारन	वार न	२२—२६
रो रम	धरो धरम	२३—१३
ुरतन	सु रतन	२३—१७
जताम	निजातम	२३—२३
ाप	जाय	२३—२६
ुदावन	सु दाव न	२३—२८
भुवर	विभुवर	२४—१०
बव	अबर	२४—४
भुपर	विभुवर	२४—२०
द्योना	उद्योता	२५ ४
पे ये	कंपे	२५—८
र	मेरु	२५—१०
म	नम	२५—१२
रके	निरखे	२५—१२
न मग	वन मग	२५—१४
ांना	शान्त	२५—१९
ुरति	सुरपति	२५—२५
भु	विभु	२५—२७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धीर हो	धरि हो	२५–२९
अनुरक्ती कती	अनुरक्ती	२६—१२
नांही	माँही	२६—१७
सुलीन	सुली ना	२६—१७
वनु	तन	२६—२६
लाये	लाये	२७— ५
किरथा	किरिया	२७—९
घट	घट	२७—९
नयन	नयना	२७—१७
ताव	ताप	२७—१७
मियमात लहरसु	लहर मिथ्यात सु	२७—२३
अनात्मनुदीन	अनात्म कुदीन	२७—२४
नयनन	नयन न	२७—२५
अति दुविधा उर	उर दुविधा अति	२८— ७
सुखदाई	दुखदाई	२८—१६
विभ	विभु	२५—२४
अधितम	अधितम	२९—२३
लख	लखे	२९—२३
चरित्र	चारित्र	२९—२९
साजे	साजि	३०—५
मृद	मृदु	३०—७
कवि	कोप	३०—८
घाहि कुछ अदे	गाहि कछु भेद	३१—१२
साध	साधे	३२—९
न्हमन	न्हवन	३२—१०
हरण	हरष	३२—१३
भुक्ति	मुक्ति	३२—२१
अगति	अगति	३२—२१
नहि	नाहि	३२—२४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आय	अरथ	३२—२५
देव	देर	३३—२९
तोड़	तोड़	३२—३०
जनमाश्चर्य	जन आश्चर्य	३३—१७
क्षधा	क्षुधा	३३—१७
आनावत	आ नावत	३३—२६
धानादिक सु	धानादिक बहुत सु	३३—२९
अपरण	अरपण	३४—६
विकल्प	विकल	३४—४
क्षा	सुरक्षा	३५—६
विधाना	विधाता	३५—६
मुत्ति	मुक्ति	३५—१६
अरु	अरू	३५—२४
जादि	आदि	३६—१७
सुपुण्यथ	सुपुण्य	३७—४
कीमे	कीजे	३७—८
बढ़ो	बढ़ो	३७—२१
हनहार	होनहार	३८—४
रत्न	रत्न	३८...४
पुष्य मित्र	पुव्यमित्र	३८—३०
भुगनि सह	अगनि सह	३९—१३
किद्या	विद्या	३९—१८
जावें	जाये	३९—१३
तन सम्मक	रतन न सम्यक	३९—५२
हर्षे	हर्षे	४०—५
मना	मग	४०—७
वास्थित	स्थित	४१—१
ाय करतन	दायक रतन	४१—५
ारा श्री गुहता के	पारा श्री गहता के	४१—८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिल	मिले	४१—२०
निखारे	निरवारे	४१—२२
मसंघ	मगध	४२—४
रीति	शीत	४२—१७
भावो	भावे	४२—३०
दुख	लख	४२—३०
हनि न भावे	हीन	४३—१४
खुजावस	खुजावत	४३—१६
विषय रुचि	विषय रुचिर रुचि	४३—१८
सुरी	सूरि	४३—२०
नाग	बाग	४४—३
रांज	राज	४४—१५
साज	सज	४४—२५
चापलूम	चापलूस	४५—१५
मय	भय	४५—२३
को ललकारो	को ज ललकारो	४६—१५
बे ही	ये ही	४६—९
होते	हो हैं	४७—७
में	तें	४७—९
सरतट मुनि	सरतट योग	४०—२७
हरवावे	हरषावे	४८—१२
नहि	नहि पर	४८—२०
अधिकारी	अघकारी	४९—७
आग	भाग	४९—८
समारें	सभालें	४९—१०
फाल	काल	४९—१५
तिथि	थिति	४९—१८
भावोई	भावाई	४९—१९
सधि	संधि	४९—१८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यानो	मानो	५०—५
दूर कार्यकर धरत	दूत कार्य कर लहे	५०—६
बलि	बली	५०—९
दंरो	दंशे	५०-१३
पडा	पड़ ?	५०—१४
समले	संभले	५०—१६
दुह	दुठ	५०—२२
जतायो	जनायो	५०—२७
राजन	यजन	५१—१३
सुरमयता	सुरम्यता	५१—२१
बधावं	बधावें	५२—२०
सन्दर	सुन्दर	५२—२८
नुर नुपुर	रथनूपुर	५३—१९
चचीन	चीकन	५३—११
वह	वय	५४—२९
देव	देंय	५५—७
फूख	फूल	५५—९
वीर हों	वरि हों	५५—२५
गनमत	गमनत	५६—२
अपहरण	अरपण	५६—१३
हद	हृद	५६—१७
नूह	नृप	५६—२८
सच्जन	सज्मन की	५६—२८
नम	नभ	५६—२८
रजाई	रचाई	५७—४
दिखायो	दिवायो	५७—२४
भाज	भोज	५८—५
देखता	देखत	५८—१०
उब	उठ	५८—२३
अमानू	अपार	५८—२५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुसंदर	सु सुन्दर	५९–२
नगुर	नगर	५९–६
हरवाये	हरषाये	५९–६
गोद	मोद	५९–११
लुख	सुख	६०–१६
प्रपाय	प्रयाण	६०–१६
नस्पति	नरपति	६१–३
चितन	चिंतन	६१–७
विना	बिन	६१–१९
होना	हीना	६१–२२
दुख परं	पर दुख	६२–५
बाग	वाम	६२–६
जात	जान	६२–९
जटि सुन	जटि रव	६२–१६
भारे	जा रे	६२–२४
पाण	कृपाण	६३–२
अश्व भू	अश्व परे भू	६३–५
गर	गरम	६३–११
कीने	भीनो	६५–४
सुवोष	सुद्योष	६५–७
अपरण	अर्पण	६५–२२
सत्त	सप्त	६५–२४
आरंब	आरंभ	६६–१२
काया	काया छावे	६६–१३
अनिति	अनीत	६६–१६
कछु ज्ञान तत्व	ज्ञान तत्व कछु	६६–१८
मरणा	भरणा	६६–२०
संयन	संयम	६७–१३
अन्ति	अति	६७–२७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भुभक्ष्य	अभक्ष्य	६८-१०
अज्ञ	जिन	६८—१
आधिक	अधिक	६८—२३
जढ़ता	जड़ता	६९—९
कूदो	कूयो	६९—१३
मूमि	भूमि	६९—२३
अमे	भ्रमे	६९—२४
बहु नख पैने	पैने नख बहु	६९-२८
आव कर्तारी	आक्सकर्तारी	७०—७
शोर करत	शोर करत मन	७०—१०
फिरत	फिरता	७०—११
घावे	धावे	७०—१४
वेदना	वेदन	७० -१८
जवि	जीव	७०—२२
सम शरण	समवशरण	७०—२९
अवस्थित	कुत्थित	७१—१
अचरच	अचरज	७१—३
मृगपाती	मृगपती	७१—११
चौबाती	चौगति	७१—१४
घन	धर	७१—१९
दाद मद विषय	दाह मद विषयन	७१—२१
स्वास्थ	स्वारथ	७२—६
करणो	करणी	७२—१२
बैठी	बैठो	७२—१५
थरम का साथों	धरम का साधों	७२-१६
स्वास्थ्य	स्वारथ	७२—२५
पावों	पागों	७२—१२
थिथि	थिति	७३—१२
सुरम	सुरग	७३—१४
नियोगति	नियोगनि	७३—१७
स्वाई	रचाई	७३—१८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हरवानो	हरषानो	७३—२०
कंढ़ामृत	कंठामृत	७३—२३
मामत	गमत	७३—२९
भेंट	मेंट	७४—५
उष्क	उष्ण	७५—५
वुण्य	पुण्य	७५—६
पुम्य	पुण्य	७५—६
दात	दान	७५—८
धूत	धूल	७५—१५
गोद गोद	गोद	७५—१७
द्रुति	दुति	७५—२०
सद गृहस्थे	सद गृहस्थ	७५—२२
और	ओर	७५—२५
खात्म	स्वात्म	७६—१९
शविचल	अविचल	७६—२२
धरम	धरमा	७६—२७
नत	पन	७७—८
थिरकता	थिर करता	७७—१७
वश	वंच	७७—१८
गृहतर	गुरुतर	७७—२६
जब	जग	७८—८
कनको वल	कनकोज्वल	७८—११
सब	सरब	७८—१९
परम	धरम	७८—२१
भावी	सुभग सुभावी	७९—२१
साजे	सजे	७९—२२
प्रीति	प्रीती	८०—८
प्रेमि	प्रेमिल	८०—२५
आचें	आवें	८२—२
पइवश	परवश	८२—१७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बढ़े	रच, बढ़े	८२—१९
बित सत काया उब मिब, बिनसत काया सवमिट		८३—३
व्याधि	व्याधी	८३—८
गूल	गृह	८३—२१
कमण	कारण	८३—२४
थर	घर	८३—२६
धारक	धारक	८४—५
श्यनी	रयनी	८४—८
सहित	सुहित	८४—११
जल्द	जलद	८४—१३
आंतक	अतंक	८५—१३
नहीं	नाहीं	८५—१७
शाशी	शशि	८६—१७
नयन	नयनन	८६—१८
भावें	भासें	८६—२५
हटावे	बढ़ावे	८६—२८
विघाधर	विद्याधर	८७—११
छुटा	छूटा	८७—१३
साहस	सहस	७७—१९
मुनी के	सु नीके	८७—२६
चकि	चक्रि	८७—२९
भाव व	भाव	८८—६
दो	देवे	८८—१६
गमधर	गणधर	८८—२४
आये	आवे	८९—५
थैला	थैली	८९—१२
पाके	पावे	८९—१४
आविकाहीं	अधिकाहीं	८९—१९
याक	याके	८९—२३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुढ़	दुठ	८९—२४
भूझत	सूझत	८९—२७
तृविता	तृषिता	९०—३
प्रमोद	प्रमाद	९०—७
नाज रावे	न राचे	९०—१०
धंमे	थंभे	९०—१०
स्वंम	स्वयं	९०—१३
सुलोधे	सुलाधे	९०—१५
उपजो व	उपजो	९१—२
देवे	देये	९१—८
बुभा हैं	बुझा हैं	९१—१०
नर्सर पत्य	तारी अपत्य	९१—१३
सोरठा—	चौपाई	९१—१४
दिवत	दिपत	९२—१५
या	पा	९२—१६
बाह्याभ्यंपर	बाह्याभ्यंतर	९२—२१
नभ छाये	नभ बादल	९२—२८
सुथट	सुघट	९२—२९
परिवह	परिषह	९३—९
मूथे	मूये	९३—११
परभाग	परभाव	९३—१२
दूजा	हूजा	९३—१९
खमाये	समावे	९३—२२
सरस	सुरस	९३—२४
सजे	साजे	९३—२४
शील धरम सु	शील धरम शुभ	९४—१४
सौहतो	मोहतों	९४—२३
गुण अति	गुण	९४—२४
हपष	हरष	९४—२५
धन्य दिवास	धन्यदिवस	९४—२८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

का सु	का	९४—२९
दुर	दुठ	९५—६
रवि सु प्रगटावे	अरुण जनावे	९५—१४
पुत्र	सुत	९५—१६
वाठे	वाढ़े	९५—२१
मती	अति	९६—८
वाल	बल	९६—८
समर गणकारी	समरपण कारी	९६—१७
कीनी	कीनो	९७—२
उबठो	उकठो	९७—९
धरत धरत	धरम धरत	९७—१७
म्नात यजन जिनवर	असनान यजन जिन	९७—२३
सुशक्ति समान तप नित	नित तप शक्ति समान सुसाधें	९८—२
मुनि आचार्य पाठक अराधें	मुनि आचार्य पाठ आराधें	९८—३
शुमावना	सुहावना	९९—४
सहज	सहजा	९९—४
मथ	पथ	१००—८
सख	सुख	१००—१२
वृष सब सुखकर ज्ञानित सीमत्र, सब सुखकर वृष ज्ञानिनसोभा		१४
को	की	१००—२८
भाज याने	भज यातें	१०१—६
पुत्र	पुन	१०१—९
पावो	पावे	१०२—७
अविवल	अविचल	१०२—९
चिंते	चिंते	१०२—२१
यक्थ	यथा	१०२—२८
तद	तप	१०३—१४
अरघते	अरचते	१०३—१९
प्रगट	प्रगटे	१०३—२६
भारत	आरत	१०४—९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मृष	मृषा	१०४—१५
जीवन	जीव न	१०४—१७
वश	वश हो	१०४—१८
जानदि	ज्ञानादि	१०५—११
शौर्य	शौर्य सुक्ख	१०५—१२
बढ़	बढ़े	१०५—२५
अद्य	अघ	१०६—२
भावन	भाव सु	१०६—१८
लावे	लाये	१०७—२५
बंधा	बन्धी	१०७—२८
अहंता	अर्हंता	१०८—८
गणि	मणि	१०९—१९
अद्भुद	अद्भूत	११०—५
धावे	धारे	१११—४
कोई	होई	१११—१०
पाती	पति	१११—१९
अधिकरणी	अधिकरणा	१११—१९
सहज जहिं	सहजहिं	१११—२९
यौपन	यौवन	११२—३
तट तिनको	तिनको तट	११२—२०
कच्छु	कछु	११२—२२
करें महत्व	करें	११३—२१
लाज	लज	११३—५१
उपवन मन मोहे	उपवन जन सो है	११४—४
परें	परें न	११४—२५
ललकायें	ललकावें	११५—२४
जलेंदीप जलें	जलेंदीप	११६—५
घृत	घृत	११६—६
निवोग	निरोग	११६—६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गौरय	गौरव	११६—१६
गुख	गुण	११६—२२
श्रेष्डत्व	श्रेष्डत्व	११६—२५
सकुल	सुकुल	११७—१७
होता	होवें	११८—७
पंगा	गंगा	११८—८
चल	कुल	११८—१९
सुख	सुख	११८—१९
सुमायो	समायो	११९—२९
कणपति	फणपति	१२०—२०
सुपत	सुपन	१२०—२०
जन	जय	१२१—२५
उर नृप	नृप उर	१२१—२८
मलहन	महलन	१२२—२१
मान हर	मान कर	१२३—३
मलहन	महलन	१२३—२५
आलम	आलस	१२३—२६
सोरग	सोरठा	१२५—१५
कुदेरनो	कुदेरतो	१२५—१६
गण	गुण	१२५—१३
माला	माल	१२६—१३
दुर्गण बहु माता	दुर्गुण बहुभाता	१२७—२
निवारण	निरवाण	१२७—७
अद्य	अघ	१२७—१५
गुण	गुण सु	१२७—१६
भावे	नावे	१२७—२४
कहलावें	बहलावें	१२७—२७
जित	जिय	१२९—२
वस	वैसे	१३०—७
कल	शुकल	१३१—२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पांप	पांय	१३१—११
परि भीर नाहिं	पीर नहि भीर	१३१—२३
सेंधव	सेंधव	१३१—२४
साये	छाये	१३२—१७
शब्द न आवे	शब्द जनावे	१३२—२३
श्रृंग	श्रृंग सम	१३३—१४
घोप	घोष	१३४—२
सुम धावे	सु धाये	१३४—४
ढुवायें	दुराथे	१३४—९
शब्द	शब्द	१३४—१४
धारी	थारी	१३४—२३
दीनो	भीनो	१३४—२
विकासी	विकसी	१३५—८
मद	मुद	१३५—८
मुकती अधिपति भव्यन	मुक्ति अधिपति भव्य	१३५—२६
सु	जु	१३६—९
दवशाव	दरशाव	१३७—५
जड़िन	जड़ित	१३७—७
शोभित	शोभित	१३७—१६
पुस्यांकुर	पुण्यांकुर	१३८—१६
अष्द	अष्ट	१३८—१९
विभु	विभुवर	१३९—२९
पुस्य	पुण्य	१४०—२७
दम्पति नन्द	दम्पति नंदित नन्द	१४१—२
क्रितसी	विकसी	१४१—२०
मिद्ध	सिद्ध	१४१—२५
भाव उगले लीलें पर	उगलें लीलें भाव	१४२—८
आत्म	आतम'	१४२—१९
पुण्य धरम	पुण्य	१४२—२६
किलरम	किलक रम	१४३—११

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धार	धारे	१४३—१४
खलें	खेलें	१४३—१७
मोहतो	मोहनो	१४३—२१
भापी	भाषी	१४३—२२
श्रेष्ठत	श्वेत	१४३—२६
जब	सब	१४३—२९
तीर्थंकर	तीर्थंकर	१४४—६
दाम	दाम	१४४—६
भोभे	शोभे	१४४—८
तज	तेज	१४४—९
छबा	छबी	१४४—१३
सुखन	सखन	१४४—१४
शुभ मान	शुभ मन	१४४—२०
जानो	जातो	१४४—२०
चेतनना	चेतनता	१४४—२४
ओब	ओट	१४४—२६
मुस्तक	मुसक	१४४—२६
रजत रुक जन	जन रंजत रुक	१४४—२७
हृदय	हृद	१४४—२७
स्फुर	समय	१४४—२९
तब	वि	१४५—१६
होय	होत	१४५—१६
अव्रहन	अव्रह्म	१४५—१९
विपाक विकारी	विपाक रुलावें	१४५—२१
व्रत इन त्यागत	इन त्यागत व्रत	१५६—२२
करन	करम	१४५—२३
जगत	जग	१४६—२
भर	भरे	१४६—७
भारत	भागत	१४६—८
तुग धन्य त्रिभु	तुम धन्य विभु	१४६—२४
बताओ	बनाओ	१४६—२९

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करित	कीरत	१४७–९
शिवगाम	शिवगामी	१४७—१२
जग रक्षक सु	जग सु रक्षक	१४७—१३
पात	पाते	१४७—१७
लख	लखकर	१४८—१३
करित पावे	कीरत गावे	१५०—२
नव पदाख सप्त तत्व	सप्त तत्वनव पदारथ	१५०—११
गभीर सु धीर	धीर गंभीर सु	१५०—१५
शोभ	शोभत	१५१—२
केथ	केल	१५१—२
मिटको हैं	टिम को हैं	१५१—६
स्वरत्तिका	स्वस्तिका	१५१—१९
बठ वमु	अठ बपु	१५१—२७
आगे	आये	१५२—१९
ललित	लीलत	१५२—२२
सुख	सुखको	१५२—२५
सावन	सोवन	१५२—२९
सब कहो जैसी सोइ माने, जैसी कहो सब सोई मानों		१५३—८
मद्व	बहु	१५३—११
अभिन	आभिन्न	१५३—१७
अमावन	अपावन	१५३—२०
धरम मित्र सदा	सदा धरम मित्र	१५३—२५
सरग	सुरग	१५४—६
अन्वेपत	अन्वेषण	१५४—१४
इच्छित हो सुपारा	इच्छित होवे सफल	१५४—१४
तेब	तो	१५४—२१
करते	करके	१५४—२९
दुख लाधे	दुख बहु लाधे	१५५—३
धासूं	धारू	१५५—२०
किस्तांसू	विस्तारूं	१५५—२०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सु आयु	आयु	१५५—२५
साजो	सजो	१५५—२६
शठ पावें	शठ ते पावें	१५५—२७
भोले जु	जु भोले	१५५—२८
अध	अघ	१५६—५
मुकन	मुकत परभापे	१५६—१८
संचेग	संवेग	१५६—२८
पर भावे	परभापे	१५६—२८
आतम गाती	सु आतम घाती	१५६—२९
बिना सवेग नाहिं मुनि	मुनि संवेग बिना नाहिं	१५७—२
मयी	कर	१५७—६
भारो	भारी	१५७—७
का	का न	१५७—१०
सूरी	मूरी	१५७—११
कायाग्य	काया वय	१५७—१२
घरी	घेरी	१५७—२१
काप	काय	१५६—२६
आत	आप्त	१५८—१४
अपनयो खेय	अपन पो गेय	१५८—२०
पिय	पियत	१५८—२३
शुण्क	शुष्क सु	१५८—२४
जो	जी	१५८—२९
चतुर	चतर	१५९—५
मति	गति	१५९—१२
संग होई मृत्यु भये	मृत्यु गहे संग कोई	१५९—२२
अपना	अपना पर	१५९—२२
महायोग अरु	महायोगि अरु	१५९—२७
कण	फण	१६०—१२
कदैघ्न	कृतघ्न	१६०—१३
शुचि	शुचिता	१६०—१५
नरव	नाव	१६०—२०
पाये	पावे	१६०—२१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करम कोर	कर्म झकोर	१६०—२४
सबि	छवि	१६०—२७
नर भाव	नरभव	१६०—२८
मनु जत्व विकस मन	चिन्मय श्रोत नरत्व	१६१—१२
सुमाये	सुभाये	१६१—१२
मुगुण	सुगुण	१६१—१४
निरजरता सु	निरजरता	१६१—२०
राज	राजू	१६१—२२
वक्ष र बनीता	वक्षार बत्तीसा	१६२—७
शुचातम	स्वातम	१६३—५
भवाधी	भवाब्धी	१६३—१४
जयवती	जयवंती	१६३—२८
आनंत	अनंत	१६३—२९
नाहिं प्रीती	नाहिं उर	१६४—२०
शशि पुण्य	शशी पुण	१६५—८
सगुण	सुगण	१६६—८
में	बमें	१६६—९
माना	नाना	१६६—२०
अज्ञ कृत	अलंकृत	१६६—२०
विभू	विभुवर	१६६—२५
यार	या	१६७—६
इसके	इसको	१६७—७
विचारें	विचारूं	१६७—२८
मुदित अति	महा मुदित	१६८—६
आथ	आया	१६८—६
सुखति	सुरपति	१६८—११
अधिकार सकस	सकल अधिकार	१६८—१३
छटो	छटा	१६८—२१
सु	सब	१६९—९
धनु	धुन	१६९—१२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वरि	वीर	१६९—१३
भावि होता	भावी हीरा	१६९—२५
पछतायो अब अटवीरा	पछताये अब अटवी	१६९—२५
शुपक	शुष्क	१७०—८
बुलाये	बुलाधे	१७०—८
आशष	आशिष	१७०—८
बरषा बाधा	बरसा अति	१७०—२५
कहिन	कठिन	१७०—२५
कदायें	कषायें	१७०—२८
सुपुत	सुपुत्र	१७१—१२
अघ	अघन	१७१—२०
प्रीति	प्रीति ले	१७१—२४
मेह	नेह	१७१—२९
माह मगन रह रई	मोह मगन रह गई	१७२—२
घन	वन	१७२—२
करत अमलोक	कर रतन अमोलक	१७२—१९
हारे	डारे	१७३—२
शुचि	शुची	१७३—५
बलकना	बलकारा	१७३—१२
जग सिन्धु	जगोदधि	१७३—२६
सकुचब	सकुचत	१७३—२७
दुखकारो	दुखकारी	१७४—९
राय	पाय	१७४—४
सहानो	महानो	१७४—१४
गुणित	गुणि तुम	१७४—२४
स्फूरर्ती गरिमा प्रभू	स्तिफ्ति तेरी गरिमा	१७४—२७
बोसे	कैसे	१७५—७
वोसे	कैसे	१७५—१४
छांडि स्वजन विभ वस्तु वोसे	छोड़े स्वजन विभव सु कैसे	१७५—१४
वोसे	कैसे	१७५—१७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षापे	थापे	१७५—१९
अवस्त	अविरत	१७५—२३
पागा	पाग	१७६—६
आसाने	अमाने	१७६—१०
प्रिभु	विभु	१७६—२३
मठा	महा	१७६—२६
दी	दो	१७६—२८
धाकें	धारें	१७७—३
संभारूं	समारें	१७७—३
घनाई	धनाई	१७७—२०
विशुद्ध	शुद्धी	१७७—२२
सांची नृपति	नृपति सांची	१७७—२८
करबी	करषी	१७८—
करम कत	करम काठ	१७८—१८
उरकत	उर करत	१७८—२३
घब ओरा	घनघोरा	१७९—२
सू	र—र	१७९—४
मोदें	मोड़ें	१७९—१०
कपे	कंपे	१७९
सुमेरू	सुमेरू	१७९
अक्षण्य	अक्षूण्य	१७९—१७
शरीर	शरीरा	१८०—२
षोपक	पोषक	१८०—३
ध्यानी	धामी	१८०—४
सू	सु	१८०—५
सप	सह	१८०—५
मरखाधिक	मरगाधिक	१८०—२९
अरम	अरण	१८१—२
भव	भाव	१८१—१६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूतारा	भूतारी	१८०—१६
सनमें	मनमें	१८१—१६
या है	गा बच है	१८१—२२
प्रणायों	प्राण यों	१८१—२२
लीन्ही	चीन्ही	१८१—२७
कुड़ायो	मुड़ायो	१८२—१५
बाधक	बाधा	१८३—९
नटिनी	तटनी	१८३—१९
डाये	ठाये	१८३—२१
योन	योग	१८३—२१
तीन	त्रय	१८४—२२
बारह	बारहवाँ	१८५—२८
अरणा	अरण	१८५—७
उदोस	उदोग	१८५—११
आनंद अवधि जान	अवधि जान आनंद	१८५—२२
अकीना	अकीना	१८५—२३
घीष	घोष	१८५—२८
रस मधु	मधुरस	१८६—७
मनतेंद्र	सनतेंद्र	१८६—२१
त्रह्म	ब्रह्म	१८६—२२
इन्द्र रतन सुरय राज	इन्द्र रतन सुख राश	१८७—११
ऊंचो	ऊंचो	१८७—१६
पति	पीत	१८७—२१
सोहस सुखदानी	सोहत सुख दानी	१८७—२५
यद	पद	१८७—२६
सजाये	संजाये	१८८—७
घड़	सुघड	१८८—१०
घोषण	घोषणा	१८८—११
सान	मान	१८८—१४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रनन	रतन	१८८—१५
दिवें	दियें	१८८—२२
दिशा	दिश	१८९—५
पोठ	पीठ	१९०—२६
दिपम	दिपत	१९१—९
कृपाण	कृपाण सु	१९१—१७
कोठ	कोठे	१९२—२
कलचारी	कलशारी	१९२—४
अनूधा	अनूठा	१९२—९
नप	तम	१९२—१०
मती	मनो	१९२—१८
वोरं	वीर	१९२—२३
मंगसाचरण	मंगलाचरण	१९२—२८
हितारी	तिहारी	१९३—१४
कैमे भव दधि पार उनरना	कैसे भवदधि पार उतरना	१९३—२३
शोका	शोक सु	१९४—६
आर्थिक	आर्यिक	१९५—९
शव	भव	१९५—१५
बोधमेंद्र	सौ धमैंन्द्र	१९५—१७
निरख	दोहा—निरख	१९६—१५
मझे	मुझे	१९६—२१
अब अश्र	अत्र अत्र	१९७—१३
रनानात्रय	रतनात्रय	१९७—२२
सुरीभिता	सुरभिता	१९८—२३
उपाग	उपाय	२०१—८
उर	उर	२०१—१४
बाधा न	बाधा	२०१—१५
समृहित	समूह हित	२०२—१०
नीके तीको	ताको नीके	२०२—१३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्ति	मुक्ति	२०२—२३
ज्ञान शक्र	ज्ञान सु शक्र	२०३—२३
करित	कीरत	२०३—२५
गुणी	गुणत	२०५—२१
निरवराये	निखराये	२०६—२
ताय	जाय	२०७—७
जीवन	जीव न	२०९—८
जलाधि	जलधि	२१०—२०
देवे मरग विपुल	देवें विपुल	२११—२३
बहिरातन	बहिरातम	२११—१८
बार थाँनो	बारम थाँनो	२११—१४
	श्वांसोच्छवास	२१२—५
दश सब धर	सब दशधर	२१२—९
शरीर दि	शरीरादि	२१२—२५
मा	माचे	२१३—४
अब्स्म	आत्म	२१३—१७
ज्ञानो	ज्ञाने	२१३—१९
बाद सूक्ष्म	बादर—सूक्षम	२१४—९
सया	सांस	२१४—१७
नेय	देय	२१४—२६
दुभद	दुभेद	२१४—२६
भद	भद	२१४—२५
मरिणति	परिणति	२१६—७
रम	करम	२१५—१६
काय	काया	२१६—२४
तातिस	तँतिस	२१६—२४
सुभी थे	सभी जे	२१६—२५
महुरत	मुहूरत	२१६—२७
मत	मन	२२—१०
जग भव भावे	जग भव भय भाये	२२०—१२
पुण्य फल उदय	पुण्य उदय	२२०—२९
सू	सु	२२२—४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भोज धन सुब	भोजन धन सुख	२२२—२६
विक्ष	वक्ष	२२५—७
कुवृवता	कुवृषता	२२५—७
दर्यूनावरण	दर्शनारवण	२२५—९
धारा	धारा	२२५—१४
गुणक रहीने	गुणकर हीने	२२५—१९
विपदा	विपदा	२२५—२०
कम	कर्म	२२६—१४
दारि दाता	दारिदता	२२६—१९
रु दुर बुदू धी	दुरवुद्धी	२२७—१४
फाके	पाते	२२७—१४
ये ते	देते	२२७—२५
प्रतिष्ठा	प्रतिण्ठा	२२७—२५
चरल	चरण	२२७—४
फावे	जोवे	२२९—९
असत सत	असत, असत सत	२२९—११
देन	देव	२२९—१५
कुशालता	कुशीलता	२२९—१८
होवे	पखे	२२९—२८
गुण मे	गुण	२२९—२९
प्रति	प्रीत	२३०—३
निन	निज	२३०—११
वो	के	२३०—१३
चेत	चित	२३०—१५
सझानो	रुझानो	२३०—३६
अघम	अधम	२३०—१०
सूक्ष्य	सूक्ष्म	२३१—३
मा धृष्टी	दृदाष्ट	२३१—३
निरनता	निरतता	२३१—१०
मगलाचरण	मगलाचरण	२३२—११

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मलि	मणि	२३२—१४
दरशन ज्ञाना	दरशन सम्यक ज्ञाना	२३२—१९
धरधा	सरधा	२३७—२७
दिलाय	दिखाय	२३३—३
कुलप	कुतप	२३३—२०
को	की	२३४—२
ण्यौहार	ब्यौहार	२३५—५
सत्व	सत्वर	२३५—२९
पधारें विविध	धारें विवुध विविध	२३६—९
हृपय	हृदय	२३६—१६
धारे	धारे	२३७—१४
पुष्ष	पुण्य	२३८—३
वों	तों	२३८—११
गुणति	गुपति	२३८—१२
लव-तन वीनी	लसत नवीनी	२३९—१४
सभ	सब	२३९—१५
तष	तप	२३९—१७
अनुसारो	अनुसारी	२३९—२७
ही है	हो है	२४०—३
कहावें	संजोवें	२४०—१६
हार	करम	२४०—१०
सहा	सदा	२४०—२८
शिव पावें	शिव जावें	२४२—१७
सखारथ	सरवारथ	२४२—१८
उपावें	पावें	२४२—२०
अरसूजो	अरू जी	२४२—२३
गासीसुगीति विधात',	गामी सुगति विघाता	२४३—१०
अवसरण	अवसरपण	२४३—११
ऊपग	ऊपर	२४३—१८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

	मंगलाचरण	२४४—१
कुपध	कुपथ	२४४—११
हिथ	हित	२४४—१४
संग्रह	संग्रहे	२४४—१९
अमीष्ट	अभीष्ट	२४५—१७
वस् द्रव्य सु जाये	वसु द्रव्य सजाये	२४५—२८
सकल	सफल	२४६—२१
सकल	सफल	२४६—२२
चिन्तन	चिन्तत	३४६—२४
शुभगमन	शुभागमन	२४६—२५
मत	मन	२४७—८
करो	करों	२४७—२१
उपाचा	उपावा	२४७—२९
ढ़िग	ढिग	२४८—४
सुत	सुन	२४८—९
खावे	जावे	२४८—२६
सु	शुभ	२४९—९
लाय	साथ	२४९—१३
ने हो	की मो	२४९—१३
सनत	सुनत	२४९—२४
क्षीखा	क्षीणा	२५०—३
अज	अज्ञ	२ ०—४
सन	सुन	२५०—२२
झुहलावे	झुठलावे	२५०—२५
निन	निज	२५०—२६
मद	मुद	२५०—२६
दरिद्रो	दरिद्र	२५०—२८
मेंट	मेंटत	२५०—२८
काहू	काहू	२५०—११

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संहार	सहारे	२ १—२६
जव	जीव	२५१—२७
सुमार	सुमार	२५१—२७
लपट	लंपट	२५२—८
गति	सुगति न	२५२—१४
विषय न	विषयन	२५२—१६
बड़े	बने	२५२—२१
आढो	माढो	२५३—२
लय	नय	२५३—९
पदे	पड़े	२५३—२६
करमत शावे	करम नशावे	२५४—४
मुकंषारथ	पुरुषारथ	२५६—६
थक्कर	थककर	२५६—२६
काघा भुवि	काया भव	२५६—२०
षठ	शठ	२५६—२२
उर	उर आने	२५६—२९
जिनको मवोदधि गाये	जिनका भवदधि अन्त सुगये	२५७—५
उचारग	उचारा	२५७—८
भारा—धारा	धारी—धारी	२५७—६
समव शरण वे नाहीं आने, अभव्य कभी मुक्जी न पावें		२५६—६
जोक	लोक	२५७—९
नौ	नौ सौ	२५७—२१
मुन	सुन	२५९—२
नाध	नाथ	२५९—६
तुमरो	तुमको	२५९—१७
तारि	तरि	२५९—२०
लीन	जीव	२५९—२१
धुजाय ताला	धुजा पताका	२६०—२२
विधेश्वर	विद्येश्वर	२६०—२८
रहत	रहस	२६१—१४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कटाहक	अठारह	२६१—१४
तब	सब	२६१—२३
सबोध	संबोध	२६१—२५
ठहरावे	ठहराये	२६१—२९
पाव	पावा	२६२—३
निर्वाण कांथाणक	निर्वाष कल्याण का निर्वाण कांड	२६२-१८
पतन	चेतन	२६२—२७
वीराज	वीरज	२६२—२८
शुपुण	सुगुण	२६२—२९
जय जयकरा भरा न भगाजे	जय जयकार भरा नभ गाजे	२६३—६
सौफनैंद्र	सौंधमैंन्द्र	२६३—८
छुग्रा	हूग्रा	२६४—१४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

★ श्री वर्धमानाय नमः ★

चरित श्री महावीर, स्वयं ही काव्य है ।
संयम अभय विवेक, स्वात्म दरशाव्य है ।।
कर्तव्य नितिष्ठा ज्ञेय, सुमन वर चाव्य है ।
गायक कवि सुखलेय, मुक्ति सम्भाव्य है ।।

महावीर तुमको नमन, सकल सुक्ख दातार ।
चरण कमल सरसें सुमन, स्वबल शांति भयहार ।।

विश्व में शान्ति हो.
समत्व का जागरण हो.
समस्त जीवधारी सुखी हों.
हिंसा, द्वेष, घृणा और भय दूर हों.
अभय और विश्वास का संचार हो.

— शुभ कामना —

★★★

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महावीर - वन्दना

महावीर भगवान तुमको लाखों, प्रणाम ।। तुमको ।। टेक
मुक्ति का सुख तुमने पाया, जीवन ऊंचा जगत दिखाया,
चेतन वैभव सब सुख दाया, महा पुरुषार्थी जगमें तुमको लाखों। टे.
वाह्य रिपु को सब जग माने, अंतर रिपु की टोह न जाने
जग को लखता निज न माने, निज को जानन वाले तुमको ।टेक
काम क्रोध मद लोभ सतावे, जीव विकल मन माया छावे
निज का सुन्दर रूप भुलावे, [illegible] हो सद्बल वाले तुमको ।। टेक
तुमने अनुपम सुख को पाया, सुपथ तुम्हारा जग सुखदाया
रतनमहा सरधा धर पाया पालो पाने वाले तुमको लाखों प्रणाम । टे.

प्राप्ति स्थान—

श्री पं० मोहनलाल शास्त्री,
जैन ग्रंथ भंडार,
मोहनलाल शास्त्री मार्ग, जवाहरगंज, जबलपुर-२ (म. प्र.)

[illegible]क—
[illegible] मगमचंद जैन,
[illegible] प्रिंटिंग प्रेस, कछियाना, जबलपुर.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi